श्रीगणेशायनमः
वसिष्ठजी।
श्रीरामजी
लक्ष्मणजी
कौंसलयंत्रालयके विषें पंडित अनंतरामजीके अधिकारसे मुद्रितहुआ।

वा॰सा॰
सू॰
१

अथ सूची पत्रीका वसिष्ठ सार ग्रंथ की, पत्रा पृष्ठ पंक्ती विषय सुद्धां ॥

ा॰ सा॰
सू॰
३

वा॰ सा॰
सू॰
५

(३

वा॰ सा॰
सू॰
७

श्रीरघुनाथोजयति

अथवसिष्टसारलिख्यते॥

ॐश्रीरामजी॥दोहा॰गणपतिगुरुगिरिजासधवगिरिधरगिरामनाइ।वरणौंचरितवसिष्टकोग्रंथ्योत्तरहरषाइ१वालमीकभरद्वाजसोंरघुनंदनहिवसिष्ट॰वर्णितहैअध्यात्मपदब्रह्मज्ञानकोइष्ट।२।आदिकाव्यबाल्मीकमुनिविरचितलक्षसलोक॰अधिकहिहैंतातेसबहिहोवतनाहिअलोक२ सोरठा॰यांकोमथसंक्षेपसारबनेसबमनुजहित॰मिटहिअनाविक्षेपसुगमअर्थआनंदपद४ नगरबिसोलीमेभयेपंडितजनीसराम॰तिनकेशिष्यजुआनिपविद्यासद्गुणधाम ५ सवैया॰नामगुपालसरामकहैंपरमंडलथामरहैंनिहकामा॰ग्रंथवसिष्टविचारकरैंनितसंग्रहसारवसिष्टसुनामा॰नूतननहीरचबोधहुवैसबलोककुंकोसिमरै

वा·सा·हियया मा·सप्तसहस्रसलोककियसबअर्थलहैं नरशरणकामा ६ दोहा·जंबुमतीसरितिबना
२ सुखदेशानकोअधिईशा·श्रवणकियोसंग्रहसकाल (श्री१०८) रणबीरनरेश १ज्यौं विश्वंभरविश्वगतपा
लकसबजगजोइ त्यौं भूपतिरणबीरहरिपालहिंनिजजनसोइ ७ सुणवसिष्ठसंग्रहसुगमब्रह्मज्ञा
नसुखपाइ शिवशंकरजीपेकहीवार्तिकरचोबनाइ ८ सोरठा·श्रीहरियशअभिधानब्रह्मनिष्ठपं
डितविमल·तिनकीशासनमानवार्तिककियोवसिष्ठ·चमुनिवरवचननिगूढअर्थनसमझेजात
है तनछपिकरोंअगूढशिवशंकरपरसादते १० दोहा·सबलोकहिंउपकाराहितभाषासुगमबनाय।
बसिष्ठसारवार्तिकरच्योसबहीकेमनभाइ ११ अडिल·संवतनवविकअंकइंदु मितवैक्रमी·शैशिरा
ऋतुतपमाहिंअरंभ्योअनुक्रमी·ऊवोसहरणमुदितजनहितकारही·जोंहिपढेंअरुश्रवणकरतभवतारही १२
टीका·बालमीकजीने भरद्वाजके तांई जोनसा वसिष्ठ रामजीका संवाद सुनायाहै तिसका सार लेकर के
सुगम करने द्वारा संग्रह करीदाहे १ तिसमें भरद्वाजका प्रश्नहै हेगुरुजी मुक्तका क्या लक्षणहै अरु

वा॰ सा॰ स्वरूप क्याहै मुक्ति किस प्रकार कर होनीहै सो मेरे प्रति कहो ऐसा प्रश्न किया जो बाल्मीकी मु
२ नि भरद्वाज प्रति कहते भये २ पहिले मंगला चरण करतेहैं जोनसा प्रभु मेरेको स्वर्ग विषे पृथि
वी विषें आकाश विषें बाहिर अरु अंदर सर्वत्र प्रकाशमान होताहै अरु स्वयं प्रकाश रूपहै तिससर्व
स्वरूप परमात्माको मैं नमस्कार करताहूं ३ हे भरद्वाज यह जगत का भ्रम आकाशके नीलेरंग की
न्याई मिथ्याही फुराहै इसका जो फेर नही फुरणा ऐसा जो विसरणाहै तिसको मैं बहुत श्रेष्ठमा
नता हूं ४ हे शिष्य यह नेत्रों करके प्रत्यक्ष देखीदा जो जगत है सो सत्य नही है ऐसा ज्ञान
करके मन से दृश्य पदार्थ का दृढ परी त्याग सिद्ध होवे तो परम निरवाण के आनं
द की प्राप्ति उत्पन्न होती है ५ जो मन से दृश्य पदार्थ का दृढ परी त्याग नहीं
होवे तो अनेक शास्त्र रूपेश्य ऊहा विषे भ्रमण करने हारे जो तुम हो अपने स्वरूप के
ज्ञान विना आपही अज्ञानी हो तुम को अनेक कल्पों करके भी आनंद की प्राप्ति नहीं

वा॰सा होवेगी ६ हे शिष्य सर्व प्रकार करके अंतः करण में वासना का हट परित्याग जो
४ है सोही मोक्ष कहीदा है वही आनंद प्राप्ति का निर्मल मार्ग है ७ सो वासना दो प्रकारकी क
हीहै एक शुद्ध वासना है अरु एक मलीन वासना है तिनमें मलीन वासना जन्म मरण का
कारण है अरु शुद्ध वासना जन्म मरण का नाश करती है ८ अज्ञानही हट स्वरूप है जिस
का हट अहंकार को प्रहन्न करती है फिर जन्म को करने हारी है पण्डित लोगों ने यह
मलीन वासना कहीदी है ९ जोंनसी दूसरे जन्म के अंकुर को त्याग कर दग्ध भये हुवे बी
जकी न्यांई स्थित भई है देह के निरवाह के लिये धारण करीदी है जानिया है परमात्मा
का स्वरूप जिस करके सो शुद्ध वासना कहीदीहै १० हे शिष्य जोंन से शुद्ध वासना वाले पु
रुष फिर जन्म के क्लेश को नहीं भोगते हैं परमात्मा के स्वरूप को जानने हारे हैं जीवन
मुक्त कहे हैं अरु उदार बुद्धि हैं ११ ॥भरद्वाजउवाच॥ हेगुरुजी वसिष्ठजी ने श्रीरामचंद्र

वा॰ रा॰ बन के वृक्षों को विकार नहीं करतिश्रां हैं २४ हे राजन् रामचंद्रजी एकांतस्थान विषें
६ दूर देशों विषें नदी तीरों विषें बनों विषें शून्यस्थानों विषें प्रीत धारता है जीवों विषें
विकाय गया है मानों श्रैसी दया करता है २५ हे राजन् रामचंद्रजी वस्त्र विषें जल पानादि
क विषें दान विषें विरक्त होय करके सर्व त्याग करने वाले ब्रह्म निष्ठ तपस्वी के
पीछे अपने चित्त की शांति वास्ते सेवा करने जाता है २६ हे राजन् रामचंद्र जी अ
केला एकांत निर्जनस्थान विषें स्थित होता है एकाग्र बुद्धि करके हसता भी नहीं
है गायन भी नहीं करता है रोदन भी नहीं करता है एकाग्र वृत्ति धारण करता हैं २७
हे राजन् रामचंद्रजी पद्मा सन बांध करके स्थित होते हैं वैराग्य करके भोग पदार्थों
के भोग में जड़ होय करके अंतः करण शून्य हैं श्रोर कैसे हैं वामें हाथ विषें मुख
कों स्थापन करके चिंता करके केवल मौन धार करके स्थित होतेहैं २८ हे राजन्॥

वा॰ सा॰ प्रकार करके निंदित करते हैं यह इस्त्रीयां क्या हैं अत्यंत क्लेशकों देने हारियांहै इन्ह की शोभा कैसी है कछुभी नहीं है यह नरक का स्थानहै २॰ हेराजन् श्रीरामचंद्र जी जो हैं सो उत्तम भोजन कों उत्तम शय्या कों उत्तम हाथी घोड़ा रथकी सवारियों को उत्तम विलास स्नानकी सामग्रीकों उत्तम खिलौनोंकों विरक्त पुरुषकी न्याईं पसंद नहीं करतेहैं २१ मेरे को संपदा करके सुखक्याहै विपदा करके दुःखक्या है गृह करके अनेक प्रकार के उत्तम चे ष्टा करके क्या प्रयोजन है यह सभही असत्य है ऐसे कहि करके चुप्प होय रहेहैं २२ हेराजन् रामचंद्रजी हास विलासों विषें प्रसन्न नहीं होतेहैं अरु भोग पदार्थों विषें मग्न नहीं होते हैं कार्य्य करने विषें उद्यम नहीं करते हैं केवल मौनकोंही धारण करते हैं हेराजन् सुंदर चंचल हैलताकी न्याईं अलकां जिन्हकियां अरु अनेक भावों करके चंचल हैं अरु नेत्र जिन्हके ऐसीयां स्त्रीयां रामचंद्रजी को आनंद नहीं करतियां हैं जैसे हरिणियां

वा·सा· मंदिरों मेहलों विषे इस्त्रियां हैं सो रामचंद्रजी को फूलाओं ने वास्ते फूलना करतियां
६ हैं तिन्ह के साथ भी क्रीड़ा नही करते हैं जैसे वर्षा की धारा साथ बबीहा खेलताहै तैसे
भोग पदार्थोंमों प्रीती नहीं करतेहैं ऐसा विरक्तहै ८ हेराजन् मनिगणों करके खचित मुकट
कंकणादिक भूषणों की सामग्री रामचंद्रजी को प्रीति नही करती है जैसे नक्षत्र तारागं
ण स्वर्ग तें अपने गिरने को नही प्रीत करते ७ पृथिवी के भोगों को तुच्छ मानतेहैं हेराजन्
क्रीडा करतियां इस्त्रीओं के देखनेसों बहते हुवे पुष्पोंकी सुगंधी वाले पवनों विषें शोभायमान
कुंजभवनों विषें रामचंद्रजी अत्यंत खेदकों प्राप्त होते हैं ८ जोनसा राजा लोगों के भोगने
योग्य पदार्थ हैं अत्यंत स्वाद वालाहै अत्यंत सुंदर है मन को हरने हारा है तिसको देखक
र मानों अंसूजल करके नेत्र भरे गयेहैं ऐसे रामचंद्रजी उसी पदार्थ करके खेदको प्राप्त हो
तेहैं ९ हेराजन् श्रीरामचंद्र जी नृत्य विलासों विषें नगर किंवा वेश्याओंको देख करके इस

के प्रति जिस प्रकार का उपदेश किया है तिस उपदेश को तुम मेरे प्रति कहो तुम द
यारूपी अमृतके समुद्र हो १२ श्रीबालमीकीजी कहते हैं हेशिष्य जिस समय विश्वामित्र जी
अपने यज्ञकी रक्षा के लिये श्रीरामचंद्रजी को ले जाने को राजादशरथ के पास आये हैं तिस
समय में श्रीराजा रामचंद्रजी के सेवकों को पूछता भया रामचंद्र जी कहां हैं अरु क्या
करते हैं तब श्रीरामचंद्र जी के सेवक राजा रामचंद्र जी का वैराग्य कहते भये १३
हे राजन् श्रीरामचंद्र जी अपने दिन के भोजनादि व्यवहार को हमारे यत्न करके बहु
त बेनती करके सायंकाल विषे प्रसन्न वदन होय करके किसी समयमें करतेहैं अथ
वा किसी समयमें नहीं भी करते हैं ऐसे विरक्त जैसे जानीदे हैं १४ स्नान विषे देवताकी पूजा
विषे अरु दान विषे भोजनादिकों विषे दुःखी मन जैसे जानीदे हैं हमारी बिनती करकेभी तृ
प्त पर्यंत भोजन नहीं करतेहैं खान पान सें भी विरक्त जानीदे हैं १५ हे राजन् चंचल जो

वा·म·रामचंद्र देह के अभिमान को नहीं करता है राजा होने की भी वांछा नहीं करता
९ है सुख दुःखादि वृत्तिओं विषें हर्ष शोक नहीं करता है २९ हे राजन् रामचंद्र जी
दिन दिन प्रति पीले वर्ण कों प्राप्त होता है अरु दिन २ प्रति वैराग्यकों प्राप्त होताहै
जैसे शरदऋतु के अंतमें वृक्षपत्र पुष्प फलों करके रहित होता है तैसें विषय भोग की
वृत्तिनें रहित भयाहै अरु निर्वासन भया है ३० हे राजन् रामचंद्र अपने पास बैठे प्रीति
वाले सुहृत जन को ऐसे शिक्षा करता है हे भाई तूं भोगों विषें मन को मत कर
यह भोग देखने मात्रही सुंदरहै अंतकालमों शोक दुःख को देने हारे है ३१ हे राजन्
रामचंद्र जी अनेक प्रकार के ऐश्वर्य भूषण कर शोभाय मान भई कथा प्रसंग
सो सभामों प्राप्त भई स्त्रियों विषें आत्म नाश को नहीं प्राप्तभये को देखताहै स्त्री प्रसंग
सो करके आत्माका विस्मरण होताहै ३२ हे राजन् रामचंद्र संसारके कार्यमों आसक्त भये

लोकनकों ऐसे कहना है यह लोकोंने परमानंदकी प्राप्तिके साधन विना काम भोग की अनेक चेष्टा करके हथा आयुषा गवाईहै ३३ हेराजन् रामचंद्र राज्य प्राप्ति से विरक्त मन हैं तुम चक्रवर्ती राजाबनों ऐसे कहने अपने सेवक कों बकवाद करते विक्षिप्त पुरुष को जेसे लोक हसना है ऐसे हसना है अरु आदर नहीं करना है ३४ हेराजन् श्रीरामचंद्र जी किसी के कहे हुवे वचन को नहीं श्रवण करता है आगे आप प्राप्त भये को देखना भी नहीं है ऑन से संसार में उत्तम पदार्थ है तिन्ह मों सर्वत्र अनादर करता है जेसे सोवते पुरुष को पदार्थ का ज्ञान नहीं होताहै ऐसे रामचंद्र जी को वैराग्य करके कछुभी नहीं भासताहै ३५ जो श्रीरामचंद्रजी आकाश विषे कमल को देखे अथवा आकाश में हक्षों के महा बन को देखे तो भी यह माया का विलास ऐसाही है ऐसे मन मों विचार करके आश्चर्य कों नहीं मान

वा·सा· ताहै ३६ हे राजन् श्रीरामचंद्रजी सुंदर स्त्रीयोंके बीच स्थित होता है तो भी कामदे-
११ वके बान श्रीरामचंद्र जी के मन को वेध नहीं करते हैं जैसे पक्की शिलाको वर्षा ज-
ल कियां धारां नहीं प्रवेश करतियां हैं ३७ हे राजन् रामचंद्र ऐसा विचार करके आपना-
सर्वस्व अर्थि जनों कों देने चाहता है यह धन आपदा का मुख्य निवास है हे मन-
तूं धन की वांछा कों करता है यह बाकी कछु नहीं रहेगा धनका त्यागना चंगा है ३८
हे राजन् श्रीरामचंद्र इस प्रकार के श्लोकों को गायन करते हैं यह आपदाहै यह सं-
पदा है यह मनकी कल्पना से मोह उदय भयाहै सच्चा नहीं है ३९ हेराजन् रामचंद्र वैरा-
ग्य करके ऐसा कहता है यह लोक दुःखकों पाइ कर ऐसा कर लावता है मैं मराहूं मैं अ-
नाथहूं तदभी वैराग्य कों प्राप्त नहीं होताहै यह आश्चर्य है ४० हेराजन् रामचंद्र अपने कोउ-
पदेश करने को आपकों राजाकों अथवा ब्राह्मणकों आगे देखकर मूर्खकी न्याई आदर नहीं

यो॰ वा॰ कर्मोहै भली तरां जानता भी नहीं है ऐसी एकाग्रताकों प्राप्त भयाहै ४१ हेराजन् श्री
१२ रामचंद्र यह निश्चय करके स्थिर चित्त भया है जौंनसा यह जगत नाम करके इंद्र जा
ल विस्तारको प्राप्त भया है सो सत्य नहीं है झूठाही उदय भयाहै ४२ हेराजन् रामचंद्रकों
शत्रु विषें आपने आप विषें राज्य विषें माता विषें संपदा करके विपदा करके बाहिर
के पदार्थों विषें आदर अनादर कोई नहीहै ४३ हेराजन् रामचंद्रजी अंतः करण विषें य
ह निश्चय करता है मेरे को धन करके अरु माता करके राज्य करके जगत की चेष्टा
करके क्या अर्थ है अरु प्राण त्याग करने कों भी तत्पर भया है ४४ हेराजन् श्रीरामचं
द्रजी भोगों विषें अरु जीवने की आयुषा विषें राज्य विषें मित्र विषें अरु पिता
विषें अरु माता विषें उदासीनता को धारता है जैसे पराये घर विषें उदासीनता
होती है श्रीरामचंद्र जीने ऐसी उदासीनता करी है ४५ हेराजन् रामचंद्रजी का ऐसा

स्वभाव भया है अब श्रीरामचंद्रजी को संपूर्ण ऐश्वर्य सहित जितना संसार के पदार्थों का जाल है सो नागफांसी सिरीषा भासता है ॥४६॥ इसते उपरंत राजा दशरथ ने रामजी को सभा में बुलाया तो सभामें आये श्रीरामचंद्रजी को विश्वामित्र जीने प्रश्न किया हे रामचंद्रजी तुमने खेद की अवस्था क्यों धारण करी है तो श्रीरामचंद्रजी अपने विचार को विश्वामित्र प्रति कहते भये ॥४७॥ श्रीरामचंद्रउवाच हे मुने यह संसार में सुख क्या है संसार की उत्पत्ति का विस्तार क्या है इसका नाश क्या है लोग मरण के लिये जन्म लेता है अरु जन्म के लिये मरता है ॥४८॥ हे मुने यह जगत के भाव केवल अपनी मन की कल्पना करके आपसमों मिलते हैं कैसे हैं लोहा की सिलाका सिरीषे आपसमों भिन्न भिन्न हैं ॥४९॥ हे मुने कूठी मन की कल्पना करके हम लोग खेंचे गये हैं कैसे जैसे रेतीमों सूर्यकी

किरणों की चमक करके जल की भ्रांति होती है तो मृग जल की तृस्ना करके दौड़ जाइ प्राप्त होते हैं ॥ ५० ॥ हे मुने मेरे को राज्य करके क्या सुख है अरु भोगों करके हर्ष क्या है मैं कौन हूं मेरे को यह कौन वस्तु प्राप्त भयी है जो मिथ्या पदार्थ है सो मिथ्याही होवे इन्ह पदार्थों में किसको कौन नाम करके कौन फल प्राप्त भया है ॥ ५१ ॥ हे मुने ऐसे विचार करते मेरे को जगत के सभ भावों में विरक्ती आई है जैसे मुसाफर को निर्जल देशमों विरक्ति होती है ॥ ५२ ॥ हे मुने यह लोक जड़ जैसे हैं प्राणरूपी पवनों करके वृथा स्वास शब्द करते हैं जैसे बन विषे पवन करके पोले बांस शब्द करते हैं ॥ ५३ ॥ हे मुने यह संसार दुःख कैसे शांत होये ऐसी चिंता करके मैं तपिआ हूं जैसे पुराणा वृक्ष अपने कोटर मों प्राप्त भई उग्र अग्नि करके दग्ध होता है ॥ ५४ ॥ हे मुने यह संसार के दुःख रूपी पथरों करके मेरा हृदय

व॰ स्रा॰ भया है में अपने लोकों की लज्जा के भयते अस्तु प्रकट करके रोदन नहीं करता हूं ॥
१५ ॥५५॥ हे मुने यह धन जो है सो चिंता समूह के चक्र फिरते हैं शृद्द जो है सो आपदा रूप इस्त्रीयों के उत्पत्तिस्थान है मेरे को आनंद नहीं करते हैं ॥ ५६ ॥ हे मुने यह लोक अपने पराये में तब लग कोमल हृत्ति करके वर्त्तमान हैं जब लग लक्ष्मी के मद करके कठोर नहीं भया है जैसे पवन के वेग करके ओस उड़ जाती है ऐसे लक्ष्मी मद करके शील उड़ जाता है ॥ ५७॥ हे मुने लोक भा में पंडित होइ अरु बीर होवे या उपकारी होवे अथवा शीलवंत होवे तो भी लक्ष्मी का मद सभ को मलीन कर देता है जैसे गरद की मुठी करके मणी मलीन होती है ॥ ५८ ॥ हे मुने पुरुष संपदा वाला होय जिस में अन्याय अरु गर्व अरु बल अरु व्यसन अरु पाप नहीं होवे और लोक जिसकी निंदा नहीं करे और जो पुरुष शूरवीर होवे आपनी स्तुति नहीं करे और जो राजा होवे

व॰मा॰
१६

न्याय करने को समदर्शी होवे यह तीन पुरुष संसार में दुर्लभ हैं ॥५८॥ हे मुने यह ल-
क्ष्मी देषने में सुंदर है चित्त वृत्ति को खेंच लेती है अरु कृपनों के आधीन रहती है क्षण
मात्र में नष्ट होती है सर्पिणी की न्यांई चित्त वृत्ति को घेर लेती है जैसे फल पुष्पों करके
युक्त लतापास के वृक्ष को घेर लेती है ॥६०॥ हे मुने आयुषा नये दल के अग्र भाग में
स्थित भई जलबिंदु के न्यांई चंचल है जैसे कोई विदिम पुरुष अकस्मात् घर को त्याग
कर चला जाता है तैसे आयुषा शरीर को अकस्मात त्याग कर जाती है ॥६१॥ हे मुने
विषय रूपी सर्पों का प्रसंग करके जिन्ह पुरुषों के चित्त शिथल होगये हैं तिन्ह पुरुषों
को आत्मा का विवेक कुछ नहीं भया है तिन्हका जीवना दुःखों का कारण है ॥६२॥
हे मुने हमने देह का स्वरूप जान लिया है निश्चय मान लिया है अब संसार रूपी घटा
में बिजुली की न्याई चंचल ऐसी आयुषा में आनंद नहीं मानते हैं॥६३॥ हे मुने जो पुरुष

पवन के रोकने को योग्य मानें आकाश के छेडने के योग्य मानें तरंगों को पकडने को योग्य मानें सो पुरुष आयुषा की स्थिरता को योग्य मानें ॥ ९४ ॥ हे मुने जिस जीवने करके परमात्मा वस्तु की प्राप्ति होवे जिस करके फेर शोक नही करना वने जोंनसा जीवना परमआनंद की प्राप्तिका स्थान है सो उत्तम जीवना कह्या है ॥ ९५ ॥ हे मुने हुक्षभी जीवते हैं मृग पंछी भी जीवते हैं जिस का मन अपने संकल्प विकल्प रूपी मन न व्यापारतें रहित होय करके स्थिर होय गया है सोही जीवना है ॥ ९६ ॥ हे मुने जगत विषें सो ही जीव जन्मे हें तिन्ह का जीवना सफल है जोंन से यहां फिर जन्म नहीं लेते हैं और सभ ही आवा गमन के गये हैं ॥ ९७ ॥ हे मुने निर्विवे की पुरुष को शास्त्र पठना भार है राग द्वेष वाले को तत्त्व ज्ञान भार करता है जिसको शांति नहीं है तिसको मन की कल्पना भार करती है जिसको आत्मज्ञान नहीं है तिसको देह अपना भारा है उसको मोक्ष सुख

प्राप्त नही होता है ॥६८॥ हे मुने सुंदर रूप अरु आयुषा अरु मन अरु बुद्धि अरु अहंकार और इच्छा कीये हुये मनोरथ जो हैं यह सभही दुर्बुद्धि पुरुष को दुःख देने हारे हैं जैसे भार उठावने वाले को आपही उठाया हुआ भार दुःख देता है ॥६९॥ हे मुने जौंनसा दीर्घ दुःख है अरु अत्यंतउग्र दुःख है अरु भारी दुःख है सो सभही अहंकार से प्रकट भये हैं जैसे खदिर वृक्ष से अंगारे प्रकट होते हैं ॥७०॥ हे मुने अहंकार के वशतें जो जो मैंने भोगिआ है अरु जोजो होम किया है अरु जोजो कर्म किया है सोसो सभही मिथ्या है अहंकार से रहित हो नाही सत्य पदार्थ को प्राप्त करता है ॥७१॥ हे मुने सो अहंकार चिरकाल का उग्र वैरी है तिसको धार कर मैं भोजन नहीं करता हूं अरु जलपान नहीं करता हूं भोगों को कैसे भोग करों ॥७२॥ हे मुने पुत्र अरु मित्र अरु इस्त्रियाद् जगत का विस्तार आत्म ज्ञान बिना अहंकार नाम वैरिने पसारिया है ॥७३॥ हे मुने अहंकार करके यत्न करके

व॰ सा॰
१९

जो जो किया है सो सो सर्व आपदा का स्थान है अरु असत्य है अंतःकरण में उपाधिभूत है उत्तम गुणों से रहित है तो हे मुने अहंकार को त्यागकर जो मैने करना है सो उपदेश तुम मेरेको करो॥७४॥ हे मुने यह चित्त कियां शुभ वृत्तियां अनेक कल्पना रूप शय्या विषें लीन भईयां हैं अरु अब लग सावधान नहीं होतियां हैं तिस कारण कर मैं संताप को प्राप्त भया हूं॥७५॥ हे मुने समुद्र के पान करने तें अरु सुमेरुपर्वत के उठावने तें अरु अग्नि के भक्षण करने तें भी चित्त का रोक बड़ा कठिन है तिसतें चित्त यत्न करके रोकने योग्य है॥७६॥ हे मुने चित्त जगत के पदार्थों का कारण है अरु चित्त के होनेते त्रैलोक्य बना है अरु चित्त के क्षीण भयेते त्रैलोक्य क्षीण होता है चित्त यत्न करके जीतने योग्य है॥७७॥ हे मुने अनेक जगत के सुख चित्त सें प्रकट होते हैं अरु विवेक बलते चित्त शांत भयेते सुखदुःख सभ शांत होते हैं॥७८॥ हे मुने तृष्णा नाम वाली विषज्वाला करके में दग्ध भया

हूं जैसे तृष्णा रूपी ज्वाला का संताप शांत होवे सो मेरे को अमृत के सिंचन करके भी नहीं बन ताहै ॥७९॥ हे मुने अपनी आत्मा पदवी प्राप्त होने को हमारी बुद्धि समर्थ नहीं है हम लोक चिंता के जालमें मोहित भये हैं जैसे जाला विषें पंछी फसजाता है ॥८०॥ हे मुने यह लोक चिंता त्याग करके दुःख कों त्याग करना है तृष्णा रूपी विसूचिका को दूर करने को चिंता त्याग करना ही महामंत्र कहेया है ॥८१॥ हे मुने यह तृष्णा रोग पीडा की इस्त्री है सो गंभीर मन वाले पुरुष कों भी अपने वश करलेती है जैसे सूर्य कीयां किरणां कम-लकों अपने सन्मुख करलेती हैं ॥८२॥ हे मुने तरवार की धारा अरु वज्र की ज्वाला अरु तपे हुवे लोहे कीयां चिनगां तैसी तीक्ष्णा नहीं हैं जैसे हृदय विषे स्थित भई तृष्णा तीक्ष्णा है ॥८३॥ हे मुने यह तृष्णा एकही है त्रैलोक्य को निशानों की न्याईं वेध करती हैं देह वि-षे स्थित है तो भी लखी नहीं जाती है संसार समुद्र सें ऐसे प्रकट भई है जैसे क्षीर समुद्रसें

मदिरा प्रकट भई है ॥८४॥ हे मुने यह कलेवर ही अहंकार रूपी पुरुष का घर है सो भा
में नष्ट होवे भावें रहे मेरेको इस करके कोई अर्थ नहीं है ॥८५॥ हे मुने यह देह रूपी घर
कैसा है मल करके युक्त ऐसे विष समूह के भांडेओं के संग्रह वाला है अरु अज्ञान रूपी
खारे द्रव्य करके भरा है सो मेरेको प्रिय नहीं है ॥८६॥ जिह्वा रूपी वानरीने रोकआ मुख
रूपी द्वार करके भयान के दंतादिक हडीआं प्रत्यक्ष ही देखी परती हैं ऐसा देह रूपी घर मेरे
को प्रिय नहीं है ॥८७॥ नखरूपी खुपरी नामे कीडेंकाय रहे कुत्तेके भौंकने न्याई श्वासश-
ब्दवालाहै ऐसा देह रूपी घर मेरे को प्रिय नहीं है ॥८८॥ समस्त रोगों का स्थान है त्रिवली
आं अरु चिटे केशोंका नगर है समस्त दुःखरूपी शत्रुन का घेरने का घर है ऐसा देहरू-
पी घर मेरेको प्रिय नहीं है ॥८९॥ हे मुने मरण के समय मों जौनसे देह गेह इंद्रिय
धनादिक जीव के साथ नहीं होते है सो सभ ही कृतघ्न है तिन्ह विषे बुद्धिवान पुरुषों

कों क्या विश्वास है॥९०॥हे मुने यह देह वृद्धावस्था मों वृद्ध होता है अरु मरण समय मों मृत होता है अरु भोगवान को अरु दरिद्र कों देह एक समान है॥९१॥ हे मुने जौंन से देह मो दृढ विश्वास करते हैं अरु जौंनसे जगत की स्थितिमों नित्यता मानते हैं सो पुरुष मोह-रूपी मदिरा करके मतवाले हैं तिह्नको वार वार धिककार है॥९२॥ हे मुने देह का मैं नहीं मेरा देह नहीं ना यह मेरा है ना मैं इसका हों ऐसे निश्चय वाले जो है सो उत्तम पुरुष हैं हे मुने जिसने बिजुली बिषे शरद ऋतुके बदल मों गंधर्व नगर मों जिसने स्थिरता मानी है सो देह को भी नित्य माने॥९३॥ हे मुने चंचल है स्वरूप जिस का अनेक कार्य भार तिसके तरंग हैं ऐसे संसार समुद्र मों जन्म पाय करके बालक अवस्था के बल दुःख देने वाली है॥९४॥ हे मुने जौंनसीयां चिंता बालक अवस्था में हृदय को पीडा करतियां हैं सो चिंता मरणे मोभी नहींहैं न वृद्धावस्थामो हैं ना रोगपीडामों हैं ना आपदामो हैं ना योवन मो है ९६

हे मुने जौंनसे बालक अवस्थाकों सुंदर मानते हैं सो मूढहैं अरु व्यर्थ बुद्धि है तिन्ह का चित्त नष्ट भया है उन्हको धिक्कार है ॥९७॥ हे मुने मन स्वभावतें चंचल है बालपना उसतेंभी चंचल है सो दोनों जब मिले तो चंचलतातें कौन बचावने वाला है ॥९८॥ हे मुने इस्त्रीयों के नेत्रोंने अरु बिजुलीके पुंजोंने अरु अग्निकी ज्वाला पुंजोंने अरु तरंगोंने बालपनातें चंचलता लीनी है ॥९९॥ हे मुने बालपना में गुरुतें भय होता है अरु माता पितातें भय होताहै लोकोंतें भय होताहै अरु बड़े बालकतें भय होता है अरु बालपना भय का घरहै ॥१००॥ हे मुने महानरकों का बीज है सदैव भय देने हारा है ऐसे यौवन करके जौंनसे नहीं नष्ट भये हैं सो और किसी करके नहीं नष्ट होते हैं ॥१०१॥ हे मुने हृदय विषे अंधेरा करने हारीहै ऐसी यौवन रूपी जो अज्ञानकी रात्रिहै तिसतें भयानक रूप वाला शिव पीडरता है ॥१०२॥ हे मुने बुद्धि निर्मलभी है विशालभी है जितनीहै तितनी यौवन करके

मलीन होतीहै जैसे वर्षा ऋतुमें नदी मलीन जल होती है ॥१०३॥ हे मुने सो इस्त्री सुंद-
रहैं सो कुचभारे हैं सो उत्तम बिलास हैं सो सुंदर मुखहै ऐसी चिंता करके यौवनमें मन
जीर्ण होताहै ॥१०४॥ हे मुने यौवन जैसे जैसे चढता जाताहै तैसे तैसे कामवासना आ-
त्मविचार के नाश वास्ते विस्तार को प्राप्त होतियां हैं ॥१०५॥ हे मुने तब लग रागद्वेष रू
पी पिशाच वर्त्तमान होतेहैं जब लग यौवन रूपी रात्रि संपूर्ण अस्त नहीं होती है ॥१०६॥
हे मुने जोनसा विनय करके शोभायमान है अरु उत्तम लोकोंका आश्रय है दया करके
उज्वल भया है अरु गुणों करके युक्त है ऐसा यौवन दुर्लभ है जैसे आकाश विषे बन
दुर्लभहै ॥१०७॥ हे मुने इस्त्रीमांस की पुतली है अंगोंका पिंजर बनाहै नाडी अरु अस्थी-
यां इन्हें करके रचना करीहै ऐसी इस्त्री के शरीर में सुंदर वस्तुक्या है ॥१०८॥ हे मुने
कामी पुरुषको प्रश्नहै हे भाई त्वचा मांस कफ रक्त जल अरु नेत्र इन्हको भिन्न भिन्न

करके देखले इस्त्री मों क्या सुंदरता है तूं क्यों ह्रथा मोहित भया है॥९९॥ हे मुने यह पुरुष रूपी हाथी है सो इस्त्री रूपी मान सरोवर मों लीन भये हैं तीक्षण शाम रूपी अंकुशों करके भी सावधान नहीं होते हैं॥१०॥ हे मुने यह इस्त्रीयां केशरूपी शिखा धारण करतियां हैं स्पर्श करने को महा कठिन हैं देखनेमों ही प्रियहैं पापरूपी अग्निकियां ज्वाला हैं पुरुषको तृणकी न्यांई दग्ध करतियां हैं॥११॥ हे मुने यह इस्त्रीयां कैसी हैं दूरमोंही प्रज्वलित भई हैं ऐसे नरक रूपी अग्नि प्रचंड करने कियां घोर समिधांहैं॥१२॥ हे मुने यह संसार मों जन्म रूपी सरोवर हैं तिनमों पुरुष रूपी मछ हैं सो चित्त रूपी कीन्चड़मों फस करके भ्रमते हैं तिनके पकडने वास्ते काम बासना रूपी डोरी बनी है अरु इस्त्रीयां लोहेके कुंडेके आगे आटेकियां पिंडी बनीयां हैं॥१३॥ हे मुने यह इस्त्रीयां संसर्ग दोष रूपी रत्नोंकी पिटारीयां हैं अरु दुःखोंकी संगली है इस करके मेरेको क्या प्रयोजन है॥१४॥ हे मुने

जिसके इस्त्री है तिसको भोगोंकी इच्छा होती है इस्त्री रहित पुरुषको भोगोंका कहां ठिकाना है इस्त्रीको त्याग करके जगत का त्याग होता है फिर जगतको त्याग करके सुखी होता है ॥ १५ ॥ हे मुने यह भोग देखने मात्र सुंदर हैं अरु तरे नहीं जाते हैं अरु चंचल हैं मरण रोग वृद्धावस्था इनके भयतें मैं भोगोंका यत्न नहीं करता हूं अरु प्रीतिभी नहीं करता हूं अरु शांतिको पाय करके परमपदवी कों प्राप्त होओंगा ॥ १६ ॥ हे मुने बालकपना को शिताबी जवानी ग्रसती है अरु युवा को जरा ग्रसती है इन्हकी आपसमें बड़ी कठोरताकों तुम देखो ॥ १७ ॥ हे मुने वृद्ध पुरुषको अपने चाकर अरु पुत्र अरु इस्त्रीयां अरु बांधव अरु सुहृत विदितमूढ़ पुरुषकी न्याईं समझी हसते हैं अनादर करते हैं ॥ १८ ॥ हे मुने वृद्ध पुरुषको एक तृष्णा बढ़ती है सो तृष्णा कैसी है अदीनता दोष करके भरी है अरु अपार है अरु हृदय को संताप के देने हारी है संपूर्ण आपदाको अकेली आप सहाय करने हारी है ॥ १९ ॥ हे मुने

अब मैंने क्या करना है परलोकमों मेरेको बहुत कष्ट प्राप्त होवेगा वृद्धावस्थामें ऐसा भय आय कर प्राप्त होता है कैसा है जिसको दूर करने का कोई उपाय नहीं है ॥ २० ॥ हे मुने मैं कौन हूं मेरेको कोई नहीं मानता है मैं अब कुछ नहीं कर सकता हूं चुपकेसे बैठा है ऐसी दीनता वृद्ध पुरुष को प्रकट होती है ॥ २१ ॥ हे मुने अब मेरे को स्वाद वाला भोजन अपने घरते किस समयमों कैसे प्राप्त होवेगा ऐसे प्रकार करके वृद्धावस्था दिन रात्रिमें चित्तको दाह करती रहती है ॥ २२ ॥ हे मुने वृद्धावस्था मरण रूपी राजाकी सेना चली आती है वह कैसी है धौले केशादी चामर हैं जिसका अनेक चिंता अरु रोग करके जिसके निशान हैं ॥ २३ ॥ हे मुने वृद्धावस्था रूपी ओस करके शीतल भया है ऐसे देह रूपी मंदिर में इंद्रियां रूपी बालक चलने को समर्थ नहीं होते हैं ॥ २४ ॥ हे मुने वृद्धावस्था रूपी चूना का लेप करके चिट्टे भये देह रूपी महिल के अंदर शिथिलता अरु पीड़ा अरु आपदा

यह तीन तायका सुख करके निरास करती है॥२५॥ हे मुने वृद्धावस्था करके जो जीवना
है सो दुष्ट जीवना है ऐसे जीवन करके क्या जीवना है वृद्धावस्था जगत में किसी पुरुषने
नहीं जीती है कैसी है संपूर्ण परलोक की वासनाको दूर कर जड़ करती है॥२६॥ हे मुने
यह जरा तृणको अरु रेणुको अरु इंद्रको अरु सुमेरुको अरु पत्रकों समुद्रको यह जरा स
भकों जीर्ण करके निगल लेती है अरु अपने उदरको सभ पदार्थों करके भर लेती है॥ २७
हे मुने इस जगत में ऐसा पदार्थ कोई नहीं है जिसको सर्व भक्षी जो काल है सो ग्रास
नहीं करता है जैसे वडवानल जो अग्नि है सो समुद्र के जलको नाश करती है अरु भस्म
करदेती है॥२८॥ हे मुने यह काल भगवान महात्मा ब्रह्मादिकों को भी क्षणमात्र भी
नहीं देखता है अरु यह काल अनेक प्रकारकी विश्वको ग्रस लेता है अरु कालही विश्व
रूपताको प्राप्त भयाहै॥२९॥ हे मुने यह जो काल है सो भूतरूपी जो मछर हैं तिन्ह का

उडंबर हच्छ बना है अरु वह कैसे है भूत रूपी मछर ता गुमात्र में नाश होने वाले हैं तिन्ह करके भरे हुवे जो अनेक ब्रह्मांड हैं तिन्ह का ऊंबल हच्छ बना है ॥३०॥ हे मुने जिन्ह गुणों करके लोक रूपी रत्नमाला सर्ण होती है अरु काल तिसी को अपने अंग की शोभा वास्ते सर्वभूतों का वारं वार संहार करता है ॥३१॥ हे मुने दिशाभी शून्य होती हैं अरु देशभी उलट पलट होते हैं अरु पर्वत भी चूर्ण होते हैं यह सभ काल की गत है हमारे शरीरों की कौन गिणती है ॥३२॥ हे मुने काल करके स्वर्गभी नष्ट होता है अरु आकाश भी लीन होता है अरु पृथवी भी क्षीण होती है इस लोकों में कौनसी स्थिरता है ॥३३॥ हे मुने काल करके समुद्रभी शुष्क होजाते हैं अरु तारामंडभी गिर जाता है जोगासिद्ध अरु तपसिद्ध भी नाशको प्राप्त होते हैं अरु हमारी क्या गिनती है ॥३४॥ हे मुने दैत्य दानवभी चूर्ण होते हैं अरु काल करके ध्रुव अपनी ध्रुवपदवी से गिरता है

अरु अमररुद्रवेभी मरजाते हैं अरु हमारी क्या गती है ॥३५॥ हे मुने कालने इंद्रभी मुलों करके ग्रहण करीदा है यमभी फांसीओं करके बांधीदा है अरु पवन भी चलनेतें रहित होताहै अरु कालमें हम क्या वस्तु हैं ॥३६॥ हे मुने काल चंद्रमाभी आकाशमें लीन होता है अरु सूर्यभी खंडित होताहै अरु अग्निभी मग्न होती है तिसतें हमारी क्या गिनती नहीं है ३७ हे मुने कालतें ब्रह्माभी संहारको प्राप्त होताहै अरु विस्नुभी प्रलयको प्राप्त होताहै अरु शिवभी अभाव को प्राप्त होताहै हमारी क्या संख्याहै ॥३८॥ हे मुने यह जगत का स्वरूप सुंदरभी है तोभी इसमें एक ओर दुःख है अरु ऐसा कोई आनन्द को करने वाला अरथ- उपदार्थ नहीं जिस करके चित्त विश्रामको प्राप्त होवे ॥३९॥ हे मुने बालका पन खेलने मो ही जाता है अरु यौवन विषे मनरूपी हरणा इस्त्री रूपी कंदरामों जायकर जर्जर होता है अरु वृद्धावस्था करके शरीर जीर्ण होताहै लोक वृथा दुःख भोगताहै ॥४०॥

हे मुने वृद्धावस्था रूपी तुषार करके सुक गई है अरु ऐसी देह रूपी कमलनी को छो
ड करके जीव रूपी भ्रमर क्षणमात्र मों चलागिया है तो यह संसार रूपी लोक का
सरोवर शुष्क होगिया है॥४१॥ हे मुने यवयव यह पुराणा होता है तब तब मृत्यु शरीरमों
अति प्रीति करता है अरु वृद्धावस्था रूपी बेल नये पत्रों करके बढती है अरु देहरूपी बे
ल मनुष्यों की शुष्क होजाती है॥४२॥ हे मुने तृष्णा नदी उग्रवेग वाली है अनेक पदार्थों
कों बहाय कर लेजाती है तट विषें संतोष रूपी वृक्षों कों ढाइकर बहती है॥४३॥ हे मुने
यह देह रूपी बेड़ी है अरु वह त्वचा चर्म करके मडी है संसार समुद्र मों डोलती है अ
रु पंच प्राण पवनों करके थरथराती है अरु इंद्रियां रूपी मकरों ने डुबाय दी है॥४४॥ हे
मुने यह मन रूपी मृग है सो तृष्णा रूपी लताओं के बनमों फिरता है अनेक कामनारूपी
शाखाके सैंकड़े गह्वरोमे भ्रमते हैं अरु कालक्षेपना करते हैं सो किस फलको प्राप्तहोते हैं ४५

हे मुने ऐसे जो महात्मा पुरुष संसार में सो दुर्लभ हैं वह कैसे हैं अत्यंत कष्ट में अरु खेद करके अरु मोह करके रहित हैं अरु सुखकी प्राप्ति विषे हर्षको अरु गर्वको नहीं धारण करते अरु वह कैसे हैं इस्त्रीयों करके जिनका अंतःकारण नहीं जीतिया गया है॥४६॥ हे मुने जौन से पुरुष रणरूपी समुद्रको तर जाते हैं कैसा है हाथीयों की घटाही भारी तरंग हैं जिसके उन्ह कोमें सूरबीर नहीं अरु मानता हों जौनसे मन है तरंग जिसका ऐसे देह अरु इंद्रियोंके समुद्रको तरे तिसको मैं सूरबीर मानताहूं॥४७॥ हे मुने ऐसी किसीकी भी कोई क्रिया नहीं देखी है वह कैसी है जिसमों आद सें लेकर फलपर्यंत क्लेश नहीं है अरु जिसमें दुष्ट आशा करके चित्तकी हानि नहीं भारी है अरु जिसको प्राप्त होयकर लोक विश्राम को प्राप्त होते हैं॥४८ हे मुने ऐसे पुरुष जगत में दुर्लभ हैं जौनसे कीर्त्ति करके पुरुष जगत को पूर्ण करते हैं अरु प्रतापों करके चारो दिशाओं को पूर्ण करते हैं अरु संपदा करके घरको पूर्ण करते हैं—

अपने पराक्रम करके लक्ष्मी उपार्जन करते हैं अरु अखंड है धैर्य जिनका ॥४९॥ हे मुने भावें यह पुरुष पर्वतों के किलियों में रहे अरु भावें वज्र के बने घर के अंदर रहे तोभी संपूर्ण आपदा अरु संपदा जौनसी प्राप्त होनी है सो जहां रहे तहांही आपही वेग करके बहुत शिताबी आय प्राप्त होती है॥५०॥ हे मुने वृद्धावस्था करके युक्त जो पुरुष हैं सो बडे विषाद करके युक्त होता है अरु बड़े दुःख की अवस्था कों प्राप्त भया है अरु देह की अंत कालकी अवस्था में अरु अपने पीछे धर्म करके रहित जो भाव किये है तिन्हको सिमरण कर्ता है अंतःकरण में दग्ध होता है॥५१॥ हे मुने धर्म अर्थ काम इन्हकी प्राप्तिने किया है अरु मोक्षमार्ग का विघ्न जिन्होंने ऐसी क्रिया करने करके पहिले वृथा दिनों कों व्यतीत करके यह जो पुरुषों का चित्त है सो कैसा है चंचल मयूर के परों सरीखा चंचल हैं अरु अब किस उपाय करके विश्राम कों प्राप्त होवे॥५२॥ हे मुने यह लोक अपने कर्मों

के फलों करके आपही वंचना को प्राप्त होता है अरु कैसे हैं क्रिया फल आगे आय कर प्रा-
प्त भये हैं अरु तौभी प्राप्त नहीं भये जैसे हैं नदी के भारी तरंगों की न्याई चंचल हैं अरु देव
वशते प्राप्त भये हैं अरु उलटे हैं लोक सुखको चाहते तौभी कर्म फल दुःख देते हैं॥ ५३
हे मुने यह कार्य किये हैं अरु यह करने हैं यह हमारी भावना में है यह हमारे कार्य
हमको निरंतर भले हैं इस प्रकार इस्त्रीयों के साथ वार्त्ता करते लोकके चित्त को वृद्धावस्था
पर्यंत अनेक कार्य जीर्ण करते हैं॥ ५४॥ हे मुने जैसे वृक्षों के पत्र पुराणे समय करके गि
रते हैं अरु फ़िर इकट्ठे होय कर नये पत्र प्रकट होते हैं अरु फ़िर गिर पड़ते हैं ऐसे विवे
क रहित जो लोक हैं सो अनेक दिनों कर उत्पन्न होयकर आपसमें मिलकर कितने दि-
नों कर नाश को प्राप्त होते हैं॥ ५५॥ हे मुने दिन में इधर उधर चारो तरफ़ फ़िरके रा-
त्रमें घर को प्रवेश करके विवेकी लोकों का समागम बिना अरु शुभ कर्म्मों बिना-

कौनसे सुख करके लोक निद्रा को प्राप्त होते हैं॥५६॥ हे मुने अपने बल करके सम शत्रुन मार दिये हैं अरु चारो तरफते संपदा प्राप्ति भई है जब लग यह लोक के सुखों को पुरुष भोगता है इतने मो मृत्यु अकस्मात् सिरके ऊपर आयकर के प्राप्त होती है॥५७॥ हे मुने यह जितना जीवों का समूह निरंतर संसार मों चला आता है अरु निरंतर ही चलाभी जाता है अत्यंत चंचल है जैसे समुद्र में अनेक प्रकार के तरंगोंकियां माला उदय होती हैं ओर क्षणमों लीन होती हैं॥५८॥ हे मुने यह इस्त्रीयां जगत में सुंदरता करके मनको हर लेती हैं अरु प्राणों के हरने को तत्पर भई हैं नवदलोंकी न्याई रक्तही वस्त्र जिन्हके हैं अरु चंचल भ्रमरों की न्याई श्याम अरु चंचलही हैं अरु नेत्र जिन्ह के सो इस्त्रीयां अरु पुरुषों को मोहित करने लिये विष हलोंकीयां लता उत्पन्न भई हैं॥५९॥ हे मुने यह जगत में पुरुषों को इस्त्री पुत्रादि व्यवहारकी

जो माया है सो तीर्थों के मेलियों के समागम जैसी है अरु कैसे लोक अपने आप ह्यां उरे परेते आय मिलते हैं अरु एकस्थान विषे इकट्ठे होने का संबन्ध है जिन्हका फेर अपने अपने सभही चले जाते हैं अरु तैसेही कर्म योग करके संसार में समागम होता है अरु अपने अपने कर्म योग करके वियोग भी होता है॥६०॥ हे मुने ऐसी कौन लोक विषे दृष्टि हैं जिन्हमों माया नहीं देखीदी है अरु ऐसा कौन भोग हैं जिह्नमों दुःख अरु अग्निका दाह नहीं है ऐसी कौन प्रजा है अरु जौनसी क्षण भंगुर नहीं हैं अरु ऐसी कौन क्रिया है जिह्नमों माया नहीं है॥६१॥ हे मुने कल्प पर्यंत है अरु आयुषा जिन्हकी ऐसे जो ब्रह्मादिक हैं सोभी अपने कल्पादिक काल की संख्या पूरी भई संते अरु काल के वस होते हैं अरु तिसतें हे मुने काल के जालमें बड़े छोटे सभ एक सरीखे नाश को प्राप्त होते हैं॥६२॥ हे मुने पर्वत सर्वत्र पथरों के बने हैं पृथ्वी सर्वत्र मृतिका की बनी है वृक्ष

यो. वा. सर्वत्र काष्ट के हैं अरु देह सर्वत्र मांस की है अरु इस जगत में असर्व पदार्थ कोई
२५ नहीं है अरु विकार ते रहित भी कोई नहीं है सभ पदार्थ विकार वाले हैं ॥६२॥ हे मुने
जौनसा यह कुछ स्थावर अरु जंगम जगत में देखीदा है सो सम्पूर्ण स्थिर नहीं है
वह सुपन के समागम सिरीखा है॥६३॥ हे मुने संसार में जौंनसा स्थान सूखे समुद्र
जैसा महा ड़ूंघा देखीदा है सो अस्थान दूसरे दिन बदलों की घटा करके युक्त उच्चा
पर्वत जैसा बन जाता है ॥६४॥ जौनसा पर्वत वनों करके युक्त है सो आकाश पर्यंत
ऊंचा देखीदा है अरु वह पर्वत दिनों करके पृथिवी के समान होता है अथवा कूढा बन-
ता है ॥६५॥ जोनसा अंग आज सुंदर वस्त्रों करके छादन करीदा है अरु अनेक माला भूष-
णों करके शोभाय मान होताहै सो शरीर दूसरे दिनमों नग्न होय करके दूर देशोंमो त्यग
न होवेगा॥६६॥ अरु जौंनसा पुरुष आज बड़ा तेज वाला है अरु पृथिवी मंडलमों राज्य-

करता है अरु सोई पुरुष दिनों करके भस्मकी ढेरी होताहै॥८७॥ अरु जौन से अस्थान में आज नगर देखीदा है अनेक लोकन के संचार करके शोभाय मान है फिर उसी स्थान में दिनों करके निर्जन बन सिरीखा उजार होता है॥८८॥ अरु जौनसे स्थानमें आका श पर्यंत ऊंची भयानक झाड़ी देखी है तहां पताका करके छादित भई महा नगरी देखी दी है॥८९॥ अरु जौनसी लता पत्र अरु पुष्पों करके शोभाय मान जलकी नदियों करके अत्त सुंदर बनी देखी दीहै सो दिनों करके मारवाड़ की पृथिवी के तुल्य होती है॥९०॥ जलाशय का स्थान सूका मैदान होता है अरु सूका मैदान स्थान जलमय होताहै हे मुने काष्ट जल अरु तृण करके सहित संपूर्ण जगत दिनों करके उलटा पलटा होताहै॥९१॥ हे मुने वह पिछले संपदा वाले बड़े दिन सो पिछेकियां उत्तम संपदा अरु वह पिछे कियां उत्तम क्रिया यह सभसी अब जैसे हमारे को कथामात्र स्मरण होती है

तैसे ही हमभी कथामात्र स्मरणमों होवेंगे॥७२॥ पुरुष पशुभाव को प्राप्त होते हैं अरु पशु पंछी मनुष्य भावको प्राप्त होते हैं अरु देवता जो हैं सो मनुष्य अरु पशु पंछी होते हैं हे मुने इहां जगतमों स्थिरता को कौन प्राप्त भया है॥७३॥ हे मुने ब्रह्मा अरु विष्णु अरु रुद्र और सभही भूतजाती जो है सो नाशको ही प्राप्त होती है जैसे समुद्रके जल नाश होनेको वडवा नामी अग्निको जाइ प्राप्त होती है॥७४॥ हे मुने स्वर्ग अरु पृथिवी अरु पवन अरु आकाश अरु पर्वत अरु नदियां अरु दिशा यह सभही नाशरूपी वडवा अग्निको प्रज्वलित करने को सुक्की लकड़ी हैं॥७५॥ हे मुने यह संसार में आपदा क्षणमात्र मों प्राप्त होती है अरु संपदा प्राप्त होती है अरु क्षणमात्र मों मृत्युभी प्राप्त होताहै अरु क्षणमात्र मों जन्मभी प्राप्त होता है हे मुने वह कोनसा पदार्थ है जो क्षणमों नाश अरु क्षणमों उत्पन्न नहीं होताहै॥७६॥ हे मुने यह संपूर्ण पदार्थ तब लग चेष्टा करते हैं जब लग नाश-

यो. वा.
प्र.

रूपी राक्षस स्मरण को नहीं प्राप्त भया है॥७७॥ हे मुने यह जगत में चड़े का वस्त्र होता देखिया है अरु वस्त्रका चड़ा होता देखिया है सो जगत में नहीं देखिया है जो उलटा पलटा नहीं होता है॥७८॥ हे मुने यह मन क्षणमें आनंद को प्राप्त होता है अरु क्षणमात्र में व्याकुलता को प्राप्त होता है अरु क्षणमात्रमें सौम्यता को प्राप्त होता है अरु क्षणमें उग्रताको प्राप्त होताहै नटवियोंसिरीखा अनेक स्वरूप वालाहै॥७९॥ हे मुने यह संसार रूपी महावृक्षों ते अनेक प्राणिरूपी फल दिन दिन प्रतिगिरते हैं अरु वह कैसे हैं अपने अपने कर्म फलतें इकट्ठे भी पकते हैं अरु भिन्न भिन्न भी पकते हैं अरु काल रूपी पवन के वेगतें अपने अपने स्थानते गिराये हैं॥८०॥ हे मुने इसप्रकार के दोष रूपी बनकी अग्नि करके मेरा चित्त दग्ध भयाहै अरु तिसमें भोगोंकी आशा नहीं फुरती है जैसे निर्जल देशमें जलपानकी आशा नहीं फुरती है॥८१॥ हे मुने जनोंके चित्तमें दुर्जनता बढती है अरु सज्जनता क्षीणताको प्राप्त

होती है और अत्यंत कठोर है दिन दिन प्रति कठोरता को धारता है ॥८२॥ हे मुने मेरे को सुंदर बाग बागीचे आनंद को नहीं करते हैं अरु इस्त्रीयां सुख को नही देतीआं हैं अरु द्रव्य की आशा मेरे को हर्ष नहीं करती है और मैं अपने मन करके आपही शांति को धारता हूं ॥८३॥ हे मुने मैं वैराग्य करके मरण की इच्छा नही करता हूं अरु जीवने को चाहता नहीं हूं जैसे मैं स्थित होयेसे ही स्थित होता हूं अरु मैं चिंता ज्वर करके रहित भया हूं ॥८४॥ हे मुने मेरेको राज्य करके क्या प्रयोजन है अरु भोगों करके क्या प्रयोजन है अरु द्रव्यों करके क्या है और उद्यमों करके क्या है यह सभ अहंकार वशते हैं सो अहंकार मेरा अब नष्ट भया है ॥८५॥ हे मुने जो अब निर्मल बुद्धि करके चित्तकी चिकित्सा नहीं करूं तो फिर चित्त की चिकित्सा का समय कहां मिलना है ॥८६ हे मुने विष को हम विष नहीं मानते हैं अरु इंद्रियों के विषयों को विष मान ते हैं -

अरु विषय रूपी विष जन्म जन्म को मारते हैं विष इस एक देह को ही मारता है ॥८७॥
हे मुने ज्ञानी पुरुषों को सुख बंधन नहीं करते हैं अरु दुःखभी बंधन नहीं करते हैं अरु मि-
त्रभी बंधन नहीं करते हैं बांधव भी बंधन नहीं करते हैं ॥८८॥ हे मुने देह को छेदन कर
ने वास्ते कर पत्र शस्त्र करके छेदन की पीडा को सहिने को मैं समर्थ हूं परंतु संसार के व्य-
वहार सों उत्पन्न भये हैं ऐसे विषयरूपी शस्त्रों करके नाशको सहिने को समर्थ नहीं होता हूं
हे मुने अब मेरा मन भ्रमता जैसा है अरु मेरे को भय प्राप्त भया है अरु अंग मेरे सब कंपा
य मान होते हैं जैसे पुराणे पत्र वृक्ष से गिरते हैं ॥९०॥ हे मुने मेरे को यह आश्चर्य है
क्या आश्चर्य है वह तुच्छ है अकस्मात् उपाधि बिना ही मनते ही भ्रम उदय भया है अरु
हे मुने ऐसा कौन स्थित होनेका स्थान है यहां शोक भय नहीं प्राप्त होते हैं ॥९१॥ हे मुने
जनक राजा से लेकर भले लोक भये हैं सोभी संसार के व्यवहारों में रहे हैं अरु वह

उत्तम जनों की गिनती मो कैसे भये हैं॥ ९२॥ हे मुने तुमभी कौनसी उत्तम दृष्टि को आश्रय करके संसार मल से रहित भये हो अरु महात्मा होय कर जीवन मुक्त भये हो अरु अपनी इच्छा करके विचरते हो॥ ९३॥ हे मुने ऐसा पदार्थ तुच्छ भी पृथिवी मों नहीं अरु स्वर्ग विषे भी नहीं है अरु देवत्यों के विषे भी नहीं है जिसको तुम सरीखे उत्तम बुद्धि वाले संतजन अपनी संगती करके उत्तमता को नहीं प्राप्त करते हैं॥ ९४ हे मुने तुम धैर्य वाले पुरुषों मों श्रेष्ठ हो संसार रूपी अग्निमों विचरण करते हो तो भी संसार के संताप को किस युक्ति करके नहीं पावते हो जैसे पारा अग्निमों दग्ध नहीं होता है तिस युक्ति को तुम मेरे प्रति कहो॥ ९५॥ हे मुने साधु पुरुष निश्चय करके जिस उपाय करके दुःख से रहित भये हैं तिसको तुम जानते हो तो मेरा मोह निवृत्त करने के वास्ते मेरे प्रति कहो॥ ९६॥ अथवा हे मु ने ऐसी युक्ती कोई नहीं है

अथवा मेरेको प्रकट करके सुनावता भी कोई नहीं है अरु मैं आपभी उत्तम विश्राम को प्राप्त नहीं होता हूं तो मैं सभ भावना को त्याग करता हूं अरु अहंकार से रहित भया हूं ९७
हे मुने नातो मैं भोजन करों अरु नातो मैं जलपान करूं अरु नातो मैं वस्त्र धारण करूं अरु स्नान दान भोजनादि व्यवहार को नहीं करता हूं॥ ९८ ॥ हे मुने केवल अकेला ही रहूंगा अरु निःशंक होय कर ममता को त्याग करके ममता से रहित होय कर मौनको धारण करता हूं जैसे चित्र विषे लिखी होई पुतली होती है तैसेही स्थित होता हूं॥ ९९
हे मुने नातो मैं इस देहका हूं अरु ना मेरा और कोई है जैसे तेल बिना दीपक शांत होता है तैसे सभ कुछ त्याग करके इस देह को त्याग करता हूं अरु शांति सुख को प्राप्त होता हूं॥ १०० ॥ श्रीवाल्मीकिरुवाच ॥ हे भरद्वाज श्रीरामचंद्र इतना वचन कहि कर चुप कर जाते भये वह श्रीरामचंद्रजी कैसेहैं निर्मल पूर्णमासी के चंद्रमा की न्याईहै स्वरूप

जिह्नका श्ररु बड़े उत्तम विचार के प्रकाश करके शोभायमान है चित्त जिसका ऐसे विश्वामित्र जीके आगे मौन धार करके बैठ जाते भये जैसे घने बदलोंकी घटाश्रों को देख कर बहुत बोलने का श्रमते खेद को प्राप्त भया ऐसा जो मोर है सो चुप होइ जाताहै २॰ आकाश मों बदलों की घटा मों स्थित भये जो सिद्ध हैं सो श्रीरामचंद्रजी के मुखारबिंद से प्रकट भया ऋश्रा बचन रूपी अमृत को पान करके अनेक प्रकारों के पुष्पों की बर्षा करके राजा दशरथ की सभा को पूर्ण करके बचन कहते भये ॥ सिद्धाऊचुः ॥ हम ने ब्रह्माजी के दिन के आदि से चारों तर्फ भ्रमते रहे हैं परंतु आज श्रीरामचंद्रजीके मुखार बिंद से प्रकट भया करणों बिषे अमृत का आनंद करने हारा अपूर्व बचन सुना है ॥ २ ॥ रघु कुल के चंद्रमा ऐसे जो श्रीरामचंद्रजी ने जो उत्तम बचन वैराग्य करके कहिआ है सो ऐसा बचन बृहस्पती जी से भी नहीं कहिआ जाता है ॥ ३ ॥ अहो-

आज हमारे बड़े पुण्य उदय हुवे हैं यह जो श्रीरामचंद्र जी के मुखार विंद से प्रकट भ-
या उत्तम बचन हमने सुनिया है यह बचन बुद्धि को बहुत आनंद के करने हारा है ४
फिर यह बचन कैसा है जो शांति प्राप्ति के करने को अमृत सेभी उत्तम है अरु अति सुं-
दरहै जो श्रीरामचंद्रजी ने कहा है इस बचन के सुनने करके हम परम बोध के आनंदको
प्राप्त भये हैं ॥५॥ और आकाश मो जो विचरणे वाले देवता सो राजा दशरथ की सभामें
बैठे हुवे जो मुनि है सो श्रीरामचंद्रजी को वचन कहते भये अहो आज हमारे बड़े भाग्य
उदय हुवे हैं सो उत्तम गुणों करके जो बिराज मान ऐसे जो श्रीरामचंद्रजी ने परम उदा-
र बानी कही है वह बानी कैसी है वैराग्य रस करके भरी हूई है ॥६॥ तदनंतर आकाश
तें उतर कर सभा मों आइ कर देवता अरु सिद्ध अरु मुनि निश्चय करके कहने योग्य बो-
धवाला प्रकट श्रीरामचंद्रजी को प्रीति करके बचन कहते भये ॥७॥ यह जो श्रीरामचंद्र

जीके बचन किसको विस्मय नहीं करता है प्रकट है अरु अर्थ जिसका स्पष्ट है पद अरु अक्षर जिसके सभ को इष्ट है अरु तुष्टि के करने हारा है॥८॥अरु उदार है अरु सभ को प्रिय है उत्तम लोगों के योग्य है अरु व्याकुल नहीं है अरु प्रकटभी है तोभी सैंकड़े पुरुषों में किसी उत्तम बुद्धिवाले पुरुष को सर्व प्रकार के चमत्कार करने हारा है ॥ ९॥ हे रामचंद्रजी तेरे बिना ऐसी उत्तम बानी किसी को भी नहीं प्रकट होती है वह कैसी है इष्ट अर्थ को समर्पण करने में एकांत करके चतुर है अरु विवेक रूपी फलको देने हारी है॥१०॥ हे रामचंद्रजी जौनसे यश के निधि जो पुरुष हैं उन्हकी बुद्धि रूपी लता तुम्हारे बचन को श्रवण करके प्रकाशमान होती है अरु यत्न करके सार की प्राप्ति भी होती है॥११॥सभा में स्थित भये सभके प्रति यह बचन कहते हैं श्रीरामचंद्रजी के समान कोई पुरुष नहीं है फिर कैसे हैं श्रीरामचंद्रजीउदार बुद्धि वाले हैं अरु

विवेक वाले हैं अरु यही हमारी बुद्धि हैं अरु श्रीरामचंद्रजी के समान तीन लोक में कोई भया नहीं है अरु न आगे को ऐसा होवेगा॥१२॥ जो श्रीरामचंद्रजी के मन का मनोरथ सिद्ध नहीं होवे तो सभही हम लोग अरु मुनि लोग नष्ट बुद्धि हैं अरु वह कैसे हैं श्रीरामचंद्रजी सभ लोक को चमत्कार करने हारे हैं अरु मुनि लोगभी सभको चमत्कार करने हारे हैं॥१३॥ इति श्रीवासिष्ठसारे मोक्षोपाये वैराग्यप्रकरणं प्रथमं॥१॥ अथ मुमुक्षुव्यवहारप्रकरणं॥ प्रथम विश्वामित्रजी के बचन॥ श्रीरामचंद्रजी-प्रति। हे रामचंद्रजी शुकदेव ने अपने पिता व्यासदेवजी को प्रश्न किया है हे पिताजी मेरे को मोक्षमार्ग का उपदेश करो जिस करके में संसार के दुःखों से रहित होजाओं-श्रीव्यासदेवजी शुकदेव को कहते भये॰ हे शुकदेव यह संसार अपने मन के विकल्प से प्रकट भया है यह इसका निश्चय है क्याहै यह संसार सार से रहित है अरु स्वभाव

करके दृश्य है सो अपने मन के विकल्प का क्षय भये संते जिस प्रकार के क्षीण होता है तिस प्रकार कों तुम कों राजा जनक कहेगा ॥ १ ॥ तदनंतर श्रीशुकदेव जी पिता की आज्ञा ले करके राजा जनक के पास जाते भये राजा जनक शुकदेवजी को नमस्कार करके पूजा करता भया और शुकदेवजी को आगमन कारण पूछता भया तो शुकदेवजी मोक्षमार्ग के उपाय का प्रश्न राजा जनक को करते भये तो राजा जनक शुकदेवजी को वचन कहता भया हे शुकदेव चेतन्य स्वरूप एक आत्मा पुरुष है अरु वह कैसा है निर्लेप है और असंग है अरु तिसते भिन्न और कछु नही है वह पुरुष अपने संकल्प वशाते बंध को प्राप्त भया है अरु संकल्प से रहित होवे तो मुक्त होता है ॥ २ ॥ हे बाल तूं संसार तरने को महावीर है अरु जिस कारण तें तेरी बुद्धि भोग रूपी दीर्घ रोगों से विरक्त भई है वैराग्य करके संसार से मुक्ति हो

तीहै और क्या श्रवण करने को चाहता हैं ॥३॥ हे शुकदेव जैसी ज्ञान करके दृढ़ताते-
रेको भई है ऐसी दृढ़ता तुम्हारे पिता व्यासदेव जी को नही भई है वह कैसे हैं व्यासदेव
जी सर्व प्रकार के ज्ञान के निधी हैं अरु चिरकाल से तप करने मों स्थित हैं अरु अनेक
प्रकार के ज्ञान करके मुक्त नही होती है अरु मुक्त के लिये चित्त की एकाग्रता करने सो
गयेहैं ॥४॥ हे रामजी राजा जनक ने इस प्रकार का उपदेश किया तो शुकदेव परमा-
त्मा वस्तु विषें एकाग्रता को धारण करते भये ॥५॥ अरु वह कैसे हैं शोक भय अरु खे-
द करके रहित भये हैं निस्पृह होते भये संशय रहित होय कर समाधि करने वास्ते
सुमेरु पर्वत को चले जाते भये ॥६॥ तहां जाय कर निर्विकल्प समाधि करके दश-
हज़ार वर्ष स्थित होइ करके चित्त की शांति होता है ॥७॥ हे रामचंद्र जी सो शुकदेव
मन की कल्पना रूपी कलंक से रहित होते भये शुद्ध अंतःकरण वाले होते भये निर्मल

अरु पवित्र ऐसे परमात्मा की पदवी में एकता को प्राप्त होते भये कैसे जैसे जलका एक किण का समुद्र के जल में एक रूप होता है॥८॥ विश्वामित्र श्रीरामचंद्र जी को कहते हैं जाना है परमात्मा का तत्व जिस करके ऐसे मन का निश्चय करके यही लक्षण है वह क्या है संपूर्ण भोगों के समूहों को फेर चित्त नहीं चले॥९॥ भोग वासना करके संसार का बंधन दृढ होता है भोग वासना शांत होने करके जगत में बंधन शांत होता है॥१०॥ हे रामचंद्रजी वासना की जो शांति है सो ही ज्ञानी पंडितों ने मोक्ष कहेया है अरु पदार्थों की वासना की दृढता ही बंधन कहेया है॥११॥ भोगों की इच्छा त्याग कर कितने लोक यश वास्ते भोगों का त्याग करते हैं सो दंभी हैं तिस तें हे रामचंद्रजी यश की इच्छा बिना भी जिस कों भोगों विषे रुचि नहीं होती है सो जीवन्मुक्त कहेया है॥१२॥ विश्वामित्रजी वसिष्टजी को कहते हैं हे वसिष्टजी सो ही ज्ञान

है सोही शास्त्रों का अर्थ है अरु वही ज्ञान का अखंड निश्चे है जौंनसा वैराग्य करके शु-
क्त भले शिष्य को उपदेश करीदा है॥१३॥ हे मुने वैराग्य से रहित दुष्ट शिष्य को जो कु-
छ उपदेश करीदा है सो अपवित्र होता है जैसे कापिला गौका दुग्ध कुत्ते के चमड़े मों
अपवित्र होता है॥१४॥ हे मुने जौंन से राग अरु भय अरु क्रोध सें रहित भये हैं अरु
अभिमान रहित हैं पाप रहित हैं ऐसे तुम्हारे सरीषे उत्तम पुरुष जोउपदेश करते
हैं अरु तिसमों श्रवण करने हारे की बुद्धि विश्राम कों प्राप्त होती है अरु सभही संशा-
य दूर होते हैं॥१५॥श्रीवसिष्ठजी श्रीरामचंद्रजी को कहते हैं हेरामजी परमात्मा रूप
सूर्य के प्रकाश मों जौंन से त्रैलोक्य रूपी रेणु के किणके अरु पूर्व काल मों उत्पन्न हो-
इ होइ कर लीन भये हैं सो अब संख्या मों नहीं आवते हैं॥१६॥जौंनसी अब की त्रैलो-
क्य गणोंकी कोटी वर्तमान है सो भी किसीने भी गिणी नहीजानी है॥१७॥जौंनसी आगे

परमात्मा रूपी समुद्र मों जगत के सृष्टि रूप तरंग उत्पत्त होवेंगे अरु तिन्हकी संख्याकी कोई वार्ता भी नहीं है ॥१८॥ हे रामचंद्रजी जैसे संकल्प की रचना मिथ्या है अरु मनोरथ के बिलास मिथ्या हैं अरु जैसे इंद्रजाल की माया मिथ्या है अरु जैसे एर्बत्ती कथा के अर्थ नाम मात्र हैं अरु उष्ट पवन बेग करके अरु पृथिवी का चलना मिथ्या है जैसे बालक को पिशाच का त्रास क्षण मात्र होता है अरु आकाश मों मुक्ता मणी की माला मिथ्या भासती है जैसे बेड़ी के चलने मों किनारे के वृक्षों का चलना मिथ्या ही भासता है अरु जैसे स्वप्न के ज्ञान मों नगरादि भान मिथ्या होता है अरु जैसे आकाश पुष्पों का फुरणा मिथ्या होता है तैसेही इस पुरुष कों जगत का उत्पत होने का फुरणा मिथ्या है अरु मृत होना भी मिथ्याही है ॥२१॥ हे रामजी जब यह पुरुष मृत होता है जगतमों जन्म के अनुभव को प्राप्त होता है फिर अपने स्वरूप का स्मरण भूल जाता है तो जगत का फुरणा

दृढ होता है फेर जीव रूपी आकाश में यह लोक है ऐसा अनुभव दृढ होताहै फेर जन्म की इच्छा दृढ होती है फेर मरणे का अनुभव होता है तो पर लोक की कल्पना करता है अरु परलोक में अनेक पुरुषों की कल्पना होतीहै तिन्ह पुरुषों में भी और पुरुषों की कल्पना होती है ॥ २३ ॥ हे रामजी पुरुष के फुरणे में यह अनेक संसार भासते हैं जैसे केले की स्तंभ के अंदर अनेक त्वचा के आवरण होते हैं ॥ २४ ॥ हे रामजी जौनसे मृत होतेहैं तिन्हको पृथिवी आदि महा भूतों की गिनती नहीं है अरु जगत के क्रमभी नही है तद भी इन्हको जगत का भ्रम दृढ रहते हैं ॥ २५ ॥ हे रामजी यह अविद्या अनंत है अरु अनेक प्रकार के विस्तार वाली है अरु जड़ बुद्धि वाले पुरुषों को महादुस्तर नदी है अरु वह कैसी है अनेक प्रकार के जगत की सृष्टि रूपी तरंगों करके युक्त है ॥ २६ ॥ हे रामजी परमार्थ रूपी विशाल समुद्र में जगत की सृष्टि के तरंग वारं वार प्रसन्न होते हैं कितने

पहिले सिरीषे है अरु कितने और जैसे हैं ॥२७॥ कितने उत्पत्ती करके मन करके अरु कर्म करके गुणों करके समान है अरु कितने आधे गुण वाले है कितने और प्रकार के हैं ॥२८॥ हे रामजी काल रूपी समुद्र में सृष्टि रूप तरंग तिसी प्रकार करके अथवा होर प्रकार करके वारं वार प्रवृत्त होते हैं ॥२९॥ हे रामजी जौनसा ज्ञान विचार वाला पुरुष हैं सो अंतः करण करके स्थिर होता है उसके मन के विकल्प शांत होते हैं अरु स्वरू-पके सार को जानने हारा है शांति रूप अमृत करके तृप्त होता है सो अविद्या के बंध-नसें मुक्त होता है ॥३०॥ हे रामचंद्रजी जो पुरुष संदेह रूपी देह सें मुक्त भये हैं ऐसे बोध रूपी पुरुषों को आत्मा परमात्मा मो संदेह नहीं होता है अरु भेद भी नहीं होता है जैसे समुद्र के जल का अरु तरंग का भेद नहीं होता है ॥३१॥ हे रामचंद्रजी यह संसार मों भले प्रकार करके किये अपने पौरष करके सर्व जीवों करके सर्वपदार्थ

प्राप्त होते हैं ३२ हे रामचंद्र जी भले संत पुरुषों ने उपदेश किया जो मार्ग है तिस करके जौन सा देह को अरु मन को वरतावता है वही पोरुष है तिस बिना मन का इंद्रियों का वरताउ ना है अरु सोही विहित पुरुष की चेष्टा है ३३ हे राम जी जो पुरुष जिस अर्थ को चाहता है सो पुरुष तिस अर्थ के लिये उद्यम करता है तो उस अर्थ को पुरुष अवश्य मेव प्राप्त होता है अरु जो उद्यम नहीं करे तो नहीं प्राप्त होता है ३४ हे रामचंद्रजी यह जगत में कोई एक जीव अपने उद्यम के यत्न करके त्रैलोक्य के ऐश्वर्य करके उत्तम इंद्र की पदवी को प्राप्त होता भया हे रामचंद्र जी कोई एक चैतन्य का प्रति बिंब अपने पोरुष के यत्न करके कमलके आसन उपर बैठ करके ब्रह्मा की पदवी को प्राप्त होता भया ३६ हे रामचंद्र जी कोई एक पुरुष अपने उत्तम पुरुषार्थ करके अरु गरुड के ऊपर चढ करके पुरुषों

में उत्तम ऐसा विष्णु रूप भया है ३७ हे रामचंद्रजी एक कोई पुरुष यह संसार मों पौ-
रष करके यत्न करके एक शरीर मों आधा इस्त्री रूप और आधा पुरुष रूप होता है
या वह कैसा है अर्ध चंद्र है मस्तक का भूषण जिसका ऐसे अर्ध नारीश्वर रूप
भया है ३८ हे रामजी तिस पौरुष के दो प्रकार तुम जानों अरु एक पूर्व जन्म का
किया अरु एक इस जन्म का है तिह मों पूर्व जन्म का पौरुष इस जन्म के पुरुषा
र्थ करके जीतेया जाता है ३९ हे रामजी यत्न वाले दृढ अभ्यासों करके बुद्धि कर
के अरु उद्यम करके युक्त ऐसे पौरुषों करके पर्वत भी गिराये जाते हैं अरु पूर्वज-
न्म के पौरुष के गिराओने मों क्या आश्चर्य है ४० हे रामजी इस जन्म का पौरुष
भी दो प्रकार का है अरु एक शास्त्र से रहित हैं अरु एक शास्त्र की विधि करके स
हित है अरु तिह मों शास्त्र की विधि रहित जो पुरुषार्थ है सो अनर्थ को प्राप्त

करता है अरु शास्त्र की विधि सहित जो पुरुषार्थ है सो परमार्थ को प्राप्त करता है
हे रामजी इह जन्म का पुरुषार्थ अरु पूर्व जन्म का पुरुषार्थ यह दोनों आपस में यु-
द्ध करते हैं जैसे दोनो भैंसे आपस में युद्ध करते हैं अरु वह कैसे हैं एक बल करके
पूर्ण है अरु एक निर्बल है तिन्हमों बलवान करके दुर्बल शांत होता है ४२ तिस तें
परम पौरुष कों धार कर दंतों कर अरु दंतों को दबाइ कर हे रामचंद्र जी यह जन्म का
शुभ पुरुषार्थ करके अरु अशुभ रूप करके उदय भये हुये पूर्व जन्म के पुरुषार्थ कों
यत्न करके जीतने योग्य हैं ४३ हे रामचंद्रजी पूर्व जन्म का पुरुषार्थ मेरे को प्रेरण कर
ताहै ऐसी बुद्धि यह जन्म के पुरुषार्थ करके दूर करने योग्य है जिस कारणतें सो बुद्धि
यह जन्म के प्रत्यक्ष पुरुषार्थ से दुर्बल है ४४ हे रामचंद्रजी उद्यम को त्याग करके अरु
उद्यम से रहित है सो मनुष्य रूप करके गधावने हैं ऐसे प्रारब्ध मानने हारेओं के बरो-

बर नहीं होने योग्य है अरु शास्त्र करके किया जो उद्यम है सो यह जन्ममों और अगले लोकमों दोनों में सिद्धि कर देता है ४५ हे रामजी उद्यम रूपी यतन को धारण करके यह संसार रूपी गर्भ से बल करके आपही निकलने योग्य है जैसे सिंह अपने बल करके अपने शत्रुन के बंधन से निकस जाता है ४६ हे रामचंद्रजी प्रारब्ध को मान करके थोड़े अन्न पान को पाइ करके अरु आयुषा वृथा भस्म नहीं करने योग्य है अरु उद्यम करके रहित जो पुरुष हैं सो नरक के कीड़े होते हैं ४७ हे रामजी शुभ पौरुष करके शुभ फल प्राप्त होता है अरु अशुभ पौरुष करके अशुभ फल प्राप्त होता है प्रारब्ध कछु नहीं करता है ४८ हे रामजी जौन से पुरुष कहते हैं कि प्रालब्ध मेरे को प्रेरण करता है ऐसे कहने वाले का मुख देख करके लक्ष्मी फिर जाती है जौन से उद्यम नहीं करते हैं तिन्ह के मुख दग्ध होय गये हैं अरु उन्हकी दृष्टि श्रेष्ठ नहीं देखीदी है ४९ हे रामजी बालक

व॰ रा॰ ६०

अवस्था तें भले प्रकार अभ्यास किये जो शास्त्र सत्संगादिक उत्तम गुण हैं तिन्ह करके यतन करने करके अपना चाहेआ उत्तम अर्थ प्राप्त होता है पराल्भय व्यर्थ है ५० हे रामचंद्रजी यह जगत में महा अनर्थ कों करने हारा आलस्य नहीं होवे तो बहुत धन वाला बहुत शास्त्र पढने वाला कौन पुरुष नहीं होवे अरु आलस्य करके समुद्र पर्यंत संपूर्ण पृथिवी पराल्भय को मानते हारे अरु निर्धन है ऐसे जो मनुष्य रूपी पशु हैं अरु उद्यम से रहित हैं तिन्ह करके भरी है ५१ हे रामचंद्रजी पहिले दिनों मोटा कर्म अपराध किया है सो आज के शुभ कर्म करके शुभ होजाता है अरु तैसेही पूर्व जन्म का अशुभ पराल्भय कर्म यह जन्म का शुभ कर्म करके शुभ होता है जैसे रोग पहिले होता है सो दुःख देता है अरु औषधी पीछे करते हैं अरु औषध करके रोग अरु दुःख दूर होते हैं ५२ हे रामजी जौनसे पुरुष शुभ कर्म करके अशुभ पराल्भय को नहीं दूर करता है

जो पुरुष अज्ञानी है वह सुख दुःखों के अधीन है अरु पुरुषार्थ वाला पुरुष-स्वतंत्र होता है ५३ हे रामजी जौनसा पुरुष ईश्वर की प्रेरणा करके स्वर्ग को अथवा नरक को जावेगा तो वह सदैव पराधीन रहेगा अरु पशु रूपही रहेगा ५४ हे रामजी जौनसा पुरुष उद्यम करके उदार आचार वाला है सो पुरुष जगत के मोह से मुक्त होता है अरु जैसे सिंह अपने बल करके पिंजरे से निकस जाता है ५५ जौनसा पुरुष कहता है कि मेरे को कोई प्रेरणा करता है तो मैं कार्य करता हूं ऐसे अनर्थ की दुष्ट कल्पना मो स्थित भया है अरु उद्यम को त्याग करता है सो नीच पुरुष है तिसका दूर से त्याग करना योग्य है ५६ हे रामजी संसार के हजारों कार्यों के व्यवहार आवते जाते हैं तिन्हमो सुखदुःखों गुरु शास्त्र की आज्ञा से हर्ष शोक को त्याग करके व्यवहार करने योग्य है ५७ हे रामजी यह जीव जन्म मरण रूपी रोग

यु॰ सा ६२

को जान करके तिस की शांति के वास्ते ब्रह्म निष्ठ सद्गुरु सेवा करके आपना पौरुष रूपी उत्तम औषध करके मोक्ष को प्राप्त होवे ५८ हे रामजी यह पुरुष रोगादि कों से रहित मनुष्य देह को पाइ करके तैसे समाधान करे उद्यम करे जैसे फेर जन्म को नहीं प्राप्त होवे ५९ हे रामजी जौनसा पुरुष पुरुषार्थ करके प्रालब्ध को जीतने चाहताहै सो पुरुष यह लोकमें पर लोक में संपूर्ण वांछाकी सिद्धि को पावता है ६० हेरामजी जौनसा अपने पुरुषार्थ को त्याग करके प्रालब्ध के अधीन होइ रह्या है सो अपने धर्म को अर्थ को काम को नाश करता है अरु आत्महत्या के दोष को प्राप्त होता है ६१ हेरामजी पुरुषार्थ के तीन रूप हैं सो कौन रूप है एक बुद्धि की सावधानता अरु मन की सावधानता तीसरी इंद्रियों की सावधानता इह्र तीनों की सावधानता तें कर्म फल का उदय होता है ६२ हेरामजी पुरुषार्थ की सिद्धि तीन प्रकार करके

होती है एक शास्त्र के बचन करके अरु सद्गुरोंके उपदेशाते अरु आपने निश्चय करके ६३ हे रामचंद्रजी अशुभ कर्मों विषे प्रवृत्त भये आपने चित्त को शुभ कर्मों विषे प्रवृत्त करे अरु शुभ कर्मों को यत्न करके करे सर्व शास्त्रों का यही निश्चय है ६४ हे रामजी शुभ बुद्धि करके शुभ शास्त्र का अभ्यास आदि गुण प्राप्त होते हैं अरु शुभ शास्त्र अभ्यास आदि गुणों करके शुभ बुद्धि उदय होती है यह दोनों आपसमों बढ़ते हैं वह कैसे जैसे बर्षा काल विषे कमल अरु जल आपस मों बढते हैं ६५ हे रामजी जौनसा दृढ अहंकार करके पूर्व जन्म मों जो कर्म किये हैं सोही देव नाम करके कहे हैं ६४ हे रामजी जो पूर्व जन्म के कर्म हैं सोही देव कहे हैं अरु देव किस को कहते हैं कर्म कोही देव कहते हैं अरु कर्म किस को कहते हैं जो मन की चेष्टा है तिसको कर्म कहते हैं सो मन पुरुष का स्वरूप है अरु प्रालब्ध इन्ह

से भिन्न नहीं है यह हमारा निश्चय है ६५ श्रीरामचंद्र जी का प्रश्न॰ हे गुरु जी
जो पूर्व जन्म की वासना का समूह है सो मेरे को माया करके जैसे प्रेरण करता है
तैसेही मैं प्रवृत्त होता हूं में पराधीन हूं अरु जो तुम मेरे को उपदेश करो तिसको मैं
करूं ६६ श्रीवासिष्ठजी कहते हैं॰ हे रामचंद्रजी में तेरे को इस कारण ते कह
ता हूं तू वासना को त्याग कर आलस्य को दूर कर अपने पौरुष करके यत्न करके
अखंड आनंद को प्राप्त होवेगा ६७ हे रामजी यह वासना रूपी नदी दो मार्ग करके व
हती है एक शुभ मार्ग करके अरु अशुभ मार्ग करके तिसते अपने पौरुष के यत्न
करके शुभ मार्ग में युक्त करने योग्य है ६८ हे रामजी इसका यही उपाय है अशुभ
कर्मों विषे प्रवृत्त भये अपने मन को पौरुष रूपी यत्न के बल करके शुभ मार्गों विषे
प्रवृत्त कर तेरे को वैराग्य का विचार का बल प्राप्त भया है ६९ हे रामजी जब लग-

व॰सा॰ तेरे को इक तत्व ज्ञान नहीं भया है जब लग तैने परमात्मा का स्वरूप जानेआ-
६४ नहीं है तब लग तूं गुरों के बचन करके अरु शास्त्रों के प्रमाण करके जो निर्ण-
य किया है तिसको आचरण कर ७० हे रामजी शुभ कर्म करने करके तेरे अंतः
करन की मलीनता शुद्ध होवेगी निश्चय करके आत्मतत्व को जब तूं जानेगा तद
तैने शुभ कर्मों की वासना भी त्यागदेनी ७१ हे रामजी यह शुभ कर्म करने वा-
ला मार्ग उत्तम पुरुषों ने सेविआ है उत्तम बुद्धि करके इसको तू सेवन कर
जब तेरा अंतः करण शुभ कर्मों करके वासना रहित होगा तो तूं शुभकर्मों
को त्याग करके शोक से रहित आत्म स्वरूप को प्राप्त होवेगा ७२ हे रामजी सृ-
ष्टिके आदमों ब्रह्मा की इच्छा से मैं प्रकट होता भया तद मैं संसार के दुःखकी
शांति वास्ते पिता को प्रश्न करता भया पिता मेरे को ज्ञान उपदेश करके बचन

कहता भया ७३ हे पुत्र अब तूं पृथ्वि लोकमें जंबू द्वीप है तिस मों भारत खंड के लोकों के अनुग्रह के कारण करके चला आना ७४ तहां जाय करके तुमने उत्तम बुद्धि करके कर्म कांड करने वाले पुरुषन को कर्म कांड उपदेश करना अरु आप भी कर्म कांडमों प्रवृत्ति करनी ७५ हे पुत्र जौन से विरक्त चित्त वाले पुरुष हैं महा बुद्धि वाले विचार करके उपदेश करके विरक्त पुरुषों कों तुमने ज्ञान के आनंद कों प्राप्त करने ७६ हे रामजी कमल सें प्रकट भये ऐसे पिता ब्रह्माजी के इतना उपदेश करके में पृथिवी लोक में प्राप्त भया हूं जब लग यह भूतों की सृष्टि रहेगी तबलग पृथिवी लोक में हमारी स्थिति है ७७ हे रामजी पृथिवी लोक में मेरे को कार्य करना कोई नही है पिता की आज्ञा करके लोकोंके उपकार लिये मेने यहां रहणा है इस कारण करके में स्थित भया हूं निरंतर शांत वृत्ति करके अहंकार रहित

बुद्धि करके व्यवहार के कार्य करता भी हूं तदभी अंतः करण करके नहीं कर्ताहूं ७८ हे रामजी जनकादिक राजा भये हैं सो भी संपूर्ण विद्यामों राजाकी न्यांई उत्तम है और अत्यंत गोप्य उपदेशों मों राजाकी न्यांई गुप्त है ऐसा आत्मज्ञान कों जान करके परम दुःख की शांति कों प्राप्त होते भये ७९ हे रामजी यह तुमको उत्तम वैराग्य प्रकट भया है कैसा है सत पुरुषों कों चमत्कार करने हारा है अरु दुःखादि निमित्त विना भया है अरु अपने विवेक सें उत्पन्न है इस कारण ते यह सात्विक वैराग्य है ८० हे रामजी दुःख कों प्राप्त होइ करके अरु मलीनता देखकरके सभ कों वैराग्य होता है सत्पुरुषों को विवेक करके उत्तम वैराग्य होता है ८१ हेरामजी विवेक करके संसार की रचना को अनित्य विचार करके जौंन से वैराग्यकों प्राप्त होते हैं सो उत्तम पुरुष हैं ८२ हेरामजी परमात्मा परमेश्वर के प्रसादते तुम्हारे

सिरीषे पुरुष की विरले की शुभ बुद्धि विवेक को प्राप्त होती है ८३ हे रामजी ऐसी उ-
त्तम बुद्धि जीवों को होनी कठिन है अरु बहुत उत्तम कर्म करके बड़े तप करके बड़े निय
म करके महा दान करके अरु चिरकाल तीर्थ यात्रा तें अरु विवेकते दुष्ट कर्मका क्षय
होत संते परमार्थ के विचार करनेमों जीवों कों अकस्मात् बुद्धि प्रसन्न होती है ८३ हेराम-
जी शीत वात आदिक संसार के दुःख जो हैं सो संतजनों विषे ज्ञान की युक्ति बिना कै
से सहिमों आवते हैं ८४ हेरामजी दुःख कीश्रों चिंता लागमों आय करके अपने
अपने समयमों मूढ नर को दाह करती हैं जैसें अग्निकी ज्वाला तृण को दाह करती
है ८४ हे रामजी उत्तम है बुद्धि जिसकी अरु जानिया है आत्म तत्व जिसने भले प्रका
र करके ज्ञान दृष्टि वाले पुरुष को संसार की चिंता दाह नहीं करती है जैसे वर्षा जिसके
ऊपर अखंड होती है ऐसे बन को अग्नि की ज्वाला दाह नहीं करती है ८६ हे रामजी

व॰सा॰
६९

इस कारण तें बुद्धि वान पुरुष ने तत्व जानने कों प्रमाण करके कहने वाला संशय-रहित है अरु बुद्धि जिसकी असा जो तत्व ज्ञानी सत पुरुष प्रीति करके पुछने योग्य-है ८७ हे रामजी प्रमाण करके युक्त उत्तम है अरु दया करके युक्त है चित्त जिसका-असे सत्य पुरुष को जौंनसा अर्थ पुछेआ है तिसके उपदेश का वचन करके ग्रहण-करने योग्य है जैसे वस्त्र करके केसर का रंग ग्रहण किया जाता है ८८ हे रामजी-जौंनसा प्रमाण करके कहने वाले के कहने मों जो पुरुष नहीं स्थित होता है तिसते दूसरा नीच पुरुष कोई नहीं है ८९ हे रामजी पूर्व वाक्य का पिछले वाक्य का संबंध करने मों समर्थ बुद्धि वाले प्रति प्रश्न का उत्तर तत्व ज्ञानी पुरुष ने कहने योग्य है प-शु समान जड बुद्धि नीच पुरुष को नहीं कहने योग्य है ९० हे रामजी जो जो मैं तेरे प्रति कहता हूं सो सो तेरे ग्रहण करने योग्य है अरु यत्न करके अपने हृदयमों धारले

यो.वा. योग्य है अरु जो तेरे को धारना करने की इच्छा नहीं होवे तो तैने मेरे को पूछा नहीं इ-
८. छना ९१ हे रामजी मन बहुत चंचल है संसार रूपी वन का वानर है इस मन को यत्न क-
रके सावधान करके परमार्थ की वानी श्रवण करने योग्य है ९२ हे रामचंद्र जी निरंतर
सत्पुरुषों की संगति करके विवेक प्रकट होता है अरु विवेक कल्प वृक्ष है भोग अरु
मोक्ष यह दोनों विवेक वृक्ष के फल हैं ९३ हे रामजी मोक्ष रूपी मंदिर के चार द्वार पा-
ल हैं वह कौन हैं शम अरु विचार अरु संतोष अरु सत संग ९४ हे रामजी यह चा-
रो यत्न करके सेवने अथवा तीन सेवने अथवा दो सेवने अथवा एक सेवना यह
द्वार मोक्ष रूपी राज मंदिर के द्वार को उघाड़ देते हैं ९५ हे रामजी अथवा सर्व प्रका-
र यत्न करके प्राण त्यागको निश्चय करके एक द्वार पाल को सेवना एक के वश भये
संते चारोही अपने वश होते है ९६ हे रामजी जौंन से संसार मों दुःख हैं जौंन सी

तृष्णा है अरु जौंनसीयां असाध्य व्याधि है अरु चिंता है शांत भये चित्तों में नाशको
प्राप्त होती है जैसे सूर्यों के मध्य मों अंधकार नष्ट होता है ८७ हे राम जी जैसे उग्र प्रा-
णी अरु सौम्य प्राणी अपनी माता के दर्शन मों शीतल स्वभाव होते हैं अरु माता विश्वा
स करते हैं तैसें सर्व भूत शांत हृति पुरुषों मों विश्वास को प्राप्त होते हैं ८८ हे रा-
मजी ऐसा सुख अमृत पान करके नहीं होता है अरु लक्ष्मी का आलिंगन करके
भी ऐसा आनंद नहीं होता है जैसा आनंद अंतः करण मों शांति करके होताहै ८९
हे रामचंद्र जी शांति हृति पुरुष को पिशाच भी नहीं द्वेष करता है अरु राक्षस अरु
दैत्य अरु शत्रु अरु व्याघ्र अरु सर्प शांति वाले पुरुष का द्वेष नहीं करते हैं ९०
हे रामचंद्र जी जौंनसा पुरुष शुभ अशुभ शब्द को श्रवण करके अरु कोमल क-
ठोर को सपर्श करके स्वादवाला स्वाद रहित भोजन करके सुंदर और नहीं सुंदर

रूप को देख करके हर्ष को अरु खेद को नहीं प्राप्त होता है सो शांत रूप कहिया है ११
हे राम जी जिसका मन मरण समय में युद्ध समय में उत्सव समय में चंद्र बिंब की
न्यांई शीतल है अरु व्याकुल नहीं है सो पुरुष शांत रूप कहिया है २ हे रामचंद्रजी
जिसकी दृष्टि अमृत के प्रवाह के न्यांई सर्व लोक के प्रति प्रीति युक्त प्रसन्न होती है
सो पुरुष शांत रूप कहिया है ३ हे रामजी तपस्वी गणों विषें बहुत ज्ञान वाले वि-
षें यज्ञ करने वाले विषे राजों विषे अरु बलवानों विषें गुण वालें विषे शांत रूप पुरु-
ष महिमा करके विराज मान होता है ४ हे राम जी शम रूपी अमृत ऐसा है गु-
प्तभी नहीं रहिता है यह बड़ा भारी बल है इसकों धारण करके सत्पुरुष लोक
परम पदवी को प्राप्त होते भये तिस कारण ते तुम भी शांति क्रम को पालन कर
तेरे को मोक्ष की प्राप्त होवेगी ५ हे रामजी विचार तें बुद्धि तीक्षण होती है परम

वा॰ सा॰ पद को देखती है संसार रूपी दीर्घ रोग की शांति वास्ते विचार उत्तम औषध है ९६ हे रा
७३ मजी अज्ञानी पुरुषों को अपने मन के मोह करके संसार रूपी वेताल है सो प्राणों को हर
लेता है जैसे रात्रि में आकाशमें देखिया वेताल प्राण हर लेताहै यह संसार रूपी वेता
ल विचार करके लीन होता है ९७ हे रामजी जगत के सभ ही भाव अविचार करके सुंदर है
अरु असत्य है सो विचार करके नष्ट होता है ९ हे रामचंद्रजी पुरुष के अपने मन के मोह क
रके कल्पित किया है संसार रूपी चिर कालका वेतालहै बहुत दुःखकों देने हारा है सोविचा
करके लीन होता है ९ हे रामजी मनमें ऐसा ज्ञान जो होवे मैं कौन हों यह संसार दोष
कैसे प्राप्त भया है ऐसे ज्ञानको विचार कहते हैं १० हे रामचंद्रजी ऐसा विचार करने यो-
ग्य है मैं कौन हूं यह संसार किसको है बुद्धिवान पुरुष आपदा में भी यत्न करके आप-
ही उपाय सहित चिंता न करने योग्य है ११ हे रामचंद्रजी विचार रूपीनेत्र बहुत अंधकार

में नष्ट नहीं होता है बहुत तेजों विषे बढ़ता नहीं है अंतराल भये संते भी देषता है यह विचार उत्तम नेत्र है १२ हे रामचंद्रजी कीचड़ में मींडक होना चंगा है मलमें कीड़ा होना चंगा है अंधेरी गुफामें सर्प होना चंगा है विचार रहित होना चंगा नहीं है १३ हे रामचंद्रजी यह विचार दृष्टि शांत वृत्ति वाले तुमको भी शोभित करकेसी है पृथिवीमें कर्मोंकी सफलता कों करती है उत्तमता कों निश्चय करके प्रकट करती है अखंड स्वरूप परमात्मा का दर्शन करने हारी है १४ हे रामचंद्रजी संतोष परम कल्याण करता है अरु संतोष परम सुख है संतोष वाला पुरुष परम विश्राम कों प्राप्त होता है १५ हे रामचंद्रजी जौंन से संतोष रूपी अमृत पान करके तृप्त भये हैं अरु शांति वृत्ति भये हैं तिन्हको यह भोगों की संपदा विष रूपी भासती है १६ जौंनसा नहीं प्राप्त भयेमें वांछा से रहित है प्राप्त भयेमें प्रसन्न रहित है खेद भये ते जिसकों खेद नहीं देखिआ है

वा·सा· सो यह लोक में संतुष्ट कहिया है १७ हे रामचंद्रजी आशा की विवशाता करके चित्त।
७५ जिसका व्याकुल भया है संतोष सें रहित है ऐसे चित्तमों ज्ञानका प्रतिबिंब नहीं होता।
है जैसे मलीन शीशेमों मुख का प्रति बिंब नहीं होता है १८ हेरामजी संतोष करके ति-
न्ह पुरुषों के मन पुष्ट भये हैं तिन्हकों संपूर्ण संपदा आपही प्राप्त होती है जैसे चाकररा-
जाकों आपही सेवा करते हैं १९ हेरामजी सुख दुःखमों संतोष करके सम दृष्टि करके
शोभाय मान है सो पुरुषो में राजा है तिसको आकाशमों चलने वाले देवता अरु मुनि
प्रणाम करते हैं २० हेरामजी हे महा बुद्धे मत संग जो है सो संसार के तरने मों पुरुषों
कों विशेष करके सर्वत्र उपकार करता है २१ हेरामजी सत्संग होनेतें शून्यता गुणों-
करके पूर्णता होती है अरु मृत्यु महा उत्सव रूप होता है अरु आपदा संपदा रूप हो
तीहै २२ हेरामजी जौंनसा पुरुष सत्संग रूपी गंगा करके स्नान करता है कैसी है गंगा

जी शीतल है और आनंद के करने हारी है अरु निर्मल है अरु पवित्र करने हारी है तिस पुरुष कों दान करके अरु तीर्थों करके तप करने करके अरु यज्ञ करने करके क्या अर्थ है २३ हे रामजी यह जगतमों सभतें साधु जन का समागम भले प्रकार करके उत्तम है और कैसा है आपदा रूप कमलनी सुकावने को बर्फ़ रूप है मोह रूपी धूर को उडावने को पवन रूपी है तिसते सत्संग साधु जनों का सभते अधिक ही उत्तम है २४ हे रामचंद्रजी साधुजन कैसे होते हैं जिन्ह की संशय रूपी ग्रंथि सभ छिन्न भई है वह आत्मा के स्वरूप को जानने हारे हैं अरु सर्व जनों करके मान्य है अरु प्रकार करके सेवने योग्य हैं संसार समुद्र के तरणेको उपाय भूत हैं २५ हे रामचंद्रजी सो पुरुष नरक रूपी अग्नी की सूकी समिधावने हैं जिन्ह पुरुषों ने नरक रूपी अग्नी कों शांत करने को बादल रूपी संत जनका आदर कर सेवा नहीं करी है २६ हे रामजी संतोष अरु

वा॰सा॰ सज्जनों का समागम अरु विद्या अरु शम यह चार संसार समुद्र तरणे के लिये उपा-
७७ यहैं २७ हे रामजी संतोष परम लाभ है अरु सत्संग परम गती है अरु विचार परम ज्ञा-
नहै अरु शम परम सुख है २८ हे रामजी यह चार संसार के भेदने के लिये उपाय हैं
जिन्ह पुरुषों ने यह चारों सेवे हैं सो पुरुष मोह जाल के संसार समुद्र से तरंग हैं २९
हे रामजी यह चारो में निर्मल उदय वाले एकका अभ्यास किये संते चारोंही बुद्धि
वान पुरुष को सभही अभ्यास होजाते हैं ३० हे रामजी तुम यह चार उपाय की अखंड
संपदा युक्त हो तिस कारणतें मनके मोह कों हरने हारा मेरे कहे हुवे इस बचन का
श्रवण करो ३१ हे रामजी जिसका पुण्य रूपी कल्प वृक्ष फल देने को तियार भया हो-
य तो तिस जीवको मुक्ति लिये ऐसा वचन श्रवण करने को उद्यम होता है ३२ हे राम
जी पवित्र बचनों का पात्र उत्तम पुरुष होता है कैसे हैं वचन उदार हैं श्रवण करने हारे

को ज्ञान देने हारे हैं अरु नीच पुरुष उत्तम वचन श्रवण करने का पात्र नहीं होताहै ३३
हे रामजी यह मोक्षोपाय नाम संहिता सार रूपी ग्रंथ की मैने रचना करी है अरु बत्तीस ३२...
हजार श्लोक इसका परिमाण है जानने हारे को निर्वाण सुख कों देती हैं ३४ हे रामजी जैसे
जिस पुरुष की निद्रा दूर भई है तिस पुरुष को प्रकाश की इच्छा नहीं है तो भी दीपक प्रज्वलि-
त भये संते स्वभाव करके प्रकाश होता है तैसेही इस संहिता के अभ्यास करने हारा पुरुष
निर्वाण सुख की इच्छा नहीं भी करे तो भी इस संहिता करके निर्वाण सुख स्वभावतें होता
है ३५ हे रामजी इस संहिता मों युक्ति करके युक्त दृष्टांतो करके सार अर्थ करके युक्त वा-
क्य भिन्न भिन्न रचना किये हैं अरु इसमों प्रकरण ६ छः किये हैं ३६ हे रामजी इसमों
प्रथम वैराग्य प्रकरण है जिस करके वैराग्य बढ़ता है कैसे जैसे जलका सिंचन करके
निर्जल देश के वृक्षकों भी पत्रादिक होते हैं ३७ हे रामजी वैराग्य प्रकरण का एकहजार

वा॰ सा॰ ७८

१५००
पंचशत स्लोक परिमाण है जिसके विचार करने करके हृदयमों ज्ञान प्रकाश मान हो ताहै जैसे शाणमों घसी भई मणी प्रकाश मान होती है ३८ हे रामजी दूसरा मुमुक्षु व्यवहार प्रकरण है जिसका एक सहस्र स्लोक परिमाण है युक्ति वाले ग्रंथ करके सुंदर है जिसमों मोक्ष चाहने वाले मनुष्यों का स्वभाव वर्णन किया है ३९ हे रामजी इसतें उपरांत उत्पत्ति प्रकरण तीसरा कियाहै जिसका प्रमाण सात हजार स्लोक किया है विज्ञान को करने हाराहै जिसमों जगत मों देखने हारा पुरुष देखणे योग्य है पदार्थों की संपदा वर्णन करी है जिसमों हम अरु तुम होर इतर पुरुष यह नाम रूपका भेद बनाहै ४० हे रामजी यह जगत की संपदा कैसी है अरु उत्पत नहीं भई जैसी उदयको प्राप्त भई कहीरी है ४१ हे रामजी उत्पत्ति प्रकरण कों श्रवण किये संते श्रवण करने हारा है संपूर्ण जगत कों अपने हृदय मों जान लेता है ४२ हे रामजी जगत कैसा है हम तुम ऐसे भेद करके सहित

ही विस्तार कों प्राप्त भया है अनेक लोक आकाश पर्वतों करके युक्त है सामग्री का संमूह के पिंड से रहित है जैसे घड़ा मृत्तिका के पिंडका प्रत्यक्ष बनता है तैसें नही उत्पन्न भया है तैसे पृथिवी आदिमों पर्वतादि मर्यादा होता है तैसे इसमों पर्वतादि मर्यादा नही है यह नि-र्मयाद है ४३ पृथिवी आदि भूतों की रचना सें रहित है अरु पृथिवी आदिकोंका नाश भये भी नष्ट नहीं होता है जैसे मनके संकल्पमों नगर मिथ्या फ़ुरण होता है ४४ हे रामजी फेर कैसा है जगत स्वप्नमों देखे पदार्थोंकी न्यांई भासता है मनोरथों की न्यांई विस्तार कों प्राप्त होता है ४५ हे रामजी फेर कैसा है सत्य पदार्थों की शून्यता देखने तें गंधर्व नगर की न्यांई भा-सता है एक चंद्रमामों दो चंद्रमां की भ्रांति की न्यांई भासता है रेतीमों सूर्यकी किरणोंकी चमकतें भई जल की भ्रांति जैसा है ४६ हे रामजी फेर कैसा है बेड़ी के चलने तें पर्वत के चलने की भ्रांति जैसा है सत्य लाभतें रहित है चित्तकी भ्रांतितें पिशाच दर्शनकी भ्रांति

जैसी है अरु बीज सें रहित है तौ भी भासता है ४७ हे रामजी फेर कैसा है जगत् कथा के अर्थ के आभास की न्यांई है अरु आकाश मों मुक्ता मणि के आभास सिरीषा है जैसे सुवर्ण मों भूषण की कल्पना होती है तिसके तुल्य है अरु जलमों तरंगों की कल्पना जैसा है ४८ हे रामजी जैसे आकाशमों नीलरंग की कल्पना असत्य होती है तैसे कल्पना मात्र है जैसे स्वप्ने मों अथवा आकाश मों चित्र की कल्पना का फुरणा है अरु कैसा है चित्र आश्रय रहित है फुरणे मात्र सुंदर है फेर कैसा है कर्त्ता से रहित है अरु चिरकाल तक भासता है ४९ फेर वह कैसा है जगत चित्र मों लिखे आलेख्या जो अग्नि है सो दाह से अरु प्रकाशते रहित है तो भी अग्नि का नाम रूपकों धारता है तैसे यह असत्य रूप है तोभी जगत के नाम शब्द को रूप कों अरु अर्थ को धारता है ५० हे रामजी फेर कैसा है जगत तरंगों मो नील कमलोंकी आभा जैसा देखिया है जैसे नृत्य शालामों नृत्य विलास दृश्यमान होता है अरु तिसके समान ज्ञानमात्र-

पुराण रूप है ५१ हेरामजी शांत भया है अज्ञान रूपी अंधकार जिसतें असा विज्ञान रूपी शरद का आकाश है फेर कैसा है स्तंभमों पुतली सिरीखी चित्रित किया है चित्त रूपी दिवालमों उदय भया है मानों कीचड़तें रचना किया है अरु चेतन्यता युक्तभी है अरु अचेतनभी है असा जगत उत्पत्ति प्रकरण मों वर्णित किया है ५२ हेरामजी तिसते उपरांत चौथा स्थिति प्रकरण कल्पित किया है अरु उस ग्रंथ के श्लोकों का तीन हजार परिमाण है अरु उसमें अनेक दृष्टांत कथा संयुक्त है ५३ हेरामचंद्रजी यह जगत इस प्रकार करके अहं भाव की स्थिती कों प्राप्त भयाहे अरु देखने हारा पुरुष अरु देखने-योग्य पदार्थों का क्रम करके दृढ भया है यह इसमों वर्णित किया है ५४ अरु यह जगत रूपी महा वृत्त दशदिशा का मंडल मों प्रकाश मान है इस प्रकार करके बृद्धिकों प्राप्त भया है अरु यह स्थिति प्रकरण मो वर्णित करीदा है ५५ हेरामजी तिसते उपरांत

पंचम उप शांति प्रकरण कहिआ है उसके श्लोकों का परिमाण पांच हजार है अरु मुक्ति विस्तार करके सुंदर है यह जगत है अरु यह हम हैं यह तुम हो सो पुरुष है ऐसी जो जगतकी भ्रांति उदय भई है सो इस प्रकार करके शांत होती है अरु उपशांति प्रकरण में श्लोकों का संग्रह हो करके कहीदी है ५६ हेरामजी जीवन्मुक्ति क्रम करके भ्रांति क्षीण भई है तोभी सत्ता के लेश करके शेष रहती है जैसे चित्रमें लिखने मा त्र स्वरूप करके शेष रहती है ५७ हेरामजी सो भ्रांति विरोध वाले अंश करके शांत होती है परंतु तोभी विरोध रहित शांत अंश करके शेष रहती है तिसमें तुम्हारे को नव दृष्टांत कहते हैं ५८ हेरामजी उपशम होने संते ज्ञानी पुरुष को अज्ञान-की सप्त भूमिका का जय करते जैसे जैसे भूमिका का क्रम करके जय होता जाता है तैसे तैसे भ्रांति शांत होती है अंशकरके शेष रहती है सो भी शांति होती जाती

वा॰रा॰ है पहिलें संस्कार मात्र लक्षित होती है फेर अलक्षित रूप संस्कार मात्र शेष रहती
९४ है सप्तमी भूमिका मों निःशेष नष्ट होती है तो जीवन्मुक्ति अरु निर्वाण की प्राप्त होती
है इसमों दृष्टांत है ५९ हे रामजी किसी पुरुष कों संकल्पमो नगरी फुरी है अरु तिसके
पास दूसरे पुरुषको स्वप्नमों नगरी दृश्य मान भई है फेर नगरीमें युद्ध का कोलाहल
शब्द भया फेर धन संपदा प्राप्त भई तिस नगरीकी शोभा स्वप्न देखने वाले कों प्रत्यक्ष
दृश्य है संकल्प वालेको किंचिन्मात्र दृश्य है अरु संकल्प शांत भये संते स्वप्न नष्टभये
संते जैसे सो नगरीकी शोभा शांत होती है तैसेही जगतकी भ्रांति शांत होतीहै ६०
हे रामजी जैसे संकल्प करके मन वाले हाथीकी न्यांई भारी बादल कल्पना किया है
उसका गर्जनाभी कल्पना करी है अरु संकल्प शांत भये संते बादल भी गर्जना श-
ब्दभी शांत होताहै तैसे उपशांति करके भ्रांति शांत होतीहै जैसे स्वप्न करके नगर

कलपन किया है संकल्प शांत भये संते नगर की कल्पना शांत होती है तैसे भ्रांति शां-
त होती है ८१ हे रामजी आगे होना जो नगर तिसमों जो बगीचा अरु तिसमों प्रकट भई
बंध्या स्त्री तिसके अंगसे उत्पत भई कंन्या तिसकी जिह्वा करके कहिया आगे होने वा-
ली कथा का अर्थ तिसके अनु भव के तुल्य ऐसी जो जगतकी भ्रांति सो शांत होती है ८२
हे रामजी नहीं लिखिया ऐसा जो चित्र तिसका चित्र करने का बिस्तार दिवाल बिना
स्थान होइ यह सभ असंभावित है अरु तैसे भ्रांति शांत होतीहै जिसकी रचना विस्मृ-
त होय गई है ऐसा जो नगर जैसे संभावना मों नहीं होय तैसे भ्रांति शांत होती है ८३
हे रामजी सर्व ऋतु करके सर्व काल मों होने हारे पुष्प फलों वाले वृक्षों करके संयु-
क्त और जिसकी उत्पत नहींहै अरु ऐसाजो बनहै तिसका स्वरूप जैसे देखणे मों संभा-
वना मों नहीं आवे तैसे भ्रांति शांत होतीहै अरु आगे होना जो पुष्प वाले वृक्षों का बन

तिसका स्वरूप करके बनी जो बसंत ऋतु की रचना सो जैसे मिथ्या होती है तैसे भ्रांति-
शांत होती है ६४ हेरामजी अंदर में लीन होय गियाहै अरु तरंगोंका समूह जिसका ऐ-
सी शांत भई जो नदी तिसके समान जगतकी भ्रांति शांत होतीहै सो उपशम प्रकरण
में कहीहै ६५ हेरामजी तिसते उपरंत निर्वाण प्रकरण छठा कहिया है अरु शेष-
ग्रंथ चौदह १४५०० हज़ार पंचशत प्रमाण श्लोकहैं अरु जिसके ज्ञानका महा अर्थ जो मा-
त्रहै तिसको देने हाराहै ६६ तिसको जाने संते महा कल्याण होताहै अरु निर्वाण शां-
तिका आनंद प्राप्त होताहै जिसते यह पुरुष पुण्यात्माही होताहै जिस निर्वाण प्रकरण
को जान करके यह पुरुष और करके चेतया नहीं जाता है ऐसा चैतन्य स्वरूप होता
है अरु स्वयं प्रकाश होताहै ज्ञान स्वरूप होताहै अरु निर्विकार होताहै अरु आकाशकी
न्याई निर्मल होताहै जिस पुरुषको संपूर्ण जगतके भ्रम शांत होते हैं ६७ हेरामजी

वा॰सा॰ तिस पुरुषका जगत मों आवना जाना शांत होताहै अरु कृत्य कृत्य होय कर स्थित हो-
८७ ताहै अरु संपूर्ण जगतकी रचना को चूरण करने को वज्र के स्तंभकी न्यांई लय करने हारा होताहै अरु आकाशकी न्यांई असंग होताहै ६८ हेरामजी तिस पुरुषके अंतःकरण मों संपूर्ण जगतकी रचना का जाल अनेक प्रकारकी संख्याके प्रमाण सहित लीन होता है सो पुरुष अपने स्वरूपमोंही अत्यंत तृप्त होताहै ६९ हेरामजी तिस पुरुषको कार्य का-रण का भेद ज्ञान नहीं होताहै अरु कर्त्ताकी कर्मकी ज्ञान दृष्टि नहीं होतीहै अरु ग्रह-ण करना अरु त्यागना यह दृष्टिभी नहीं होतीहै ७० हेरामजी सो पुरुष फेर कैसा होता है अरु देह करके युक्त है तोभी देहके अभिमानसे रहित होता है अरु संसारमों वर्त्तमा-न है तोभी संसार के बंधन से रहित होताहै अरु चैतन्य स्वरूपहै तोभी तिस पुरुषके उदरमों बहुत पत्थर भरे होये अरु अत्यंत स्थूल होय अपने देहके चलनेकी सामर्थ

जिसको नहीं होवे तिस पुरुषकी न्यांई संसार कर्मोंकी चेष्टासे रहित होताहै ७१ हेरामजी तिस पुरुष कों संसारकी दृष्ट लीला प्रतिबंध होजाती है अरु आशा रूपी विसूचिका रोग क्षीण होताहै अरु अहंकार रूपी वेताल नष्ट होता है अरु देह धारी है तोभी देहके धर्मसे रहित होताहै ७२ हेरामजी तिस पुरुषके एक रोमके अग्रभागमों यह संपूर्ण जगतकी संपदा सूक्ष्म रूप स्थित होतीहै अरु जैसे सुमेरु पर्वत लक्ष योजन है तिसमों भ्रमरी सूक्ष्म रूपकरके दृष्ट होतीहै ७३ हेरामजी सो पुरुष स्वरूप करके परमाणू के भी परमाणू से सूक्ष्म रूप होताहै अरु जिसके चैतन्य स्वरूप आकाशमों हजारों जगत कियां लक्ष्मियां दृष्ट होतीहैं अरु अपने स्वरूप मों धारण करके अपने स्वरूपमों देखताहै ७४ हेरामजी यह हमारा कहिया वेदांत शास्त्र सुखोंका बोध करने वाला है अरु अलंकारों करके शोभायुक्तहैं अरु उत्तम काव्यहै श्रोति-

इस शृंगार आदि रसों करके युक्त है अत्यंत सुंदर दृष्टांतों करके हमने सिद्ध किया है ७५ हे रामजी यह शास्त्र कैसा है थोड़े पद पदार्थों के ज्ञान करके भी आपही मुख से बोध को प्राप्त कर देता है जो पुरुष इसके अर्थ को आप नहीं जाने तिस पुरुषने इस का श्रवण वेदांत शास्त्रों को जानने हारे पंडित से श्रवण करने योग्य है ७६ हे रामजी यह शास्त्र कैसा है तिसको श्रवण किये संते माने संते अरु जाने संते मोक्ष की प्राप्ति निमित्त तप अरु ध्यान अरु जपादिक कोई भी योग्यता को प्राप्त नहीं होता है केवल इसके श्रवण मनन किये संते मोक्ष की प्राप्ति निश्चिय करके होती है ७७ हे रामजी इस शास्त्र के दृढ़ अभ्यास करनेते बार बार विचार करने ते अपूर्व पंडिताई होती है अरु चित्तमों संस्कार सहित ज्ञान होता है ७८ हे रामजी इस शास्त्र करके दीनता अरु दरिद्रता से लेकर दोष दृष्टि जो हैं विघ्नों के करने हारी है तो भी मुमुक्षु पुरुष के मरने को वेध नहीं

करती हे जैसे कवच धारण करने हारे पुरुष को बाण वेध नहीं करते हैं ७९ हे रामजी संसार कीयां भय करने हारीयां भीती जो हैं सो आपने सन्मुख आये प्राप्त भये कों भी हृदय मों खेद नहीं करती हे जैसे आभागे स्थित भये पर्वत को बाण जलधारा भेद नहीं कर सकती हैं ८० हे रामजी इस शास्त्र का श्रवण करनेते पुरुष को समुद्रकी न्यांई गंभीरता होती हे समुद्र की न्यांई गंभीरता होती है अरु सुमेरु पर्वत की न्यांई स्थित होती हे अरु चंद्रमा की न्यांई अंतःकरण मों शीतलता होती है ८१ हे रामजी जैसे चित्रमों लिखिया सर्प देखने हारेको भय नहीं देता हे तैसे शास्त्र विचार करने हारे पुरुष को प्रत्यक्ष देखा संसार रूपी सर्प भी भय को नहीं देता हे ८२ हे रामजी पुष्प के खेंचने मों देर होती हे इस शास्त्र के विचार करने हारे को आत्मा की प्राप्ती मों देर नहीं होती हे ८३ हे रामजी पुष्प के पत्रकों तोड़ने मों कुछ अंगों करके खेद करने बनता है इस शास्त्र के विचार करने हारे को परमात्मा की प्रा-

वा॰सा॰ मीमों खेद नहीं करने बनता है ८४ हेरामजी इस शास्त्र को विचार करने द्वारा पुरुष सु-
९१ ख करके आसन में बैठे पद्मासनादि आसन का नियम का बंधन से रहित होता है अरु अ-
पनी इच्छा करने बिना दैव योग्य करके जो मिले तिसको भोजन करे तिस पुरुष को तप अरु
व्रतादि को का नियम कोई नहीं होता है अरु भोगभी आचार से सेवे तो विरुद्ध कर्मों का
त्याग आपही होजाता है ८५ हेरामजी जो पुरुष जैसा मिले तैसा सत्संग करे इस शास्त्रकों
अथवा और वेदांत शास्त्र को श्रवण करे विचार नकरे तिस पुरुष को ज्ञान करके महा
बोध होता है जिस करके संसार की शांति होती है अरु जिस करके माता के गर्भ के यंत्रकी
पीड़ा को नही प्राप्त होता है ८६ हेरामजी जौन से पुरुष ऐसे सुखवाले मोक्ष के उपाय में
भी भय को प्राप्त होते हैं अरु पाप करके भोग रसों में आसक्त भये हैं सो पुरुष माता के
मलमें कीड़ा होते हैं जिन्हका नाम मुख से उच्चारण नहीं करना सो पुरुष नीच हैं ८७

वा·सा· ९२

हे रामजी यह पुरुष आपने कल्याण के वास्ते पहिले सत्संग करके युक्ति करके आपनी बुद्धि को सुधारे तिसते उपरंत महात्मा पुरुषों के लक्षणों करके महात्मा पुरुषों की वृत्ति को धारण करे ८८ हे रामजी शम अरु दम इत्यादि महा पुरुषों के लक्षण हे सो भले प्रकार कर ज्ञान बिना सिद्ध नही होते हैं ८९ हे रामजी ज्ञान में शमादि गुण होते हैं शमादि गुणों से ज्ञान होता हे अरु ज्ञान अरु शमादि गुण आपस मों शोभा को प्राप्त होते हैं जैसे कमल अरु सरोबर आपसमों शोभित होते हैं ९० हे रामजी सत्पुरुषों के आचार से ज्ञान बढ़ता हे अरु ज्ञान करके सत्पुरुषों का आचार बढ़ता हे ज्ञान अरु सत्पुरुषों का आचार दोनो मिल करके आपस मो बढ़ते हैं ९१ हे रामजी मैने यह दोनो ही समान सेवे हैं इन्ह दोनों मे एक बिना दूसरा सिद्ध नहीं होता हे ९२ हे रामजी जैसे कोई इस्त्री आपने खेत से पशु अरु पंछीयों को दूर निकालती हे अरु गीत गायन करती हे अरु गीत के आनंद मों प्रीति वाली हे अरु पशुओं को दूर

करने साथ ही गीत का आनंद करती है तैसे चतुर पुरुषने ज्ञान करके सत्पुरुषों के आचार करके आत्म पद की प्राप्ति सिद्धि करीदी है ९३ हेरामजी जिसने आत्मा स्वरूप जानिया है सो आपही अवश होय कर परम पदको प्राप्त होताहै जो इस पुरुषने मनकी सावधानता करके उत्तम अखंड वस्तु जानिया है सो वस्तु ज्ञान के वशातें दूर नहीं होताहै ९४ इतिश्री वासिष्टसारेमोक्षोपायेमुमुक्षुव्यवहारप्रकरणंद्वितीयं २ अथउत्पत्तिकरणम्। तृतीय प्रकरण में श्रीवसिष्टजी श्रीरामचंद्रजी प्रति जगत की उत्पति कहते भये जगत और जीव उत्पति अरु प्रलय यह सभ अज्ञान से कल्पना मात्र भासता है स्वप्न की न्यांई मिथ्याही प्रतीत होताहै अरु ज्ञान भये संते सभही एक अद्वितीय आत्म स्वरूप ब्रह्महि भासताहै इस अर्थ को श्रीवसिष्टजी श्रीरामचंद्रजी को पहिले संक्षेप करके श्रवण करावते हैं १ हेरामजी ब्रह्मही तत्वमसी इत्यादि महा वाक्यों का विचार सें भई एक अखंडा

कार वृत्ति करके उद्भये आत्म प्रकाशों करके अपने तत्वकों साक्षात्कार करके आपही वा
स्तव नित्य मुक्त पूर्ण स्वरूप करके भासता है आपनी मुक्तिमों महावाक्य विचार सें भई प्रका
श वृत्ति विना और उपाय की इच्छा नहीं करताहै सो कैसे जिस कारणतें यह देह इंद्रियआदि का
र्य रूप करके आकाशादि कारण रूप करके दृश्यमान बंधरूप जो विश्वहै सो जीव रूपी ब्रह्म
विषेही स्वप्नेकी न्यांई प्रकट भयाभासता है स्वप्नेका बंधनकी निवृत्ति जाग्रत होनेतें अन्य
उपाय को नहीं चाहती है तैसेही आत्म स्वरूपका अज्ञान करके ब्रह्मही स्वप्नकी न्यांई जीव
रूप करके संसार बंधको प्राप्त भयाहै सो महा वाक्य विचारते आत्मस्वरूप का ज्ञान बिना
अपना बंध दूर करनेको और उपाय को नहीं चाहता है जो कोई हमारे जैसे अधिकारीहै
सोभी ब्रह्मरूप है ब्रह्मसेही प्रकटभये अरु वेदांत वाक्योंका श्रवण मनननिदिध्यासन कर
के ब्रह्मको जानता है सो अहं ब्रह्म इस प्रकार से जीवता ही नित्य सुद्ध बुद्धि परिपूर्ण अ-

द्वितीय नित्य मुक्त पर ब्रह्म होताहै २ हे रामजी मुमुक्षु व्यवहार प्रकरणते उपरंत अब तेरे प्रति उत्पत्ति प्रकरण हम कहते हैं अरु तिसको तुम सावधान होय कर श्रवण करो ३ हे रामजी यह संसार बंध दृश्य पदार्थकी सत्य भावनोंते होताहै अरु दृश्य पदार्थका असत्य भावनाते नहीं होताहै जिस प्रकार करके दृश्य पदार्थकी सत्यभावना नहीं होवे तिसको तुम क्रमसे श्रवण करो ४ हे रामजी जौनसा यह स्थावर जंगम संपूर्ण जगत दृश्यमानहै सो जैसे सुषप्ति अवस्थामो स्वप्नालीन होताहै तैसे कल्पके अंतकाल मों प्रलयको प्राप्त होता है ५ हे रामजी प्रलयते उपरंत किंचित् सत्ता मात्र वस्तु बाकी शेष रहता है कैसा है निश्चलहै अरु गंभीर है नातो वह तेजहै अरु नावह अंधकार है सर्वत्र एक रूपही व्याप्तहै जिसका रूप नहींहै सो केवल सत्तामात्र ब्रह्महै ६ हे रामजी सो अविनाशीहै आत्माहै अरु परंब्रह्म है अरु सत्यहै इत्यादि नाम तिसके पंडितोंने व्यवहार वास्ते

कल्पन किये हैं ७ हे रामजी सो अद्वितीय सत्तामात्र परमात्मामें एकहीं ऐसे फुरने को प्राप्त होताहै तो तुच्छ रूप जीव भावको प्राप्त होताहै ८ हे रामजी तिसते सो जीव शब्दके अर्थकी कल्पना करके व्याकुलभाव को प्राप्त होताहै तो मनकी कल्पना करके युक्त रूप होताहै तो मननव्यापार को प्राप्त होताहै ८ हे रामजी तिस मनन व्यापार के फुरनेते तिस परमात्माते मन प्रकट होताहै कैसा है परमात्मा निश्चिलहै अरु मन कैसा है चंचल रूपहै परमात्मा से मन कैसे प्रकट होताहै जैसे समुद्रमें तरंग प्रकट होतेहैं अरु समुद्र अचल है तरंग उसके चंचलहैं ९ हे रामजी सो मन स्वतंत्र होय करके शीघ्रही संकल्प करता है तो संकल्प करके ही इस प्रकारकी जगत रूप इंद्रजाल की संपदा विस्तार करके विस्तारण करी दीहै १० हे रामजी जैसे भूषण शब्दका अर्थ सुवर्णसें भिन्न नहीं होताहै अरु सुवर्ण शब्द भूषण सें भिन्न नहीं दृष्ट होताहै तैसेही जगत शब्दका अर्थ परमात्मा विषे भिन्न दृष्ट नहींहोता है ११

वा॰ सा॰ हे रामचंद्र जी जगत रूपी इंद्र जाल की लक्ष्मी मन करके ही विस्तार को प्राप्त
८७ करीदी है वह कैसी है सत्य नहीं है अरु असत्य भी नहीं है प्रत्यक्ष देखने ते स
त्य है अरु नाश होने करके असत्य है जैसे नदी करके लहरी चलती है १२ हे रा
मजी सो मन से विस्तार को प्राप्त भई जगत नाम इंद्रजाल की लक्ष्मी है तिसका ना
म अविद्या है संसार नाम है अरु बंधन भी नाम है अरु माया भी नाम है अरु मो
हभी नाम है महा अंधकार इत्यादि नाम तिसके सर्व शास्त्र वेत्ता पंडितों ने कल्प
ना किये हैं १३ हे रामजी द्रष्टा आत्मा है अरु दृश्य जगत है इन्हका आपसमें सं
बंध जो है सो बंधन कहिया है सो आत्मा दृश्य की सत्ता होनेते बद्ध भया है
दृश्य पदार्थ का अभाव भये संते मुक्त होता है १४ हे रामजी जगत है तुमहो
हमहैं इत्यादि कथन मात्र दृश्य है अरु मिथ्याही कहीदा है जब लग यह

सत्य भासता है तब लग मोक्ष नहीं होता है १५ हेरामजी यह जगत दृश्य रू-
प करके सत्य होवे तो किसीकों भी शांत नहीं होवे जिस कारण तें असत्य पदा-
र्थ की सत्ता नहीं होती है अरु सत्य पदार्थ का अभाव नहीं होता है १६ हेराम-
जी तिसतें यह जगत दृश्य है असत्य है जो कोई कहै मैंने जानिया है और त-
प करके अरु ध्यान करके अरु जप करके त्यागिया है ऐसे जो कहिता है
सो कांजी करके तृप्त होने की न्याई मिथ्या है अरु जैसे कांजी करके तृप्ति न-
ल नहीं होती है तैसे तपादिकों करके दृश्य का त्याग नहीं होता है १७ हे
रामजी जब लग दृश्य भासता है तब लग परमाणू के भी अंदर चैतन्य रू-
पी दर्पण मों प्रतिबिंबत होता है जो कोई समाधि लगावता है वह कहि-
ताहै मैंने दृश्य हर किया है अरु मैं अब समाधिमों स्थित हों हेरामचंद्रजी

इसका यही बीज है जो समाधिमें संसार की स्मृति होनी तिसते समाधिमें भी दृश्य दूर नहीं होताहै १८ हेरामजी तिस दृश्य का स्फुरणा होतसंते निर्विकल्प समाधि करके भी अखंड दृश्य पदार्थ का सुषुप्ति जैसा लय नहीं होता है अरु तुरीय परभी नहीं प्राप्त होता है १९ हेरामजी यो दृश्य पदार्थ मन तें शांत होवे तो समाधि करके क्या है अरु समाधि से उपरांत फेर दृश्य पदार्थ का दुःख होवे तो क्षणमात्र समाधिमें शांत भयेतें क्या सुख है २० हेरामजी देखने द्वारा जो समाधि करके अपने आप जड़ होय करके बल करके दृश्य की शांति को देखता है तो भी क्या सुख है अरु समाधि उपरांत दृश्य कर उदय होता है २१ हेरामजी तिसतें यह दृश्य मन को शांत बिना शांत नहीं होताहै अरु तप करके ध्यान करके जप करके शांत होवेगा यह अज्ञानी पुरुषों

की कल्पना है २२ हे रामजी यह आकाशज विप्रका कथानक मैं तुम्हारे प्रति कहिता हूं वह कैसा है श्रवण करने मों भूषण है जिस करके उत्पत्ति प्रकरण का भली तरह सें बोध होता है २३ हे रामजी एक आकाशज नामा ब्राह्मण होता भया चिरंजीवी होता भया अरु ध्यान मों निष्ठा करता भया तिसके मारने को मृत्यु अग्नि मंडल को भेद करके जाता भया परंतु तिस ब्राह्मण के मारने को असमर्थ होता भया तब मृत्यु अपनी असमर्थता का यम कों पछता भया २४ तब यम मृत्यु को कहिता है हे मृत्यु तू अकेला इस आशाकज ब्राह्मण के मारने को समर्थ नहीं है जौनसा तैने मारना है इसके किये कर्म ही इसको मारने हारे हैं अरु तैने अवश्य मारना होवे तो यत्न करके इस के कर्मों को ढूंढ कर्मों की सहायता करके तू इसको मारेंगा २५ तिसनें उपरांत मृत्यु आकाशज विप्रके कर्म

ढूंडता भया तिस के कर्मो को नहीं प्राप्त होता भया तब आइ करके धर्म रा-
जको पछ्ता भया २५ हे धर्मराज आकाशज विप्र के कर्म कहां स्थित है मृत्यु
का प्रश्न सुन करके धर्म राजा चिंतन करके वचन कहिता भया २६ हे मृत्यु
आकाशज विप्र के कर्म कोई नहीं है यह आकाशज विप्र केवल अद्वितीय
आकाशतें प्रकट भया है २७ तिसते जौंनसा केवल आकाशते भया है तो केव
ल निर्मल आकाश रूप है इस के सह चारी कर्म भी कोई नहीं है २८ इसके
पिछ्ले के कर्म भी नहीं है अबभी कर्म नहीं करता है यह क्या है कौन है के-
वल ज्ञान रूप है २९ यौंनसी इस की प्राण क्रिया हम सिरीष्यों करके लक्षित
होती है सो केवल सत्ता मात्र है इसको कर्म की बुद्धि मात्र भी नहीं है ३० जि
सते यह केवल आकाशतें भया है ज्ञान स्वरूप है सत्ता मात्र है तिसतें पृथिवी

आदिकों ने इसका संभव कहां होता है तिसते हे मृत्यो तूं इसके मारने में यत्न मत कर ३१ आकाश ग्रहण करने को कदाचि युक्त नहीं होता है तिसते तूं यत्न को त्याग कर इतना सुन कर मृत्यु विस्मय को प्राप्त भया तब अपने स्थान को जाता भया ३२ **श्रीरामजीकाप्रश्न॰** हे गुरुजी सो आकाशज विप्र तुमने मेरे प्रति आदि देव ब्रह्मही कह्या है वुह कैसा है सर्व लोक को रचन करने हारा है अरु स्वयं प्रकाश है अरु जन्म से रहित है अरु एक स्वरूप है बुद्धि को प्रेरण करने हारा है यह मेरी बुद्धि कहती है ३३ **श्रीवसिष्ठजीकोवचन॰** हे रामजी जो तुम को निश्चय भया है सो तैसे ही है मैंने तेरे प्रति ब्रह्मही कह्या है इसको ग्रहण करने वाले मृत्यु यम के साथ वाद करता भया ३४ हे रामजी सो चैतन्य रूपता करके आकाश की न्याई असंग है केवल एक रूप है अंत से आद से मध्य से रहित है

वा·रा· सो ब्रह्म ही अपने चित्त के वशाते स्वयं प्रकाश है तो भी स्वरूप वाला देह धारी
१०२ जैसा भासता है पुरुष देह जैसा भी भासता है वास्तव विचार ते जैसे बंध्या इस्त्री
को पुत्र नहीं होता है तैसेही आत्मा को देह नहीं है २५ हे रामजी यह स्वयं प्रका-
श आत्मा का देह संकल्प मात्र है पांच भूतों का बनिआ देह जन्म करके रहित
जो आत्मा तिस को कदाचित नहीं होता है २६ हे रामजी सर्व प्राणियों के दो शरीर
बने हैं वुह कैसे हैं प्राणी पांच भूत जिन्ह के कारण हैं तिनका एक संकल्प मात्र
देह है एक पांच भूतों का है यह आत्मा जन्म से रहित है इसका कारण कोई नहीं है
तिसते इसका एक संकल्प मात्र शरीर है २७ हे रामजी यह आत्मा का शरीर केवल
मनका संकल्प मात्र है अरु पृथिवी आदिकों का नहीं बना है तिसते यह संसार म
नो मात्र है जैसा जानिआ है तैसा ही है २८ हे रामजी जन्म रहित यह आत्मा के सहाय

करणे हारे कर्मा दिक नहीं है तिसते आत्माते संकल्प मात्रते प्रकट भये विश्व के भी कर्मा दिक सहाय करने हारे नहीं है ३९ हे रामजी ब्रह्ममों कार्य कारण का भाव कोई नहीं बनता है जैसा परब्रह्म है तैसा ही त्रैलोक्य है ४० हे रामजी मनु नाम करके एक मनुष्य है सो संकल्प करके ब्रह्म का स्वरूप धारण करता है तिसके मन का संकल्प मात्र जगत है तिसते जगत सत्य रूप भासता है ४१ हे रामजी जैसे अपने चित्त संकल्प से उठेआ जो पिशाच है सो बालक को मरने पर्यंत दुःख को देता है तैसे ही यह दृश्य रूपी पिशाचिनी अपने संकल्प से बनी है सो देखने हारे को अंतः करण मों दाह करती है ४२ हे रामजी जैसे अंकुर बीज के अंदर रहता है सो देश काल के स्वभाव ते अपने स्वरूप को प्रकट प्रकाश करती है ४३ हे रामजी जब लग यह दृश्य फ़ुरणेमों विद्यमान है तब लग देखने हारे को इसका दुःख शांत नहीं होता है सो दुःख जब

लग बनिया है तब लग जानने हारे को अपना अद्वैत रूप नहीं भासता है जब दृश्य मनतें शांत होजावे तब दृश्य का जानना अरु जानने हारे का भाव स्थित है तो भी शांति होता है दृश्य का देखने के भाव की शांति को पंडित मोक्ष कहते हैं ४४ श्रीरामचंद्रजीकाप्रश्न॰ हे भगवन मन का स्वरूप कैसा है तिस को तुम मेरेको प्रकट करके कहो जिस कारण तें तिस मन करके यह संपूर्ण लोक रचना विस्तार करी है ४५ श्रीवसिष्ठजीकहतेहैं। हे रामजी इस मन का रूप नाम मात्र ते अवर दृष्ट नहीं होता है जैसें आकाश का रूप शून्य है अरु जड़ है तैसे मन भी रूप रहित है अरु शून्य है अरु जड़ है ४६ हे रामजी मन बाहिर भी सत्य रूप नहीं है अरु हृदय के अंदर भी सत्य रूप नहीं है अरु सर्वत्र मन इस्थिर है जैसे आकाश जगत में सर्वत्र है ४७ हे रामजी नातो अंदर है

नातो बाहिर है मध्य में सत्य का अथवा असत्य का फुरना जो प्रकट भया है
तिस को तुम मन करके जानों अवर मन का रूप नहीं है ४८ हे रामजी संकल्प
करने को तुम मन जानो सो मन संकल्प से भिन्न नहीं है जैसे चलने तें जल भि-
न्न नहीं है अरु स्पंद तें पवन भिन्न नहीं है ४९ हे रामजी सत्य अथवा असत्य
पदार्थों का जो फुरना है एतन्मात्र ही तुम मन को जानों सोही ब्रह्मा है सो ही
सृष्टि कर्ता है ५० हे रामजी संकल्प शरीर ही मन कहिया है सो ही संकल्प मा-
त्र शरीर चिर काल तक दृढ होता है तो पांच भौतिक बुद्धि कों धारण करता
है ५१ हे रामजी त्रैलोक्य है अरु हम हैं तुम हो इस प्रकार कर दृश्य को असत्-
त्य भाव को प्राप्त भये संते देखने हारे निर्मल रूप आत्मा का केवल अद्वैत भाव
प्रकट होता है ५२ हे रामजी पर्वतादि कों के नाम रूप से रहित ऐसे जो निर्मल

वा॰भा॰ दर्पण में जैसे संपूर्ण पर्वतादिकों के प्रति बिंब होते हैं तैसे केवल अद्वितीय
१०।७ आत्मा में जगत का प्रति बिंब होता है ५३ हे रामजी हम हैं तुम हो अरु जगत
है इत्यादि जगत का भ्रम शांत भये संते देखने हारे को मै देखता हूं इस प्रकार
देखने के व्यवहार की स्थिति नहीं होती है यथायोग्य आत्मा की अद्वैत भावनाही
सिद्ध होती है ५४ श्रीरामचंद्रजी का प्रश्न॰ हे गुरुजी यह परमात्मा देवतों का भी
देवता है सो कौन तप करके अरु केते क्लेश करके शिताबी समीप प्राप्त होताहै
तिस को तुम मेरे को कहो ५५ श्रीवसिष्टजीवचनन॰न॰ हे रामजी अपने पौरुष
के यत्न करके प्रकाश मान विवेक करके सो आत्मा प्राप्त होता है तप करके
स्नानादिक कर्मों करके नहि प्राप्त होता है ५६ हे रामजी राग द्वेष अरु मोह
अरु क्रोध मद ईर्ष्या इन्ह के परित्याग बिना जो कुछ तपदान क्लेश करा जाता

है सो अपने फल को नहीं करता है ५७ हे रामजी राग द्वेषादि करके चित्त युक्त होवे जो कोई पर यन को वचन करके अरु यज्ञ दान तप करता है सो पुरुष यज्ञ दान तप के फलों को नहीं प्राप्त होता है अरु जिसका यन होवे तिसको फल प्राप्त होता है ५८ हे रामजी राग द्वेष युक्त चित्त करके जौनसा ब्रत नियम दान यज्ञ करता है सो दंभ कहिया है तिसका तुच्छ मात्र भी फल नहीं प्राप्त होता है ५९ तिसते हे रामजी अपने पौरष के यत्न करके संसार रोग निवृत्तिके लिये उत्तम शास्त्र अरु सत्संग रूपी औषध को उपार्जन करै शास्त्र अरु सत्संग संसार रोग का नाश करते हैं ६० हे रामजी सत शास्त्र अरु सत्संग करके भये विवेकों के बलते संपूर्ण अविद्या तैसे नष्ट होती हैं जैसे जल की मलीनता खादे रूरी के प्रसंग करके दूर होती है जैसे पुरुषोंकियां मलीन बुद्धी योगा-

प्राप्त ते शुद्ध होती हैं ६१ श्रीरामजीकोप्रश्न॰ हे गुरुजी आत्म ज्ञान के जानने वास्ते कौनसा शास्त्र प्रधान है तिस को तुम मेरे प्रति कहो अरु जास को जानने ते फिर शोक नही करने बने अरु तुम शास्त्र वेत्ता पुरुषों में श्रेष्ट हो ६२ श्रीवसिष्टजीकहिते हैं। हे रामजी आत्मा के जानने वास्ते वेदांत शास्त्र साधन हैं तिन्हू वेदांत शास्त्रों में यह महा रामायण शास्त्र उत्तम है अरु प्रधान है ६३ हे रामजी आत्मा को जानने का उपाय जो महा रामायण मो कहा है सो और शास्त्र मो भी है अरु जो इसमो नही है सो और शास्त्र मों भी नही है इस महा रामायण शास्त्र कों सर्व शास्त्र ज्ञान का भंडार कहते हैं अरु संपूर्ण पंडित लोग इस शास्त्र को मानते हैं ६४ हे रामजी जो पुरुष इसको नित्य प्रति श्रवण करे तिसको उदार चमत्कार होता है अरु तिसकी बुद्धि बोध का भी परम बोधकों प्राप्त होती है इसमों संशय कोई -

नहीं है ६५ हे रामजी जिसकों अपने पाप के दुष्ट फल प्रगट होवें अरु तिस कों इसमों रुचि नहीं होवे तब सो पुरुष आत्म ज्ञान के वास्ते ओर शास्त्र को विचारण करे ६६ श्रीरामजीकोप्रश्न॰ हे गुरुजी विदेह मुक्त का लक्षण को ओर जीवन मुक्त के लक्षण को मेरे प्रति कहो जिसको श्रवण करके अरु तिस प्रकार की ज्ञान दृष्टि करके में भी मुक्त वास्ते यत्न करूं ६७ श्रीवसिष्ठजीकहतेहैं॰ हे रामजी जोंनसा पुरुष जगत के व्यवहार कों करता भी है तो भी जिसकों जैसा है तैसाही मन सें जगत का व्यवहार आकाश की न्याई शून्य होइ गया है अरु जगत का भ्रमग्रस्त होइ गया है सो जीवन मुक्त कहिया है ६८ हे रामजी जोंनसा पुरुष आत्मज्ञान की मुख्य निष्ठा कों प्राप्त भया है जिसकों जाग्रत अवस्था मों सुषुप्ति अवस्था के बरोबर जगत का भ्रम नही होता है अरु लोकों को जगत का व्यवहार कर

ता अरु जैसा इष्ट होता है सो तिसको जीवन मुक्त कहिया है ६९ हे रामजी जिसके मुख की शोभा सुख प्राप्ति मों प्रकाश नही होती है अरु दुःख प्राप्ति मों मलिन नही होती अरु जैसा प्राप्त होय तैसाही संतोष करके स्थित भया है सो जीवन मुक्त कहिया है ७० जौंनसा पुरुष जाग्रत अवस्था मों सुषुप्ति अवस्था जैसा जगत की चेष्टा से रहित भया अरु जिस पुरुष कों लोक व्यवहार की जाग्रत अवस्था नही है अरु जिसकों वासना रहित आत्म बोध है सो जीवन मुक्ति होताहै ७१ हे रामजी जौंनसा राग द्वेष भयादि कों के अनुसार वर्त्त मान है तो भी अंतः करणमें आकाश की न्याई निर्मल है सो जीवन मुक्त कहिया है ७२ हे रामजी जिसकों कर्म करते को अथवा नही करते को देहका अहंकार नही है अरु जिसकी बुद्धि फल वांछा को लिप्त नही होती है सो जीवन मुक्त कहिया है ७३ हे रामजी जिस

कों मन के संकल्प विकल्प करके त्रिलोकी की उत्पत्ति प्रलय का ज्ञान होता है ॥
जो आकाश की न्याईं निर्लेप है सो जीवन मुक्त कहिया है ७४ हे रामजी जिस तें
लोक दुःखी न होवे अरु जो लोक से दुःखी नहीं होवे अरु हर्ष अरु क्रोध अरु
भय से जो रहित होवे सो ही जीवन मुक्त कहिया है ७५ हे रामजी जिस कों संसा-
र कल्पना शांत भई है अरु गुणवान है तो भी निर्गुण है अरु चित्त युक्त है तो
भी चित्त के धर्म ते संसार के चिंतन ते रहित है सो ही जीवन मुक्त कहिया है ७६
हे रामजी जौंनसा संपूर्ण पदार्थ समूह में व्यवहार वाला है तो भी शुभ शील-
युक्त है अरु संपूर्ण पदार्थों की हानि वृद्धिमें संतोष करके पूर्ण भया है सो ही
जीवन मुक्त कहिया है ७७ हे रामजी जब जीवन मुक्त का देह काल के वश होता
है तो जीवन मुक्त नामको त्याग करके देह से रहित होय करके मुक्त होता-

है जैसे पवन स्पंदते रहता है तो आकाश में लीन होता है तैसें आत्मासत्ता
में स्थित होता है तो विदेह मुक्त होता है ७८ हे रामजी जब विदेह मुक्त
होता है तो न उदय होता है अरु न अस्त होता है अरु शांत होता है और न
सत्य होता है ना असत्य होता है अरु ना दूर अरु समीप ना अहं पद होताहै
अरु न त्वं पद होता है और न कुछ नाम वाला होता है ७९ हे रामजी विदेह
मुक्त करके अपना जीव भाव को नाश करके मन की वृत्तिका क्षय भये सं-
ते सत्ता मात्र रूप होताहै जो कहिने में नहीं है वही रूप परमात्मा का होताहै ८०
हे रामजी तब जो सत्ता मात्र शेष रहती है तुम तिस को सुनों जिसमें सुषुप्ता भी
नहीं है अरु जिसका अंत नही है अरु मनकी स्थितिते जड़भी नही है ऐसी दीर्घ
निद्रा का जो रूप है सो विदेह मुक्तिमें शेष रहताहै ८१ हे रामजी यह जगत कीयां

रचना अनुभव करियां होइयां आकाश की न्याई निर्मल रूप आत्मा विषे नहीहै जै-
से स्वप्ने मों संकल्प के कारणे मों पृथिवी आद भूत नहीहै ८२ हे रामजी तिस आत्मा-
का चिंतन करना कथन करना आपस मों तिसका बोध न करना इस प्रकारका एक
आत्मा चिंतन बिषे तत्पर होना है अरु तिसको पंडित ब्रह्मा भ्यास जानते हैं ८३
हेरामजी जौन से पुरुष विरक्त हैं सोही महात्मा हैं अरु भोगों की भावना सूक्ष्म क-
रते हैं तिसके अंतमों भोगों का अभाव ही मानते हैं सोही कल्याण रूप है अरु पृ-
थिवी मों संसार जीतने को समर्थ हैं ८४ हेरामजी जौनसे पुरुषों को उदारता उदय
भई है अरु सुंदर वैराग्य रस करके रंग को प्राप्त भये हैं और तिसते सर्व त्याग-
करने हारे हैं अरु जिन्ह की बुद्धि आनन्द प्रवाह मों मगन भई है अरु ते पुरुष
संन्यासी कहे हैं ८५ हे रामजी ज्ञेय वस्तु जो ब्रह्महै तिसके जानने को संसारके

वा॰ सा॰
११५

अत्यंत अभाव को मानते हैं तत्त्व विचार की संपदा सो शास्त्र की युक्ति करके यत्न करते हैं सो ब्रह्मा भ्यासी कहे हैं ८६ हे रामजी यह जगत है अरु यह हम तुम हैं अरु ऐसा जगत सृष्टि के आदमें उत्पत नही भयाहै तिसतें यह अबभी दृश्य सत्य नहींहै अरु इस प्रकार का दृढ बोध के अभ्यास कों बोधा भ्यास पंडित कहते हैं ८७ हेरामजी दृश्य का जो असंभव है अरु अभाव तिसके बोध होने करके रागद्वेषादिकों के तनु भाव करने को सूक्ष्मता करने को निरंतर आत्म विचार केवल करके प्रीति जो उदय होती है सो ब्रह्म विचार का अभ्यास कहिया है ८८ हे रामजी दृश्य के अभाव के बोध विना राग द्वेषादि कों के जीतने का अभ्यास जो करना है सो तप कहिया है अरु तिसतें आत्म ज्ञान नही होता है वह कैसा है सो तप दृश्य पदार्थों की वासना फुरनेहैं अरु महा दुःख कों करता है ८९ हे रामजी दृश्यके फुरनेकों

अभाव मोंही ज्ञान की सिद्धि होती है और ज्ञेय वस्तु जो परमात्मा तिसकों स्वरूप
का उपदेश भी होता है और तिस के अभ्यास मों निर्वाण पदभी प्राप्त होता है अरु
इस प्रकार के बोध का अभ्यास होवे तो परमानन्द का उदय होता है ९० हे रामजी
यह संसार रूपी महा रात्रि है इसमों मोह रूपी महा निद्रा उदय भई है सो निरंतर
आत्म विचारते भया जो बोध रूपी जल तिसके सिंचन करके संपूर्ण निवृत्त होजातीहै
अरु जैसे शरत कालमों वर्षा के जल करके बर्फ़ गल जाती है यह हमारे मनमों नि-
श्चिय भया है ९१ हे रामजी एक चित्तका आकाश है जिसमों संकल्प का फुरना होता
है अरु एक चिदाकाश है जिसमों दृश्य पदार्थ का फुरना भासता है अरु एक स्वरू-
प करके आकाश है अरु जिसमों जगत वर्तमान है इन्ह तीनों को तुम एकही जानों
किसतें भावना का त्याग करने ते ९२ हे रामजी यह संकल्प रूपी चित्त शरीरकों सर्वत्र

प्राप्त भये को जानें जैसी इस कों संवेदन की इच्छा होती है अरु तैसीही संवेदनाउ-
दय होती है ९३ श्रीरामचंद्रजीकाप्रश्न॰ हे गुरुजी तुम जो कहा सूक्ष्म चित्त ही सर्व जगत
के सृष्ट करने की शक्ति वाला है सोही स्थूल जैसा बन करके स्थूल देह के आधीन हो-
ताहै और सर्व देहों विषे तत्व को जानता है और सर्वत्र व्याप्त है अरु स्वतंत्र है हे गुरुजी
तुमसों मेरे दो प्रश्न हैं ऐसा चित्त हम जैसोंका भी होता है अथवा नहीं होता है अरु जो
ऐसा चित्त हमारा होता है तो एक एक चित्त प्रति अनेक प्रकार की सृष्टि का भेद हो-
वेगा जैसा जैसा चित्त तैसी तैसी सृष्टि सबोंको सत्य ही भासे अरु जो ऐसा चित्त हम
लोकों का नहीं होता है तो चित्तभी असत्य रूप है अरु सृष्टि भी असत्य रूप है तो दो-
नों एक जैसे समको हैं तो ज्ञान भये संते चित्तका नाश होता है अरु तब जगतभी
नाश को प्राप्त होजावेगा ९४ श्रीवसिष्ठजीकहतेहैं। हे रामजी किसी चैतन्य के लाग-

मात्र संकल्प का लय भये संते लीन होते हैं अरु चैतन्य के संकल्प के उदय ते कल्प-
मात्र रहते हैं अरु संकल्प लय भये संते कल्प के अंतमों लीन होते हैं अरु कल्प कि-
सको कहते हैं सत्ययुग त्रेतायुग अरु द्वापरयुग कलियुग यह चारो हजार होजावे तो
एक कल्प होता है अरु यह ईश्वर का संकल्प है अब जीव संकल्प की वार्ता कहते
हैं ९५ हे रामजी मरण से आद मूर्छा सभ जीवोंने अनुभव करीदी है अरु सोही जी-
वोंके महा प्रलय की रात्रि को तुम जानो ९६ मरण समय मों जीव संकल्प की सृष्टि
लय होती है अरु मरण से उपरांत सभही जीव अपने साथ संकल्प सृष्टि लय भ-
ईको फेर भिन्न भिन्न संकल्पते अपने अपने अनुभव की सृष्टि को भिन्न भिन्न रच-
ना करते हैं अरु जैसे भ्रम करके जेवड़ी मों सर्प की माला कार फुरण होती है
जैसे सभामों नृत्य होता है ९७ हे रामजी जिसकी बुद्धि ज्ञान करके युक्त नहीं है

अरु मूढ है अरु निर्मल विशाल परमपद के विचार को नहीं प्राप्त भयी ऐसे अज्ञानी पुरुष को जगत वज्रकी न्याई दृढ सार वालाहै अरु असत्य है तोभी सत्य भासता है ९८ हे रामजी जैसे बालक को वेताल मरण पर्यंत दुःख देता है तैसे मूढ बुद्धि पुरुष को जगत असत्य भी सत्य भासता है दुःख देता है ९९ हे रामजी अमृत की भावना करके विषभी सदैव अमृत होता है मित्र भावना ते शत्रु भी मित्र भावको प्राप्त होता है १०० हे रामजी इन्ह पदार्थों का स्वरूप अपनी भावना के अनुसार होता है अरु तैसेही देव की नियत के वश प्राप्त भया अरु जगत चिरकाल का अभ्यासते सत्य भासता है १ हे रामजी एक दिनमों पंद्रा मुहूर्त होतेहैं अरु जौंनसा ब्रह्मा का एक मुहूर्त होता है अरु सो एक मनु का राज्य होता है चारयुग ७१ वार होवे तो एक मनुका राज्य होता है अरु चोदा मनु का राज्य होवे तो

ब्रह्मा का एक दिन होता है अरु इस प्रकार के तीस ३० दिन ब्रह्मा का १ एक मास होता है अरु १२ बारां मास करके ब्रह्मा का एक वर्ष होता है अरु ब्रह्माजी की आयुषा इस प्रकार करके एक १०० शत वर्ष प्रमाण है सो आयुषा ब्रह्मा की विस्नुजी का एक १ दिन होता है २ इस प्रकार की शत १०० वर्ष श्रीविस्नु भगवानजी की आयुषा अरु जो विस्नु भगवान जीकी आयुषा है वोही शिवजी महाराज का १ एक दिन होता है सो शिवजी स्वामी ध्यान मों चित्त लगाय कर स्थित हैं अरु तिसको दिन रात्रिका भेद ज्ञान नहीं है ३ हे रामजी सो सदा शिव सदा ध्यान मों मगन हैं अरु तिसको जगत अरु जगत के भाव कोई नहीं भासते हैं अरु तिसके विचार मों जगत सत्य रूप है अथवा असत्य रूप है तोभी ना लय होता है अरु ना उदय होता है अरु कदाचित कहींभी सदा शिवजी को जगत का भ्रम नहीं होता है ४ हे रामजी सो शिवजी॰

वा॰सा॰ पर ब्रह्म है अरु वुह कैसा है सर्व रूप है अरु शांत रूप है अरु जन्म से रहितहै
१२१ अरु चैतन्यता करके पूर्ण है अरु जैसे पत्थर जड़ता करके पूर्ण होता है अरु
तिस पर ब्रह्म के अणु अणु प्रति अनेक सृष्टि के समूह हजारों वर्त्तमान हैं
अरु जैसे चित्त से अनेक भ्रांति उदय होती हैं तिन अणु के अणु अंदर अने-
क ब्रह्मांड हैं १ जैसे चित्त की भ्रांतिमों अनेक भ्रांति होती हैं ५ हे रामजी तिस
तें पुरुष की वासना क्या वस्तु है अरु इस पुरुष को वासना बंध करती है
अरु जब पुरुष को विषय भोगमों अणु मात्रभी विराग होवे तब ही यह पुरुष
अणु मात्र विरागते भी सभते उच्च परम पद को प्राप्त होता है यह वेदकी श्रु-
तिका प्रमाण है ६ हे रामजी यह पुरुष जिस जिस पदार्थते विरक्त होता
है अरु तिसी तिसी पदार्थ ते मुक्त होता है अरु यत्न करना रक्षा करनी हानि-

वृद्धि अरु हर्ष शोकतें रहित होता है सो सर्वज्ञ पुरुष है निवृत्त होनेतें अणु
मात्रभी दुःख कों नहीं जानता है ७ श्रीरामचंद्रजीकाप्रश्न॰ हे ज्ञानि पुरुषों में श्रेष्ठ
गुरुजी भले प्रकार विचारते अल्प मात्र आत्मा अरु परमात्मा एक रूप ज्ञान भये
संते विकल्प रहित आत्म ज्ञान भये संते ज्ञानी पुरुषों के भी देह किस निमित्त कर
के रहित है ८ तुम कहो जो ज्ञानिओं के देह दैव कर्म के आश्रय करके रहते हैं
सो दैव क्या वस्तु है अब इसमों दैव नाम क्या कहते हैं ९ श्रीवसिष्ठजीउत्तरश्री
रामजीप्रतिकहतेहैं॰ हे रामजी पर ब्रह्म की एक नियति नाम करके एक शक्ति है
सो चैतन्य शक्ति करके युक्त है अरु वुह कैसी है अवश्य जो भवि तव्यता है ति
सकी एक सत्ता है सो अनेक कल्पादिक मों सत्ता मात्र रूप है अरु अनेक कल्पों
मों व्याप्त है १० हे रामजी आदि सृष्टिमों यह नियति अनेक भावों की अरु अनेक

प्रकार की अनय रचना को धारण करती है इस पदार्थने इस प्रकार करके होने योग्यहै अरु इस प्रकार की परमात्मा की इच्छा सो नियति कही है ११ हे रामजी सो निय ति महा सत्ता कही है अरु महा चिति कही है महा शक्ति कही है अरु महा क्रियाभी कही है महा दृष्टि कही है अरु महा उत्पत्ति कहीहै महाकारणभी कही है अरु महा आत्मारू प करके स्थित है १२ हे रामजी अवश्य भवितव्य रूप है यह ईश्वर की इच्छा शक्तिहै अ रु रुद्रादि देवता की बुद्धि करकेभी उलंघन करी नहीं आतीहै १३ हे रामजी पुरुषने ऐ सी नियति को बलवती जान करके अपना पोरष नहीं त्यागना यह नियती पोरुष रूप करके सभको प्रेरण करती है १४ हे रामजी नाम रूपसे रहित ईश्वर का निश्चित संक ल्प नियती कहीहै सो ईश्वर का पोरुष है अरु वुह सर्वत्र गतहै अरु सर्व व्यवहारोंमों वर्तमान है अरु पोरष रहित पुरुषों मों निस फल रूप है अरु पोरष वाल्योंमें सफल

रूप है १५ हे रामजी जो पुरुष ईश्वर की नियत मान करके अरु मौन धार कर पौरुष की क्रिया त्याग करके रहता है उसके प्राण पवन कौन अर्थ के निमित्त जाते हैं अरु उस्के श्वास वृथा जाते हैं १६ हे रामजी जो कोई दैवको मान करके पौरुष को त्याग करना है अरु खान पानादिक देह के व्यवहार को भी त्याग देवे जो दैव देवेगा सो खावेंगे जो उस पुरुषको खान पान मिले तो भी मुखमों ग्रास देना चर्वण करके निगलना पौरुष विना नहीं होताहै १७ हे रामजी जो कोई पौरुष को त्याग करके प्राण क्रिया को रोक करके अरु निर्विकल्प समाधि करके मोक्षकों प्राप्त होताहै सो भी प्राण रोकने के पौरुष बिना नहीं सिद्ध होताहै १८ हे रामजी जैसे चैतन्य रूप आत्मा का जीवका भेद नहीहै तैसे ही चित्तका जीवका भेद नहीहै अरु जैसे चित्तका जीवका भेदनहीं है तैसे कर्म का देहका भेदनहीं है १९ हे रामजी कर्मही देह है यह मांस रक्त वाला देह देह नहीहै

अरु कर्म ही चित्त है चित्त ही जीव है सो जीव ही ईश्वर है सो ईश्वर ही आत्मा है सो आ-
त्मा सर्व रूप है सो सर्व व्यापी शिव है अरु यह मैने एक वारही निश्चय करके कहिया
है १९ हे रामजी कर्कटी राजा प्रति मंत्री का वचन है कर्कटी तेरे सिरीषे लघु चित्त वा-
ले अनेक हजार हमारे आगे पर्वत मों मच्छर की न्याईं संख्यामों नहीं है अरु हमारे धीर-
ता रूपी पवन की अंधेरी मों तृण पत्र की न्याईं उड जाते हैं २॰ शान्त पुरुष ने क्रोध वेग
की चंचलता को आत्म पानके द्वार को जान करके त्याग करके अरु सम दृष्टि करके
शुद्ध बुद्धि करके व्यवहार वाली युक्ति करके स्वार्थ सिद्ध करीदा है २१ अपने पौरुष
के व्यवहार करके कार्य सिद्ध होवे भावें नहोवे अरु नियत महाबल वान है ऐसे
कहिने का भी समय कहांहै तिसते पौरुष ही धारण करने योग्य है २२ बुद्धिवान
पुरुषों के भाव जो है सो बचनों करके अरु मुख की चेष्टा करके नेत्रों की चतुरता

के द्वारों करके अरु एक रूप होय कर प्रवृत्त होते हैं जैसे नदी जल अपने प्रवाह करके एकत्र होते हैं २३ तिसकारण ते मैं इन दोनों को पूछता हो उनको संदेह क्या प्रकट भया है जो कोई चतुर पुरुष को प्राप्त होय कर अपना संदेह दूर करने को नहीं पूछते हैं सोपुरुषों में नीच हैं २४ संपूर्ण गुणों के समूहों का अभ्यासतें उत्तम ज्ञान होता है अरु तिसके जानने द्वारा राजा होता है अरु मंत्री भी होता है २५ प्रभुता अरु सम दृष्टि यह राजविद्या करके होते हैं अरु जो सम दृष्टि को नही जानता है सो नतो राजा है अरु मंत्रीभी नही है २६ जो वचन युक्ति करके मधुर बानी करके कहीदा है सो वचन श्रवण करन वाले के हृदय को प्रवेश करता है अरु जल विषे तेल की न्याई विस्तार करके व्याप्त होता है अरु युक्ति कैसी है हृदय को प्राप्त होने हारी है अरु उपमा करके और दृष्टांत करके युक्त है बानी के-

सीहै योग्य अर्थ वाले पदों करके युक्त है २७ हे रामजी चित्त बालक है अरु जग-
त लय है अज्ञान करके मिथ्या ही देखता है जो इसको सद्गुरु उपदेश करके
बोध करते हैं तो अपने निर्विकार स्वरूप को देखता है २८ हे रामजी ऐसी कोई
क्रिया नहीं वर अरु शापादिक भी इष्ट भये मनको चलाऊंने को समर्थ होवे द-
ढ संस्कार के बोध को प्राप्त भया मन किसी करकेभी अपने बोधको नही त्याग
करता है २९ हे रामजी यह मन अपने चाहे अर्थ को चिरकाल तें प्राप्त भया है
अरु दृढता करके उसी अर्थको धारता है अरु तिसमोंही प्राप्त भयाहै इस को
शरीर के भाव अरु अभाव बाधा करने को नही समर्थ होते हैं ३० हे रामजी तिस
को अर्थ विवेक भया है अरु निर्मल आत्म पद को नही प्राप्त भया है और भोग
पदार्थों को त्याग करता है अरु ऐसे मनको आत्यंत संताप होता है ३१ हे रामजी

अरु जिसकों विवेक प्राप्त भयाहै संसार मर्य्यादा को त्याग करने द्वारा ऐसे मनको भोग पदार्थ त्याग करेते आनंद शुद्ध होता है ३२ हे रामजी बोध युक्त पुरुषों का मन ब्रह्म ही है अरु भिन्न नही है जैसे समुद्र को जल रूप जानने हारे को तरंग समुद्र के जल से भिन्न दृष्ट नही होते हैं ३३ हे रामजी मन के संयमते संसार का भ्रम शांत होता है जैसे समुद्र मथने ते अनंतर मंदिर पर्वत स्थिर भये संते क्षीर समुद्र स्थिर होता भया ३४ श्रीवसिष्टजी श्रीरामचंद्रजी को चित्तकी चिकित्सा कहते हैं॥ हे रामजी अब हम चित्त रूप महा रोग की महा औषध कहते हैं वुह कैसी है अपने आधीन है अरु सुंदर स्वाद वाली है अरु निश्चित है ३५ हे रामजी अपना संकल्प फुरणा त्यागने ते पौरुष यत्न करके चित्त रूपी वेताल शीघ्र जीता जाता है अरु किस उपाय करके मन के चाह पदार्थ के त्याग करके चित्त का जय होता है ३६ हे रामजी जो पुरुष इष्ट

वस्तु को त्याग करके वासना रहित होवे तिस पुरुषने मन जीत्या है जैसे हाथी चले भये दांत को दूर करके सुखी होता है ३७ हे रामजी आत्म ज्ञान का यत्न करके चित्त रूपी बालक की रक्षा करीदी है अरु असत्य वस्तुतें फिराय करके सत्य वस्तु में युक्त कियाजाताहै अरु बोधन किया जाता है ३८ हे रामजी शास्त्र करके अरु सत संग करके धीर भया है ऐसे मन करके चिंताते रहित भया है चिंता करके तपे हुए अपने मन को तुम छेदन करो अरु जैसे शीतल लोहे करके तपा लोहा छेदिया जाता है ३९ हे रामजी जैसे बालक यत्न विना ही इहां उहां फिराया जाता है तैसे चित्त भी अशुभते फिराय करके शुभमें युक्त किया जाता है अरु इसमें क्या कठिनता है ४० हे रामजी जौन सा सत कर्ममें लगा है वुह सतकर्म कैसा है अंतमें शुभ फल देने हारा है ऐसे मन को चैतन्य विचार में युक्त करे ४१ हे रामजी इह वस्तु का त्याग अपने अधीन है

अरु एकांत करके हित करने हारा है जिसमों जो कठिनता को प्राप्त भयाहै सो उसों
मों कीट है अरु तिसकों धिकार है ४२ हे रामजी अशुभ वस्तुकों शुभ करके भावन करें
अरु आत्म विचार करके चित्त यत्न करके जीतीदा है जैसे बालक यत्न बिनाही वश करी
दाहै ४३ हे रामजी अपने पौरुष के यत्न करके चित्त शिताबी जीता जाता है अरु चित्त
रहित पुरुष ने पर ब्रह्म विषे यत्न बिनाही स्थिति प्राप्त होती है ४४ हे रामजी अपने पौ-
रुष करके साधन करने योग्य ऐसी इष्ट वस्तु का त्याग करके मन का शम करने बिना
शुभ गत नहीं होती है ४५ हे रामजी आत्म विचार करके साध्य है अरु ऐसे मन के
मारणे करके निर्विघ्न अखंड आनंद को प्राप्त होता है ४६ हे रामजी देव गतिकों त्याग
करके कैसी है उह देव गति मूढ पुरुषों के ज्ञानमों दृढ भई है अरु तिसको त्याग
करके पौरुष अरु ज्ञान करके चित्त कों चंचलता से रहित करना ४७ हे रामजी अपने

अधीन अरु सुख से साधने योग्य ऐसे अपने चित्तका जीतने को जो पुरुष समर्थ नहीं होते हैं सो पुरुष रूपी सृगाल हैं तिन्हको धिक्कार है ४८ हे रामजी जो कोई उत्तम पदवी को प्राप्त होने चाहता है तो चित्त को चैतन्य भावना को प्राप्त करके तद चित्तसे भी परे परम पदमो स्थिर होता है ४९ हे रामजी मुमुक्षु पुरुष आत्म भावना करके मुक्त होवे अरु उत्तम बुद्धि करके युक्त होवे अरु ग्रसा गयाहै चित्त जिसका ऐसे आत्मा के भाव को यत्न करके धारण करे ५॰ हे रामजी अपने परम उत्तम पौरुष को आश्रय करके चित्त को चित्त बनेते रहित करके महा पदवी को प्राप्त होवे अरु जहां जाय करके शोच करने नहीं बनता है ५१ हे रामजी चित्त के वेगको जीतना कल्याणका मूल है अरु तिसते मनका जीतना सिद्ध होता है अरु मनके जीतने तें त्रैलोक्य का जीतना तृण समान है ५२ हे रामजी जिसमों शास्त्रका घात नहीं होता है अरु ऐसा

वा॰सा॰ मनका स्वभाव बदलने मों क्या काइरता है ५३ हे रामजी जौंनसे पुरुष अपने मन
१३२ के संकल्प को फिराओंने मों समर्थ नहीं होते हैं सो पुरुष संसार के व्यवहार मों कै-
से प्रवृत्त होवेंगे ५४ हे रामजी में पुरुष हों अरु में मृत भया हूं अरु में जन्मिया हूं
अरु में जीवता हूं यह कुदृष्टि भासती है अरु किसते मन की चंचलता तें ५५ हे राम-
जी यह मन अपने फुरणे करके इहांसे और लोकको जाता है अरु तहां और रूपके फु-
रणेको करता है तिसते मनके फुरणे का त्याग करने तें मोक्ष होताहै अरु इसकारण
ते मनका भय कहोते है ५६ हे रामजी नातो कोई मृत होताहै अरु नकोई कहीं जन्म
लेताहै अरु आपही अपने मरणे को जानता है अरु परलोक कों भी आपही जाता है अ-
रु मनका क्या रूपहै ५७ हे रामजी यह लोकमें इस देहमों अरु परलोकमों दूसरे देह
मों रहताहै मोक्ष पर्य्यंत चिंता को धारता है अरु इसका और रूप नहीं है ५८ ॥

हे रामजी भ्राता मृत भये संते चाकर आदि संबंधी मृत भये संते कहा शोक कैसा होता है सो कैसे होता है चित्त अपना चैतन्यता ब्यवहार ने फिर गयाहै यही शोक मूल है यह हमारी बुद्धि निश्चित भई है ८९ हे रामजी चित्त का उपशम भये बिना संसार भ्रम शांत नहीं होता है वह चित्त का उपशम कैसा है पथ्य रूप है अरु शुद्ध है अरु तिरछा भी ऊंचा भी अरु नीचा भी बारंबार विचारता किया है तिसते चित्तका उपशम जब लग नहीं भया अरु तब लग विश्रांति नहीं होती है ९० हे रामजी हृदय रूपी जो आकाश है तिसको चैतन्य रूपी चक्र की धारा करके विशाल भये संते मनको तुम मारो नहीं तो तेरे को संसार रूपी व्याधि पीड़ा करती है ९१ हे रामजी जो तेरे मन की प्रिय वासना को दुःख रूप जानेगा होवे तो चित्त के सर्व अंग कटे गये हे यह हमारी

बुद्दि निश्चित भई है ६२ हे रामजी यह पुरुष है यह हम हैं अरु यह वस्तु
 हमारी है अरु मन का यही रूप है अरु इस भावना का त्याग मात्र करके म-
न रूपी तृण विचार रूप दात्र करके मूल से छिन्न होता है ६३ हे रामजी जैसे
शिरद ऋतु मों छिन्न भया बदलों का मंडल पवन की अंधेरी करके छिन्न भि-
न्न होता है अरु तैसेही विचार करके मन भी छिन्न भिन्न होता है ६४ हे रा-
मजी यहां शस्त्र होवे अरु जहां अग्नि होवे तहां भय होता है यह मन का
संकल्प त्याग आपने अधीन है इस भये संते कोई भय नही है ६५ हे रा-
मजी यह भला है अरु यह भला नही है इस प्रकार करके जैसे बालकको
शिक्षा करते हैं तैसेही मन रूपी बालक को विचार करके शुभ मार्ग मो प्रवृ-
त्त करै ६६ हे रामजी यह चित्त रूपी सिंह है अरु संसार वासना इसकी गर्जना

वा॰रा॰ है अरु जो विचार रूपी शस्त्र करके इसको जीत लेते हैं सो निर्वाण पदको
१३५ प्राप्त होते हैं ६७ हे रामजी यह मन की कल्पना ते संसार कियां आपदां प्रकट
होतियां हैं वुह कैसी हैं भयानक है अरु भ्रम के करने हारी हैं जैसे निर्जल मा-
रवाड़ देशमों रेती के चमकने तें मृगों को जल की भ्रांति करके तृष्णा होती है ६८
हे रामजी भावें प्रलय करने हारे पवन चले अरु भावें द्वादश सूर्य इकट्ठे हो-
य करके तपें भावें सातों समुद्र सभही एक रूप होकर चलें तोभी जिसका मन
लय भया है तिसकी हानि नहीं होती है ६९ हे रामजी मन रूपी बीजतें संसार
के सुख दुःख शुभ अशुभ अंकुर होते हैं सप्त लोक रूपी नये दल भी प्रकट हो
तेहैं ७० हे रामजी क्षीण भया मन उत्तम आनंद को देताहै जैसे अंगार को बाह-
ने पुरुष को दग्ध भया काष्ठ शीतल अंगारें को देता है ७१ हे रामजी जिसका चित्त

आत्म विचार करके नष्ट भया है जिस के मन के संकल्प में कोटी ब्रह्म लोकभी तुच्छहैं सो किसतें जिसते आत्म सत्ता के अणु मात्र में यह संपूर्ण ब्रह्माण्ड कोटी प्रत्यक्ष दृष्ट होती है ७२ हे रामजी यह मन कैसा है केवल संकल्प उदय करके अनेक अनर्थ को करता है अरु संकल्प मात्र करके अपने अर्थ को सिद्ध करता है अरु ऐसे मन को संतोष मात्र तें जीत करके विचार करके त्रैलोक्य जय को सिद्ध करता है ७३ हे रामजी समता कैसी है परम पवित्र है अरु आत्म वेत्ता पुरुषोंने भी मानी है अरु तिस करके मनकी शांति होती है अरु संसार की रचना संकल्प सहित नाश भये संते जो सत चित आनंद परमात्मा शेष रहता है सो तुम को सिद्ध होवे ७४ इतिचित्तचिकित्सा॰ हे रामजी तुम्हारा वासना रहित मन ही वासना सहित मन को जीतने को समर्थहै अरु जैसे राजा बिना राजा को जीतनेको कोई

वा॰सा॰ समर्थ नहीं होता है ७५ हे रामजी यह जीवों के समूह संसार रूप समुद्र
१३७ के प्रवाह में तृष्णा रूपी ग्राहने पकड़े हैं और संकल्प विकल्प रूप जलके
चक्र फेरमें मग्न भये हैं इन जीवों को दूर पार पहुंचने को अपना शांत भया
मन ही बेड़ी बना है ७६ हे रामजी शांत भया मन रूपी शस्त्र करके दुष्ट म-
नके पाश बंधन को छेद करके जो अपने को नहीं मुक्त करे सो और किसी क-
रके भी मुक्त नहीं होता है ७७ हे रामजी जिसका मन चैतन्यता स्वभाव को
लंघ गया है अरु अपनी इच्छा के संकल्पों में दौड़ता है फिर तिस चिन्न कर
के आत्मा मलीन होता है सो मन जीतने योग्य है ७८ हे रामजी यह मन
जो है सो मैं ब्रह्म नहीं इस संकल्प करके दृढ़ कर बंद्ध होता है अरु सर्व
जगत ब्रह्म है इस दृढ़ संकल्प ते मुक्त होता है ७९ हे रामजी संकल्प ही

परम बंधन है संकल्प त्यागही मुक्ति है अरु तिसते संकल्पको अंतः करण मों-
जीत करके जो तुम्हारी इच्छा होवे सो तुम करो ८० हे रामजी तुम मूढ मत बनो
ज्ञानी बनों अरु संसार वासना को दूर करो अरु आत्मा को आत्म भावना करके
जानो अरु मूर्खों की न्याई क्यों रोदन करते हो ८१ हे रामजी यह हम को बड़ा खे-
द है अरु बड़ा आश्चर्य है जो सत्य वस्तु ब्रह्म है सो विस्मरण भया है अरु जो अ-
सत्य अविद्या बंधन है सो जीवों की स्मृति मों आइ प्राप्त भया है ८२ हे रामजी
जो राजा अनीति युक्त होवे तिस के राज मों स्थित भई प्रजा जिस जिस दुःखि अरु
दृशा को उह प्राप्त होती है सो सो दुःख रूपी दशा पाप कर्म करने हारे चंडाल
कोभी योग्य नहीं है ८३ हे रामजी तुम राज्य व्यवहार मो वर्त्त मान भये हो तो भो-
ग पदार्थों में तुम्हारी प्रीती मत होवे जैसे फटिक सम के प्रति बिंब को धारण कर्ता

है अरु आप अपने स्वभाव करके निर्मल होता है ८४ हे रामजी श्रेष्ठ गुणों के-
ही विलास जांनने तें वथी है अरु सदैव सुशील अरु ऐसी उत्तम बुद्धि करके अ-
संग होय कर संसार कार्य करेगा और आत्म विचार मों तत्पर होवैगा अरु तब ते-
री उपमा किसी करके नहीं होवेगा ८५ हे रामजी ऐसे उत्तम विवेक वाले पुरुषमों
देहाभिमान लग जाता है अरु निर्मल शुद्ध सतो गुण वाली वृत्ति करके आत्म स्वरूप
की समाधि मों स्थित भये अरु पुरुष मों योग की सप्त भूमिका चित्त को शुद्ध करती
है अरु शिव रूप मों प्राप्त करती है ८६ श्रीरामचंद्रजीका प्रश्न श्रीवसिष्ठ जी प्रति ॥
हे भगवन् योग की सिद्धि करने हारी सप्त भूमि का कैसी है अरु तिन्ह का स्वरूप
करके मेरे प्रति कहो क्योंकि तुम आप तत्व ज्ञानी मो श्रेष्ठ हो ८७ श्रीवसिष्ठजी श्री
रामचंद्रजी प्रति कहते हैं॥ हे रामचंद्रजी अज्ञान की सप्त भूमिका हैं अरु तैसेही

वा·प्रा· ज्ञान की भी सप्त भूमिका इन्हमें श्रोर भूमिका असंख्य हैं सो इन्ह विषेही अंतर्भूत
१६· है ८८ हे रामजी स्वभाव करके कर्म की प्रवृत्ति कर्म करने में पुरुषार्थ होना श्रोर
भोग वासना की दृढता करके भोग के आनंद में आसक्त होना यह अज्ञान भूमिका
का लक्षण है अरु स्वरूप भी है यही अज्ञान का मूल है ८९ हे रामजी नित्य अनि-
त्य वस्तुका विवेक श्रोर यह लोक के अरु पर लोक के भोगों से वैराग्य श्रोर शम-
दम श्रद्धा क्षमा समाधान श्रोर मुक्त होने की इच्छा यह चार साधन युक्त श्रवण म-
नन में यत्न श्रोर मुक्त होने की इच्छा की दृढता श्रोर अखंडानंद में प्रीति श्रोर
सभका आधार ब्रह्मको सभतें अधिक मानना यह सभ आत्म रूप की प्राप्तिके का-
रण है अरु आत्म सत्ताका लाभ यह ज्ञान भूमिका का लक्षण है अरु स्वरूप भी
है यही मूलभी है इन्ह लक्षणों करके अरु कारणों करके ज्ञानकी भूमिका श्रोर

अज्ञान भूमि का वह मूल हैं अरु संसार दुःख कों अरु संसार मुक्ति ब्रह्मा नंद
की प्राप्ति रूपी फल को देती हैं अरु सप्त अज्ञान भूमि का नीचे नीचे प्राप्त करती
है सो रजो गुण अरु तमोगुण करके युक्त हैं अरु दुःख करके पूर्ण है अरु
जन्म मरण नरक को देने हारी है अरु ज्ञान भूमिका सप्त उपर उपर लोक-
में प्राप्त करती है सतो गुण करके युक्त हैं ज्ञान वैराग्य प्रधान हैं अरु क्रम
करके जीवन्मुक्तिको विदेह मुक्तिकों देतीहै ८९ हे रामजी प्रथम अज्ञानकी सप्त
प्रकार भूमिका को तुम्ह सुनो इसते उपरांत ज्ञान की सप्त भूमि का को श्रवण करो
गे ९० हे रामजी आत्म स्वरूप में स्थिति और देहाभिमान का त्याग ज्ञान यह भूमि
काका संक्षेप लक्षण है और आत्म स्वरूप का विस्मरण और देहाभिमान की दृढता
यह अज्ञान भूमीका संक्षेप लक्षण है ९१ हे रामजी शुद्ध सत्ता मात्र आत्मज्ञानते

अरु आत्म स्वरूपतें जौंनसे पुरुष नही भूलते हैं तिनके रागद्वेषादिक अज्ञान के लक्षण कदाचित भी प्रसंग नहीं करते हैं ८२ हे रामजी अपने आत्म स्वरूप का भूलना और चित्त का चितवने मों मगन होना इसते परे अज्ञान का मोह न भया है नाहो नाहे ८३ हे रामजी एक अर्थको त्याग कर और दूसरे अर्थ को चित्त के याने मों मध्य में जौंनसी स्थितिहैं सो नातो जाग्रत है अरु ना निद्रा है सो स्वरूप की स्थिति कही है ८४ हे रामजी अहंकार अंशक्षीण भये संते चित्त शांति भये संते अरु द्वैत भाव लय होत संते जड़ता रहित जो स्थिति है सो आत्म स्वरूप कहते है ८५ हे रामजी तिस आत्म स्वरूप मों अज्ञान आरोपन किया है अरु तिसकी भूमिका तुम सुनों १ एक बीजजाग्रत है २ एक जाग्रत है ३ एक महा जाग्रत है ४ एक जाग्रत स्वप्न है ५ एक स्वप्न है ६ एक स्वप्नजाग्रत है ७ एक सुषुप्त है ८ ८६ हे रामजी सभ मिल करके अनेक प्रकार

होती है अब इसके लक्षण तुम श्रवण करो यह सम प्रकार का मोह है वारं वार आ-
पसमें नित्य संबंध करके अनेक रूप होता है ८७ हे रामजी प्रथम सृष्टि के आदिमें
अथवा जाग्रत अवस्था के आदमें चैतन्य के आभासयुक्त प्राण धारण किया की
उपाधि करके अज्ञान का जो कारण है जिस करके आगे प्राप्त होने के समयमें
यह आत्मा जीवादि नाम रूप अर्थों का पात्र होता है और बीज रूप करके जाग्रत
अवस्था जिसमें स्थितहै सो बीज जाग्रत कहिया है ८८ हे रामजी सो बीज रूप जा-
ग्रत हो अज्ञान सृष्टिमें इस की न्याई प्रत्यक्ष देह रूप बनिआ तो यह देहमें हो यह
भोग मेरेहैं सो जाग्रत कहिया है ८९ हे रामजी यह मैं हूं अरु यह वस्तु मेरी है इस
प्रकार का जन्मजन्मांतरे के अभ्यासतें दृढ प्रतीत भया प्रत्यक्ष भासता है अरु व्यव-
हार करने मों सिद्ध भया जो अज्ञान है सो महाजाग्रत कहिया है ९० हे रामजी जाग्रत

अवस्था का संकल्प संस्कार अंतः करण में दृढ भया है अथवा नही दृढ भयाहै अरु ऐसा मनोरथका फुरणा है और जाग्रतमों स्वप्न जैसा वर्तमान भया जो अज्ञानहै सो जाग्रत स्वप्न कहिया है १ हेरामजी जो जाग्रत स्वप्न अनेक भेदोंका है जैसे एक चंद्रमा मों दो चंद्रमा की भ्रांति अरु शुक्तिमों रजतकी भ्रांति अरु जेवड़ी मों सर्पकी भ्रांति रेतीकी चमक मों जलकी भ्रांति अज्ञानतें होती है अरु अभ्यासते जाग्रत अवस्था के भावको प्राप्त होती है सो जाग्रत स्वप्नका रूपहै २ हे रामजी निद्रा प्राप्त भई संते जो कुछ जाग्रतमों देखिया है अनुभव कियाहै अरु निद्राके अंतमों ऐसा प्रतीत होताहै मैने क्षणमात्र मों गज तुरंग राज्य धन संपदा देखीहै सो सत्य नहीं है मिथ्याही है ऐसा जो निश्चय है सो सुपना कहिया है सो सुप्ना कैसे होता है महाजाग्रत का अज्ञान अंतः करणमों वासना रूप दृढ होताहै अरु निद्रा समयमों

हृश्य होता है अरु चिरकाल देखने में नहीं स्थित होता है अरु विशाल रूप करके दृ-
श्य नहीं होता है ३ हे रामजी सो स्वमाही प्रबल अपने संस्कार करके अंतःकरण में आरू-
ढ होता है अरु जाग्रत अवस्था के समान प्रत्यक्ष होता है महा जाग्रत जैसा दृढ होता है
देह पात भये संते अरु नहीं भये संते भी चिरकाल वर्तमान होताहै तो स्वम जाग्रत क-
हीदा है अरु जैसे राजा हरिश्चंद्रको बारां १२ बर्ष तक चंडाल भाव का स्वम भया है और
जैसे जडभरत को हरिण जन्म का स्वम भया है ४ हे रामजी पहिलीआं षट् अज्ञान
भूमिका कर्म फल के भोग करके अरु त्याग करके केवल अज्ञान बलते जीव की क-
र्म अरु ज्ञानसे रहित जड़ रूप जो स्थितहै सो सुषुप्ति भूमिका कही है ५ हे रामचन्द्र-
जी तिस अवस्था में जितने तृण काष्ठ पर्वत पाषाणादिक पदार्थ हैं सो परमाणु रूप
करके स्थित होते हैं ६ हे रामजी पहिली षट् अज्ञान भूमिका अज्ञान करके किये पाप

पुण्य कर्म का संस्कार करके होते हैं अरु जब संपूर्ण कर्म फल भोगे जाते हैं अरु आ-
गे कर्म नहीं होते हैं अरु ज्ञानभी नहीं होता है तो जीव केवल अज्ञानमों स्थित होता
है सो सुषुप्त भूमिका होती है ७ हे रामजी जौंनसी अज्ञान की भूमिका स्वप्ना वस्था क
हीहै इसमों भी अनेक शत प्रमाण अवस्था हैं फिर एक एक कें जाग्रत महा जाग्रत
आदि अवस्था अनेक होती हैं अरु कोई अज्ञान भूमिका की अवस्था स्वप्न जाग्रत की न्याई
चिरकाल तक संसारमों जन्म मरणादिक कों करती है अरु कितनी जाग्रत स्वप्न की न्याई
तुच्छ काल अज्ञान क्लेश कों देतीहैं ८ हे रामजी अज्ञान भूमिका सप्त ७ प्रकार मैंने कही
है सो कैसी है अनेक विकारों करके जगतमों अज्ञान क्लेश करके निंदा करने योग्यहै
शास्त्र विचार करके अरु सतसंग करके ज्ञान विचारते निर्मल आत्म स्वरूप प्राप्त होय
करके इन्ह सभकों तुम तरोगे इसमों संशय नहीं करना ९ इति अज्ञान भूमिका वर्णनं

अथज्ञानभूमिकासप्तप्रकारकीवर्ननं॰ हेरामजी निर्मल बुद्दे अब तुम ज्ञान की सप्त-
भूमिका सुनो ज्ञान भूमिका ज्ञान करके मोह रूपी कीचड़ में पुरुष फेर मगनही हो
ताहे १॰ हे रामजी योग शास्त्र वेता वादी लोक बहुत योग भूमि का कहते हैं सो यो-
ग भूमिका इन्ह ज्ञान भूमिकों के समान नही है सो योग भूमिका ममता अहंका-
र युक्त है वुह मुक्ती नहीं करती है अरु ममता अहंकार अज्ञानकों दूर करने हारी
यह ज्ञान भूमिका मुक्ति देनेकों श्रेष्ट हैं ११ हे रामजी आत्म बोध कों ज्ञान कहते हैं
अरु मुक्ति को ज्ञेय कहते हैं सो मुक्ति ज्ञानकी सप्त भूमिकानें परे है १२ हे राम जी
आत्म बोध अरु मुक्ति इन्हका नाम भेदहै अरु आत्म बोधकों जीव पाइ करके फेर सं-
सारमें नहीं प्राप्त होता है १३ हे रामजी प्रथम ज्ञान भूमिका शुभ इछा है १ दूसरी
विचारणा है २ तीसरी तनु मानसा है ३ अरु चतुर्थी सत्वा पत्ति है ४ पंचमी असं-

सक्त मानसा है ५ षष्ठी पदार्था भावनी है ६ सप्तमी तुरीया है ७ अरु मुक्ति इन्हतें परे है जिसमों फेर संसार रूपी शोक समुद्रका उदे नहीं होता है अब इन्ह ज्ञानभूमिकों के लक्षण कों तुम श्रवण करो १८ हे रामजी मैं मूढ होय कर क्यों स्थित भया हूं अरु शास्त्र करके अरु वैराग्य धारण करके आत्मा को देखो ऐसी जो इच्छा सो शुभेच्छा ज्ञानभूमि का कही है १४ हे रामजी शास्त्र विचार अरु सतसंग करके वैराग्य को प्राप्त होय करके अरु श्रवण मननादिक मों विचार करना सो विचारना ज्ञान भूमिका कही है १५ हे रामजी विचारना अरु शुभेच्छा करके इंद्रियों के भोगों से चित्तकों असंगकरना अरु सूक्ष्मता को प्राप्त करना सो तनु मानसा ज्ञान भूमिका कही है १६ हे रामजी यह तीन भूमिकों के अभ्यासतें चित्त मों भोग पदार्थों के वैराग्य करके अंतः करन शुद्ध होता है अरु सत्व मूर्त्ति आत्मा विषे स्थित होती है सो सत्वा पत्ति ज्ञानभूमिका क-

हीहै ९७ हे रामजी यह चार भूमिकों के अभ्यासतें मन की असंगता केवल करके ब्रह्म साक्षात्कार का चमत्कार जिसमें होता है सो असं सक्त मानसा ज्ञान भूमिका कहीहै ९८ हे रामजी इन्ह पांच भूमिकाओं के अभ्यासतें आत्मारामता करके स्थित होना बाहिर के पदार्थों की भावना नष्ट होनी सो पदार्थ भावनी ज्ञान भूमिका कही है ९९ हेरामजी इन्ह षट् भूमिकों के अभ्यासतें द्वैत भेद का लय होनेते जाग्रत स्वप्न सुषुप्तिका भेद लय भये संते केवल स्वरूपा नंदमें स्थिति होवे सो तुर्यगा ज्ञान भूमिका कही है २० हे रामजी जौनसें महा भाग्यवान पुरुष हैं सो सप्तमी ज्ञान की भूमिका तुरीया वस्था कों प्राप्त होते हैं सो पुरुष आत्माराम है अरु महात्मा है सो उत्तम पदको प्राप्त भये हैं २१ हे रामजी सो जीवन्मुक्त है अरु सुख दुःखते रहित हैं अरु देहके वर्णाश्रम प्रसंग करके कर्म करते हैं अथवा नहीं करते हैं उन्हकों कर्म करनेका विधि

वा॰ सा॰ निषेध कोई नही है २२ हे रामजी उन्हको पास रहने वाले लोक कर्म करने को बोध
१५॰ न करते हैं तो आचार का कर्म सर्व प्रकार का करते हैं जैसे सोवने हुवे पुरुषको
जगाय करके मित्रादिक शुभ कर्म करावते हैं अरु उन्हको कर्म करने का इछा नहीं
रहता है अरु स्वरूपानंदमो मगन रहते हैं २३ हे रामजी आत्मारामता करके जौंन-
से स्थित है अरु तिन्हको जगत की क्रिया नहीं सुखावती है जैसे सम पुरुष को सुं
दर इस्त्रिआं अपने रूप करके आनंद नही करती हैं २४ हे रामजी यह ज्ञानकी सम
भूमिका ज्ञानी पुरुषों के गोचर होतीहै विषय भोगमों आसक्त भये को जड़बुद्धि अ-
रु पाप बुद्धि पुरुषों के गोचर नहीं होती है २५ हे रामजी जौंनसे यह ज्ञान की सम
भूमिका कों प्राप्त भये हैं सो पुरुष पशुयोनी भी हैं अरु हनुमान से आदि अरु मले-
छयोनी है अरु धर्म व्याधसे आदि असुरयोनी अरु प्रहलाद बली से आद सोभी ज्ञान

ज्ञानभूमिका के प्रभावतें जीवन मुक्त भये हैं २६ हे रामजी ज्ञान भूमिका अज्ञान बंधन को छेदन करती है अरु तिस भये संते मुक्त होती है जैसे मृग तृष्णाकी भ्रांति और शुक्तिमों रजत की भ्रांति वास्तव ज्ञान भये संते दूर होतीहै २७ हे रामजी जौनसे दूसरी अरु तीसरी अरु चतुर्थी ज्ञान भूमिका कों प्राप्त भये हैं तिन्हको ज्ञान उदय भया है अरु अज्ञान दूर भया है मोह से पार भये हैं अरु प्रारब्ध वशतें मनो नाश अरु निन्यानंद पद प्राप्ति विदेह मुक्तिकों नही प्राप्त होतेहैं तदभी आत्माकों प्राप्त भयेहैं २८ हे रामजी कोई ज्ञानकी सप्त भूमिका कों प्राप्त भये हैं कोई दूसरी अरु तीसरी को प्राप्त भये अरु कोई छठी भूमिका कों प्राप्त भयेहैं अरु कोई सर्व भूमिका कों प्राप्त भये हैं सो समही क्रम करके मुक्त होते हैं २९ हे रामजी कोई सनकादिक जैसे एकजन्ममों ही सप्त भूमिका कों प्राप्त भयेहैं अरु कोई जन्म

जन्मांतरो में भी क्रम करके सप्तही सप्त भूमिका को प्राप्त होइ करके मुक्त होतेहैं ३०
हे रामजी कोई चार भूमिका मों स्थित हैं अरु कोई साढ़े चार भूमिका मों स्थित हैं अरु कोई षट् भूमिका मो हैं अरु कोई साढ़े छः भूमिका मों हैं ३१ हे रामजी जौनसे विवेकी पुरुष हैं सो यह ज्ञान भूमिका मों विचरते हैं अरु देह गेह के संताप दूर करनेको उद्यम करते हैं ३२ हे रामचंद्रजी जौनसे ज्ञान अरु बल करके इंद्रियां सहित मनको जीतलेतेहैं सो पुरुष महा धीर हैं अरु ज्ञान भूमिका मों स्थित हैं सो पुरुष आत्म लाभ पदवी के राजा हैं अरु दिग्दंति सहित सर्व जगत के जय कों तृण के समान जानते हैं ३३ हे रामजी जौनसे पुरुष यह ज्ञान भूमिका मों सावधान होइ करके मन सहित इंद्रिय रूप शत्रु गणको जीत लेते हैं सो त्रैलोक मों वंदनीय हैं अरु महा पुरुष हैं जिसमों राजसूय करने हारे चक्र वर्त्ती राजा की पदवी और जगत को सृष्टि करने हारे ब्रह्माकी पदवी

तृण समान तुच्छ होती हैं ऐसे परम पद को प्राप्त होते हैं ३४ इति ज्ञान भूमिकोपदेशः ॥
हे रामजी जैसे नट लोक अन्य पृथिवी के लोकों को मोहित करने वाले औषधियोंके
चूर्ण को आकाश में उडावते हैं अरु तिस करके लोकों को आकाश में नगर का भ्रम
होता है सो सत्य अरु असत्य कहने में नहीं होता है तैसे अपने अज्ञान के फुरणे में
संसार भासता है सो असत्य रूप असत्य रूप कहा नहीं जाता है ३५ हे रामजी जब
लग वासना सहित अविद्या आत्म विचार करके ज्ञान भूमिकाओं के बलते नहीं ना
श भई जैसे मूल सहित पुरानी लता नष्ट नहीं भई है सो जैसे फेर अंकुर पत्र पुष्पोंको
प्रकट करती है तैसे यह अविद्या अनेक प्रकार के सुख दुःखों के बनों के बनों को प्र
कट करती है तिस कारणतें जीवन्मुक्त पुरुषों ने अविद्या के मूल वासना जाल को क्ष
य करने वास्ते ज्ञान भूमिका का अभ्यास सदैव करना ३६ हे रामजी जैसे शिला में

जल नहीं है अरु तैसेही जलमें अग्नि नहीं है अरु तैसे आत्मामो जगत रूपी चित्र नहीं है परमात्मा मो कहांते है ३७ हे रामजी यह जगत रूपी चित्र दृष्ट होताही कछु सत्य नहींहै इसमें जो कछु किया है सो सत्य कहा है अरु ऐसा मान करके चिंता को लय करके सुखी रहो ३७ हे रामजी यह चित्त अत्यंत आत्मा भाव से रहित है अरु नीच है जो इसके अनुसार वर्ते सो पुरुष चंडाल के अनुसार क्यों नहीं वर्ते जैसे चंडाल के समान होना योग्य नहीं तैसे चित्त के अनुसार होना योग्य नहीं है ३८ हे रामजी तुम चित्त रूपी चंडाल कों निरंतर दूर करके आत्मा स्वरूपमें निशंक सुखी रहो अरु तुमको चित्त रूपी चंडालने कीचड़ जैसा जड़ किया है ३९ हे रामजी यह असत्य रूप चित्त यत्नने जौनसे मूढ पुरुष वश किये हैं अरु तिन्ह जड़ बुद्धि पुरुषों को चंद्रमंडल ते उलका पात और वज्रपात प्राप्त होता है ४॰ हे रामजी जौनसे असत्य रूप अरु असत्य संकल्प वाले चित्तके अनु-

सार वर्त्तमान हैं सो पुरुष आकाश के अनुसार वर्त्तमान हैं सो पुरुष आकाश के छेद करने की वार्त्ता करके काल क्षेप करते हैं तिन्हको धिग है जैसे आकाश के खंडन की कथा वृथा है तैसे चित्त के संकल्प अनुसार होना वृथाहै ४१ हे रामजी दृश्य पदार्थके दृष्टिके मध्यमें जौनसा देखने हारे साक्षि चैतन्यका ज्ञान मात्र स्वरूप है सो दृश्य पदार्थ तें दर्शन इंद्रियतें भिन्न है सोही तेरा परम स्वरूप है ४२ हे रामजी जब चित्त एक देशतें अन्य देशको जाता है तिन्ह दोनों में जौनसा जड़ता रहित केवल फ़ुरणा मात्रहै अरु सत्ता मात्रहै तद्रूप ही तुमहो ४३ हे रामजी नतो जाग्रत सों उदय भयाहै अरु नसुषमें लय भया है अरु नजड़ है अरु ना चैतन्य है ऐसा सत्ता मात्र जो रूप है सो तुम तिसमें सावधान हो ४४ हे रामजी यह जीव नष्ट देहतें अपने स्थानतें चिर कालतें धारण करी देहकी वासना को त्याग करके अन्य देहकी वासना को साथ लेकर चला जाता

हे अरु जैसे भ्रमर पुष्पोंकी वासना ले करके अरु पहिले पुष्पों को त्याग करके और दूसरे पुष्पों पर चला जाताहै ४५ हे रामजी जो तुम ऐसा कहो जो जीव प्रतिबिंब है अपने आधार देह के नाश भये संते नष्ट होवेगा तो भी तुमने शोक नहीं करना जौनसा इस देह में नष्ट होवेगा सो नये देहमें नहीं होवेगा अरु जो देह के साथ नष्ट होवेगा सो अगले देहमें क्यों नष्ट होवेगा ऐसा जान करके क्यों शोक करता है ४६ हे रामजी तुम सत्य भावना करो आत्मा सत्य है अरु मोहकी भावना मत करो मोह असत्य है अरु उपाधि रूप है अरु आत्मा इच्छा रूप उपाधितें रहित है अरु शुद्ध सत्ता मात्र रूप है ४७ हे रामजी आत्मा साक्षी रूप है अरु सभमें समान है विकल्प रहित है अरु चैतन्य रूप है इच्छा रहित है अरु शुद्ध है तिसमें अनेक जगत दर्पण की न्यांई प्रतिबिंब होते हैं ४८ हे रामजी सो आत्माकी चैतन्य सत्ता मनकी कल्पनातें परेहै अरु संकल्प विकल्पोंसे अन्य

है हे रामजी सो चित्त के सुख दुःखों करके कैसे नष्ट होवेगी ४९ हे रामचंद्रजी संकल्प लय भयेते चित्त गलित भये संते संसार की मोह रूपी घटा गल जाती है अरु एक अद्वितीय चैतन्य मात्र आत्मा निर्मल भासता है वुह आत्मा केसा है जन्मसे रहित हैं अरु अंत से रहित है कैसे जैसे शरद ऋतु प्राप्त भई संते अरु वर्षा ऋतु के बादल दूर भयेसंते आकाश निर्मल होताहै ५० हे रामजी यह चित्त सहित जगत असत्य रूप है तोभी आपे दृश्य मान होता है पुनः लयभी होता है अरु वार वार चैतन्य सत्तामों मन द्वारते चित्त रूप करके उदय होता है अरु लीनभी होता है जैसे समुद्रमों जलके तरंग वार वारउदय होते हैं अरु लीनभी होते हैं २५१ इतिश्रीवासिष्ठसारेमोक्षोपायेउत्पत्तिप्रकरणंतृतीयंसमाप्तम् ३ ॥ अथस्थितिप्रकरणंलिख्यते श्रीवासिष्ठोवाच॰ हे रामजी यह जगत रूप चित्र जिस प्रकार स्थितहै सो तुम श्रवण करो वुह कैसा है कर्त्ता रहित है अरु जिस प्र-

योजन है अरु साधन क्रियाते बिना है लिखने हारे चितेरेसे बिनाही है अरु श्वेत पीत रं-
ग करने से रहित है मूलते बिनाहै पत्र कागद के आधार बिनाही है अरु आकाशमों प्रती
त भये हुये गंधर्व नगर जैसा है अरु देखने हारेके दृष्टि गोचरहै तोभी चिरकाल इष्ट न-
ही होता है अरु मोह निद्रा करके प्रमाण करने हारे चैतन्य को तिरसकार करता है तोभी
साक्षी चैतन्य को तिरसकार नहीं करता है अरु अपने लय होनेमों साक्षी चैतन्यको लय
नहीं करता है १ हे रामजी फेर कैसे स्थितहै जैसे मर्कट शीत काल मों शीत निवारण के
वास्ते काष्ट समूह इकट्ठा करके अंगारिस्थान मों गेरि को धर लेते हैं अरु फिर मुखके प-
वन करके प्रज्वलित करते हैं उन्हसे अग्नि प्रज्वलित नहीं होती है अरु शीतभी निवृत्त न-
हीं होता है अरु प्रकार भी नहीं होताहै तैसेही यह जगत प्रयोजन रहित है इह लोक
मों अरु पर लोकमों किसी अर्थ को भी सिद्ध नही करताहै २ हे रामजी तुम सर्व अर्थोंकी

कला रूपी कलंक को शांत करो अरु सर्व विकल्प जाल रूपी शय्या का परित्याग करो त्रि-
१ कालकी मोह रूपी दीर्घ निद्रा को दूर करो भय से रहित होजाओ अरु आत्मज्ञान करके
अंतः करण को शोभित करो अरु स्वरूपा नंदमें सावधान रहो २ हे रामजी यह मन रू-
पी पिशाच है सो दृश्य पदार्थ की भावना के त्याग विना और उपायों करके सैंकड़े कल्पों
करके भी शांत नहीं होता है ४ हे रामजी मनही सर्व जगत है अरु तैसे जगतही मन
है यह दोनों आपसमें सदा मिलेहैं तिन्ह दोनों में मनका क्षय होनेंते जगत का क्षय
होता है ५ हे रामजी जैसे लवण राजाको मनमें चंडाल का स्मरण करनेते चंडाल
ता भई है तैसे यह जगत मनमें स्थितहै ६ हे रामजी जैसे भार्गव मुनि कों तप क-
रते को भोग की तृष्णा मनमें रहीते भोग भोगने का स्वामी भाव भयाहै अरु संसारी
भावभी भयाहै तैसे यह जगत मनमें स्थित है ७ हे रामजी जैसे भृगु मुनी का पुत्र

वा॰ सा॰ बालक भाव में मृतभया तिसको देख करके भृगु यमके ऊपर क्रोध करके शाप देने
१६॰ लगा तो यम भृगु मुनी को कहता भया हे मुनि तुम जैसे विवेकी पुरुष लोक स्थिति को असत्य जानते हैं अरु उत्पत्ति प्रलय को देखते हैं सो मोह के निमित्त में भी मोहित नहीं होतेहैं अरु मोह के निमित्त बिना कैसे मोहित होतेहैं ७ हे भृगुजी तुम विवेक करके अनंत भयेहो हम देवकी आज्ञा पालने हारे हैं अरु तुम विवेक करके हमारे पूज्य हो अरु क्रोधादिकों करके पूज्य नहीं हो ८ हे मुने तुम बुद्धि करके रहित हो अरु क्रोध करके तप का क्षय मत करो कल्पांत समयमें हमने तुम्हारे कोभी दग्ध करना है अरु आपदे करके हमारा क्या करलोगे ९ हे मुने मैने अनेक संसार रचना ग्रस्त करीहै अरु कोटि रुद्रभी ग्रस्त किये हैं अरु कोटि विष्णुभी ग्रस्त किये हैं अरु हम ग्रस्त करने को कहां समर्थ नहीं हैं ११ हे मुने हम तुम्हारे भोक्ता हैं अरु तुम जैसे हमारे भोजन

है यह सभ देव की इच्छा का बिलास है हे ऋषिजी हमारी तुम्हारी चेष्टा क्या व-
स्तु है १२ हे मुने यह संसार का व्यवहार ईश्वर की इच्छा करके वर्त्तमान है अरु वि-
वेकी पुरुष इसके अधीन वर्त्तमान होते हैं तो भी महात्मा पुरुष अभिमान नहीं क-
रते हैं १३ हे मुने तुम्हारी ज्ञान दृष्टि कहां है अरु महत्व कहां है अरु धीरता कहां है
अरु संसार का मार्ग सभ को प्रसिद्ध है अरु अंध पुरुष की न्याई क्रोध अरु मोह के आ-
धीन क्यों भये हो १४ हे मुने यह मरणा वस्था अपने कर्म के फल के परि पाकते होती
है इसके विचार विना सर्वज्ञ तुम मूढ़ पुरुषों की न्याई मेरे को वृथा शाप देने की इच्छा
करते हो १५ हे मुने संसार व्यवहार मों जैसे मूढ है हम को तैसेही ज्ञानी पंडित है अ-
रु मूढ वासना करके बद्ध है अरु ज्ञानी वासना त्याग करके मुक्त होता है अरु मृत्यु को
सभही समान है १६ हे मुने ज्ञानी पुरुष सुखी पुरुषों में नित्य सुखी होते हैं अरु दुःखी

पुरुषों में दुःखी होते हैं अरु महात्मा पुरुष अज्ञानी पुरुष जैसे दृश्यमों वर्त्तमान इष्ट होते हैं पर अंतःकरणमों असंग है १७ हे रामजी भृगु मुनि यमका इह वचन सुनकर यमको प्रसन्न होइ कर बिदा करते भये अरु आत्म विचार करके पुत्र शोक को त्याग करते भये १८ हे रामजी तिस कारणते जो पुरुष ज्ञानीद्रियों को वासनाते मुक्त करे तो कर्मेंद्रियों करके अरु कर्म बंध से मुक्त होता है अरु कर्मेंद्रियों करके कर्म त्याग करे और ज्ञानिंद्रियों करके वासना बद्ध होवे तो संसार मो बंधन को प्राप्त होता है ताते संसार वासनामों स्थित है १९ हे रामजी जब तुम ममता अहंकार के अंधकार से रहित होवो तो सर्व वासना रहित बनों अरु चित्तकी इह लोक अरु पर लोककी भोग इच्छासे रहित बनों तब चित्त से परे महा पदवी को प्राप्त होवोगे तुम को सभ ही प्रजा नमस्कार करेगी २॰ हे रामजी वासना रहित चित्तही अमृत है अरु तिसते परे अमृत

नहीं है वासना सहित चित्तही अग्र है अरु तिसते परे अग्र नहीं है जो चित्त इसीकी
भावना वाला होवे तो बाहिर दुखी नहीं होवे तोभी दुःखों के अंतः करणमों विवेक न-
हीं होवे तो बानीसे कहाहुवा विवेक क्या करेगा २१ हे रामजी जैसे फटिकमों प्रति
बिंब होते हैं परंतु अंदर प्रवेश नहीं करते हैं अरु तैसे लोक व्यवहार करके भोग इ-
च्छा तुम्हारे मों इष्ट होती है तोभी अंतः करणमों तुमको नहीं है २२ हे रामजी जो पुरु-
ष विचार करके उदय भयाहै अरु चित्त के स्वभावको जाने आत्मा के तत्वको जाने तिस
पुरुष के ब्रह्मा विष्णु इंद्र शिवजी सभही शिष्य होते हैं २३ हे रामजी यह शरीर मिथ्या
वासना के भारते प्रकट भयाहै आपदा का निवासहै जो पुरुष इसको आत्मभावना करके
नहीं देखते हैं सोही आत्मा को देखता है २४ हे रामजी शरीरमों देशकाल के वशते सु-
खदुःख प्राप्त होतेहैं अरु तिन्हकों जो अपने मों नहीं देखता है सो पुरुष आत्माको देखता

है २५ हे रामजी पार मर्यादासे रहित देश काल क्रियासे रहित ऐसा आकाश जैसा मैं हूं इस प्रकार करके सर्वत्र आत्माको व्याप्त भयेको देखताहै सोही देखताहै २६ हे रामजी बाल- कके रोमका अग्र भागका जो लक्ष भागहै तिसकी कोटि अंशकी न्याई मैं सूक्ष्मरूप करके सर्वत्र व्याप्त भयाहूं इस प्रकार आत्माको जो देखता है सोही देखताहै २७ हे रामजी अपने को अथवा इतर पुरुषको भेद दृष्टि विना नित्यही सर्वव्यापी चैतन्य रूप स्वयं प्रकाश आ- त्मरूप जो देखता है सोही देखताहै २८ हे रामजी जो पुरुष सर्व शक्तियुक्त अनंत रूप स- र्वभावमों स्थित ऐसे अद्वितीय आत्माको अंतःकरण मो देखता है सोही देखताहै २९ हे रामजी जो पुरुष आधि व्याधि भय करके व्याकुलहै अरु जन्म मरणादि धर्म सहित ऐसे देहको जो आत्मरूप नहीं देखता है अरु अपनेको देहसे भिन्न देखताहै सोही देखता है ३० हे रामजी तिरछी अरु ऊर्ध्व अरु नीचे आत्माकी महिमाको व्याप्त भई देखता है मेरे सिरीषा

दूसरा कोई नहीं है अरु ऐसे प्रकार जो आत्मा को देखता है सोही देखताहै ३१ हे रामजी जो कोई ऐसा देखता है सर्व जगत मेरे मोहीहै ब्रह्म कैसे जैसे सूत्रमों माला के मनके लगे होतेहैं अरु चित्तमों भी सर्व जगत है परंतु चित्त जड़है तिसते मैं चित्त नहीं हूं ऐसे जो देखता है सोही देखता है ३२ हे रामजी नातो हम है नतो कोई और है अरु सर्व व्यापी सर्वत्र पर ब्रह्महै ऐसे प्रकार सत्य असत्यमों जो देखता है सोही देखता है ३३ हे रामजी नाम रूप करके जो कछु त्रैलोक्य है सो मेराही अंशहै जैसे समुद्रमों तरंग होताहै ऐसे जो देखता है सोही देखताहै ३४ हे रामजी जौनसा भोग प्रमाणका स्वभाव जान करके भोगिया होवे सो भोग संतोष को करताहै अरु दुःख को नहीं देताहै जैसे चोर जान करके चोरकी सेवा करे तो चोर मित्र भाव करताहै अरु शत्रु भाव नहीं करताहै ३५ हे रामजी जैसे मार्ग चलने हारे पुरुषोंको मार्गमों तीर्थ यात्रा अकस्मात् प्राप्त होती है अरु तैसे

बा॰ सा॰ ज्ञानी पुरुषको संसार के व्यवहार चिंतन किये बिनाही अकस्मात् प्राप्त होतेहैं ३६ हेरा
१६६ मजी जैसे नेत्रोंके आगे जो अकस्मात् दृष्ट होतेहैं उसमों दृष्टि प्रीति बिनाही प्रवृत्त हो-
तीहै तैसे धीर अरु बुद्धि वाले पुरुष जगतके व्यवहारमों प्रीति बिनाही प्रवृत्त होते हैं
हेरामजी उत्तम बुद्धिवाले पुरुषको अप्राप्त पदार्थोंकी चिंता जो है अरु अप्राप्त पदार्थ की
जो हानिहै अपने निश्चयतें चलायमान करने को नहीं समर्थ होतीहै जैसे पक्षीओंके परों
का प्रहार पर्वतको चलाय मान नहीं करतेहैं ३८ हेरामजी ज्ञानी पुरुष पदार्थोंकी चिंत
मों दृढभावना को दुःखोंकी खान जानतेहैं अरु पदार्थों की दृढभावना त्यागको अनंत
सुखोंकी खान मानतेहैं ३९ हेरामजी संसार समुद्र तारणेको संतजनों की सेवा बिना तप
अरु तीर्थ अरु शास्त्र बिना समर्थ नहीं होते हैं ४० हेरामजी जो पुरुष लोभ मोह क्रोध कर-
के अंधाभया है सो पुरुष दिन दिन प्रति क्षीण होताहै अरु जो सत पुरुष हैं वुह पुरुष लोभ

अरु मोह क्रोधसे रहित होय करके अरु शास्त्रकी विधि करके अपने धर्म कर्ममों बिहार
करतेहैं ४१ हे रामजी जो नीच पुरुषहै तिसको अहंकार रूपी पिशाचने ग्रहण किया है तिसको
शांत करने वास्ते शास्त्र अरु मंत्रभी समर्थ नहीं होतेहैं ४२ हे रामजी जो कोई ऐसा विचार क-
रै कि यह जगत की झूठी इंद्रजालकी मायाहै इसमों स्नेह करना अरु विराग करनेमों औरे
को क्याहै ऐसा अंतःकरणमों विचारणेते अहंकार उदय नहीं होताहै ४३ हे रामजी जो
ऐसा मनमों दृढ होय सो परम उत्तम अहंकार कहियाहै अरु सर्व विश्वमें हूं अरु पर-
मात्माभी में हूं अरु अविनाशी में हूं अरु मेरेते परे और कछु नहींहै यह जो परम उत्तम
अहंकार है मोक्षको देताहै अरु बंधको नहीं देताहै ४४ हे रामजी मैं सभसे भिन्नहूं अ-
रु बालकके रोमके अग्रभाग के सैंकड़े अंशोंते सूक्ष्म हूं ऐसी जो अहंकार की कल्पना
है सो दूसरी कहीहै यहभी बंधन ही करतीहै अरु जीवन मुक्तों को मुक्त करती है ४५

हेरामजी हस्त पादा दिक करके जो कर्म करताहै अरु तिसको मानता है मैं करता हूं यह तीसरा लौकिक अहंकारहै सो तुच्छहै त्यागने योग्यहै अरु दुष्ट है अरु परम शत्रुहै ४६ हे रामजी पहिले शिष्यको शम दम आदि करके मन इंद्रियोंते शुद्ध करके अरु शुद्ध अंतःकरण जान करके ब्रह्मज्ञानका उपदेश करे हे शिष्य तुम ब्रह्म हो ऐसे बोधनकरे ४७ हेरामजी जौनसा अज्ञानी है अरु शुद्ध अंतः करण नहीं है तत्व ज्ञानसें रहितहै उसको जो ब्रह्मज्ञान उपदेश करताहै सो श्रवण करने हारे को अरु अपने आपकोभी नर्क मों गेरता है ४८ हेरामजी जौनसा गुरु शिष्यको परखे बिना उपदेश करताहै सो गुरु अरु शिष्य दोनों नर्क मों प्राप्त होतेहैं अरु जब लग पंचभूत सृष्टि प्रलय नहीं भई तब लग नर्कमों दोनों पीडित होतेहैं ४९ हे रामजी यह माया दुष्टहै अरु दूर नहीं होतीहै ऐसी विचारणा तुमको मत होवे इस मायाको मैं कैसे मारों जैसे होवे तैसे मैं इसको मारों ऐसी दृढ विचारणा तुमको होवे ५०

हेरामजी शुभ अशुभ कर्म करके जिस को अपना स्वरूप विदित नहीं हो
ताहै अरु जन्म मरण का मन में खेद जिस को नहीं होता है अरु संसा-
रके दुःख सुखों में वैराग्य नहीं होता है मोक्ष की इच्छा जिस को नहीं हो
तीहै सो मनुष्य रूप करके राक्षस है ५१ हे रामजी यह जगत मेरे देहाभि
मान सहित असत्य है अरु ऐसा जान करके तेरे को विषाद मनमो होवे
कि यह मेरे ही स्वरूप सहित सत्य रूप है अरु ऐसा विचार करके तेरे
को विषाद दूर होवे ५२ हे रामजी सुंदर धन मों इस्त्री पुत्रादिक मों ज्ञानी
पुरुष को हर्ष शोक का समय कहां है अरु जैसे रेती की चमकमों ज-
लकी तृष्णा भई संते जल चाहते को क्या आनंद होता है ५३ हे रामजी जि
न्ह भोगों के अधिक भये संते मूढ पुरुष को प्रीति होती है अरु विचारी पु-

पुरुष को तिन्ह भोगों करके विराग होता है ५४ हे रामजी भोगों के आगम भये बिना वांछा जो नहीं होवे अरु भोग प्राप्तिमों भोगों का स्वाभाविक भोग करणा यह पंडितों का लक्षण है ५५ हे रामजी भावें स्वर्ग का नंदन बन शून्य होजावे तो भी महात्मा पुरुष शोक मोहको नहीं करते हैं अरु देवगती करके यो प्राप्त होवे तिसको त्याग नहीं करते हैं सूर्यकी न्याई मोहांधकार को दूर करते हैं अरु असंग रहते हैं ५६ हे रामजी यह जगत की स्थितिमों बहुते ब्रह्मा के लक्ष चले गयेहैं अरु शिव इंद्रोंके अनेक शत चले गये हैं अरु नारायण के अनेक सहस्र चलेगयेहैं ५७ हे रामजी जगत की स्थितिमों कदाचित् शिव से सृष्टि भई है अरु कदाचित् ब्रह्मा से भई है अरु कदाचित् विष्णु से भई है अरु कदाचित् मुनी श्वरोंसे भी भई है ५८ हे रामजी यह पुरुष अपनी चेष्टा करके आपही रोदन करता है

अरु मर्कट दलित भये काष्ठ ऊपर बैठता है उसके अंड काष्ठ के अंदर पड़जाता
 है सो मर्कट काष्ठ के मध्यके कीले को निकाल लेता है अरु काष्ठ मिलनेते मर्कट
के अंडे काष्ठमों फस जाते हैं सो मर्कट अपने हाथकी चेष्टाते आप मृत होताहै ५९
हे रामजी जो तुम हजार वर्ष उग्र तप करो अथवा अपने शरीर को पर्वत शिखर
तें गिराय करके शिला मों चूरण करें अथवा अग्निमों बडवा अग्निमों प्रवेश करें
अथवा बडे गर्त्तमों पड़ा रहे अथवा तलवार की धारा करके शरीरकों तिल तिल प्र-
माण छेदन करें तेरेको शिव उपदेश करके विष्णुभी उपदेश करे अरु ब्रह्माभी उ-
पदेश करे अथवा त्रैलोक्य नाथ ईश्वर की कृपा करके तेरेको आप उपदेश करे
अरु वावें आपही तुम त्रैलोक्य को सृष्टि पालन लयभी करें पाताल मों रहें अथवा
स्वर्गमों रहें अथवा पृथिवी मों रहें तोभी अपने मनके संकल्प का लय बिना मोक्ष

का उपाय तेरे को कोई नहीं है ८९ हे रामजी यह मेरा गुरु है अरु मैं शिष्य हूं अरु यह मेरे विलास हैं ऐसा भ्रम तेरे को अंतःकरण मां मत होवे अरु मैं अरु तु म यह जगत यह संपूर्ण एक आत्मा तत्वही विलासको प्राप्त भया है ९१ हे रामजी यह मैं हूं सो मैं हूं अरु यह मैं करती हूं यह मैं नहीं करता हूं अरु यह पदार्थ हमारा है ऐसे भाव वाली दृष्टि संतोष को नहीं करती है ९२ हे रामजी यह देह मैं हूं ऐसी जो स्थित है सोही असि पत्र नामा नरक है अरु सोही वैतरणी नदी के तरंग हैं अरु सोही काल सूत्र नामा नरक है ९३ हे रामजी सर्व पदार्थ के नाश भये संते भी देहाभिमान की स्थिति सर्व यत्न करके त्यागनी जैसे उत्तम पुरुषने चांडालकी स्त्री कदीभी स्पर्श नहीं करनी ९४ हे रामजी कर्त्ताभी कोई नहीं अरु मैंभी कोई नहीं सो भी कोई नहीं ऐसी प्रकार जान करके कर्त्ता कौन है अरु मैं कौन सो कौन है यह

सभ पर ब्रह्म है ऐसा निश्चय करके सभसे उत्तम पंदमों स्थित हो जैसे निर्मल बुद्धि
 वाले उत्तम साधुजन स्थित होते हैं ९५ हे रामजी जो वासना करके बद्ध है सो ही बद्ध है
अरु जो वासना का लय है सोही मोक्ष हैं वासना को तुम त्याग करके मोक्ष की आशा को
भी त्याग करो ९६ हे रामजी पहिले तामसी अरु मलीन वासना को त्याग करो अरु शु
द्ध मैत्री आद वासना को धारण करो तब मुक्त होवेगी ९७ हे रामजी मैत्री वासना कर
के सर्व भूतोंमे प्रीति होती है सोभी मोहके करती है इसको व्यवहार करके केवल चै-
तन्यकी वासना मों धारण करो सो चैतन्य मात्र की वासना को मन बुद्धि सहित शुद्ध अ-
हंकार करके त्यागन करो अरु जिस शुद्ध अहंकार करके सर्व वासना त्यागी है अरु बा-
की रहिया अहंकार को भी तुम त्याग कर देवो अरु अहंकार के त्यागने करके तुम
शुद्ध चिन्मात्र पर ब्रह्म स्वरूप को प्राप्त होवेंगे ९८ हे रामजी जो हृदयते सर्व परि-

त्याग करै अरु जो शेष चैतन्य सत्तामों रहै सोही मुक्त है अरु सोही परमेश्वर है ६९ हे रामजी सो पुरुष चाहे समाधि करो अरु चाहे कर्म करो चाहे नहीं करो अरु जिसके हृदयमों सर्व वासना नहीं है सो पुरुष मुक्त भया है ७० हे रामजी जिस पुरुष का मन वासना रहित भयाहै तिस पुरुष को कर्म त्याग करके कछु पाप नहींहै अरु कर्म करनेते कछु पुण्य नहीं है अरु ध्यान जप करके भी कछु सिद्ध नहीं है सो आत्मा विचारते आपही सिद्ध भया है ७१ हे रामजी शास्त्र भली तरासें विचारण किया है श्रवण करने हारेको समझाया भी है अरु तोभी वासना त्याग करके मन के मौन धारण विना उत्तम पदकी प्राप्ति नहीं है ७२ हे रामजी दश दिशा भ्रम करके जो देखना सो देखिया है अरु जगत मों यथार्थ वस्तु को देखने हारे कोई विरले जनहैं ७४ हे रामजी सर्वत्र पंचभूत हैं छिद्रा कछु नहीं देखिया है अरु पातालमों स्वर्ग मों अरु पृथिवीमों और

कछु नहीं है ७४ हे रामजी विचारवान् पुरुष युक्ति सुनाय करके उपदेश करे तो संसा-
र गौके खुरस्थान के जल जैसा सुगम तरा जाताहै अरु युक्ति को नहीं जाने तो संसार समु
द्र जैसा दुस्तर होताहै ७५ हे रामजी जगत के कोई भी भाव तत्व ज्ञानी को प्रीत नहीं करते
हैं अरु जैसे रत्न कलश को देषणे हारे को मृत्तिका कलश देखने में प्रीत नहीं होती है
जैसे पार्वती के नृत्य को देखने चाहते शिवजी को मर्कट नृत्य करते प्रीत नहीं देतेहैं ७६
हे रामजी हम क्या करें अरु कहां जायें क्या ग्रहण करें अरु क्या त्याग करें अरु सर्व ब्रह्मा-
ण्ड सहित जगत आत्मा करके पूर्णहै अरु जैसें प्रलय काल के समुद्र जल करके ब्रह्मांड पू-
र्ण होताहै ७८ इतिश्रीवासिष्ठसारेमोक्षोपायेस्थितिप्रकरणं ४ अथउपशमप्रकरणम् राजा
दशरथ श्रीवसिष्ठ जी की स्तुति करते हैं १ हे मुने जिस सज्जनपुरुष रूप कल्प वृक्षतें युक्ति
रूपी कल्पता प्रकट होतीहै सो सज्जन कल्प वृक्ष सदा सर्वदा बंदना करने योग्यहै वुह सज्जन

हे मुक्ति रूपी कल्पलता अरु आत्मा रूपी रत्न देखने वास्ते मुख्य एक मशाल हे अरु आनं-
द रस रूपी तैलसें प्रकाश वान होती हे १ हे मुने तुम्हारे वचन युक्ति करके संसार बंधन के
जंजीर रूपी काम क्रोधादिक सभही हमारे क्षीण होय गये हैं अरु जैसे शरद ऋतु में श्वेत
बदल क्षीण होजाते हैं २ हे मुनि ऐसे आनंद कों स्वर्ग के मंदार वृक्षों की मंजरी नहीं करती
हे अरु अमृत रूपी समुद्र के तरंगभी ऐसा आनंद नहीं करते अरु जैसे उदार बुद्धि वाले
पुरुषों कियां वाणीयां अंतः करण मों आनंद करती हैं ३ राजा दशरथ श्रीरामचंद्रजी को क-
हते भये हे राम जौनसा दिन महात्मा जनों की सेवा करने में जाता हे सोही दिन उत्तम हे
अरु उत्तम उज्वल प्रकाश वाला हे अरु जो दिन बाकी के हैं उह अंधेरेही चले जाते हैं ४ हे रा-
म हे कमल नेत्र जौनसा प्रसंग वसिष्ठजी कहते हैं अरु इसको तुम वसिष्ठजी को फिर पू-
छो वसिष्ठजी तुम्हारे ऊपर कृपा करने मों स्थित हैं ५ श्रीरामचंद्रजी वसिष्ठजी प्रति प्रश्न करते हैं

वा॰सा॰ हे भगवन् तुम सर्वज्ञ हो यह तुम्हा प्रसाद भया है जिसतें में परम उदार बुद्धि
१८७ भया हूं अरु तुम्हारा बचन जो मैने समझा अरु यह तुम्हारा प्रसाद है ६ हे मु
ने जो तुम उपदेश करते हो सो तुम्हारा उपदेश मैने हृदय मों धारण किया है अ-
रु मैने मोह रूपी निद्रा दूर करी है जैसे तुम कहते हो तैसेही मैं मानताहूं अरु सो
अन्यथा नहीं है सो तैसेही मैने हृदय मों अर्थ करके चिंतन किया है ७ हे मुने तुम्हा
री आज्ञा हित को करने हारी है अरु हृदय मों प्रीत करने हारी अरु पवित्र है अरु
आनंद को सिद्ध करने हारी है अरु सिद्ध लोकोंने भी शिर करके धारण करी है ८ श्री
वसिष्ठजी श्रीरामचंद्रजी प्रति कहते हैं। हे रामजी हे सुंदरमूर्ते यह उपशम प्रक
रण उत्तम अरु सिद्धांत विचार करके सुंदर है अरु इसको तुम सावधान होयकर श्रव
णकरो ९ हे रामजी यह माया बड़ी विशाल है अरु राजस तामस वासना वाले जीव-

लोकोने धारण करीदी है जैसे सुंदर स्तंभों करके मंदिर धारण करीदा है ९ हे रामजी यह माया तुम्हारे जैसे पुरुषों ने तृण समान त्यागीदी है अरु कैसे है तुम जैसे पुरुष अंतः करणमों ज्ञान विचार वाले हैं अरु गुणों करके दृढ भये हैं सो कैसे मायाको त्यागते हैं जैसे सर्प त्वचा को त्याग करता है १२ हे रामजी जौंनसे सतो गुणकी वासना वाले पुरुष हैं अरु राजस सात्वक वृत्ति वाले हैं सोभी जगत के आदि अंतको विचारण करते हैं १२ हे रामजी जिन्ह पुरुषोंको शास्त्र ज्ञान अरु सत्संग होता है अरु सत्कर्म करके जिन्हकी पाप वासना हत होती है अरु तिन्ह पुरुषों की बुद्धि सार वस्तु विचार करनेको होतीहै अरु वुह बुद्धि कैसीहै मशालकी न्याई उज्वल भई है १३ हे रामजी अपने विचार करके आपही आत्माके अपनेमों जब लग नहीं विचारण कियाहै तब लग शास्त्रोंका तत्व प्राप्त नहीं होताहै १४ हे रामजी जिसका मन आद अंतमों असत्य जगत वस्तु विषे अन्य प्रीति को

प्राप्त होता है अरु तिस मूढ बुद्धि पुरुष रूपी पशु को विवेक किस करके होताहै १५ हे रामजी पहिले अपना मन शास्त्र करके वैराग्य करके सत्संग करके पुण्य कर्म में प्रवृत्त करना १६ हेरामजी जब मन सुजनता को प्राप्त होवे अरु वैराग्य को धारण करे तब सत्पुरुष ज्ञानी पुरुष को प्रश्न करना सेवा भी करनी १७ हे रामजी तदनंतर सद्गुरु उपदेश करके ध्यान पूजा जप करने करके क्रम से परम पवित्र पदको भी प्राप्त होता है १८ हेरामजी शुद्ध विचार करके यह पुरुष आपने निर्मल मन करके आत्मा को देखता है अरु जैसे शीतल चंद्रमा करके संपूर्ण आकाश देखीदा है १९ हे रामजी यह लोक तब लग संसार समुद्र में तृण के समान बहा जाता है अरु जब लग चित्त करके विचार रूपी तट में विश्रांत को नहीं प्राप्त होता है २० हे रामजी जब पुरुष विचार करके आत्म वस्तु को जानता है अरु तब संपूर्ण मानसी चिंता को दबाय लेता है अरु जैसे निर्मल जल रेती के नीचे करताहै २१

हे रामजी मैं ऊर्ध्व बाहु होय करके बोलता हूं अरु श्रवण कोई नहीं करता है अरु ज-
ब लग मन जड़ता को प्राप्त भया है जैसे गर्त्त में कछू पड़ा होता है अरु भोग मार्गमें मू-
ढ मन भयाहै अरु आत्म विचार को विसर गयाहै तब लग यह संसार का अंधकार चंद्रमा
करके अग्नि करके अरु बारां सूर्यों करकेभी भेदको नहीं प्राप्त होताहै २२ हे रामजी तुम॰
मनको जीत करके राग द्वेष बिना सुखसें रहित होवो अरु नित्यही आत्म विचारमें रहो
अरु हानी अरु वृद्धिसें रहित होवो आत्मनिश्चय वाले होवो अरु अद्वैत भावनामें दृढ़होवो
अरु शोकसे रहित होवो चिंता ज्वरसें रहित होवो २३ हे रामजी विश्वसे परे परम पद को प्रा-
प्त होवो अरु संपूर्ण प्राप्त होने योग्य पदार्थ करके पूर्ण होवो अरु पूर्ण समुद्र जैसे क्षोभसे
रहित होवो अरु चिंता ज्वरसे रहित होवो २४ हे रामजी तुम अनंत होवो अरु अपार होवो
अप्रमेय होवो आत्म वेत्ता पुरुषोंमें श्रेष्ठ बनो अरु पर्बत की न्याई धीरबनो अरु चिंताज्वर

से रहित बनो २५ हे रामजी यथा योग्य ईश्वर की इच्छा करके प्राप्त भये पदार्थ कर के संतोष करो अरु सर्वत्र वांछा का परित्याग करो अरु त्याग करना ग्रहण करने ते रहित बनो चिंता ज्वर से रहित होवो २६ वसिष्ठजी श्रीरामचंद्रजी को राजा जनक का सिद्धों का संवाद सुनावते हैं॥ हे रामजी सिद्ध आकाशमो छिप करके कहते हैं अरु द्रष्टा जो है अन्व पुरुष सो नेत्रादि इंद्रिय द्वारा करके रूपादि विषयों को प्रमाण करने हारा है अरु तिसको रूपादि विषयों के साथ संबंध करके विषयों की प्रतीति अरु आनंद अरु निश्चय जिसकों होते हैं सो चैतन्य आत्म तत्व का विचारतें प्रतीत होताहै ऐसे निर्विकल्प चैतन्य कों हम निरंतर उपासन करते हैं २७ देषणे हारा पुरुष है अरु देषणे के साधन इंद्रियां हैं अरु दृश्य विषय है यह त्रिपुटी कों वासना सहित त्याग करके केवल प्रकाश रूप करके जो प्रतीत होता है अरु तिस स्वयं प्रकाश

आत्माकों हम निरंतर उपासना करतेहैं २८ जिस आधार स्थानमों यह जगत हैं अरु जिसका यह सर्व जगत अंश रूपहै कारण जिस रूपतें प्रवृत्त भयाहै अरु जिस प्रयोजन वाले अरु जिस साधन करके जिस क्रिया को करताहै अरु जो इसका रूप है सो संपूर्ण आत्माही है अरु तिसको हम निरंतर उपासना करतेहै २९ अकार है पीरस्थान रूपी आद जिसका ओंहकार है अंत जिसके असा सर्व शास्त्रमों सर्व जगतमों अन्तर वर्णमात्रा रूप करके पंच भूतों से लेकर नाम रूप करके सर्व व्यापी होय करके स्थित भया है अरु जिसको कर्म कांड वाले उपासना कांड वाले अरु ज्ञान कांड वाले वेद वाक्य करके अरु मंत्र शास्त्र करके वेदांत शास्त्र करके नित्यप्रति उच्चारण करतेहैं सोहं मंत्र करके अजपा मंत्र जपने वाले अपने चाहे हुये जिस तत्वको जानते हैं तिसही आत्माकी हम निरंतर उपासना करते हैं ३० जो पुरुष अपने हृदय मंदिर

मों स्थित भये अरु ईश्वर को त्याग करके और देवताको उपासने वाले प्राप्त होने-
हैं सो क्या करते हैं अरु आपने हाथतें कौस्तुभ मणिको त्याग करके और रत्न ढूंढने
को देश देशांतर मों वृथा भ्रमण करते हैं ३१ वैराग्य करके हृदयमों स्थित भई सर्व
वासना को त्याग करके जिसके स्वरूप जानने करके संसारका मूल जाल अविद्या के
दकों प्राप्त होती है अरु तिसको हम निरंतर उपासना करते हैं ३२ जो पुरुष पदार्थों
में अत्यंत विरसता जान करके दुर्बुद्धि करके फेर भावना को बांधता है अरु सो मनुष्य
नहीहै वह मनुष्य रूप करके गधा है ३३ यह पुरुष इंद्रिय रूपी शत्रुन को बार बार
उठतेको विवेक रूपी दंड करके बारं बार मारे जैसे इंद्र वज्र करके पर्वतोंको भेदन क-
रताहै ३४ यह मन रूपी काल कूट विषहै सो खाने वालेको मार देताहै जो इस विष
को युक्त करके शोधन करे तो अमृत रूप होताहै तैसे मनभी शुद्ध होजावे तो मोक्ष को

प्राप्त करता है ३५ उपशाम रूपी सुख परम पवित्र है अरु तिसको यत्न करके सिद्ध करे उपशाम वालेका चित शिताबी शुद्ध होताहै अरु जिसका मन शुद्ध भयाहै तिस को आत्म स्वरूप के सुखमों स्थिति शीघ्र होती है ३६ इति सिद्ध गीता॰ राजा जनक ऐसे बचन श्रवण करके विलाप करता भया यह हमारा राज्य कितना प्रमाणहै तुच्छ है अरु तिसमों हमारा जीवना क्या प्रमाण है सोभी तुच्छ है अरु मेरे को इसके बिना और क्या दुःख है अरु मैं इसमों मोहित होय करके नष्ट बुद्धि जैसा दुःखमों स्थित भया हूं ३७ मेरेको वर्ष वर्ष प्रति अरु मास मास प्रति अरु दिन दिन प्रति क्षण क्षण प्रति सुखजो है सो दुःखों के पिंड प्राप्त होते हैं अरु बार बार मेरेको दुःखही प्राप्त होते हैं ३८ यह जगतमों ब्रह्माकी कोटी चली गई है अरु अनेक सृष्टि चली गई हैं राजे अनेक रेणु सरीखे चले गये हैं अरु मेरेको इस जीवनेमों क्या धैर्यहै ३९ यह संसारकी रचना दुष्ट समा-

वा॰ मा॰ सिरीषी है अरु तिसमों देह की स्थिति भ्रम मात्र है इस देहकी जो मैं स्थिरता
१८५ मानता हूं तो मेरे को धिग २ है ४॰ इस संसार मों जड़ लोक दिन दिन प्रति पा-
पसे भी पापकी दशा को प्राप्त होते हैं दिन दिन क्रूर दशा को प्राप्त होते हैं अरु
दिन दिन प्रति खेदकी अवस्था को प्राप्त होतेहैं ४१ यह लोक बालक अवस्था मों
अज्ञान करके नष्ट होताहै अरु यौवनमों विषय भोगों करके नष्ट होताहै अरु वृ-
द्धा वस्थामों स्त्री पुत्रादि चिंता करके नष्ट होताहै अरु यह दुष्ट जीव किस समय मों
अपना भला करेगा ४२ जिन्ह के नेत्रों के खोलनेमों अरु मिलाओनेमों जगत के उ-
त्पति प्रलय होतेहैं अरु ऐसे पुरुष अनेक ब्रह्मा अरु विष्णु रुद्रादिक जगत
मों चले गये हैं तो हमारी क्या गतीहै ४३ इस शरीर को एकांत करके दाह कर
तेहैं अरु ऐसा रौरवादिक नरकों की अग्निमों लोटना चंगाहै परंतु जिन्हमों जन्म

मरणादिक चक्र फिरते हैं अरु ऐसी संसारकी स्थितिमों रहना चंगा नहीं है ४४ यह संसार वृक्षके हज़ारों अंकुरहैं अरु हज़ारों इसकी शाखाहैं अरु हज़ारों पत्रहैं अरु हज़ारोंही इसमें फलहैं इसका मनही महा दुःखके अंकुरका मूल है ४५ तिस मनकों मैं संकल्पही रूपजानताहूं इसकों मैं संकल्प त्याग करके सुकाय देता हूं जैसे यह मन फिर शेष नहीं रहे ४६ इसके पीछे मेरा मन रूपी मोती अनविधा रहा है अरु अब उपदेश करके बेधा गयाहै अब विवेकादिक गुण रूपी सूत लगाओने को योग्य भयाहै ४७ मन रूपी तुषारकी कणका विवेक रूपी सूर्य के ताप करके चिर काल पर्य्यंत लग जावेगी ४८ मेरेको अनेक साधु पुरुषोंने सिद्ध पुरुषोंने बोध करा याहै अब मैं परमानंद कों देने हारे आत्माकों ग्रहण करता हूं ४९ यह मैं जनक रा- जाहूं अरु यह मेरा राज्य विस्तारको प्राप्त भयाहै अरु ऐसे फ़ुरणेकों अंता करनते

दूर करके अरु मन रूपी शत्रुओं को मार करके हे विवेक मे तेरे प्रसाद तें शांति-
को धारता हूं तो कोनमस्कार है ५॰ हे मन ऐसा इहां कछु उत्तम सभतें उच्चा पदार्थ को-
ई नहीहै जिस करके तूं पूर्णताको प्राप्त होवेगा तिसते हे शठ अरु हे मन तूं धीरताकों
धारण करके चंचलता कों दूरकर ५१ इति राजन वाक्यम्॰ श्रीवसिष्ठजी श्रीरामचंद्र
जीके प्रति कहतेहैं॰ हेरामजी जिसकी बुद्धि तीक्ष्ण है अरु आद अंतको विचारण क-
रतीहै अरु दीप शिखाकी न्याई प्रकाश मानहै तिस पुरुषकों जड़ता का अंधकार बा
धा नहीं करताहै ५२ हेरामजी जोंनसा यत्न भोग पदार्थ सिद्ध करनेको करीदाहै सो
ही यत्न बुद्धि के बधाउने के करने योग्यहैं ५३ हेरामजी बुद्धिकी जड़ता संपूर्ण दुः
खोंकी अवध है अरु संपूर्ण आपदा का भंडारहै अरु संसार वृक्षोंका बीज है तिसते
इसको नष्ट करें ५४ हेरामजी यह निर्मल बुद्धि विवेकी पुरुषके हृदय रूपी भंडार

में स्थित भईहै अरु चिंतामणि की न्याई कल्प लताकी न्याई चिंतित किये उत्तम फलको देतीहै ५५ हेरामजी जो कोई परम श्रेष्ठ अत्यंत उंचे फलको चाहता है तिसने प्रथम आपनी बुद्धि सुधारणे योग्यहै जैसे उत्तम फल वाली खेतीको चाहने हारे कृषाणने पहिले पृथिवी सुधारी है ५६ हेरामजी विवेकी पुरुषको इतने गुणों की संपदा नचाही प्राप्त होतीहै अरु आशातें रहित होना निर्भय होना नित्य सुखों में प्रीतिहोनी अरु समदृष्टि होनी अरु ज्ञानी होना इच्छा रहित होना अरु क्रियाकरहित होना सौम्यता होनी विकल्प रहित होना अरु धैर्य होना सतजनों विषे मैत्री होनी सभको मानना अरु संतुष्ट होना कोमल चित्त होना मधुर बचन कहिना ग्रहण त्यागसे रहित होना इतने उत्तम गुण वासना विना स्थित होतेहैं ५७ हेरामजी तृष्णा रूपी चांडाली हृदयमें स्थित भई करके केशीहै अरु अमंगल रूपहै इस

वा॰ रा॰ करके भगवान् विष्णुभी बलीको याचना करने वास्ते वामन रूप भयाहै ५७ हे राम
१९९ जी जो तू रागसें रहित होवें पदार्थ संग्रहकी वासना रहित होवे तो तेरे चित्तकी तृ-
ष्णा रूपी सत्ता गल जातीहै तो तूं दुःखसे रहित उत्तम पदकों प्राप्त होवेगा तिस तें
हे रामजी तुम अंत करण को शांतिको प्राप्त करो ५८ हे रामजी यह अहंकारकी भा-
वना पाप युक्तहै इसको अहंकार त्यागकी भावना रूपी शस्त्र करके छेद करके
आत्म तत्वकी भावना को धारण करहै कल्याण रूप संपूर्ण मूर्तों करके गाईहै प्री
ति जिसकी इसप्रकारकी शांतिकों तुम प्राप्त होवे ६० हे रामजी हे कमल नेत्र वास
ना त्याग दो प्रकारका तत्व ज्ञानी पुरुषोंने कहाहै एक जानने योग्य है अरु ध्यान
करने योग्यहै ६१ हे रामजी मैं पदार्थोंका नहीं मेरे पदार्थ नहीं इस प्रकार करके अं-
तः करणमें शांत बुद्धि करके क्रियाभी करी जातीहै अरु अंतः करण के निश्चय क-

रके जौंनसा वासना त्याग करीदी है हेरामजी सो ध्यान करने योग्य वासना त्याग का-
हिस्राहै ६२ हेरामजी अहंकार वाली वासनाको लीला करके जौंनसा त्याग करके ध्येय
वस्तुको भी त्याग करताहै सो जीवन्मुक्त कहिस्रा है ६३ हेरामजी समबुद्धि करके त-
त्व जान करके वासना का लय करके अरु ममतासें हीन होय कर वासना त्याग जो
कियाहै सो ज्ञेय वासना त्याग कहिस्रा है ६४ हेरामजी जौंनसा वासनाकी कल्पना
सहित निर्मूल त्याग करके शांतिको प्राप्त भयाहै तैसके त्याग करके जो युक्त भया
है अरु तिसको तुम मुक्त भयेको जानो ६५ हेरामजी जिस पुरुषने सषुप्तिकी न्या-
ई शांत हत्ति वाले वित्त करके स्थिति करीहै अरु सो पुरुष संपूर्ण कला सहित चंद्रमा
की न्याई सर्व जीवों करके सेवने योग्यहै सो मुक्त भया है ६६ हेरामजी विचार वाले
पुरुषके मनमो चार प्रकार प्रकट रूप वाला और निश्चय होताहै ६७ हेरामजी में माता

पिताने जन्म देने करके आपदा का शिरोमणि कियाहूं अरु ऐसा जो निश्चय है सो
एक ही कालिमा है वह कैसा है असत्य दृष्टि वालाहै अरु बंधन करने हाराहै ६८
में सर्व भावोंसे रहितहूं अरु बालकके रोमके अग्रभाग सेभी सूक्ष्म रूपहूं ऐसा दू
सरा निश्चय होयाहै सो मोक्ष सिद्धिकों करता है ६९ जितना यो जगत का जाल है
अरु जितने पदार्थ है सो संपूर्ण अक्षय रूपमें हो ऐसा तीसरा निश्चय कहाहै सो मो
क्षरूप है ७० मैं जोहूं अथवा यह संपूर्ण जगत जो है सो सबही आकाशकी न्याई शू
न्याहै अरु असत्यहै ऐसा जो दृढ निश्चयहै सो चतुर्थ कहते हैं अरु यहभी मोक्ष सिद्धि
के निमित्त महा श्रेष्ठहै ७१ हेरामजी जोपुरुष सबसे परे उत्तम पदकों आलंबन कर
ताहै सो पूर्ण चंद्रमाकी न्याई शीतल रूपहै अरु दुःखमों उद्वेगभी नहीं करताहै अ
रु सुखमों संतुष्ट नहीं होताहै ७२ हेरामजी प्रश्न किया तो प्रसंगकी वार्ता कहता

है अरु नहि प्रश्न कियेते तूष्णी रहताहै इच्छा अनिच्छाते जो रहित भयाहै सो संसार
मों पीडित नही होताहै ७३ हेरामजी भावों विषे अद्वैत भावनाको आश्रय कर सत्ता के
अद्वैतके स्वरूपको प्राप्तहो अरु धर्मशास्त्र की मर्यादाके निमित्त कर्म मार्गमों यह शुभ
कर्महै अरु यह अशुभ कर्महै यह करना अरु यह नही करना इस प्रकारकी द्वैतभा
वना को करो इसीतें कर्म विषें अद्वैत भावना को दूर करके द्वैत अद्वैत विचार मों
तत्पर रहो ७४ हेरामजी तुम ब्रह्मही हो ब्रह्म वेत्ताहो अरु परमार्थ विचारतें सर्वलो
क विषें देवता भावको प्राप्त भयेहो ७५ हेरामजी यह बांधव हमाराहै अरु यह हम
हैं यह हमारा शत्रुहै ऐसी गिणती तुच्छ बुद्धिवाले को होती है अरु उदार चित्तवाले
को सर्वत्र मात्र आत्म बुद्धि होती है ७६ हेरामजी सो नहीं है जिसमो हम नहीं हैं सो
नहीहै अरु जो हमारा नहींहै ऐसा निर्णय करके धीर पुरुषोंको भेदसें बुद्धि रहित होती

है ७७ हेरामजी माता अरु पिता के मरण करके संताप को प्राप्त भये हुये पावा-
मानज ऋषि को पुण्य पुरुष कहता है अरु जौनसी मृत भई हुई माता है सोही ते
री माता नहीं है अरु जो मृत भया सोही पिता तेरा पिता नहीं है अरु तूंही उन दोनों
का पुत्र नहीं है अरु उन्हके पुत्र असंख्य हैं अरु तेरे माता पिता अनेक सहस्र भ
ये हैं जैसे जल प्रवाह के अनेक तरंग और अनेक तट और अनेक मार्ग होते हैं ७८
हेरामजी नदीके तरंग की न्यांई अनेक माता पिता तेरे भये हैं तिसतें तेने माता
पिता अरु पुत्रादिक स्नेह करके शोचने योग्य नहीं है ७९ हेरामजी अज्ञान करके
मृग तृष्णा की नदी विस्तार वाली भई है अरु सो अविद्या है शुभ अशुभ वासना
रूपी तरंग युक्त है अरु अपनी वासना रूपी जल की तृष्णा अनंत कुरणे वाली भई
है ८० हेरामजी तूं आत्मा को भाव अभाव से रहित स्मरण कर जरा मरणते रहि-

त जान ऐसे आत्माको जान कर सूक्ष्मन मत होवे ८१ हे रामजी गुरुए उरुघने ऐसे समुझाया तो पावमानज ऋषि आत्म बोध के प्रकाशको प्राप्त होता भया अरु जैसे प्रात समय मो मनुष्य लोक प्रकाश युक्त होता है ८२ हे रामजी इस प्रकार पीछे तजे हुये अनेक शरीरों किंवा अनेक धन अरु पुत्रादिकों किंवा आशा अरु वासना होती है अरु उन्हते क्या ग्रहण होता है त्याग किसका होताहै ८३ हे रामजी तिसतें अनंत वासना त्याग करणाही मोक्षका उपाय है अरु आकाश नाम भी मला नहीं है ८४ हे रामजी चिंतन करणे करके चिंता बढती है अरु जैसे काष्ठ करके अग्नि जलती है अरु जैसे काष्ठ के बिना अग्नि शांत होतीहै तैसे चिंतन बिना चिंता शांत होती है ८५ हे रामजी मन पूर्ण भये संते जगत अमृत करके पूर्ण होता है अरु जोड़ा चरणों में लगा होया हो तो पृथिवी सारी चर्म मय प्रतीत होतीहै ८६ हे रामजी

वा॰सा॰ वासना रहित पुरुषको जगत एक कमल के बीज समान तुच्छ होताहै अरु अनेक
१९५ जोजनों का मार्ग गोके खुरबराबर होता है अरु ब्रह्माजी का दिन क्षण के बराबर हो
ताहै ८७ हे रामजी जैसी शीतलता और आनंदता वासना रहित पुरुषको होतीहै ऐसी
चंद्रमामों नहीं है अरु हिमाचल की कंदरामों नहीं है अरु केले के स्तंभमों नहीं है
अरु चंदनमों भी नहीं है ८८ हे रामजी ऐसा पूर्णमासी का चंद्रमा नहीं शोभता है औ
र क्षीर करके पूर्णभया क्षीर समुद्रभी नहीं शोभता है अरु विष्नुका मुखभी ऐसा न-
हीं शोभताहै जैसा वासना रहित मन शोभता है ८९ हेरामजी जैसे बदल की रेखा
पूर्ण चंद्रमाकों कलंक युक्त करती है जैसे सुपेदी कों सियाही की बुंद कलंक लगा
वती है अरु तैसे उत्तम पुरुष कों आशा पिशाचिनी खराब करती है ९॰ हेरामचंद्र
जी अथवा हेरघुबंश रूप आकाश के पूर्ण चंद्रमा हेरामजी राजा बलीकी न्याई बुद्धि

भेद करके तुम निर्मल ज्ञानको सिद्ध करो ९१ हे रामजी सो राजा बली लीला करके संपूर्ण जगत को जीत लेना भया अरु दशकोटी वर्ष राज्य करता भया ९२ हे रामजी निरंतर भोगे जो भोग हैं वुह भोग कैसे हैं अरु त्रैलोक्यमें अत्यंत उत्तम हैं तिन्होंमें उदासीनता धारता भया अरु एक समयमें आपही संसारकी स्थितिको चिंतन करता भया ९३ हे रामजी इस्त्रीयों को बारं बार आलिंगन करना बारं बार भोगना यह बालकोंकी क्रीडा है इसमें महात्मा पुरुषों को लज्जा क्यों नहीं आती है ९४ हे रामजी फेर दिन होता है अरु फिर रात्रि होती है बारं बार जगतके कार्य प्राप्त होते हैं अरु यह बारं बार ज्ञानी पुरुष को भूलने का मूल है ९५ हे रामजी संसार के कार्योंका समूह को बारं बार दिन दिन प्रति करने हारे लोकको लज्जा क्यों नहीं होतीहै ९६ हे रामजी इ वैकालेसें मेने ज्ञानवान् और आत्म तत्वको जानने हारा लोकोंके आद अंतको विचार

वा-रा- करके देखने द्वारा ऐसा आपना पिता विरोचन सुक्रिया है ९७ हे पिताजी संपूर्ण सुखदुः
२९ खों के भ्रम जिसमें शांत होते हैं ऐसे उपाय को तुम कहो तुम महा मतिहो ९८ हे रामजी
मनका मोह कहां शांत होता है अरु संपूर्ण वासना कहां शांत होती है अरु आनंद सहि
त चिरकाल विश्राम कहां होता है ९९ हे पिताजी जिस करके तुमको आनंद निरंतर है
अरु यहां चिरकाल विश्रामका सुख है अरु तिस उपायके ज्ञानको तुम मेरेको कहो
इतना श्रवण करके स्वर्गलोक को जीत करके कल्प वृक्ष ल्याय करके अपने अंगनमें
लगाया अरु ऐसे कल्पवृक्ष के पास बैठ करके पिता विरोचन कहता भया हे पुत्र प
क देश है उह कैसा देश है महा विशाल है जहां हजारों त्रैलोक्य पूर्ण नहीं होते हैं १०
अरु जिसमें संपूर्ण समुद्र अनेक पर्वत अरु अनेक बन अरु अनेक तीर्थ हैं अरु अ
नेक नदियां अनेक सरोवर पृथिवी अरु आकाश अरु स्वर्ग अरु पवन अरु सूर्य चन्द्रमा

अरु लोकपाल देवता असुर यह उसमें फिरे नहीं होतेहैं अरु एक किनारेमों स्थित हैं
ऐसा महा विशालहै ९२ हेपुत्र एक उपदेशमों महा बली राजाहै उह राजा कैसा है म-
हा तेज वालाहै अरु सर्व कार्य करने हाराहै सर्वत्र व्याप्तहै अरु सर्वत्र गति वालाहै सो
राजा आप चुप रहताहै ९३ अरु तिसने अपने संकल्पसें एक मंत्रीको कल्पना कियाहै
उह कैसा है जो सर्व मंत्र करने हारा है अरु जो कछु संकल्पकी घटनामों नहीं हो इ
तिसकोभी खिलाबी करलेताहै ९४ बली पूछता भया हेपिताजी चिंतासे अरु रोग से
रहित सो देश कहांहै अरु प्राप्त कैसे होताहै अरु किस करके प्रकाशमान है अरु
ऐसा मंत्री कहांहै अरु ऐसा महाबली राजा कहांहै हमने लीला करके त्रैलोक्य
जीतियाहै परंतु सो राजा हमने कैसे नहीं जीतिया है ९५ विरोचन कहता भया
हे पुत्र तिस देशमों सो मंत्री महा बलीहै अरु देवता असुरों के लक्ष सेना करके

वा॰ रा॰ भी देखनेको भी सामर्थ्य नहीं है तिसका जीतना तो कहा बनताहै ९६ हेपुत्र सो इंद्रभी
१९९ नहींहै अरु यमभी नहींहै कुवेरभी नहींहै अरु देवताभी नहीहै असुरभी नहींहै मनुष्य
भी नहीहैजो तुमसेजीताजावे ९७ सोमंत्री अस्त्र शस्त्रों करके पराक्रम करके किसी जो
धासें नहीं जीता जाताहै तिस मंत्रीने संपूर्ण देवता अरु असुर अपने वशकिये हैं ९८ सो
मंत्री विष्णुभी नहींहै अरु हिरण्याक्ष हिरण्यकशिपु आदि संपूर्ण दैत्य काल वश किये॰
हैं जैसे प्रलय कालके पवनने सुमेरु पर्वतके कल्पवृक्ष गिराये जातेहैं ९९ हेपुत्र सोमं
त्री अपने राजा का दर्शन करके जीता जावे तो सुख करके जीता जाताहै नहीं तो पर्वत॰
सोभी अचल है १० हेपुत्र त्रैलोकी मों जो बलवान है तिन्हसेभी मूल बलवान है ऐसे
मंत्रीको जेकर तेरी शक्ति जीतने की होवे तो तूंपराक्रम वान होवे १११ हेपुत्र सो मंत्री यु
क्ति करके ग्रहण करा जावे तो क्षणमात्रतें वश होता है अरु युक्ति बिना सर्पकी न्यांई॰

दग्ध करताहै ११ हेपुत्र जब लग राजाको नहीं देखीया तब लग जीता नहीं जाताहै अरु ज-
ब लग मंत्री जीता नहीं गया तब लग राजा दृष्ट नहीं होताहै १२ हेपुत्र पौरुष करके अरु य-
त्न करके अभ्यास करके क्रम क्रम करके मंत्रीका जय अरु राजाका दर्शन करके तिस देश
को तूंभी प्राप्त होवेगा १३ हेपुत्र सो देश कौन है अरु राजाकौन है मंत्री कौनहै मै तेरेको प्र-
कट करके सुनावता हूं तूं सावधानता करके श्रवण कर १४ सो देश मोक्ष नामा है तिस
मों राजा आत्मा है वुह सभसें परे है अरु तिस राजाने मन मंत्री कियाहै १५ तिस मनरू-
पी मंत्रीजीते संते सभ अपने वश होतेहैं सो मन मंत्री जीतना कठिन है अरु युक्ति
करके जीतिया जाता है १६ हेपुत्र सर्व विषयों की सर्व प्रकार करके आशा जो नहीं हो-
वे तौ यही मन जीतनेकी युक्तिहै १७ हेपुत्र अभ्यास किये बिना विषयों से विरक्ति नहीं
होतीहै यद्यपि देहधारी कैसाही बलवान होवे तौभी चलने केउद्यम बिना देशांतर मों

वा॰सा॰ नहीं प्राप्त होता है १८ हे पुत्र आत्म तत्व देखने करके विचार करके विषयों से विरक्ति
२०१ हृदयमों स्थित होती है जैसे कमल के मध्यमों लक्ष्मी रहती है १९ तिसनें बुद्धि का
उदय करके सुंदर विचार के आत्मा को देखे भोगों से विरक्ति करे २० हे पुत्र चित्त के
जीतने वास्ते चित्त के चार भाग करे दो भाग भोगों करके हरे करे अरु तीसरे भागको
शास्त्र विचार करके हरण करे चौथा गुरु सेवा करके हरण करे २१ जिस समय
मों चित्त शास्त्र के अर्थको पावे तो दो भाग चित्तके ज्ञान वैराग्य करके हर्ण करे दो
भागकों ध्यान करके गुरु पूजा करके हर्ण करे २२ हे पुत्र भोग त्याग करके पर
मार्थ विचार विना ब्रह्म पदमों विश्रांति सुख करके नहीं होती है २३ हे पुत्र पौरु
षकों यत्न को आश्रय करके अरु परालब्ध देव को दूर करके विचार वान पुरु
ष भोगन को त्याग करे वुह भोग केसेहें मोक्षद्वार को प्रतिबंध करते हे २४ ॥

भोगनिंदातें विचार होताहै विचारतें भोग निंदा होती है यह दोनों आपसमों पूर्ण होते हैं जैसे समुद्र अरु बादल आपसमों पूर्ण होतेहैं २५ हे पुत्र भोग निंदा अरु विचार अरु आत्म दर्शन यह तीनों आपसमों मिल करके मोक्ष अर्थकों सिद्ध करते हैं जैसे प्रीति वाले मित्र मिल करके अपने अपने अर्थको सिद्ध करतेहैं २६ हे पुत्र देशांतर गमन करके तुच्छ धनकी निंदा करके साधुजनों को मान पूर्वक पूजन करके अरु सत्संग करके भोग निंदा करके भले प्रकार विचार के उदय करके तेरे कों आत्म स्वरूप का लाभ होनाहै २७ बली कहता है पूर्वकाल में उत्तम विचार वाले पिताने यह ज्ञान मेरेको कहा था सो मेरे को बिसर गयाथा अब मुझको फिर स्मिरण भयाहै अब ज्ञानकों मैं प्राप्त भया हों मेरेकों आनंद भयाहै २८ अहो महा नंद भया है शामकी दशा महा रमणीक है अरु शीतलता करके युक्त है अरु सुखदुःख कीयां संपूर्ण दशा शाम विषे शांत होती

वा॰ सा॰ हे २९ जो मैने पहिले अपने देह के मांस करके इस्त्री के देहके मांस को पीडित क-
२॰३ राहै अरु अंग करके अंगको पीडित करके प्रसन्न होता भया येही मोह कोउदय है ३॰
इतना कालमें मूड होता भया जो तुच्छ जगत के राज्यकी इच्छा करके देवता गण के-
साथ वैर करता भया ३१ पहिले मैं कौन हूं अरु यह कौन है अरु जगत क्या है इस प्र-
कार करके अज्ञान की शांति वास्ते आत्म ज्ञान वास्ते अपने गुरु शुक्रजीको प्रश्न करता
हूं अरु स्मरण करने तें प्रकट भये हुये शुक्रजी कों बली कहता भया ३२ हे गुरुजी
मैं भोगन के प्रति विरक्त भया हूं अरु यह भोग कैसे हैं जो महा मोह को देने हारेहैं
तिसतें मैं तिस तत्व को जानना चाहता हूं जोनसा महा मोहको दूर करने हाराहै ३३
यह भोग जाल कितना प्रमाण है स्वरूप करके क्याहै अरु मैकौन हूं तूंकौन है य
ह लोक कौनहैं यह तुम मेरे प्रति कहो ३४ अब शुक्रजी कहतेहैं) हे दैत्यराज बहुत

कहने करके क्या है अरु आत्म रूप को प्राप्त होने को यत्न करे तूं मेरे से ज्ञान को।

सार को संक्षेपतें श्रवण कर ३५ यहां सर्वत्र चैतन्य है अरु चैतन्य मात्रही दृष्ट होता है अरु चैतन्य रूपही है तुम चैतन्य रूप हो हमभी चैतन्यहैं संपूर्ण लोक चैतन्य रूपहैं ३६ हे दैत्यराज तूं उत्तम बुद्धिहै जो निश्चय करेगा तो सर्वसार ज्ञान को प्राप्त होवेगा जो निश्चय नहीं करेगा तो तेरे को बहुत कहाभी अरु भस्म विषे होम जैसा होवेगा ३७ हे दैत्यराज चैतन्यका चित्तके संकल्प से संबंध होनाही बंधन है चित्त के संकल्पसें मुक्त होनाही मुक्ति कही है चैतन्यता कर चित्तकोभी चैतन्य मात्र जाने सभही आत्माही होता है यह मैने संक्षेपतें सिद्धांत संग्रह निश्चयतें कहाहै ३८ चिति कैसी है चित्त के धर्मने मुक्त है सोही मैहूं चैतन्यता रूपी ज्योति युक्तहूं सभ को प्रकाश करने का दीप हूं ऐसे मेरेको नमस्कार होवे ३९ वासिष्टजी कहते हैं॥

वा॰ सा॰ २०५

बली ऐसा चिंतन करता भया परम ज्ञान कों प्राप्त होता भया ॐकार के अर्थ कों धारण करता भया अरु मौनकों धारण करता भया ४७ सर्व संकल्पो से रहित होता भया निर्मल अंतः करण होता भया अरु जिसकी संपूर्ण वासना शांत होती भई सर्व संकल्पना शांत होती भई अरु शंका से संदेह से रहित होता भया अरु चित्त को चैतन्यमों एक रूप करता भया ध्याता ध्यान करता ध्यान करने योग्य इन तीनों तें रहित होता भया अरु सर्व भोग इच्छातें रहित होता भया अरु आनंद करके पूर्ण होता भया मनके दोषों से रहित होताभया ऐसा होय करके जैसे निर्मलता करके शरदऋतु का आकाश शोभता है तैसे शोभता भया दिव्य हज़ार वर्ष ध्यानमों एकाग्रस्थित होता भया ४८ हेरामजी बली दिव्य हज़ार वर्षते उपरांत ध्यानतें जाग्रत होता भया आत्म तत्त्व चिंतन

वा॰ रा॰ २॰४ कहने करके क्या है अरु आत्म रूप को प्राप्त होने को यत्न करे तूं मेरे से ज्ञानके सार को संक्षेपतें श्रवण कर २५ यहां सर्वत्र चैतन्य है अरु चैतन्य मात्रही दृष्ट होता है अरु चैतन्य रूपही है तुम चैतन्य रूप हो हमभी चैतन्यहैं संपूर्ण लोक चैतन्य रूपहैं २६ हे दैत्यराज तूं उत्तम बुद्धिहै जो निश्चय करेगा तो सर्वसार ज्ञान को प्राप्त होवेगा जो निश्चय नहीं करेगा तो तेरे को बहुत कहाभी अरु भस्म विषे होम जैसा वृथा होवेगा २७ हे दैत्यराज चैतन्यका चित्तके संकल्प से संबंध होनाही बंधन है चित्त के संकल्पसें मुक्त होनाही मुक्ति कही है चैतन्यता कर चित्तकोभी चैतन्य मात्र जाने सभही आत्माही होता है यह मैने संक्षेपतें सिद्धांत संग्रह निश्चयतें कहाहै २८ चिति कैसी है चित्त के धर्मने मुक्त है सोही मैहूं चैतन्यता रूपी ज्योति युक्तहूं सभ को प्रकाश करने का दीप हूं ऐसे मेरेको नमस्कार होवे २९ वासिष्ठजी कहते हैं ॥

वा. सा. बली ऐसा चिंतन करता भया परम ज्ञान कों प्राप्त होता भया ॐकार के अर्थ
२०५ कों धारण करता भया अरु मौनकों धारण करता भया ४५ सर्व संकल्पो से रहित
होता भया निर्मल अंतः करण होता भया अरु जिसकी संपूर्ण वासना शांत
होती भई सर्व संकल्पना शांत होती भई अरु शंका से संदेह से रहित होता
भया अरु चित्त को चैतन्यमों एक रूप करता भया ध्याता ध्यान करना ध्यान
करने योग्य इन तीनों तें रहित होता भया अरु सर्व भोग इच्छातें रहित होताभ
याहै अरु आनंद करके पूर्ण होता भया मनके दोषों से रहित होताभया ऐ
सा होय करके जैसे निर्मलता करके शरदऋतु का आकाश शोभता है तैसे
शोभता भया दिव्य हज़ार वर्ष ध्यानमों एकाग्रस्थित होता भया ४८ हेरामजी
बली दिव्य हज़ार वर्षते उपरांत ध्यानतें जाग्रत होता भया आत्म तत्त्व चिंतन

वा॰ सा॰ करता भया मेरेको बंधनही है अरु मोक्ष नहीं है मूढता मेरी लीला भईहै ध्या
२॰६ न बिलास करके मेरे को क्याहै ध्यान करने कारके क्याहै ४२ मेरेको परम तत्त्व
की बांछा नहीं है अरु जगत की स्थितिमें मेरी बांछा नहींहै ज्ञान दृष्टिसे मेरा
कार्य नहींहै अरु राज्य करके मेरेको कार्य नहींहै ४३ हेरामजी बलीकों जेसे ज्ञान
प्राप्त भया सो तुम्हारे को कहाहै ऐसी ज्ञान दृष्टिको धारण करके तुमभी मोक्ष का
उद्यम करो ४४ हेरामजी बली असुरोंका राजा भी होता भया अरु दश हजार वर्षको
ही त्रैलोक्यका राज्य करता भया अंत काल भोगोंते विरक्त भया ४५ तिसतें हेरामजी
तुमभी अवश्य करके भोग भागको विसरजान त्याग करके सत्य परमानंद कों
जान करके विसरता तें रहित सदा एक रस पदको प्राप्त होवो ४६ पहिले इ
ष्ट बस्तुकों अनिष्ट जान अनिष्टकों इष्ट जान ऐसी अभ्यास करके पश्चात् दोनों

वा॰ सा॰ का त्याग कर ४७ इस दृश्यके पदार्थ में इष्ट अनिष्ट दृष्टिके त्यागने तें निरंतर
४७ समदृष्टि हृदयमें उदय होती है तिस करके फिर जन्म नहीं होताहै ४८ हेराम
जौन से शरीरको आत्मा मानतेहैं झूठी ज्ञान दृष्टि करके जिन्ह की बुद्धि हत भई
है अरु संकल्प विकल्पके अधीन भये हैं धूर्त हैं ऐसे मूढनरों की बराबरी
को तूं मत धारण करे ४९ हेरामजी जौनसे पुरुष स्वात्मा निर्णयमें ज्ञान करके
रहितहैं परायों के कहेमें फस गयेहैं ऐसे यह मूढ पुरुषों को आपनी मूर्खता
से अधिक दुःख देने हारा कोई नहींहै ५० हेरामजी जब लग अपने आत्मा ने
अपने देखने में अनु यह यत्न करके नहीं किया अरु तब लग आत्म विचार
का उदय नहीं होताहै ५१ हेरामजी जब विष्णु भगवान जीने हिरण्य काशिपु
मारियाहै तब तिसका पुत्र प्रहलाद विष्णुको जीतने चाहता भया अरु जीतने

का उपाय चिंतन करना भया अरु विस्नुको जीतने का एक यहि मुख्य प्रकारउ

 पाय है अरु सर्वप्रकार करके सर्व बुद्धिको विचार को वेग करके सर्वत्र विस्नुका विस्मरण नहीं करना विस्नुस्मरण बिना बिस्नु को प्राप्त होने का अवर उपाइ कोई नहीं है ५२ अबसे लेकर जन्मादिकों से रहित नारायणकों सर्वत्र ध्यान करताहूं तब मैं नारायणको शरण प्राप्त होइ करके नारायण कों प्राप्त होवेगा ५३ ऊंनमोनारायणाय यह मंत्र सर्व अर्थकों सिद्ध करने हारा है सो मेरेहृदय कमलतें दूर नहीं होताहै अरु जैसे आकाशतें पवन दूर नहीं होता है ५४ दिशामों सर्वत्र हरिहै अरु आकाशमों हरिहै पृथिवी मों हरिहै अरु सर्वजगत हरिहै मैभी हरि हूं कैसा हरि है जो जिस हरिका परिमाण नहीं है अबमैंविस्नुरूप भया हूं ५५ जो आप विस्नुरूप नहीं भया है अरु विस्नुकी पूजा करता है

सो विस्नु की पूजा के फलकों नहीं पावता है जो कोई विस्नु रूप होय करके विस्नु को पूजता है सो विस्नु रूप होता है तैसेही मैंभी विस्नु रूप भया हूं ५६ प्रहलाद की भक्ति करके प्रसन्न भये विस्नु प्रहलाद कों वर देने को कहते भये तो प्रहलाद कहता भया हे महाराज तुम संपूर्ण संकल्प के फलकों देने वाले हो सर्व लोकके हृदयमों अंतर्यामी रूपस्थित हों जो कछु तुम अत्यंत उदार वस्तु जानते हो तिसकों मेरे प्रति कहो ५७ ॥ श्रीभगवानजी प्रहलादके प्रति कहतेहैं ॥ हे प्रहलाद संपूर्ण संकल्प की शांति वास्ते उत्तम फल के वास्ते ब्रह्मविश्रांति पर्यंत विचार ही उत्तम कहा है ५८ प्रहलाद विचार करता है श्रीभगवान जीने मेरे को विचार करना कहिआहै तिसतें में आत्म विचार करता हों ५९ अब मेरे को पांच भूतोंसें अरु भूतोंके विकार भूत देहोंसे भिन्न आत्माका विवेक करके अनुभव भयाहै तिनसें परे सत्तामात्र

वा॰सा॰स्वरूप सबको प्रकाश करने हारा मैंहों सर्व विषयके बाहिर अरु अंदर व्याप्त हों नि
२९॰ कलंक निर्मल सत्ता रूपहों ६॰ मैं विशाल चैतन्यता को दर्पण हों सो वस्तु नही है
जो मेरे विषें प्रतिबिंब नहीं होताहै मेरेते भिन्न कुछ नही है ६१ जो कुछ यह स्था
वर जंगम जगत् दृश्यमान है सो संपूर्ण संकल्प विकल्प रहित चैतन्य मात्र तत्वमें
हों ६२ तुम हम यह जगत् इस प्रकारका मिथ्या भ्रम भयाहै देहधारी कौन है देह रहि
त कौनहै मृत कौन भया है जीवता कौन है ६२ काष्ट के जल के पत्थर के किला ब
नाय करके पृथिवी के राजा बनके देहाभिमान को करता है ऐसे नीचबुद्धि दैत्य
रूप करके कीटक जैसे मेरे को धिक्कार है काष्टमों जलमों पत्थरमों कीड़े ह्यधिकभी
रहते है सो उत्तम कहां होते हैं आत्म विचार के बिना उत्तमता नहीं होतीहै ६४ हि
रण्यकशिपु त्रैलोक्य का राज्य करता भया सो विचार बिना क्या उत्तमताको प्राप्त भया

जिनने हमारे पितासे लेकर दैत्य भयेहैं सो सबही नीच बुद्धि भयेहैं जिस कारणतें य
ह आत्म विचार की उत्तम राज्य पदवी कों त्याग करके जगत की जन्म मरणादि पदवी
में प्राप्त होते भये अहंकार करके नष्ट होते भये तुच्छ पदार्थोंमें आनंद मानते भये ५४
यह आत्म विचारसे भई चैतन्य दृष्टि सब दृष्टिमें उत्तम है कैसीहै अंतसे रहित है अनं
त अखंड आनंद के भोग वाली है उत्तम उपशम शांति करके शोभायमानहै अरु सं
कल्प विकल्पों करके रहित होनेतें शुद्धहै ६६ मैं संपूर्ण भावों के अंदर स्थित हों वि
त्वके धर्मसे रहित चैतन्य रूपहों सर्वव्यापी चैतन्य रूप करके वर्त्तमान हों ऐसे मेरेको
ही मेरी बार बार नमस्कार है ६७ आत्म विचार के आनंदका स्वाद लिये बिना जगत के
ऐसे राज्य सुखों का स्वादलेने करके कछुभी स्वाद नहीं होता है ६८ ऐसी आत्म वि
चारकी दृष्टि कों त्याग करके दग्ध भये घर जैसा राज्य सुखमें कौन प्रीत करता है जे

से स्वादिष्ट खंडमिसरीका शरबत छोड़ करके अत्यंत कड़ुअे निंब के जलकों कौन पी वताहै ६९ हे मेरे आत्मा तेरे ताईं मेरी नमस्कार है तूं अखंड चेतन्य रूपहैं संपूर्ण लोककों देखने का महा मणिहै हे देवतूं मेरेकों प्राप्त भया हैं ७० हे देवतूं मैंने विचारिया है प्राप्तभी भयाहै बोधकों प्राप्त भया है अरु विकल्पोंसे निकासिया हैं जो रूप तुमहो सो रूपही हो तेरेकों मेरी नमस्कार है ७१ मैं तेरा रूपहों अरु अंतर रहित हौं अैसे मेरे ताईं तेरे ताईं नमस्कार है अरु कैसाहै शिव रूप है अद्वैत रूप है देवताका भी देवता रूप है इंद्रियों को प्रेरणा करने हारे इंद्रादिक देवताहै तिन्हकोभी प्रेरणा प्रकाश करने हाराहै सभसे परे हैं परमात्मा रूप हैं ७२ हे देव तूं कैसा है जिसतें बदलदूर भये हैं अैसे पूर्णचंद्रमाके बिंबकी न्याईं अविद्या के संकल्प विकल्प रूपी बंध दूर होनेतें स्वात्म प्रकाशरूप हैं अपने स्वरूपा नंदमों प्रसन्न हैं आपही आत्म रूप

में स्थित है आपही उदे भया है अपने वश है तेरे को आपही नमस्कार करता हूं
 हे देवतूं कैसा है जिसतें अहंकार रूपी कीचड़ दूर भया है निर्मल है अंदरका मा
मा जिसका ऐसा आनंद का सरोवर है ऐसे आत्म रूपतेरे ताई मेरे ताई नमस्कार है ७३
हे देव हे आत्मा तूं आनंद समुद्र है कैसा है शांत भया है इंद्रिया रूपी तरंग जिस
से लीण भई है चित्त रूपी बडवाग्नि जिसकी ऐसे मेरे स्वरूपतेरे ताई नमस्कार है ७४
हे देव हे आत्मा तूं आनंद का पर्वत हैं कैसाहै अहंकार रूपी बदल जिसतें दूर भयाहै
माया रूपी दावाग्नि जिसतें शांत भई है ऐसे मेरे ताई तेरे ताई नमस्कार है ७५ हे देव
हे आत्मन् तूं सत्तामात्र का मान सरो वर है कैसा है जिसमें आनंद रूपी कमल
प्रफुल्लित भया है चित्त रूपी लहर शांत भई है ऐसे मेरे ताई तेरे ताई नमस्कारहै
हे देव हे आत्मन् तूं कैसाहै लीला करके अनेक विश्वों का ईश्वर है अपने स्वरूपा

वा॰सा॰ नंद के अनुग्रह कों प्राप्त करने हाराहै तेरे प्रसादतें मेरे कों परमशांति करके
२२४ युक्त यह आनंद की प्राप्ति भई है ७७ हे देव हे आत्मन् में अब देखता हों मोह
रूपी वेताल चला गयाहै अहंकार रूपी राक्षस चला गया है आशा रूपी पिशाच
नी चलीगई है अबमें चिंता ज्वरसें रहित भया हों ७८ हे देव में अब देखताहों मे
रा अहंकार रूपी तोता तृष्णा रूपी जेवड़ीकों छेद करके शरीर रूपी पिंजरातें कह
गयाहै ७९ हे देव हे आत्माजी तूं कैसा है तेने आपनी सत्ता करके संपूर्ण विश्व पू
र्ण कियाहै विश्वकों अपनेसें उत्पत करने हाराहै सर्वत्र लक्षित होताहै अब कहां
भागजाता है ८० हे आत्माजी मेरा तेरा जन्म बंधनतें बहुत अंतराल भयाथा अब
समीपता भई है बहुत आनंद भयाहै जो तेरेको मैने अब देखिया है ८१ हे आत्मा
जी तेरेको मेरे विषे स्थित भयेसंते में सर्वदोषते रहित भयाहों अपने स्थानविषें

आत्माकी स्थिति भई संते रागद्वेषादिकों का रंग दूर होइगया है अब बंधन क-
हांहै आपदा कहांहै संपदा कहांहै जन्म मरण कहांहै अब अखंड शांति प्राप्त
होनेकी इच्छा कहांहै ८२ श्रीवसिष्ठजी कहते भयेहैं ॥ हेरामजी शत्रुगणको जी
तने हारा प्रहलाद इस प्रकारका आत्म चिंतन करताभया निर्विकल्प परमानं
द समाधिकों प्राप्त होताभया ८३ इस प्रकार करके हज़ार बर्ष आनंद पूर्ण होय
करके एकाग्रदृष्टि होय करके असुरों के नगरमों स्थित होताभया जैसें सूर्य प-
त्थरमों प्रति बिंवनहीं करताहै तैसें कार्योंकी कल्पनातें रहितहोता भया ८४ तिस
तें उपरांत ध्यानमों एकाग्रभये प्रहलादकों विष्णु भगवानजीने संसारकी राज्य मर्यादा
पालने वास्ते पांचजन्य शंखकी धुनि करके समाधितें जगा या तो दैत्योंके राज्य कों
पालना करता भया ८५ श्रीरामचंद्रजी श्रीवसिष्ठजीको पूछतेभये ॥ हे गुरुजी तुम

कहते हो जो अपने पौरुषके यत्न करके सभकार्य सिद्ध होताहै तो प्रह्लाद विष्णु के वर बिना बोधकों कैसे नही प्राप्त भया यह मेरे प्रति कहो ८६ श्रीवसिष्ठजीक हतेभयेहैं॥ हे रामजी जोजो प्रह्लाद कों प्राप्त भयाहै सोसो अपने पौरुषतें प्राप्त भया और किसीनें नहि प्राप्त भया ८७ हे रामजी आत्मा अरु नारायण आपसमें भिन्न नहीहैं जैसे तेल अरु तिल भिन्न नही होतेहैं दोनों एकहीहैं जैसे श्वेतरंग अरु वस्त्र भिन्न नहीं होतेहैं पुष्प अरु सुगंध भिन्न नही होतेहैं ८८ कदाचित् आत्मा अपनी विचार शक्ति करके बोधकों प्राप्त होताहै कदाचित् विष्णु रूप करके अपनी भक्ति करके आपही वर प्रदान करके बोधकों प्राप्त होताहै ८९ सो विष्णु रूप आत्मा चिरकालतें आराधन कियाभीहै तोभी आत्म विचार बिना जानने को अथवा वर देनेको समर्थ नहीहोताहै तिसतें प्रह्लादकों सर्वत्र नारायण सरूप आत्माज्ञानके पौरु-

षनें वर प्राप्त भया ९॰ हे रामजी आत्म बोध के दो कारण हैं तिन्हमों अपने यत्न सें भया आत्म विचार मुख्य कारण है देवता का वर प्रदान गौण कारण है जिस तें तुम मुख्य अपने पुरुषार्थ में यत्न करके आत्म विचार मों सावधान रहो ९१ हे रामजी तुम अपने पुरुषार्थ के यत्नकों आश्रय करके इंद्रिय मन रूपी पर्वत कों लंघ करके संसार समुद्र कों तर करके पार जाइ करके परम पद कों प्राप्त होवो ९२ हे रामजी जो पुरुषार्थ के यत्न बिना विष्णु रूप आत्मा दृष्ट होवे तो जड़ योनि मृग पछिगण कों पुरुषार्थ बिना क्यों उद्धार नहीं करता है ९३ हे राम जी जिसका मन अज्ञान करके युक्त है तिसको गुरु सेवा भी अरु विष्णु पूजा कछु नहीं कर शकती है जो कछु प्राप्त होता है सो आत्म विचार करके होता है ९४ हे राम जी जोंनसें शास्त्र विचारमों अपने पुरुषार्थ सो मूढ हैं पराये कहेमों प्रसन्न हैं ति-

न्हकों शुभ कर्म की प्रवृत्ति निमित्त विष्णु भक्ति कही है ९५ हे रामजी विचार विना उप
शम विना विष्णु भी नही प्राप्त होता है विचार करके उपशम करके मुक्त होवे तो वि
ष्णु करके क्या अर्थ है ९६ हे रामजी विचार करके उपशम करके मुक्त अपने चित्त
कों शुद्ध कर चित्त शुद्ध भये संते तूं मोक्ष सिद्धिको प्राप्त होवेगा जो तेरे कों विचार उप
शम करके चित्त शुद्ध नहीं होवे तो तूं बनके गधे सिरीषा है ९७ हे रामजी हृदयकं
दरामें चित्त कों स्थापन करणा ही आत्माका स्वाभाविक अविनाशि सदा एक जे
सा मुख्य रूप है अर शंख गदा पद्म धारणे द्वारा आत्मा का गौण रूप है ९८ हे
रामजी जो पुरुष मुख्य आत्माके रूपकों त्याग करके गौण रूपको सेवा करता
है सो अपने हाथ में सिद्ध रसायन कों त्याग करके साधन करणे योग्य अवर
रसायन के यत्न कों दोड़ता है ९९ हे रामजी यह माया संसार नाम रूपवाली

वा॰रा॰ है अंत से हितहै अपना चित्त जीतने करके क्षय को प्राप्त होतीहै २० हेरामजी
२१९ कोशल देश मों रहणे वाला एक गाधि नामा ब्राह्मण विष्णु की आराधना कर
के माया देखने वास्ते वरकों प्राप्त होय करके जलमों स्नान करणे को प्रवेश
करता भया जल के बीच अघमर्षण मंत्र पढ़ता भया मनमो माया की सृष्टि दे
ख करके फेर प्रत्यक्ष देखता भया मनमो संदेह करता भया माया यहीहै नहीहै
फेर विष्णुको आराधन कर प्रत्यक्ष अनुभव करके विष्णु जी को वचन कहता भया १
हेदेव मैं छः महीने माया करके भ्रमता भया भूतो के स्थान मों कीरलोकों की प
दवी को प्राप्त भयाहों तहां जो मेरा वृत्तांत भया है सो कथा मों भी नही आवता है २
तेरी माया करके भूतों की भूमिमेने देखनी थी यही तुम्हारावचन करके वरथा हेभग
वन् महात्मा पुरुषों का वचन मोह नाश वास्ते होताहै मोहकी वृद्धि वास्ते नही होताहै ३

वा॰सा॰ श्रीभगवानजीकहतेहैं हे गाधि जैसें काग ताल वृक्षके ऊपर आय करके अकस्मात् बैठ
२२॰ जाता है अकस्मात् ताल वृक्ष का फल गिरके फूट जाताहै ताल वृक्षके फलको काग
खाय लेताहै ताल फल कों काग तोड़ने नहीं सकता है तैसेही सर्व भूत रूपी कौसें के
चित्तमें चांडालकी स्थिति प्रतिबिंब होती है तिसतें तेरे चित्तमें अकस्मात चंडाल स्थि
ति प्रति बिंब भई है ४ तिसतें जैसी चित्तमें स्थिति होती है तैसा दृष्टांत कहा जाता
है जैसा चित्त का कारण होताहै तैसाही माया के वेगते दृष्ट होताहै सो स्थान बिना वि
स्मरण नहीं होताहै तिसका दृष्टांत कहते हैं ५ किसी चंडालने ग्राम में गृह रचन कि
या सो तैने देखेया फेर उसमें प्रवेश किया उसकी ईंट खंडित भई ६ हेगाधि कदाचि
त् एक कारण बहुत जीवों को होताहै जैसे अकस्मात कागकी ताल वृक्षमें स्थित
होतीहै तैसे अकस्मात कारण होताहै ७ हेगाधि तैसेही बहुत मनुष्य अकस्मात्

वा॰सा॰ एक स्वप्न को देखतेहैं उह स्वप्ना कैसाहै शयन रूप भ्रमको देने हाराहै जैसें
२२१ मदिरा पानतें बहुत मनुष्यों को एक जैसा अमल होताहै ८ हेगाधि गाधिनी
लोकमें जौंनसा कटंजक नामा चंडाल भयाहै जिस प्रकारका वृत्तांत भया है
सोही तेरेको स्फुरण भयाहै सो चंडाल स्त्रीसें रहित भया स्त्री वियोग करके दे
शांतर में गया तहां कीरदेशांतर में गया तहां कीर देशका राजा भया राज
काज करता भया फेर उस चंडाल के पुत्रादिक राजा के पास आय उस राजा
कों अपना सर्व वृत्तांत स्मरण भया अपनी इस्त्री का मरण का स्मरणतें वि
योग दुःख भया तो अग्निमें प्रवेश करता भया ९ हेगाधि सोही वृत्तांत तेरेकों
जल के अंदर चित्तमें स्फुरण भया तब तेरे को चंडाल भावसें ले करके अग्नि
प्रवेश पर्यंत वृत्तांत के मोहते भ्रम भया है १० हेगाधि माया के वेगते दृष्टि किये

अनुभव किये अर्थको भूल जाताहै कदाचित् देखे बिनाभी अर्थकों चित्त देखे जैसेकों प्रत्यक्ष अनुभव करता है ११ हेगाधि जैसे स्वप्न होताहै जैसे मनोरथ की कल्पनाभी होती है जैसें धातु विकार करके एक चंद्रमें दो चंद्रमा की प्रतीति होती है चंद्रमा का पीत वर्ण भासता है तैसेही अपने मन करके अपने कों जगत का भ्रम होताहै १२ हेगाधि जैसें त्रिकाल दर्शी पुरुषकों पूर्व वृत्तांत अरु भविष्यत् वृत्तांत प्रतीत होताहै तैसें तेरेकों चंडाल वृत्तांत प्रतीत भया है १३ हेगाधि यह पुरुष हैं सो हम है यह पदार्थ मेरा है आत्म वेत्ता पुरुष ऐसी कल्पना मों मग्न नहीं होताहै जो पुरुष आत्म वेत्ता नहीं सो ऐसी कल्पनामों मग्न होताहै १४ हेगाधि तत्व वेत्ता पुरुष सभमों आत्म रूप जान करके मोह कों प्राप्त नहीं होता है पदार्थों बिषे भेद भावना कों भी ग्रहण नहीं करता है १५ तिस कारणतें आत्म वेत्ता पुरुष

वा॰स॰ अनेक प्रकार के सुखदुःखों के बिलास भ्रम के जोगों बिषें मग्न नहीं होता है
२२३ जैसे तूंबेका पात्र जलमों डुबता नहीं है १६ हेगाधि ज्ञानकी प्राप्ति नहीं होने ते
मन के भ्रम कों हटाने कों तूं समर्थ नहीं होता है जैसे यत्न रहित पुरुष कछु
कार्य्य करने कों समर्थ नहीं होताहै १७ हेगाधि इस माया चक्रका चित्तनाभिस्था
नहै जैसे नाभि दबाओने ते चक्र नहीं भ्रमता है तैसे चित्त जीतने तें माया चक्र
नहीं भ्रमता है १८ हेगाधि तूं अब उठ करके हृदय रूपी पर्बत के कुंजमों चित्त
की एकाग्रता के निमित्त दश वर्ष पर्य्यंत सावधान बुद्धि करके तप कर तब तेरे
कों ज्ञान प्राप्त होवेगा १९ श्रीवसिष्ट कहतेहैं। हेरामजी भगवान इतना कहिकर
के अदृश्य होते भये गाधि ब्राह्मण विवेक वशातें वैराग्य पदकों प्राप्त होता भया २०
सर्व संकल्प रहित होइ करके पर्बत के कुंजमों दश वर्ष तप करता भया तब ज्ञान

कों प्राप्त होता भया २१ सोगाधि ब्राह्मण आत्म सत्ताकों पाइ कर आत्मा नंद विषें रमता करता भया जोग भावना सें भय शोकतें रहित होता भया सदा उदित जीवन मुक्त शांत रूप होता भया जैसें चंद्रमा कला करके संपूरण होताहै तैसेंही चित्तमों पूर्ण होता भया २२ तिसतें हे रामजी तीर्थ दान तप किया कों त्याग करके कल्याण वास्ते सावधान होइ करके चित्तकों वशकर २३ हे रामजी वर्तमान भोगको बाह्य बुद्धि करके खेद बिनाही भज भूत भोगकी न्याईं भविष्यत भोगकी भावना को त्याग करे तो चित्त क्षीण होता है २४ हे रामजी जो पुरुष तत्व ज्ञानी नही है सो कीटोंतें गर्धियोंते पशुपंछियों तें अतिही तुच्छ हैं २५ हे रामजी चित्त शुद्ध भये संतें आत्मसत्ता दूर जाती है जैसे बदल के चढेसंते सूर्यका प्रकाश बंद होताहै २६ हे रामजी भोगों को नही भोगनेतें आदर नही करणेतें शनैः शनैः चित्तको क्षश करना रसकों त्याग करना

जैसे पुराण पत्र गिरता है तैसेही चित्तभी क्षीण होताहै २७ देहमों आत्म भाव नकर नेतें देह भोग के अधीन होनेतें स्त्री पुत्रादि स्नेहतें चित्त बद्ध होताहै २८ अहंकारके विकार करके ममता की लीलातें यह मेराहै ऐसी भावनातें आदि व्याधि के विलासतें संसारकी स्थिति के विश्वासतें त्याग ग्रहणके यत्न करके धन रत्न के लोभ करके इन्द्रियों के स्नेह करके दुष्ट आशा रूपी क्षीर पानतें भोग वासना रूपी पवनके बलतें चित्तदृढ़ होता है २९ हे रामजी गंधमादन पर्वत मों उद्दालक तपस्वी विवेक कों प्राप्त होय करके चिंतन करता भया ३० मैं किस समय मों मनको त्याग करके परम पवित्र पदमों सुमेरुशृंग मों बद्दल की न्याईं विश्राम को प्राप्त होवोंगा ३१ भोग वासना मेरे अंतः करणमों कब शांत होवेगी जैसे समुद्रमों चंचल तरंग माला शांत होती है ३२ परमपदमों विश्रांत भई बुद्धि करके यह किया यह करना ऐसी कल्पना कों मै कब

त्याग करूंगा ३३ यह संकल्प विकल्पों का जाल मेरे चित्तके संगकों कब त्याग करेगा जे से कमल पत्र कोजल प्रसंग नहीं करताहै ३४ बहुत तरंग वाली तृष्णा नदीको बुद्धि रू पी नाओं करके कब मैं पार तरूंगा ३५ यह जगत के प्राणियों करके करी जाती झूठी जगत की क्रीडाकों बालकों की क्रीडाकी न्याई अनादर करके कबमैं उपहास करूंगा ३६ शांत भया है मनज रूपी मनका व्यापार जिसका ऐसा मैं पर्वतकी कंदरामो निर्विकल्प समाधि बडाय करके पत्थरकी समानता कों कब प्राप्त होवोंगा ३७ निराकार वस्तुका ध्या न विषें विश्राम कों प्राप्त भया जोमैं मेरे शिरऊपर बनके पंछी तृणका आलना कब करेंगे ३८ ध्यान विषें एकाग्रता कों प्राप्त भया जोमैं मेरे हृदयमों बनके पंछी पर्वत की कंदराकी न्याई निर्भय होय करके कब विश्राम करेंगे ३९ हेरामजी उद्दालक ब्राह्मण इस प्रकारकी चिंताके अधीन भया वारं वार बेठ करके ध्यानके अभ्यासकों कर

ता भया ४० विषयों करके चित्त रूपी मर्कट चंचल भये संते उद्दालक मुनि मौन कों देने द्वारी समाधान की प्रतिष्ठा कों प्राप्त नही होता भया ४१ किसी कालमों उद्दालकका चित्त रूपी मर्कट बाहिर के विषय संबंधकों त्याग कियेतें अंतः करणमों बहुत उद्वेगकों प्राप्त होताभया ४२ किसी कालमों तिसका चित्त रूपी मर्कट अंतः करण के विषय संबंधकों त्यागकरके चंचलतातें जैसें विष पान कियेते व्याकुलता होतीहै तैसें व्याकुल होताभया ४३ किसी कालमों तिसका मन प्रचंड सूर्य के तेज बरोबर प्रकाश मान अंदर के तेजकों देख करके व्याकुल होय करके विषयों के सन्मुख होताभया मलिनता करके ठहरा नही ४४ किसी कालमों तिसका मन अंदरके अज्ञान के संग करके विषय वासना मों लंपट होय करके ध्यानसें उच्चाटनकों प्राप्त होताभया जैसें त्रास करके पंछी उड़जातेहैं ४५ किसी कालमों ध्यानके दृढ अभ्यास

यो॰वा॰ में जिसका मन बाहिर के तथा अंदरके विषय संबंधोंको त्याग करके अज्ञानके अं
२२५ धकार के हरणे हारे आत्मज्योति के प्रकाशकी संधीमों मगन होय करके चिरकाल
की स्थितिकों प्राप्त होता भया ४६ हेरामजी इसतें अनंतर उद्दालक मुनि मनकी चंचल
तातें व्याकुल बुद्धि भया पर्वतमों भ्रमता भया जैसें सूर्य सुमेरु पर्वतके चारो तर्फ भ्र
मता है ४७ एक कालमों उद्दालक पर्वतकी कंदरामों प्राप्त होता भया कैसी है कंदरा
समस्त भूतों कों दुःख करके प्राप्त होने हारीहै शांत भयाहै सभका संचार जिसतें
कैसी है मानो मोक्षकी दशाहै ४८ सो मुनि तहां बैठता भया चित्तकी वृत्तिकी शांति
कों प्राप्त होताभया जैसें पर्वतमों प्राप्त होय कर बदल वर्षा करके शांत होता है ४९
सो मुनि तहां उत्तर दिशा सन्मुख होय करके पद्मासन बांध करके अंजलि बांध करके
वेदकी उपनिषदों कों पाठ करता भया ५० वासना मो भ्रमते मन रूपी हरणकों किसाय

करके निर्विकल्प समाधि के अर्थ इस प्रकार विचारणा करना भया ५१ रे मन मूर्ख ते रेको संसार की इच्छा करके क्या अर्थ है जिस कारणतें विचार वान पुरुष अंतः काल मों दुःख देने हारी क्रिया कों सेवन नहीं करते हैं ५२ रे मन जौनसा पुरुष शम रू- पी अमृतकों त्याग करके भोगों के अर्थ भ्रमता है सो कल्प वृक्षोंके बन कों त्यागक रके कंटकों बाले बनकों सेवन करना है ५४ रे मन तूं पाताल के तले जावेगा अ थवा ब्रह्म लोकमों जावेगा तोभी चित्तके उपशम बिना निर्वाणके आनंदकों नहीं पा वेगा ५५ रे मन रे मूढ यह शब्दादिक विषयों की वासना निरंतर घात करने हारी हैं इन्ह करके निरंतर वृथा क्यों फिरता है जैसें बदलकों देख करके मीडक फिरते हैं ५६ रे मूढ मन जिसकारण तें तेरेकों हमारा कहना क्या अर्थ है व्यर्थ है जिस कार णतें विचार वान पुरुषको चित्तका फुरणा नहीं होता है ५७ रे मन मैंने चरणके अंगूठा

वा॰सा॰ मैं लेकर शिखापर्यंत तिल तिल मात्र भलि तेरे विचारण कियाहै इस देहमें आनंद
१२॰ का लेश नहीं पाया तो इसमें क्यों आशक्त भयाहै ५८ इस देहका चलना पवनकी श
क्तितें है ज्ञानतो चैतन्यके अंशते है वृद्धावस्था अरु मृत्यु इसके धर्महै मै इसमें किस
अर्थतें स्थित भयाहूं ५९ इसमें नेत्र इंद्रिय रूपके सन्मुख होयकर अपने रूप विषय को
देखताहै तिस कारणतें मैं इसमें कौनहों रूपको देख करके क्यों मोहित होय कर दुः
खित भयाहूं ६॰ इसमें त्वचा इंद्री अपने तत्वस्पर्श ग्रहण करनेकों सन्मुख होती है
मैं इसके पीछे परायेका मनकों पिशाच की न्याई क्योंउद्यत भयाहूं ६१ इसमें जिह्वा
इंद्री अपने रसतत्व ग्रहण करणेकों उदय भई है मैं इष्ट भोग कों भोगता हूं ऐसा
दुष्ट भ्रम मेरेकों कहांतें भयाहै ६२ इसमें नीच श्रोत्र इंद्री अपने शब्द तत्व ग्रहण
करणे कों पीडित भईहै मैं शब्द के दुःख करके क्यों दुःखी भयाहूं ६३ इसमें नासि

का इंद्री अपने सुगंध तत्वमों मगन भई है में गंधकों सूंघता हों ऐसा चोर की न्याई सूंघने कों प्रमाण करना कौन हों ९४ हे मन तूं वासनातें ही नहो नेत्रादि इंद्रियां बा हिर अपने तत्वोंकों ग्रहन होती हैं तूं इन्हके साथ वासना करके क्यों ग्रहन भया है य ह वासना आनंदका कारण नहीं है ९५ तिसतें हे मन तूंभी मूर्ख है और इंद्रियांभी मू र्खहैं यह तुम सभही बाहिर के भोगों की वासनाकों अंतः करणतें त्याग करके आत्म स्वरूप प्राप्तिका यत्न करो जिसतें फेर दुःखकों नहीं पावेगें ९६ हे इंद्रिय रूपी बालको तु म अपने सें प्रकट भई तृस्ना करके आपही नष्ट भयेहो जैसे खोपड़ी का कीड़ा आ पही प्रकट करी हुई खोपड़ी करके आपही बद्ध होताहै ९७ विषकी न्याई विषय वा सना की विसूचिका अनंत दुःखकों देने हारी है तिसतें चतुराई करके जैसें होवे तै सें विषय वासनाकों दूर करके इष्ट आत्म चिंतन मंत्रकी युक्ति करके आत्म स्वरूपमों

सावधान होवो संसारके विषय वासना कात्याग करना जोहै सो संपर्ण भयको दूर क

 रने का स्थानहै ६८ यह अहंकार का भ्रम आकाश के नीलवर्ण की न्याई मिथ्याही उद
य भया है इसका फेर जो नही आरण ऐसे विस्मरण को सभसे भला मानताहूं ६७.
यह अहंकार के भ्रमको चिरकाल मूल सहित त्याग करके शांत रूप होय करके में
आत्म स्वरूपमों स्थित होताहूं जैसें शरद ऋतुमों आकाश आप निर्मल होय करके
अपनी शोभा करके आपही निर्मल शोभताहै ७१ यह चित्त परमात्मा रूपी अग्निमों
प्राप्त होय करके अपने संकल्प विकल्प रूपी अंगोंको जलाय करके सुवर्णकी न्याई
स्वछता को प्राप्त होताहै ७२ यह मन रूपी चना बनहै इसके संकल्प विकल्प दोनों
डालहैं तृष्णा इसकी लताहै इसको विचार शस्त्र करके छेद करके आत्मा रूपी मदा
न पृथिवी विषे सुख करके विहार करता है ७३ जिसके लिये भोग संपदा चाहीदी है

सो देह मेरा नहीं है मेंभी तिसका नहींहूं तिस कारणतें शरीर सुख के लेश करके मेरा क्या अर्थ है ७८ यहां आत्मा प्रकाश मानहै तहां मन और इंद्रियों और वासना यह नहीं फुरतेहैं जैसे यहां राजा पास रहताहै तहां दीन लोक रहने नहीं सकते हैं ७९ सो अपने आत्मा के स्थानसें मे चलित भया हों और मेरी बुद्धि भिन्न भई है मेरेकों यह इंद्रियां मन देह इनका परिवार शुभ नहीं करता है ८० अब मेरेकों निर्मलता प्रकट भई है आत्म सत्ता उदय भईहै और हृदयमों सत्यता और सर्वज्ञता प्राप्त भईहै सभमों एक रूपता और निर्भयता प्राप्त भई है और द्वैत कल्पना क्षीण भईहै ८१ यह शांतिसें आदि सभही सुंदरीयां इस्त्रीयां मेरे हृदय मंदिरमों प्रकाश मान है और स्वस्थ हैं अपने अपने सोभाग्य करके युक्तहै में केसाहों सभमों एक आत्म बुद्धिवाला हों यह सभ इस्त्रीयां मेरे हृदयकी पिआरी हैं ८२ अथ इसतें उपरांत उद्दाल

कमुनिः ॐकारके ध्यान प्राणायाम करके पवित्र होय करके समाधिके विघ्नोंको मन
की चंचलता कों दूर करके आत्मस्वरूप के प्रगटोनें आत्म सत्तामों मग्न होता भया
सविकल्प समाधितें आत्म रूप को प्राप्त भया जैसें सुवर्ण कडा बन करके सुवर्णही
होताहै ८४ इस प्रकार सविकल्प समाधि कों प्राप्त भये मुनिका चित्त चित्त भावकों
त्याग करके चैतन्य भावकों प्राप्त होता भया जैसें समुद्रमों तरंगादिकों की शांति
भये संते केवल एक समुद्रही समान रूप होताहै ८५ ऐसे फेर समाधि के अभ्यास
तें सो मुनि निर्विकल्प समाधिमो स्थित होता भया एक ब्रह्मभावकों प्राप्त होता भया जि
तनीपांचभूतों की मन बुद्धि अहंकार की कल्पना और आत्मा परमात्मा के भेदकी कल्पना
थी सो दूर होती भई जैसें महा काश होताहै तैसे शुद्ध बोधको प्राप्त होय करके ब्रह्मरू
पहोताभया ८६ तिस ब्रह्म भावमों सो मुनि अखंड आनंद को पाइ करके देखने द्वारा

पुरुष और दृश्य और दृष्टि इस भेदतें रहित अद्वैत भावकों प्राप्त होता भया जैसें अमृत रूपी समुद्र होताहै तैसें ब्रह्मानंदमों मगन होता भया ८६ सो मुनि सिद्ध कारण और साधना इन्हते रहित आनंदके मंदिर रूपी निर्विकल्प समाधिमों छः महीने स्थित होता भया जैसे सूर्य उत्तरायणमों रहता है ८७ सो मुनि आनंद से भी परे होता भया यहां आनंद और नहीं आनंद दोनोंका कारण नहींहै ऐसा केवल सत्तामात्र आत्म रूप होता भया ८८ तहां सो मुनि दिव्य हजार वर्ष स्थिति पाइ करके उसका मन फेर भोग वा सत्तामों उदय नहीं होता भया जैसे स्वर्ग देखने वालेको पृथिवी के पदार्थ देखनेंकों मन नहीं उदय होताहै ८९ सो मुनि तिसकालतें लेकर व्यवहारभी करता है तोभी चित करके चैतन्य सत्तामों सावधान होताभया ९० चैतन्य तत्वका एक अभ्यास ते महां चैतन्य रूप होता भया जैसें सूर्यका तेज सर्वत्र पृथिवीमों एक समान होताहै ९१

तब सो मुनि कहींभी आसक्त नहीं होता भया ऐसी पंचमी ज्ञान भूमिकातें पदार्थ के
छुभी नहीं भासता ऐसी छठी ज्ञान भूमिका कों प्राप्त भया चैतन्य तत्वकी सामान्य सत्ता के
अभ्यासतें जैसे सुमेरु पर्वतमों सूर्य अस्त उदयते रहित होताहै तैसें सत्ताकी सामान्य
ता कों प्राप्त होता भया ९२ हेरामजी तब तैसी उद्दालक मुनिकी अवस्था कों देख कर
मैं वसिष्ट और नारदादि मुनि गण ब्रह्मा विष्णु ईश्वरादि देवताः तहां प्राप्त होतेभये ९३
हेरामजी उद्दालक मुनि ऐसी संसार्ग भयकों नाश करणे हारी पदवी कों पाइ कर
जीवन मुक्तिकों प्राप्त होताभया ९४ हेरामजी वैराग्यका अभ्यास करके वेदांत शास्त्र
के अर्थका अभ्यास करके शुद्ध बुद्धि करके और गुरु सेवा करके उत्तम पद पाईदाहै अ
थवा एक शुद्ध एकाग्र बुद्धि करकेही उत्तम पद पाईदाहै ९५ हेरामजी बोध करके उक्त
और एकाग्र और निर्मल ऐसी शुद्ध बुद्धि होवे तो वैराग्यादि साधन बिना भी उत्तमपद

पाईदा है ९५ हेरामजी यह दोनों यत्न करके सिद्ध करने योग्य हैं दो कौन एक स
माधि और चित्त चंचल हत्तिनें रहित करना इन्ह करके अंतः करणमों शीतलता हो
वे तो तद तपका फलभी होताहै ९६ हेरामजी जैसें उन्मत्त पुरुष का नाचना उ
न्मत्त पुरुषकों और लोकोकों कुछ चमत्कार नहीं करताहै तेसें वासना क्षीण हो
तेतें चित्तभी विकार नहीं करताहै ९७ हेरामजी संपूर्ण जीवों को जो अंतः करण
में फ़ुरणा होताहै तेसाही बाहिरभी फ़ुरणा होताहै जो अंतः करण तृस्नाके दा
ह करके तपा होवे तो तिसकों जगतभी वनकी अग्निके दाह सिरीषा होताहै ९८
हेरामजी नक्षत्र मंडल और पृथिवी और पवन और आकाश और पर्वत और न
दियां और दिशा यह सभही अंतः करण तत्वके फ़ुरणेंते बाहिरभी फ़ुरते हैं ९९
हेरामजी एक सुरघ्र राजा भयाहै स्वर्णजट देशका स्वामी सो राजा भील होता

भया मांडवऋषि प्रसादतें ज्ञाता भया सो एक समयमें उस राजाकी प्रीत करणे
द्वारा परिव्र मुनि चिरकालसें मिलाप करके राजाकों आय करके कहत भया ३०
हेराजन् यह संसार जालमें भारतखंड भूमिमें जो जो कर्म कीदा है सो सो कर्म सा
वधान चित्त वाले पुरुषकों सुख करता है और व्याकुल चित्त वालेकों दुःख देता
है ३१ हेराजन् हम तेरेकों प्रश्न करतेहैं तूं संकल्पसे रहित परम उपशम के
कल्याणकों देने द्वारा परमविश्राम के स्थान ऐसी समाधियें अब करताहै नहींक
रता है ३२ अबराजाकहताभया॥ हेभगवन् मैं तुमकों पूछता हों सर्व संकल्प
सें रहित होना कल्याण को करताहै अथवा समाधि चढानी कल्याण करतीहै ४
हेभगवन् मार्गमें चलते संते व्यवहार करते संते संकल्पसें रहित होना कल्या
ण करणे योग्यहै जो चित्त सावधान नहीं होवे तो समाधी कहां होती है यह मैं

मतहै ४ हेमुनि जिस्के चित्त संकल्प रहित होनेतें सावधान हैं सो पुरुष जगत के कार्योंकों करतेभी हैं तोभी आत्मतत्व मों निष्ठा वालेहैं सो पुरुष सदा समाधिस्थहैं ५ हेमुने पुरुष पद्मासनभी बांधे दोनों हाथोंकों अंजलि बनाय रखे प्राणभी चढावें परंतु जिसका चित्त संकल्प रहित नहीं भया तिसकों समाधी क्या करेगी ६ हेमुने तत्वका बोध जो है सो संपूर्ण वासना रूपी तृणको अग्निकी न्याई नाश करणे हारा है सोही समाधि नाम करके कहाहै प्राण चढाइ करके चुप्प रहना समाधि नहीं कहीहै ७ हेमुने सावधान बुद्धि होवे विषय वासनाते रहित होवे यथा योग्य तत्वको देखने हारी ऐसी जो बुद्धि सो समाधिनाम पंडित लोकों करके कहीहै ८ वसिष्ठ मुनि कहता भया हेराजन् तूं निश्चै करके तत्व ज्ञान करके प्रबोधकों प्राप्त भया है आत्म पदकों प्राप्त भयाहै अंतः करणमों शीतल भयाहै अब पूर्णिमाके चंद्रमाकी न्याई

शोभता है ८ वसिष्ठजीश्रीरामचंद्रजीप्रतिकहतेभये॥ हेरामजी जीवने सोई दिन है
आनंद करणे हारी सोई क्रिया है जिन्हमें तत्व विचार होताहै और हृदय रूपी आ
काशमें चैतन्य चंद्रमाकी चांदनी प्रकाश मान होताहै १० हेरामजी सोपुरुष चिरका
ल शोच करतेहैं और जन्म मरण रूपी बनके झाड़हैं जिन्हकों आत्माके देखने में
अनादर होता है कैसे है सोपुरुष महा पापों करके युक्त है ११ हेरामजी महात्मा
पुरुषों के सत्संगते संसार समुद्र तरणेमें युक्ति प्राप्त होतीहै जैसें मलाहते नदी
तरणे कों पक्की नाउ प्राप्त होतीहै १२ हेरामजी जिस देशमें सत्पुरुष रूपी महा वृ
क्ष नहींहै कैसाहै ज्ञान रूपी फल करके युक्तहै आनंद करणे हारी शीतल छाया यु
क्तहै ऐसे सत्पुरुष जहां नहीं मिलें तहां एक दिनभी नहीं रहणां १३ हेरामजी संसा
रमें मगन भये आत्माके उद्धार करणेमें धनभी उपकार नहीं करतेहैं मित्र और शत्रु

और बांधव कोई उपकार नहीं करते हैं ३१४ हे रामजी एक शुद्ध भया मन रूपी मित्र स-
दा सहचारी है तिस करके विचार करने में आत्माका उद्धार होताहै ३१५ हे रामजी आत्मा स
र्व देवोंका ईश्वरहै सो इतना मात्र विचारनेते प्राप्त होताहै कि सतें यह देह काष्ट लोष्ठ के
बरोबर जड़ जानना और आत्मा देहतें भिन्न चैतन्य रूप जानना ३१६ हे रामजी एक भास
नामा तपस्वी होता भया उसका विलास नामा तपस्वी मित्र होता भया सो विलास चिरका
लतें भास तपस्वी को मिल करके कहता भया ३१७ हे भास तेरेकों इस जगतमों आनंद
है ना और तेरी बुद्धि चिंता ज्वरसें रहित है ना और तूं अब आत्माकों जानता है ना और ते
री पूरी भई अभ्यास करी विद्या अब फल देती है ना और अब तूं कुशली है ना ३१८ भास
कहिताभया हे विलास हे साधो तेरा आगमन मेरेकों आनंद देताहै आजतक मैंने आनंद
करके देखियाहैं तू मेरेकों मान करताहै अरु तूं हमारा कुशल पूछताहैं परंतु यह संसार

मों स्थित भये हमारेकों कुशल कहतांहै २१९ जब लग आत्मा नहीं जाना जब लग चित्त की भूमिका क्षीण नहीं भई तब लग संसार नहीं तरिआ तब लग हमारे कों कुशल कहांहै २ जब लग चित्तसें प्रकट भई आशा संपूर्ण छेदी नहीं जैसें दात्री करके झाड़ छेदे जाते हैं तब लग कुशल कहां है २२१ जब लग ज्ञान उदय नहीं भया जब लग समता उदय नहीं भई जब लग आत्म बोध नहीं भया तब लग कुशल कहांहै २२२ हेरामजी सो दोनों इस प्रकार करके आपसमों कुशल प्रश्न करते भये समय करके निर्मल ज्ञानकों पाइ करके मोक्षकों प्राप्त होते भये २२२ हेरामजी संगति दो प्रकार की है एक बंधन करणे हारीहै एक मोक्ष देने हारीहै मूर्खों की संगति बंध करणे हारीहै तत्व वेत्ता पुरुषों की संगति मोक्ष देने हारीहै २४ हेरामजी जिन्हका अंतः करणसें प्रसंगहै तिन्हका संगम अग्नि बरोबर दाह करताहै जिन्हका अंतःकरणसें प्रसंग नहींहै तिन्हका संग अमृतकी न्याई मोक्ष दे

ताहै २२५ हे रामजी सभउरुषणे सभके साथ सर्वत्र रहना सर्व काम भोग विषें रतभी रहना परंतु मन सभसे असंग करणा २२६ हे रामजी यह मन कहीभी स्थित नहीं होताहै ना चेष्टामों ना चिंतामों ना वस्तुमों ना आकाशमों ना पातालमों ना आगे ना पीछे ना दिशामों ना वस्तुमों ना आकाशमों ना बाहिर के विशाल भोगोंमों ना इंद्रियों की वृत्ति मों ना बाहिर प्राणोंमों ना कपालमों ना तालुस्थान मों ना भ्रूमध्यमों ना नासाग्रमों ना नेत्रा की तारामों ना तारामंडलमों ना अंधकारमों ना प्रकाशमों ना हृदय आकाशमों ना जाग्रत मों ना स्वप्नमों ना सुषुप्तमों ना निर्मिलमों ना भोजनमों ना जलपान मों ना रक्त पीतादि कमों ना चंचलतामों ना स्थिरतामों ना आदमों ना मध्यमों ना अंतमों ना दूरमों ना समीप मों ना पदार्थमों ना बुद्धिमों ना शब्दस्पर्श रूप रस गंधमों ना मोहमों ना आनंदवृत्ति मों ना आवागम चेष्टामों ना कालकी कल्पनामों कहीं भी स्थिर नहीं होता है २२१ हे रामजी

यह मनके बल चैतन्यकी चैतन्य सत्तामें आलंबन करै तो सर्वत्र रसतैं रहित होय कर के आत्मा विषे रत होवे तो स्थिर होताहै ३२ हेरामजी जगतका सत्य रूप और असत्यरूप अंतःकरण चैतन्यमें भासताहै और आत्माका केवल एक रूप ज्ञान होनेंते संपूर्ण आत्म रूप भासताहै जैसे सूर्य के प्रकाश होनेंते सर्वत्र प्रकाशही होताहै ३३ हेरामजी अनेक प्रकारके भूतोके भेदकारण अंतःकरणहीहै आत्मा सर्वव्यापी होनेतें कारण है तो भी कारण नहींहै किसतें आत्मा सर्वत्र समान सत्ता वालाहै ३४ हेरामजी जिसनें अंतःकरणके उपशम पाइ करके निराशता रूपी भूषण करके आपने स्वरूपको शोभित कियाहै तिस कों सप्तद्वीपा पृथिवी गोके खुरके बराबर तुच्छ होतीहै सुमेरु पर्वत मृत्तिकाके पिंड बराबर तुच्छ होताहै दश दिशोंका मंडल एक संपुटके बराबर तुच्छ होताहै ३५ हेरामजी नैरास्य वाले उत्तम पुरुषोंने लेना देना विहार ऐश्वर्यादिक जगतकी क्रिया प्रयतनसें त्याग

नहीं करीदी हैं ३३६ हेरामजी आत्म ज्ञानी पुरुष वाला स्त्री कों आलिंगन करता हे तोभी आत्म ज्ञान की उदारता करके उसके मनसें भस्मकी न्याई काम देवके बाण आप ही शिथिल होते हैं ३३७ हेरामजी जैसें व्यभिचारणी स्त्री परपुरुष के व्यसन कों मन मों धारण करती हे और घर के काममों तमाम दिवस लगी रहती हे परंतु मन मों पर पुरुषके संगकों त्याग नहीं करती हे तैसेही जो पुरुष परम तत्वमों विश्राम कों पा मभया हे सो व्यवहार भी करता हे तोभी उसको इंद्रादिक देवता भी परम तत्वसें चला नेको समर्थ नहीं होते हैं ३३८ हेरामजी केते पुरुष व्यवहारोमों स्थितहैं सुंदर वस्त्रभी धारण करते हैं परंतु जिन्हका अंतःकरण उपशम करके शीतल भयाहे सो पुरुष लो कोंकों शिला समान जड़ और मूढजाने जातेहैं ३३९ हेरामजी तत्व जान करके जौंन सी भोग संपदा सेवन करीदी हे सो अंतकाल मो भी सुख देतीहे तत्व विचार विना सब

यह मनके बल चैतन्यकी चैतन्य सत्तामें आलंबन करे तो सर्वत्र रसनें रहित होय कर
के आत्मा विषें रत होवे तो स्थिर होताहै ३२ हे रामजी जगतका सत्य रूप और असत्यरूप
अंतःकरण चैतन्यमें भासताहै और आत्माका केवल एक रूप ज्ञान होनेंते संपूर्ण आत्म
रूप भासताहै जैसे सूर्य के प्रकाश होनेंते सर्वत्र प्रकाशही होताहै ३३ हे रामजी अनेक प्र-
कारके भूतोके भेदकारण अंतः करणहीहै आत्मा सर्वव्यापी होनेंते कारण है तो भी कारण
नहींहै किसतें आत्मा सर्वत्र समान सत्ता वालाहै ३४ हे रामजी जिसनें अंतः करणके उप-
शम पाइ करके निराशता रूपी भूषण करके आपने स्वरूपको शोभित कियाहै तिस कों
सप्तद्वीपा पृथिवी गौके खुरके बराबर तुच्छ होतीहै सुमेरु पर्वत मृत्तिकाके पिंड बराब
र तुच्छ होताहै दश दिशोंका मंडल एक संपुटके बराबर तुच्छ होताहै ३३५ हे रामजी नैरा
श्य वाले उत्तम पुरुषोंने लेना देना विहार ऐश्वर्यादिक जगतकी क्रिया प्रयतनसें त्याग

नहीं करीदी हैं ३३६ हेरामजी आत्म ज्ञानी पुरुष बाला स्त्री कों आलिंगन करता हे तोभी आत्म ज्ञान की उदारता करके उसके मनसें भस्मकी न्याई काम देवके बाण आप ही शिथिल होते हैं ३३० हेरामजी जैसें व्यभिचारणी स्त्री परपुरुष के व्यसन कों मन मों धारण करती हे ओर घर के काममों तमाम दिवस लगी रहती हे परंतु मन मों पर पुरुषके संगकों त्याग नहीं करती हे तेसेही जो पुरुष परम तत्वमों विश्राम कों पा मभया हे सो व्यवहार भी करता हे तोभी उसको इंद्रादिक देवता भी परम तत्वसें चला नेको समर्थ नहीं होते हैं २३० हेरामजी केते पुरुष व्यवहारोमों स्थितहें सुंदर वस्त्रभी धारण करते हैं परंतु जिन्हका अंतःकरण उपशाम करके शीतल भयाहे सो पुरुष लो कोंकों शिला समान जड़ ओर मूढजाने जातेहैं ३३८ हेरामजी तत्व जान करके जोंन सी भोग संपदा सेवन करीदी हे सो अंतकाल मो भी सुख देतीहे तत्व विचार विना सब

नकरी भोग संपदा अंतमो दुःख देतीहै ३४॰ हेरामजी यह संसार संतजनों के साथ वि
चार करने योग्यहै विचार करके देखने योग्यहै इस संसार की व्यवहार क्रीडा विचारनें शो
भाकों देती हैं विचार विना दुःख देती है ३४१ हे रामजी यह संसारके भोग सर्पोंकी न्या
ई भयकों और मृत्युको देने हारे हैं और विचारनें भोगे तो आनंद देते हैं जैसे सर्प औ
र जीवोंकों भय देते हैं परंतु गरुड सर्पोंकों भक्षण भी करताहै तोभी गरुडकों कुछ
नही करते हैं ३४२ हेरामजी यद्यपि सूर्यका तेज शीतल होजावे और चंद्रमा का मंड
ल तप्त होजावे तदभी उपशम वाले जीवन्मुक्त पुरुषकों कुछु आश्चर्य मय ज्ञान नही
होताहै ३४३ हेरामजी जगतमें जितनी आश्चर्य रूप अथवा साधारण लीला होती है
सो सभही परमात्मा की शक्तिनें फुरती हैं तत्व विचारी पुरुष ऐसें जान करके देख-
नेमें इच्छा नही करता है ३४४ श्रीरामचंद्रजी वसिष्ठजी प्रति प्रश्न करते भये॥ ॥

हेभगवन् यह प्राण और इंद्रियां देहमें निरंतर चलतेहैं जैसे पंछी आकाशमें उडतेहैं इन्ह प्राणोंका और इंद्रियादिकों का रोकना कैसें बनेहैं सो तुम मेरे प्रति कृपा करके कहो॥श्रीवसिष्ठजी श्रीरामचंद्रजी प्रति कहते भये॥हेरामजी शास्त्रके विचारतें संतजनों के सत संगतें वैराग्य के अभ्यासतें और योगकी युक्तितें और संसार की वृत्त्यों विषे विश्वास त्यागनेतें अपनी इष्ट देवताका ध्यानतें और सर्वत्र एक आत्माका तत्व जाननेतें और प्राणायाम का हठ अभ्यासतें प्राणादिकों का चलना रोक आजाता है हेरामजी ॐकारको १६ सोहलें बार उच्चारण करनां दाहिनी नासिका दाहिने हाथके अंगूठेसें बंद करनी और पवनको चढाउना यह पूरक प्राणायाम कहा है और ॐकार कों चौसठ ६४ बार उच्चारण करना दोनों नासिका बंद करके पवन रोकना यह कुंभक प्राण याम कहाहै और ॐकारकों बत्तीस ३२ बार उच्चारण करना दाहिनी नासिका

करके पवन उतारणा यह रेचक प्राणायाम कहाहै इसीकों द्विगुण त्रिगुण करके बधा इ लेना इस प्रकार करके प्राणोंका चलना रोकने बनताहै ३४७ हेरामजी प्राणा याम करणे मों ओंकारकी मात्रा तीन है उन्हके देवता ब्रह्मा विष्णु रुद्र तीन अवस्था जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति और तीन प्रकारका अभिमानी जीव है विश्व तैजस प्राज्ञ इससे लेकर औरभी बहुत अर्थ विचारणा शास्त्रोंमों आचार्य लोकोंने कहाहै सो योग करने वाले पुरुषने गुरु मुखसें अ भ्यास करना इहां विस्तार भयतें कठिनता करके वार्त्तिकमों नही लिखाहै ३४८ हेराम जी इस प्रकार के प्राण रोकने के उपाय बहुत हैं अनेक आचार्यों के मुखोसें प्रकटभ येहैं तिन्हकों अपने अपने बुद्धि केबल करके करणेतें प्राणों का चलना रोका जाता है ३४९ हेरामजी योगकीयां युक्तियां अभ्यास करके दृढ भईआं तों संसार के जीतने कों उपाय होजातीआं है ३५० हेरामजी सो युक्तियां अभ्यासतें दृढताकों प्राप्त भईहोवे

ओर वैराग्य करके युक्त होवे ओर वासना का जो रोकना होवे तो प्राणायाम सफ
ल होता है ५१ हे रामजी प्राणायाम के अभ्यासतें प्राणों का चलना क्षय को प्राप्त
भये संते मनभी शांत होताहै तो केवल निर्वाण मात्र शेष रहताहै ५२ हे रामजी किया
है विशाल विचार जिसनें तिसकों मन ओर भोगा दिक जो शत्रु है सो अल्प प्रमाण
भी भेद नहीं करसकते है जैसें मंद मंद पवन पर्वतकों नहीं हिलाइ सकतीहै ५३
हे रामजी संवर्त्तने गीता में संवर्त्तने कहाहै रे मन पिशाच तूं तृष्णा रूपी पिशाचनी
युक्त काम क्रोधादि पक्षों करके संयुक्त मेरे देह रूपी घर से बाहिर निकस ५४
रे मन तूं बड़ा ठगहै ओरजड़ है ओर प्रेत रूपहै तेने मेरे देह सें निकसे संते मेरा देह
रूपी घर अब विवेक संतोष धैर्यादिक संतजनों करके सेवने योग्य भयाहै ५५ अब मे
रा मन मृत भया है ओर चिंताभी विचार मंत्र करके मृत भई है ओर अहंकार रूपी राक्ष

वा॰ सा॰ सभी मृत भयाहे और चिंताभी विचार मंत्र करके मृत भई हे और अहंकार रूपी राक्षस
२५॰ भी मृत भयाहे अबमें शमता कों प्राप्त भया हूं अब केवल बल स्वस्थ होय करके रहता
हों ५६ अब में एक अद्वितीय भया हूं और कृत कृत्य भया हूं और नित्य और निर्मल रू
प भयाहूं और निर्विकल्प चेतन्य मेरा नाम हे अेसा जो मेहूं मेरेनांई मेरी नमो नम न
मस्कार हे ५७ ना मेरे को आशाहे ना मेरे कर्महें ना मेरे को संसार हे ना कर्त्ता भा
वहे ना संदेह हे ना देह हे अेसे मेरे को मेरी नमस्कार हे ५८ मे जगतका आद
हूं जगत कों रचना करने हाराहूं मे चेतन्य रूप हूं चोदां भुवन में हूं मेरा अंतर
कहो भी नहीहे मैं सर्वत्र पूर्ण भया हूं अेसे मेरेकों मेरी नमस्कार हे ५९ इतिसं
वर्त्तगीतायां॥ हे रामजी विंध्याचल पर्वत के कुंज मों बीतहव्य मुनि कों विचार स
हित तीन शत वर्ष निर्विकल्प समाधी होती भई तिसतें उपरांत प्रारब्ध शेष करके

वा० सा० जीव चैतन्य मनो रूप होय करके जीवन मुक्त दशा करके कैलास पर्वतमों कदंब
२५८१ वृक्ष के तले शत वर्ष मुनि भाव भया बऊड शत वर्ष विद्याधर भाव भया सत युग
त्रेता द्वापर कलियुग इन्ह चारों युगोंका एक युग होता है सो मुनि पांच युग प्रमाण इंद्र
भाव को प्राप्त भया फेर कल्प ब्रह्माका दिन प्रमाण शिव का गण भया फेर सूर्य मंडल
मों प्रवेश किया सूर्य की आज्ञा करके सूर्य का गण पिंगल नामा तिसमों प्रवेश करके
इतना विलास प्रारब्ध शेष करके मन के फुरणेतें समाधिमों अनुभव किया फेर अप
ने नख करके देह पीडित होनेतें फेर देहमों प्रवेश करके विंध्य पर्वतमों एक दिन
मात्र यह संपूर्ण विलास अनुभव करता भया ५० सो मुनि दिनके अंतमों मनकों समा
धान करणे कों एक विशाल विंध्य पर्वत की कंदरा मों फेर प्रवेश करता भया २५८१ सोमु
नि अपने समाधान कों नहीं त्याग करता भया इंद्रियों करके मन करके जो कछु सर्व

कालमों उत्तर कालमों देखा है तिसकों चित्तमों कल्पन करता भया ६३ मैनें इंद्रियों का गण पहिले ही परि हार किया था अब विस्तार भई चिंता करके फेर उदय भया तिसकों मैं फेर परिहार करता हूं ६४ यह जगत है अथवा नहीं है ऐसी कल्पना कों कोमल लताकी न्यांई तोड करके शेष रही आत्मा की सत्ता मात्रमों स्थित होता हूं जैसे अचल पर्वत के शिखरमों चढ करके निर्भय होय करके निवास करीदाहै ६५ उदय भयेमों अस्त भये जैसा अस्त भये मों उदय जैसा समदृष्टि होय करके सम रसके आभास युक्त स्वच्छता कों प्राप्त होय करके स्थित होताहूं ६६ जाग्रत भया सुषुप्तकी न्याई सुषुप्त भया जाग्रतकी न्याई तुरीय पदवीकों आलंबन करके अचल होय करके स्थित होताहूं ६७ पर्वत की न्यांई एकांतमों अचल होय करके स्थित होताहूं अंतः करके सर्वत्र अचल स्थित होताहूं आत्म सत्ता करके सर्वत्र समान स्थित होय करके संदेह रोगसें रहित होय करके स्थित होताहूं ६८ हे रामजी

सो वीत हव्य मुनि इस प्रकार आत्मा के समाधान में षट् छे दिन रहा तिसतें अनंतर फेर आत्म बोध को प्राप्त भया ६९ सो फेर जीवन्मुक्त दशा करके चिरका ल स्थित होता भया पहिले सरीषा फेर उद्वेग कों नहीं प्राप्त होता भया और ह र्षकों भी नहीं प्राप्त होता भया ७० तिस वीतहव्य मुनि को चलने कों बैठनेकों स्थि त भये कों हृदयमें मनके साथ चित्रकियां कथा होतियां भइयां ७१ हे मन हे दुष्ट इंद्रियों के स्वामिन् तूं अब देखनेंने प्राप्त उपाय करके आनंद का सुख वि शाल अब कैसा पाया है ७२ हे मन तैने तिस कारणतें ऐसी राग रहित दशा कों आलंबन करके आपही चंचलता त्यागनी तूं चलने वालियों विषें बड़ा वेग वान हैं ७३ भो भो इंद्रिय रूपी चोरो तुम्हारी अब आशा हत भई है और तुम्हारा नाम भी न रहाहै यह आत्मा तुम्हारा नहींथा अरु तुमभी आत्माके नहींथे तुम

आत्माकी चोरी करनेथें अब आत्माकी सावधानता करके तुम नष्ट भयेहो ७४ हे इंद्रिय चोरो तुम अब चले जावो अब तुम्हारी मेनें आशा विफल करीहै तुम बड़े टेढ़े आशय वाले हो अब तुम आत्माके ग्रहण करनेकों समर्थ नही हो ७५ हे इंद्रिय चोरो पहिले तुमकों यह वासनाथी क्या हमही आत्माहैं सो अब भूल गई हे जेसें रज्जु जाननेमों सर्प कीभी भ्रांती नष्ट होतीहै ७६ जोंनसी अनित्य वस्तुमों आत्माकी भावना होवे सोही अवस्तु मों वस्तुकी भावना हे सो विचार विना होती है अब विचार करके क्षीण भई है ७७ हे इंद्रिय चोरो तुम ओर स्वभाव वालेहो हम ओर स्वभाव वालेहैं ब्रह्म ओर स्वभावहै कर्त्ताका भाव ओर स्वभाव हे भोक्ता ओर स्वभावका हे ग्रहण करने हारा ओर स्वभावका है यहां दोष कोनहे ओर केसाहे ओर किसको हे सो सभही अज्ञानने हें सो संपूर्ण भ्रम अब ज्ञानते नष्ट भयाहै ७८ जेसें काष्ट वनमों होताहै ओर रज्जु बांसकी अथवा चर्मकी होती हे ओर वापी

जलोंकी होती है अरु फल वृक्षों के होतेहैं यह सभ सामग्री भिन्न भिन्न है और गुण
न जोहै सो सभका गुण रसकों भोगते हैं ७९ इस प्रकार की यह सामग्री दैव योग कर
के मिल करके कार्य सिद्ध करतीहै तैसें हम तुम सभ भिन्न भिन्न हैं अज्ञानतें हमारा
तुम्हारा संबंध भयाहै सो अज्ञान अब नष्टभयाहै ८० जो मेरेकों पहिले स्वरूपकी विस्मृति
भईथी सो अब विस्मृति विस्मरण भई है स्वरूपकी स्मृति अब प्रकट स्मरण भईहै ८१ अब
मेरेको जो सत्यहै सो सत्य भासता है अरु जो असत्य है सो असत्य भासताहै असत्य भ्र
म क्षीण भयाहै अरु सत्य रूप स्मरण भया है ८२ हे रामजी सो बीतहव्य मुनिः इस प्र
कार के विचार करके बहुत वर्षोंके गण मोक्ष चिंतनमें रहता भया ८३ हेरामजी बीतह
व्य मुनी की मूढता दूर होती भई यथार्थ पदार्थोंकी दृष्टि होती भई ध्यानकों आलंबन क
रके सुखी होय करके निवास करता भया ८४ बीतहव्य मुनीका मन त्याग करना और अ

हरण करने की इच्छितें रहित होता भया ८५ वीतहव्य मुनि विदेह मुक्ति के भावकों प्रा
प्त भया जन्म कर्मों का अंत होता भया संसार के संग त्यागने की इच्छा होती भई ८६
हे रामजी सो वीतहव्य मुनिः पर्बत की कंदरामें पद्मासन बांध करके स्थित भया आप
नें आत्मामें आपही कहता भया ८७ हे रागतूं अब अपने राग भावकों त्याग करके चला
जा हे द्वेष अबतूं द्वेषकों त्यागजा तुम्हारे करके मेने संसारमें बहुत क्रीडा करीहे हेभो
गो तुमकों मेरी नमस्कार हे तुम्हारे करके मेने संसारमें सुख भोगाहे हे कर्म भोग सु
ख तेरेकों नमस्कार हे जिस करके मेने कोटिशत जन्म अपना स्वरूप भुलाया हे ८८
हे संसार के दुःखतेरे कों नमस्कार कि तेरे करके संताप पाइ करके मेने आत्मा का
स्वरूप ढूंडिया हे ८९ तिसकारण तें हे दुःख तेने मेरेकों मोक्ष मार्ग का उपदेश कि
याहे तूं दुःख नाम करके मेरा मित्रहे हे देह तेरेकों नमस्कार हे तूंभी मेरा मित्र हे

वा·सा· जिस कारण तें संसार मों तेरा जीवना सार रहित है इस कारण तें मैंने अपनी आ-
२५७ त्म पदवी पाई है ३९· हे देह की स्थिति तेरे को नमस्कार है अब हम तेरे प्रसाद तें आ
त्माकी पदवी कों जाते हैं ४१ प्रयोजन के अधीन जीवोंकियां बहुत विषम गतिहै सैंकड़े
जन्म पाइ करके भी देह के साथ वियोग होता है हे मित्र हे देह जिस कारणतें मैंने ते
राभी त्याग किया है तू मेरा चिरकाल का बंधु है तेनेही आत्म ज्ञान के वशतें अपनें वि-
षें लीनता धारी है आत्म ज्ञान पाइ करके तेनें अपना नाश किया है दूसरा देह करके
तूं नष्ट भया है तेने ऐसा मान करके अपना नाश अंगीकार किया है इसतें तेरे को
नमस्कार है ४३ हे तृष्णे मैं अब शांति कों प्राप्त भया हूं अब तूं अकेली मुकनें ल
गीहै तेनें अब दुःख नहीं करना मेरी तेरे को नमस्कार है अब मैं आत्म पदकों जा
ताहूं ४४ हे काम हे महाराज मैं अब तेरे सें उलटा भयाहूं यह मेरा अपराध क्षमा

करने योग्य है मेरेमों उपशम दोष भयाहै तूं मेरे कों आज्ञा कर मे अब मंगल पद

कों जाता हूं ९५ हे तप्से हे मातः अब चिरकालतें चिर काल पर्यंत आत्म योगके दोष करके निश्चय करके मेरेको तेरा वियोग भया है अब पिछले समय की तेरे कों प्रणाम है ९६ हे सुकृत हे पुण्य हे देव मेरी तेरे को नमस्कार है तेने मेरेकों नरकों से निकास करके स्वर्गों मों युगत कियाहै ९७ हे पाप हस्त तेरे को मेरी नमस्कार है कैसा है तूं दुष्ट कर्म रूपी क्षेत्रमों प्रकट भयाहै नरक ही तेरी शाखा है नरक पीडा तेरे पुष्प हैं हे मोह हे भाई तेरे कोभी मेरी प्रणाम है तूं आज से लेकर अदृश्य होवेगा तेरे करके मैंने अनेक मूर्छियोंनें भोगीहै ९९ हे कंथे तेरे ताई मेरी नमस्कार है तूं अंधकार विषे कंदरामों सहाय करणे हारीहै हे कंदरे तेरेताई नमस्कारहै तूं समाधीमों सहाय करणे हारीहै हे शांति तेरेकों नमस्कार है तूं मेरेकों संसार के मार्गमों

खेद युक्त भये को विश्राम देने हारीहै सर्वत्र सहाय करणे हारीहै हे त्वमे तेरेकों न
मस्कार है तूं लोभादिक दोषों कों हरने हारीहै मैं सर्व संकटों करके खेद को प्राप्त भया
हूं दोषों से भागता हूं शोक नाश के वास्ते तूंही मेनें सहाय करी है ४०॥ हे देह पाद
तूं संकटमों ऊंची नीची पृथिवी मों ऊंजों में हाथ को आलंबन देनेहारा है और ह
ावस्था मों मित्र न्याईं सहायता करता हैं तेरेकों भी नमस्कार है ४१ हे देह तूंभी
अपना अस्थीओं का पिंजरा रक्त मांसका पिंड नाड़ियां आंदरों के जाल कों लेकर चला
जा ४२ जिन्हों करके जलों को लोभ होता है ऐसे त्रिकाल स्नानों कों प्रणाम है संसार
के अनेक व्यवहारों कों और अनेक प्रकार के मरणों को भी प्रणाम है तुम मेरे सभ
ही पुराणे मित्रहो ४३ अब प्राणभी चलेंगे प्राणोंको भी प्रणाम है तुम्हारे साथ मे
ने बहुत योनियों मों भ्रमण किया है पर्बतों के ऊंजों में और लोकांतरोंमें देशांत

वा॰सा॰ रोंमें नगरों में अनेक प्रकारों की मार्ग यात्रा में विश्राम कियाहै स्थिति करी है यात्रा
२६॰ करीहै ४॰५ यह ब्रह्मांडमें सो नहीं है जो मैने तुम्हारे साथ नही कियाहै और करने बाकी रहा है गमन किया है नहीं गमन कियाहै दीया है और नहीं दिया है आलंबन किया है नहीं आलंबन किया है अब तुम अपनी दिशाको जावो मै अपनी दिशा कों जाताहूं अब हमारा तुम्हारा संबंध हो रहाहै ४॰६ जितने संग्रह किये हैं सो क्षय करके अंतकों प्राप्त होते हैं उंची पदवी संपदा की चढाई उन्नरणे नें पात होनेनें अंतकों प्राप्त होती है संजोग इष्ट जनोंका समागम वियोग करके अंत को प्राप्त होते है यह संसार का मार्ग है ४॰७ यह नेत्रों का प्रकाश सूर्य मंडलमें जावे नासिका की गंधलेने की शक्ति बन के पुष्पों में चली जावे प्राण पवन का चलना वायुमें लीन होवे करणों का शब्द श्रवणकी शक्ति आकाश मंडलमें चली जावे ४॰८ मेरी जिव्हा की रस ग्रहण

की शक्ति चंद्र मंडलमों चली जावे हे रामजी तिसते उपरंत बीतहव्य मुनि अज्ञान मात्र
 कों भी त्यागन करता भया प्रातःकाल के आकाश जैसा निर्मल होता भया ४८ तिसकों तब
केवल प्रकाश मानतेज भासता भया सो मुनि क्षण मात्र तेज कों विचार के तेज के फुरने
कों भी त्याग नहीं करता भया ९ फेर मन करके तिस अवस्था कों लंघ करके क्षण मात्र
मों काल की कल्पना कों लंघता भया फेर केवल चैतन्य का फुरणा मात्र होता भया फेर
शब्द की पश्यंती पद कों प्राप्त होय करके सुषुप्तिकी प्राप्त अवस्था कों प्राप्त होय करके प-
र्वतकी न्याई अचल होता भया ११ फेर तुरीय पद कों प्राप्त भया फेर आनंद से रहित
और आनंद मय भया सत्ता से रहित और सत्ता मय भया किंचिन्मात्र ते निरु किंचन्मा
त्र होता भया ना प्रकाश रूप ना तमो रूप होता भया ना चैतन्य रूप और चैतन्व रूप हो
ता भया इहां नाना प्रकारन ही है ऐसी श्रुति के निषेध पदवी कों प्राप्त होय करके वा

णीके और मनके अगोचर होता भया १२ तब सो सर्वत्र समान और सर्व व्यापी और पर
म पवित्र और सर्व भावोंके अंतर्गत सभसें रहित होता भया १३ जो शून्य वादियों का शून्य
है ब्रह्म वेत्ता पुरुषों का ब्रह्म है विज्ञान वादियों का विज्ञान है सांख्य दृष्टि वालियों का पु
रुष योग वादियों का ईश्वर शिवा द्वैत वादियों का अद्वैत शिव काल वादियों का काल
है आत्म वादियों का आत्मा है अनात्म वादियों का अनात्मा है मध्यम वादियों का म
ध्यम है समचित्तों का सम रूप है जो सर्व शास्त्रों का सिद्धांत है जो सभ के हृदयों में
विराज मानहै जो सर्व रूप है सर्व जगत है जो कछु कहने में श्रवण करने में आ
वे सो वीतहव्य मुनि होता भया १४ जिसतें परे उत्तम नहीं है जो तेजों कोभी प्रकाश क
रताहै और अनुभव मात्रहै जो एक है और अनेक रूपहै सर्व जनों के रंजन करने सें न
हीं रंजन करनेसें रहित है जो सर्व रूप है और सर्व रूपसें रहितहै जो जो कछु है सो २

कछु नहीं है सो सो बीत हव्य मुनि होता भया १६ जो जन्म सें रहित हैं और जगतसें र हित है जो एक है और अनेक है निर्मल है कला सहित है कला रहित है आकाशते भी नि र्मल रूपहे ऐसा ईश्वर रूप क्षणमात्र करके स्थित होता भया १७ इति बीतहव्योपाख्यानम् ॥
हेरामजी जो यह संपूर्ण मैने तेरे ताई पहिले वर्णन किया है और अबभी वर्णन करता हूं और आगे भी वर्णन करूंगा सो संपूर्ण त्रिकाल दर्शी जो मैंहूं चिरकाल जीवनें हाराहूं मैंनेजो कछु विचारिया है सो सभ मैनें देखिया है सो तेरे प्रति कहाहै १८ हे महामते हे रामजी तूं इस निर्मल दृष्टिकों धारण करके ज्ञानकों प्राप्त हो ज्ञानसें मुक्ति प्राप्त होतीहै ज्ञानसें अज्ञा न क्षय होता है ज्ञान से परम सिद्धि प्राप्त होती है ज्ञान सें दुःख नष्ट होता है और किसी सें सिद्धिनहीं होती है १९ हे रामजी बीतहव्य मुनि ज्ञान करके संपूर्ण अज्ञान दशाकों दूर करके सिद्धि को प्राप्त भया २० श्रीरामजीकाप्रश्न ॥ हे ब्रह्म विदांवर जीवन मुक्त देह धारीयों कोआ-

त्तीके और मनके अगोचर होता भया १२ तब सो सर्वत्र समान और सर्व व्यापी और पर म पवित्र और सर्व भावोंके अंतर्गत सबसें रहित होता भया १३ जो शून्य वादियों का शून्य है ब्रह्म वेत्ता पुरुषों का ब्रह्म है विज्ञान वादियों का विज्ञान है सांख्य दृष्टि वालियों का पु रुष योग वादियों का ईश्वर शिवा द्वैत वादियों का अद्वैत शिव काल वादियों का काल है आत्म वादियों का आत्मा है अनात्म वादियों का अनात्मा है मध्यम वादियों का म ध्यम है समचित्तों का सम रूप है जो सर्व शास्त्रों का सिद्धांत है जो सब के हृदयों में विराज मानहै जो सर्व रूप है सर्वजगत है जो कछु कहने मों श्रवण करने मों आ वे सो वीतहव्य मुनि होता भया १४ जिसतें परें उत्तम नहीं है जो तेजों कोभी प्रकाश क रताहै और अनुभव मात्रहै जो एक है और अनेक रूपहै सर्व जनों के रंजन करने सें न हीं रंजन करनेसें रहित है जो सर्व रूप है और सर्व रूपसें रहितहै जो जो कछु है सो२

कछु नहीं है सो सो बीतहव्य मुनि होता भया १६ जो जन्म सें रहित हैं और जगतसें र हित है जो एक है और अनेक है निर्मल है कला सहित है कला रहित है आकाशते भी नि र्मल रूपहे ऐसा ईश्वर रूप क्षणमात्र करके स्थित होता भया १७ इति बीतहव्योपाख्यानम् ॥ हेरामजी जो यह संपूर्ण मेने तेरे ताई पहिले वर्णन किया है और अबभी वर्णन करता हूं और आगे भी वर्णन करूंगा सो संपूर्ण त्रिकाल दर्शी जो मैंहूं चिरकाल जीवनें हाराहूं मैंनेजो कछु विचारिया है सो सभ मैंनें देखिया है सो तेरे प्रति कहाहे १८ हे महामते हे रामजी तूं इस निर्मल दृष्टिकों धारण करके ज्ञानकों प्राप्त हो ज्ञानसें मुक्ति प्राप्त होतीहे ज्ञानसें अज्ञा न क्षय होता है ज्ञान से परम सिद्धि प्राप्त होती है ज्ञान सें दुख नष्ट होता है और किसी सें सिद्धिनहीं होती है १९ हे रामजी बीतहव्य मुनि ज्ञान करके संपूर्ण अज्ञान दशाकों दूर करके सिद्धि को प्राप्त भया २॰ श्रीरामजीकाप्रश्न ॥ हे ब्रह्म विदांवर जीवन मुक्त देह धारीयों कोआ-

काशमें उडने आदिक शक्ति कैसे नहीं देखीदी है यह मेरे प्रति कहो २१ वासिष्टजीकहतेभये हेरामजी जो आकाश गमनादिक सिद्धीका समूह है सो संपूर्ण क्रिया का और वस्तु का स्वभा वहै सो आत्म वेत्ता पुरुषोंनें नहीं मानिया है २२ हेरामजी जो आत्मवेत्ता भी नहीं है और मुक्त भी नहीं भया है तोभी द्रव्य शक्ति और कर्म शक्ति और क्रिया शक्ति और काल शक्तिनें आका श गमनादि सिद्धिकों प्राप्त होना है आत्म वेत्ता पुरुष इन्ह सिद्धिकों आदर नहीं करते हैं २३ हेरामजी आत्म वेत्ता पुरुषों का यह विषय भोग नहीं है आत्मवेत्ता आत्मा विषे ही रत हो तेहैं आत्म विचार करके आत्म ज्ञान के सुखमें तृप्त रहतेहैं अविद्या के विलासमें प्रसन्न नहीं होते हैं २४ येते जगत के योग सिद्धि आदिक भाव हैं तत्व वेत्ता पुरुष तिन्हकों अवि द्याते प्रगट भयेकों जानते हैं जिन्होंने अविद्या त्यागीहै और आत्म वेत्ता है सो इन्हमें प्रीति कैसें करे हैं २५ हेरामजी द्रव्यकी युक्ति देशकी युक्ति क्रियायुक्ति कालकी युक्ति यह सभ

युक्ति भलीभी है तो भी परमात्मा पद की प्राप्तिमें उपकार नहीं करतीहै २५ श्रीरामजी श्रीव
सिष्ठजीप्रतिप्रश्नकरतेहैं हे ब्रह्मन् चित्त अस्त भये संते मैत्री करुणादिक उत्तम गुण किसकों
और किस प्रकार करके फुरण होते हैं यह चित्त के धर्म हैं चित्त बिना कहां फुरण होते हैं २६
श्रीवसिष्ठजीश्रीरामचंद्रजीप्रतिकहतेभये॥ हे रामजी चित्तका नाश दो प्रकार का है एक स्व
रूप सहित है एक स्वरूप रहित है जीवन्मुक्त कों स्वरूप सहित है विदेह मुक्त कों स्वरूप
रहित है २७ हेरामजी संसारकी सुखदुःखों की दृष्टि जिस धीर पुरुष कों समदृष्टिते आत्म
चिंतनतें नहीं चलाय सकतीहै जेसें श्वास के पवन पर्वत कों नहीं चलाय सकते हैं तिस पु
रुष के चित्त कों हम लोक नष्ट भये को जानते हैं २८ सो यह है यह मैं इस प्रकारकी चिंता
जिस पुरुष कों व्याकुल नहीं करती है तिसके चित्त को नष्ट भये को मानते हैं ४२९ जिस पु
रुषकों आत्मा की कृपणता और उद्यम और मद और ईर्ष्या और हर्ष भिन्न वृत्ति नहीं कर

तेहैं तिसके चित्तकों नष्ट भये कों जानते हैं ३॰ हेरामजी जीवन्मुक्त पुरुषको मनो नाश भ ये संते अंतः करण रूपी हिमाचलमें मैत्री आदि गुणों की संपदा वसंत ऋतुमें वृक्षोंके नये दलों की न्याई आपही प्रकट होती है ३१ श्रीरामचंद्रजीकाप्रश्न वसिष्ठजीप्रति॥ हेब्रह्मन् यह संसार नाम करके दाख की लताहे वुह केसीहे अत्यंत विस्तार स्वरूपवाली है इसके मू ल दृढ प्रकट भयेहैं मोह रूपीजल के सिंचन सें वृद्ध भई है इसका बीज क्याहे उस बीज का भी बीज क्या है और बीज के बीज का भी क्या बीजहै सो मेरे कों कहो ३२ श्रीवसिष्ठजीश्री रामजीप्रतिकहतेहैं॥ हे रामजी अंतःकरण में लीन भये हैं उत्पत्ति के महा आरंभ जि सके सुभ असुभ कर्म महा अंकुर है जिसके ऐसा शरीरही संसार लताका बीजहै ३३ हे रामजी उतपत होना और नाश होनेकी दशा का भंडारहै दुःख रूपी रत्नों का संपुटहै और आशा के वशतें प्रवृत्त होता है ऐसा चित्त ही शरीरका बीज है ३४ हेरामजी यह

चित्त रूपी वृक्ष कैसाहै नाना प्रकार की वृत्ति रूपी लताकों धारण करताहै इसके दो बीज हैं एक प्राणोंका चलना है दूसरी दृढ भावना है ३५ हेरामजी जिस कालमें नाड़ी मार्गोंमें प्राण नहीं चले तो फ़ुरण होने के अभावतें चित्त अंदर नहीं रहता है ३६ हेरामजी दृढभावना करके आद अंतकी विचारणा त्याग करके पदार्थ का जो ग्रहण करण सो वासना कहीहै ३७ हे रामजी पदार्थ की भावना का तीव्र वेगतें वासना का निरंतर प्रवाह होता है तो और संपूर्ण ज्ञान भूल जाताहै ३८ हे रामजी इस चित्त के दो बीजहैं प्राणों का चलनाओर वासना इन दोनोंमें एक क्षीण भये संते दोनों ही सताबी नष्ट होते हैं ३९ हेरामजी वासनाके वशाते प्राण चलना है प्राणके वशातें वासना चलती है यह दोनों चित्त वृक्षके बीज और अंकुर हैं ४० हे रामजी हृदयमें संबेदन के फ़ुरणेकों पाइ करके प्राणका चलना और वासना दोनोंउदय होतेहैं संबेदन को फ़ुरण ही इन दोनोंका बीजहै ४१ असंभा

व का फुरणा त्यागनेतें प्राणका चलना और वासना दोनों मूल सहित नष्ट होते हैं ४३

 हे रामजी अहंभाव ही फुरणेका बीजहै अहं भाव बिना फुरणा नहीं होताहै जैसे तेल
बिना तिल नहीं रहता है ४४ हे रामजी अहंभाव रूपी वस्तुका आलंबन जिसकों नहीं
है सो पुरुष फुरणेतें रहित भयाहै सोभी में हजारों कार्य करे तोभी निर्विकार होताहै ४५
हे रामजी जिसका हृदय अहंभाव करके किंचित् मात्र भी लिप्त नहीं होताहै उसका फु
रणा सत्य ज्ञान रूपहै सो जीवन्मुक्त कहा है ४६ हे रामजी इस ज्ञान के फुरणे का बीज
सत्ता मात्र चैतन्य कहाहै सत्ता मात्र चैतन्यतें ज्ञानका फुरणा होताहै जैसें तेजसें प्रकाश
होताहै ४७ श्रीरामचंद्रजीश्रीवसिष्ठजीके प्रतिप्रश्नकरतेहैं॥ हे ब्रह्मन् हे मेरा मान करने हारे
तुमने यह सबही बीज कहेहैं किसका प्रयोग करके आत्मपद सत्ताबी प्राप्त होताहै यह
मेरे को कहो ४८ श्रीवसिष्ठजीश्रीरामचंद्रजीप्रतिकहतेभये॥ हे रामजी केवल सत्ता मात्र

की कोटी में स्थित भये संते पौरुष के यत्न करके बलतें वासना को त्याग करके आत्म प
द सिताबी प्राप्त होताहै ४९ हे रामजी तूं जिस क्षणमें तत्त्व ज्ञान करके सत्ता मात्रमें स्थिति
करेंगा उसी क्षणमें भली प्रकार करके आत्मपद कों पावेगा ५० सत्ता मात्रका स्वरूप ईश्वरादि
क सविकल्प चैतन्यमें स्थिति करेगा तो बहुत यत्न करके भी आत्मपद कों पावेंगा ५१
हे रामजी सत्ता मात्र चैतन्यमें ध्यान करके रहेगा तो अधिक यत्न करके उस्ही आत्मपदवी
को पावेंगा ५२ हे रामजी वासना का त्यागनें में तूं यत्न करेगा तो तेरी संहरणी बिना और रोग
क्षणमें शिथिलता कों प्राप्त होवेंगे ५३ हे रामजी पहिले जो यत्न कहे हैं तिन्हसें यह य
ह यत्न कठिन है हे राम वासना का त्याग सुमेरु पर्वत के उठावने सें भी कठिन है ५४ हे रा
मजी जबलग मन लीन नहीं भया तबलग वासना क्षय नहीं होती है जबलग वासना क्षी
ण नहीं भई तबलग चित्त क्षीण नहीं होताहै ५५ हे रामजी जबलग तत्त्वज्ञान नहीं भया त-

बलग चित्तका उपशाम कहां होताहै जबलग तत्वज्ञान की प्राप्ति नहीं भई तबलग वासना का लय नहीं होताहै ५७ हेरामजी तत्वज्ञान और मनका नाश और वासना का नाश यह तीन आपसमों तीनों के कारणहैं यह तीनों असाध्य ही स्थितहैं ५८ हे रामजी तिस कारण ते विवेक सहित पौरुष करके भोगोंकी इच्छाकों दूरसे त्याग करके यह तीनोंही सेवनें योग्य हैं ५९ हेरामजी यह तीनोंही भले प्रकार वारं वार अभ्यास नहि किये होवें तो अनेक यत्नों करके और अनेक वर्षों करके भी परमपद की प्राप्ति नहीं होनीहै ६० हे रामजी वासना के परित्याग के बरो बर प्राणायाम कों तत्व वेत्ता जानतेहैं तिसतें प्राणायाम भी करे ६१ हे राम जी वासना का परित्यागतें चित्त जो है सो अपने चित्त भावकों त्यागनकरता है और प्राणाया मतें भी चित्तनाश होताहै तिसतें दोनों में जो तूं चाहें सो कर ६२ हे रामजी व्यवहार मों असं ग होनेतें संसार के भाव त्यागनेतें शरीर का नाश देखनेतें वासना प्रवृत्त नहीं होताहै ६३

हे रामजी वासना का नाश भये संते चित्त प्रवृत्त नहीं होताहै जैसे पवन के चलने बिना ग
रद आकाशमों नहीं चढतीहै ६४ हे रामजी प्राणायाम का दृढ अभ्यासकी युक्ति करके सद्गु
रुकी कृपा करके युक्ति करके प्राणायाम होता है ६५ हे रामजी प्राणके चलने के जीतनेका
यत्न बुद्धिवान पुरुषनें अवश्य करके करना एकाग्र चित्त करके वारं वार यत्न करना ६६
अथवा प्राण रोकने के क्रम कों त्याग करके जो तेरेको रुचे तो चित्त कोही रोकने चाहे तो
बहुत काल करके उच्च पदकों प्राप्त होवेंगा ६७ हे रामजी उत्तम युक्ति बिना मन जीतिया
नहीं जाताहै जैसें मतवारा दुष्ट हाथी अंकुश बिना नहीं जीतिया जाता है ६८ हे रामजी आ
त्म ज्ञानकी प्राप्ति और सत्पुरुषोंकी संगति और वासना का त्याग और प्राणोंका रोकना यह
युक्तियां चित्त के जीतने मों बलवान हैं इन्ह करके चित्त जीतिया जाताहै जैसें बर्षाकी धारों
करके पृथिवी की गरद दूर होतीहै ६९ हे रामजी यह युक्तियां होत संते हठ करके इन्ह

प्रक्रियों कों त्याग करके अंजन की सृष्टि करके अंधेरा दूर करने चाहतेहैं ७॰ हे रामजी जो पुरुष चित्तकों नहीं जीतते हैं सो पुरुष यज्ञों करके तपों करके दानों करके अरु तीर्थयात्रा करके देव पूजा करके अनेक उपाधि चिंता करके बन मृगोंकी न्याई वृथा काल क्षेप करतेहैं ७१ हे रामजी चलने का स्थित भयेका जाग्रत भयेका शयन करनेका जिस पुरुषका विचार युक्त चित्त नहींहै सो पुरुष मृत भया जानना ७२ हे रामजी यह जगत क्याहै यह देह क्याहै ऐसी ज्ञान दृष्टि करके निरंतर विचार कर आप विचार कर और संतजनों के साथ विचार कर ७३ हे रामजी ज्ञानवान जो पुरुषहै सो आनंद करके उदित रहता है संसार के मोह जालमें कहींभी मगन नहीं होताहै सदा असंग रहताहै अपने आत्मा करके चक्र वर्ती राजाकी न्याई सभसें उपर विराजमान होताहै ७४ हे रामजी जो कोई आत्म ज्ञानीके प्राण हरणे वालाहै और जो कोई धनकों और सुखको देने हाराहै तिन्ह दोनोंको आत्मवेत्ता पुरुष मीति

करके मधुर सम दृष्टि करके देखता है ७४ हे रामजी सो आत्म वेत्ता पुरुष संपूर्ण शुभ और अशुभ वस्तु के समूह विषे सम दर्शी होताहै अंतः करण मों उदार चित्त होता है बा पार करणे मों संसार के क्रम करके युक्त है परंतु अंतर्दृष्टी करके कुछ नही करता है ७५ हे रामजी अथवा संपदा कों प्राप्त होवे अथवा आपदा को प्राप्त होवे परंतु उदार बुद्धि पुरुष सभको सम समान जान करके अपने स्वभाव कों नही त्यागन करता है जैसें क्षीर समुद्र मंदर पर्वत करके मथन भी किया है तोभी अपनी उज्वलता और श्वेतवर्ण कों नही त्याग करता भया ७६ हे रामजी सो पुरुष चक्र वर्ती राज्यकों पाइ करके अथवा महा आपदाकों पाइ करके सर्पयोनि कों पाइ करके इंद्र पदवी कों पाइ करक हर्ष रहित होताहै और खेद से रहित होता है जैसें चंद्रमा कलाके बंधने मों और घटने मों नाशकों नही प्राप्त होता है हे रामजी तूं आपने आत्मा कों संपूर्ण आरंभों सें रहित जान और अनेक भेद सें रहित जान और

अनेक भेद सें रहित जान और शांत रूप जान नाना प्रकार कर्म फलों से रहित जान और नाना प्रकार रूप वेशनें रहितजान और उदार चित्त हो तिस करके उत्तम दशा जो मोक्षतिस को प्राप्त होवेंगा ७८ हे रामजी जो मैंने तेरे प्रति आत्म ज्ञान उपशम सहित कहाहै इस कर के कामादिकों सें रहित भई ऐसी प्रकाश भई बुद्धी करके निर्मल आत्म पदको पाइ करके शुद्ध आत्म दृष्टि करके यह संसार मों अनेक जन्म बंधनों करके बद्ध नहीं होवेंगा ७९ इति श्रीमोक्षोपाये वासिष्ट सारे वसिष्ट राघव संवादे उपशाम प्रकरणं पंचमं समाप्तम् ५ ॥राम अथषष्टं निर्वाण प्रकरणं ॥ वाल्मीकीजी भारद्वाज प्रति कहते हैं॥ हे भरद्वाज उपशाम प्र करण के उपरांत तूं छठे निर्वाण प्रकरण कों श्रवण करकेसाहूे ज्ञान करके निरवाण पद वीकों देने हाराहै १ चतुर्दशा दिन मो प्रातः समयमों सभा मों आय प्राप्त भये श्रीराम्मचंद्र जीकों वसिष्ट जी कहते भये ॥ हे रामचंद्रजी अब तत्व बोध वास्ते मैंने तेरे प्रति निर्वाण

प्रकरण कहीदा है हे दुष्ट शत्रुन को मारने हारे तुम इस निर्वाण प्रकरण को सावधान म
न होय कर श्रवण करो २ हे रामजी वैराग्य के अभ्यास के बसतें वासनाका त्यागते तैसें आ
त्मतत्वका बोधतें संसार समुद्र तरिआ जाताहै तिसतें तुम तिन्ह तीनोंमें ही अभ्यास करो ३
हे रामजी देहमों जब लग अहंकार है और दृश्य पदार्थ स्त्री पुत्र धनादिकमों जब लग आत्मभा
वनाहै और जब लग इन्ह पदार्थोंमें ममता बनीहै तब लग चित्तादिकों का भ्रम क्षीण न
हीं होताहै ४ हे रामजी जब लग तूं सभसें अधिक आत्मतत्व कों नहीं प्राप्त भया जब ल
ग सत संगतें तेरी मूर्खता क्षीण नहीं भई तब लग चित्तादिकों करके तेरे कों दीनता बनी
है ५ हे रामजी जब लग आशा रूपी सर्पिणी के विषका मोह हृदय रूपी मंदिर मों है तबल
ग विचार रूपी चकोर हृदय मंदिरमों प्रवेश नहीं करताहै ६ हे रामजी जो पुरुष देहादिकों
को स्तुति नहीं करता है और विश्वासभी नहीं करताहै और तत्व वस्तु करके नहीं देखता है दूर

सेंभी दूर असत्य देखताहै उसका चित्त लीन होजाताहै ७ हे रामजी जो पुरुष अंतःकरण में आत्म परायण होता है चैतन्य रूपी अग्निमों त्रैलोक्य रूपी तृणकों होम करताहै ऐसी मुनि वृत्ति वाले पुरुषको चित्तादिकों के भ्रम निवृत्त होजाते हैं ८ हे रामजी काष्ठ और तृण आदिक जो हैं सो कुहाड़े सें छेदने सें वार वार अग्नि करके दाह होने सें फिरभी उत्पन्न होतेहैं परंतु ज्ञान रूपी अग्निसें दग्ध भया मन फेर नहीं उदय होताहै ९ हे रामजी जौंनसा संसार के व्यवहार मों अपने साथ शत्रुभाव करता है सो अपने पाप हरणे करके नरकमें तारणे को उदय भया जानना जो पुरुष तिसकों दुष्ट मित्रकों देखता है सोही भला देखताहै १० हे रामजी जो पुरुष संसारी लोकोंकी प्रीती कों और वैर कों अंतः करणसें निर्मल करता है जैसें नदी अपने तट के वृक्षोंकों निर्मूल करतीहै सो पुरुष सर्व दोषोंकों नाश करने हारा है ११ हे रामजी जिसकों देहमों अहंकार नहीहै जिसकी बुद्धि कर्म करनेमों लिप्त नहीं होतीहै सो पुरुष इन सभ लोकोंको मारे तोभी हत्या दोष कर्के

वा॰सा बद्ध नहीं होता है १२ हे रामजी आत्मज्ञान रूपी शास्त्र के मंत्रको अंतः करण
२७७ में भावना करके धारण करनेते तृस्ना रूपी विष की विसूचिका रोग क्षीण हो
जाहे जैसे शरद ऋतु में कोसगल जाती है १३ हे रामजी जौनसियां निरंतर
संपदां हैं जौनसियां निरंतर आपदां हैं जौनसे बालक अवस्था युवा अवस्था
वृद्धा अवस्था और मरण की अवस्था सें लेकर संताप जो हैं जौनसा अनेक दु-
खदुःखों की परंपरा करके मगन जो होना है यह सभही घोर अज्ञान के अं
धकार कीयां विभूतीं हैं १४ हे रामजी इन्ह सभन की मूल कारण अविद्या है
सो प्रकृति वाही है तिसकों तुम तीन गुणों के धर्म वाली कों जानों सो तीन
गुणों को तुम सुनो एक सतो गुण दूसरा रजो गुण तीसरा तमो गुण यह
तीन प्रकार का गुणों का भेद है १५ हे रामजी यह अविद्या गुण भेदतें नव

प्रकार के भेद वाली है जो कछु यह देखने मों अवगत मों जगत है सो स
 मही इस अविद्याने ही विस्तार किया है १६ हे रामजी ऋषी और मुनि और
सिद्ध और नाग और विद्याधर और देवता यह अविद्या का सात्विक भाग है १७
हे रामजी इस अविद्या के सात्विक भाग के भी नाग और विद्याधर यह तमोगु
णमों है मुनि और सिद्ध रजो गुणमों है शिवजी से आदि देवता सतो गुणमोहैं १८
हे रामजी यह आत्मा ही अपना स्वरूप जानने बिना संसार मों भ्रमता रहता
है और सोही आत्मा अपना स्वरूप को जाने तो संसर्ग ज्ञान की अवधी को प्रा
प्त होता है १९ हे रामजी स्थावर जोनि जो है और पशु पंखी जो है यह सभ
ही जड धर्म वाले हैं सदा सुषुप्ति पदमों आरूढ भये हैं ज्ञान से रहित हैं
बार बार जन्म को पावने हारे हैं २० हे रामजी यहां वासना का बीज रहा है

सो सुषुप्ति जाननी ज्ञान सें मोक्ष सें रहित है यहा वासना निरबीज भई है
 सो तुरीया कही है सो मोक्ष की सिद्धिकों देती है २१ हे रामजी वासना और
अग्नि और स्नेह और शत्रु और विष यह सभही ज्ञान के और लक्ष के और अ
संगता के और सुजनता के और जीवन इन्हके साथ विरोध करते हैं तिसतें
अल्प प्रमाण भी शेष रहे तो भी बाधा करता है तो इन्ह का शेष थोहड़ाबी
नहीं रखना २२ हे रामजी जिस की वासना का बीज दग्ध भया है सामान्य
सत्ता मात्र रूप भया है सो पुरुष देह सहित होवें भावें देह रहित होवें सो
फेर जन्मादि दुःख का भागी नही होता है २३ हे रामजी जब अविद्या रूप
सें रहित देखी तब ही सताबी गल जाती है जैसे बर्फ का पिंड सूर्य की धू
पमों गल जाता है २४ हे रामजी यह देह रक्त और मांस और अस्थिआं इन्ह

का यंत्र बना है इस में मैं कौनहूं ऐसा जब आपही विचार करे तो अविद्या तत्काल ही सर्व प्रकार की लीन होती है २५ हे रामजी यह प्रपंच आद में और अंत में असत्य रूप है इस प्रकार करके सभ प्रपंच कों असत्य जानने संते जो सत्य रूप रूप बाकी रहे तिसकों अविद्या क्षय होने का साक्षी कों जानें २६ हे रामजी इस अविद्या का स्वरूप अपने नाम करके स्वभाव करके रहित जानीदा है हे रामजी जिह्वा का स्वाद जिह्वा बिना और किसी करके नही प्रतीत होता है २७ हे रामजी अविद्या तो कहीं नही है यह सभही एक अखंड पर ब्रह्म है जिस करके सत् अरु असत् सभही विस्तार युक्त प्रकाश किया है २८ हे रामजी घट और पट और गाडी और नाओ और सभ ही जो वस्तु देखीदा है यह आत्मा नहीं है सभ भिन्न भिन्न है ऐसा कहे संते अविद्या उदे होती है जो ऐसा विचारे

वा॰सा॰ यह घट पटादि सभ ही पर ब्रह्म है ऐसा विचार किये संते अविद्या गलित
२८२ होती है २९ हे रामजी मैं तुम्हारे प्रति आत्म ज्ञान वास्ते वार वार कहता हूं क्या
हे राम अभ्यास विना आत्म भावना उदय नहीं होती है ३० हे रामजी सो अवि
द्या रूपी लता तेरे हृदय रूपी वृक्षमों आरूढ भई है इसकों ज्ञान का अभ्यास
के विलास रूपी खड्ग प्रहारों करके मोक्ष सिद्धि वास्ते छेदन करो ३१ हे रामजी
जनक राजा ज्ञेय वस्तु को जान करके आत्म ज्ञान का अभ्यासमों तत्पर भया
जैसें विहार कर भया तैसें तूं भी आत्म ज्ञान के विलास करके विहार कर ३२ हे
रामजी जिस आत्म ज्ञान का निश्चय करके विष्णु अनेक अवतार ले करके पृथिवी
मों विहार करता भया और शिवजी गौरी कों अर्ध अंगमों धारण करके आत्म नि
श्चय करके विहार करता है जो निश्चय ब्रह्माको सृष्टि करने मों भी स्थिर रहताहै

तिस कों तूं भी धारण कर २३ जो निश्चय विद्या पठन करते बृहस्पति कों है जो दैत्या जो दैत्य गुरु शुक्रकों है जो सदा भ्रमण करने हारे सूर्यकों हैं जो चंद्रमा कों है जो पवन और अग्निकों है जो नारद पुलस्त्य मुनिकों है जो मेरे कों और अंगिरा मुनिकोंहै जो प्रचेता और भृगु को है जो निश्चय क्रतु कों और अत्रि कों और शुकजी को है २४ हेरामजी जो निश्चय और राज करते राज ऋषिओं को है और तप करते ब्रह्म ऋषियोंकों जीवन्मुक्तों को है सो निश्चय तुम को भी हो वे २५ हे रामजी जो ब्रह्म वेत्ता हैं सो भी ब्रह्महैं सबही लोक भी ब्रह्म हैं सब भूत भी ब्रह्म हैं हमभी ब्रह्म हैं तुमभी ब्रह्म हो अरु हमारा शत्रु और मित्र और बांधव भी ब्रह्म है २६ हे रामजी अज्ञानी को सबै जगत् दुःख मयहै अरु आत्म ज्ञानीकों सर्व ब्रह्मांड आनंद मयहै जैसे अंधे को जगत् अंधकार युक्त है अरु नेत्र वाले को सदा प्रकाश युक्त है २७ हे रामजी जैसें

बर्फ़ और ओस और बिंदु और किणकें और तरंग और लहरी और फेन यह सभ ज-
लसें प्रकट भये हैं और जल रूप है और जलमों ही है तैसेही जो देह है अरु जो
इंद्रियां हैं जो देखीदा है जो बालपना सें लेकर अवस्था हैं जो जाग्रतादि अवस्था हैं
जो क्षय अरु वृद्धि हैं जो जन्म मरण है जो ज्ञान और अज्ञान है जो बंध मोक्ष है सो
सभही ब्रह्म रूप है और ब्रह्मही है ३८ हे रामजी ब्रह्म वेत्ता पुरुष जो हैं सो ब्रह्मको
कर्मसें और कर्त्ता सें करने से और कारणों सहित और निर्विकार और स्वयं प्रका
श अपने आत्माको जानते हैं ३९ हे रामजी रक्तभी हम हैं अरु मांसभी हमहैं अ-
स्थियांभी हम हैं अरु देहभी हम हैं अरु चेतन्यता भी हम है अरु ब्रह्मभी हमहैं
ऐसी तत्त्व भावना है ४० हे रामजी आकाश भी हम हैं अरु स्वर्ग भी हम हैं अरु
सूर्य चंद्रमा ताराभी हम हैं अरु दिशा पृथिवी भी हम है अरु घट पट स्वरूप करके

हमही ब्रह्म है यही सत्य भावना है ४१ हे रामजी हम चैतन्य रूप आत्मा कों उपा-
सना करते हैं अरु कैसा है आत्मा सर्व संकल्प के फल कों देने हारा है अरु सर्व ज-
गत को प्रकाश करता है सर्व ग्रहण करने योग्य पदार्थ की अवधी का अंत है ४२ हेरा
मजी फेर कैसा है चिदात्मा सर्व अवयवों मों विश्रांत है सर्व अवयवों ते परे है निरंतर
चैतन्य रूप है ४२ हे रामजी घट मों और पटमों नीर मों और ऊरहा मों समान वर्तमान
हैं अरु जाग्रत मों भी सुषप्ति जैसा अचल है ४३ अग्निमों उष्ण रूप है अरु बर्फमों शी-
तलरूप है अन्न मों स्वाद रूप है अरु अंधेरे मों कृष्ण रूप है चंद्रमा मों श्वेत रूपहै ४४
हे रामजी सूर्य मों तेज रूप है अरु अंधर अरु बाहिर मों समान प्रकाश रूपहै जैसे
र समीप है तो भी दूर है ४५ हेरामजी मधुर आदिक रसों मों मधुर रूप है तीक्षण
आदिक रसों मों तीक्षण रूप है सभही पदार्थों के समूहों मों व्याप्त है ४६ हेरामजी

वा॰सा॰ जाग्रत में स्वप्न में सुषुप्त में स्थित है तुरीया में भी है तुरिया से परे पदमें भीहै
२९५ सदा सत्ता रूप करके व्याप्त है ४८ फेर वुह कैसा है चिदात्मा जिसके सर्व संकल्प शांत
भये हैं सर्व कौतुकों से रहित है संपूर्ण आरंभ जिसके गत भयेहैं ४९ फेर वुह कैसा
है चिदात्मा निस कौतुक है अरु निरारंभ है निश्चेष्ट है निस्पृह है सर्व गत है नि
रवय है अरु निरंकार है सर्व जगत के अंतर्गत है अपार है एक रूप है अमर्याद
है अरु चैतन्यता का आरंभ रूप है ५० हेरामजी यह सभ जगत में हूं यह मेराहै
सभही एक रूप हम और तुम यह सभही कल्पना मात्र है ऐसा विचार करणे
हारे मेरे को शून्यता भई है जगत भावें स्थित होवे भावें नष्ट होजाये में अब
चिंता ज्वर से रहित भया हूं ५१ हेरामजी महात्मा पुरुष जो भये हैं सो ऐसा निश्चिय
वानु मुक्त होय करके सर्व व्यसन से रहित होते भये सत्य और असत्य रूप पदमें संस

य रहित भये सम सुखमों स्थित होते भये शांत पदमों प्राप्त होते भये ५२ हेरामजी।
 इस प्रकार करके धीर पुरुष एणी बुद्धि होते भये समदृष्टि होते भये अरु राग द्वेष से रहि
त होते भये जीवितयों और मरणमों भय और प्रीति को नहीं करते भये ५३ मोहस्थान मों मो
हित नहीं होते भये अरु आपदामों मगन नहीं होते भये अरु शोकों करके रोदन नहीं क-
रते भये शुभ प्राप्तिमों हर्ष को नहीं प्राप्त होते भये जेसें तुम एणी चित्त होते सें एणी चित्तहो
ते भये ५४ हेरामजी प्रसंग सें प्राप्त भये कर्मको केवल करते भये परंतु आसक्त नहीं
होते भये आरंभ सो रहित होते भये दूसरे मानो मेरुपर्वत हे ऐसे दृढ और अचल चि
त्त होते भये ५५ हेरामजी जेसी ज्ञान दृष्टि जनकादि को रही तिसी ज्ञान दृष्टिकों तुम पाइ
करके अहंकार सें रहित होय करके जेसा क्रम व्यवहार को प्राप्त होवे तेसे कर्मको करो
सुख करके विहार करो ५६ श्रीरामचंद्रजीका प्रश्न श्रीवसिष्टजी प्रति ॥ हे ब्रह्मन् भले प्रकार

करके ज्ञान का विलास करके वासना का लय भये संते में अब जीवन मुक्त पदमें नि
श्चय करके विश्रांत भयाहूं ५७ हे गुरुजी यह मेरेकों संशय है प्राणायाम करके वासना
का लय भये संते जीवन मुक्त पदमें विश्राम कैसे होताहै यह मेरेको कहो ५८ श्रीवसि
ष्ठजी श्रीरामचंद्रजी के तांई कहते भये॥ हे रामजी किसी को योग असाध्य है और किसी
कों ज्ञानका निश्चय असाध्य है हे साधो मेरा यही मतहै प्राणायाम के योगसें ज्ञान का
निश्चय सुख करके साध्यहै ५९ हे रामजी प्राण वायु का और अपान वायु का रोकने कर
के देह की दृढता करके और अंतः करण की एकाग्रता करके योगभी अनंत सिद्धि कों जि
सप्रकार देता है तिसको भी तुम श्रवण करो ६० हे रामजी मेरु पर्वतकी पद्म रागकी
ईशान कोणमें आम्र नामक कल्प वृक्षहै उसके नीचे सुवर्ण मय पृथवी है तिस की
दक्षिण दिशा की शाखाके कोटरमें निवास जिसका ऐसा भुसुंड नामा काक सिरीषा।

वा·रा· चिरंजीवी नाम पंछी भया नतो ऐसा कोई आगे होना है ऐसी चिरंजीवीयों की कथाप
२८८ संगमों इंद्रकी सभामों शांतातप मुनीसें श्रवण करके काक भुसुंडके स्थानमों प्राप्त भ
ये मेरे को भुसुंड काक उठ करके आगे आय मिला अपने संकल्प सें प्रकट भये दोनोंहा
थ करके पाद्य अर्घ्य आसन गंध पुष्प धूप दीप नैवेद्य नीराजन पुष्पांजलि प्रणाम प्रदक्षिणा
करके पूजा करके अपने हाथ करके दिया कल्पवृक्ष के दलोंके आसन ऊपर बैठे को
अत्यंत प्रेम करके मधुर अक्षर युक्त वचन कहता भया काक भुसुंड कहता है हे
भगवन् अहो आनंद भया है तुमने चिरकालतें मेरे को बहुत अनुग्रह दिखायाहै
दर्शन रूपी अमृतका सिंचन करके कल्पवृक्ष सहित मेरे को अभिषेक कियाहै ८१
हे मुने मेरा चिरकाल से किया पुण्यके समूह करके तुम प्रेरित किये ही तो तुमनें।
कहीसे आगमन कियाहै ८२ हेमुने तुम मान्यजनों के भी मान्यहो यह महा मोह।

पूर्ण भये जगत कों स्मरण करताहूं ९४ हेमुनि एक जगतकी सृष्टिकों पुरुषोंसें और असुरों
सें रहित केवल देवता मयकों स्मरण करताहूं ९५ हेमुने एक जगत के सर्गकों सुरापान क
रने हारे मदोन्मत्त और असुर और शूद्रोंसे भी निषिद्ध ऐसे ब्राह्मणों करके संयुक्त बहुत हे ना
थ जिसमों और धर्म मर्यादासें रहित कों स्मरण करताहूं ९६ हेमुने एक जगत के सर्गकों वृ
क्षों करके निरंतर पूर्ण भई पृथिवी वालेकों और समुद्रकी कल्पना से रहित कों अपने आ
प पुरुष उत्पन्न होते हैं जिसमों ऐसे कों स्मरण करता हूं ९७ हेमुने किसी सर्गकों पर्वत
और पृथिवीसों रहित और आकाशमों ही देवता और मनुष्य स्थित रहते हैं और चंद्रमा सू
र्यके प्रकाशसें रहित और अपने आप प्रकाश भयेकों स्मरण करता हूं ९८ हेमुने किसी सर्ग
को इंद्र बिना और राजा लोक बिना और उत्तम मध्यम अधम भेद बिना स्मरण करता हूं ९९
हेमुनि विस्नुकों हंस वाहन कों याद करता हूं ब्रह्माकों गरुड वाहनकों याद करताहूं और

वा॰सा॰ का प्रलय होताहै तब हम सुषुप्ति अवस्थाकी अचल धारणा करके आनंद मय होतेहैं ८८
२९५ हेमुनि जब ब्रह्मा दूसरे कल्पके आदमों फेर सृष्टि करता है तो मेरे संकल्पते इस पर्वत के शिखिरमों फेर यही कल्पवृक्ष हमारे निवास के वास्ते प्रकट होता है ८९ हेमुनि जो जगत का वृत्तांत मेरेको स्मरणमों है सो तुम मेरे सें सुनों यह पृथिवीमों केवल बड़े भारी वृक्ष औ र बड़ी शिला करके पूर्ण तृण वृक्षोंसें बन पर्वतसे रहित पृथिवी कों स्मरण करताहै ९० हेमुनि दश हजार और दश शतवर्ष प्रमाण इस पृथिवी कों केवल भस्म करके पूर्ण भ ईकों स्मरण करता हूं ९१ दशहजार वर्ष प्रमाण मृत भये दैत्योंकी अस्थियों करके पूर्णभई पृथिवी को स्मरण करता हूं ९२ इस प्रकार करके चार युग प्रमाण घने पर्वतों करके पू र्ण भई लोको के संचारसे रहित इस पृथिवी कों स्मरण करता हूं ९३ हेमुने दक्षिण दिशा कों अगस्त्यमुनि विना स्मरण करता हूं एक बिन्ध्याचल पर्वत करके नक्षत्र मंडल पर्यंत

कुलता करके आपदा होती हैं ८२ हेमुनि जब ब्रह्मा जीका दिन समाप्त होताहै त
ब कल्पके अंतमों त्रिलोकी की प्रलय होती है तब हम इस अपने निवास के कल्पवृ
क्षकों त्याग करते हैं जैसे कृतघ्न पुरुष उत्तम मित्रकों त्याग करता है ८३ तब हम संक
ल्प कल्पना कों त्याग करके केवल आकाशमों रहता हूं माया के संपूर्ण धर्मोंको जीतलेता
हूं जैसे वासना रहित मन अचल होताहै ८४ हेमुनि यब प्रलय करने कों बारा सूर्य प
चंड उदय होतेहैं तब हम योग करके वारुणी जलकी ध्यान धारणा करके शीतल हो
य रहते हैं ८५ हेमुने जब जगतकों उलटा पलटा करणेकों प्रलय कालके पवन प्रचंड
बहुते हैं तब हम पर्वतों की धारणा करके अचल होइ रहते हैं ८६ हेमुनि जब सुमेरु
पर्वत से आदि जगत सात समुद्रोंके एकत्र भये जलमों गलित होताहै तब हम पवन
की ध्यान धारणा करके पवन रूप होय रहते हैं ८७ हेमुनि जब ब्रह्मा के दिनांतमों ब्रह्मांड

वा॰ सा॰ युक्त और गंभीर और मनकों हरते हारी और मधुर और उदार और धीर वाले हो या
२९३ ह त्रैलोक्य रूपी कमलमों तुम एक भ्रमर की न्याई विहार करते हो ७८ हेब्रह्मन् हम
कों परमात्मा का तत्व प्राप्त भयाहै तो भी तुम्हारे दर्शन तें हमारे अशुभ कर्म शां
त भये है आज हमारा जन्म सफल भयाहै हे साधो संतजनों का समागम संपूर्ण सं
सार के भयकों शांत करता है ७९ अब अपना वृत्तांत कहते है हेब्रह्मन् अनेक घो
र युगोंके उलट पलट होते हैं और पवनभी घोर प्रलय करने हारे बहुते हैं तो भी
यह हमारे निवास का कल्पवृक्ष स्थिर रहता है कदाचित् भी कंपायमान नहीं हो
ताहै ८० यह कल्पवृक्ष जो है सो और लोकों में रहने वाले सर्व प्राणियों कों अगम्या
है इसकारण ते हमही यहां एकांत सुख करके निवास करते हैं ८१ ऐसे उत्तम कल्प
वृक्षमों निवास करते हमको संसार कियां आपदा कहां हैं हेमुनि श्रेष्ठ चिरंजीवी या

निवास के स्थान दिखाई दिये सभही चिरंजीवी होते भये अरु परमपद कों प्राप्त होता भये तिन्ह एक विंशति २१ भाईओं मों एक में भुसुंडका केहीं परमेश्वर की नेत करके अत्यंत चिरंजीवी हों जीवन्मुक्त हों भयके निमित्त प्राप्त भये मों भी भय रहित हों जगत की मायाकों देखता भी हूं पिताने दिखाय दिया कल्पवृक्ष की लता के मंदिर मों निवास करता हूं और काल क्षेप करता हूं आनंद सें रहता हूं ७४ हेमुनि तुम्हारे आवने सें अब में आनंद करके पूर्ण मन भया हूं जैसे मंदिर पर्वत के भ्रमणातें क्षीर समुद्र क्षीर की लहरी करके पूर्ण होताहै ७५ हेमुने इसतें परेमें अपने कुशलकों और नहीं मानता हूं संपूर्ण भोग वासना का त्याग करने हारे संतजनों का समागम जो होता है यही परम लाभहै ७६ हेमुने यह संसार के भोग क्षण भंगुर रहे इन्हसे क्या प्राप्त होता है सत संगरूपी चिंता मणितें सर्व सार परमानंद प्राप्त होता है ७७ हेमुने तुम कैसे हो स्नेह

शांत होता है अब आपना जन्म कहते हैं ७३ हेमुनि जया और विजया जयंती और अ
पराजिता सिद्धा और रक्ता और उत्पला और अलंबुसायह शिवजी की अष्ट योगिनी हैं सो अ
ष्ट योगिनी परमानंद समाधी के वास्ते वाम मार्ग करके भैरव तुंबरूकों पूजा करती भई।
अपने सें भया शिवजी का अनादर जिस का फल ज्ञान दृष्टिका प्रति बंध है सो अष्ट मातृ
का आपना प्रभाव दिखाउने के वास्ते भोजन के अर्थ शिवजी कों यज्ञमों बलि प्रदान के
पशुकी न्याई पार्वती कों मार करके देती भई फेर पार्वती कों संजीवन करके शिवजी कों
विवाह देती भईयां शिवजी कों प्रसन्न करती भई तिनमों अलंबुसा योगिनी का वाहन चंड
का कने मधु पान करके मत्त होय करके उसमों प्राप्त भई जो सप्त ब्रह्माणी के रथ की हंस
नी तिन संग क्रीडातें इकीस २१ पुत्र चंडका के होते भये ब्रह्माणी के आराधन का प्रसा
द करके होते भये सभही आत्म ज्ञानकों प्राप्त होते भये अपने पिता चंडका कने सभ कों

वा॰सा॰ करण में शीतल हो अहो बड़ा आनंद है तुमको कुशलसें देखिया है और यह संसा
२९. रकी मायामें मगन नहीं भयेहो सावधान चित्त हो संसार की माया अत्यंत भयानक है
जन्म मरणादि खेदों करके खंडित करणे हारीहै ६९ हेभगवन् तुम यह मेरे संशयको
सत्य करके छेदन करो तुम कौन कुलमें जन्म हो और ऐसे पूर्णज्ञानी कैसे भये हो ७०
हेभगवन् तुम्हारी आयुषाकेती है और तुम कितने वृत्तांत को स्मरण करते हो ऐसे चि
रंजीवी तुम हो तुमको यह निवासका अस्थान किसने दिखायाहै ७१ भुसुंडजी कहते भये ॥
हेमुनियो तुम पूछते हो सो सभही तुमकों में कहता हूं यह हमारी कही कथा तुमने सा
वधान होय कर श्रवण करणी ७२ हेमुनि तुम्हारे जैसे पुरुष त्रैलोक में पूजनीय चरण
रविंद है सो जिस कथा प्रसंगको श्रवण करते हैं और कहते हैं जिस करके संपूर्ण पापऔ
र दुःख नाशको प्राप्त होतेहैं जैसें बदलकी घटा उदय होनेते सूर्यकी किरणों का संताप ।

के संसार समुद्रमों चिरकालतें विहार करतेहो तुम्हारे चित्तसो समभाव की स्थिति अखं
डित हेना ९३ हेमुने तुमने आवने के क्लेश करके शरीरकों क्यों खेद किया है हम तुम्हारे व
चन सुना चाहते हैं हमारे कों आज्ञा कहने योग्य है ९४ हेमुने अब मेरेको तुम्हारे दर्शन
तेही सर्वज्ञता भई है तुम्हारे आवने के उपाय करके तुमने हमकों सावधान किया है ९५
हेमुने तुम्हारे आवने का कारण हमने जानाहै चिरंजीवीयों की कथा वारतामों चिरकाल ते
हमारा स्मरण तुमको भयाहै तिसकारणतें यह हमारा स्थान तुम्हारे चरणों करके तुमने प
ब पवित्र कियाहै ९६ हेमुने तुम्हारा आवने का कारण जाना है परंतु अब तुम्हारा वचन रूपी
अमृत पानकी वांछी बहुत प्रकट भई है ९७ हेरामजी सोभुसुंड काक चिरंजीवी त्रिकाल निर्म
ल ज्ञान संयुक्त मेरेको ऐसा कहता भया तो हमने भुसुंड काक को वचन कहा ९८ हेपक्षीयों के
महाराज तुमनें सत्य वचन कहाहै हम तुमकों आज देखनेकों आये हैं तुम चिरंजीवी हो अंतः

शिवजी कों गरुड वाहन कों और हंसवाहन कों भी याद करता हूं और ब्रह्मा विस्नु कों वृषभ वाहन कों याद करता हूं ९० हेमुने हेवासिष्ठजी अब तुम ब्रह्मा के पुत्र हो पूर्वकाल मो अष्टम सर्गमें तुम हमारे को मिले हो तेरा अब अष्टमा जन्म याद करता हूं किसी सर्गमें तुम आकाशते उत्पन्न होतेहो किसी में जलसें उत्पन्न होतेहो किसीमें पवन सें उत्पन्न होतेहो किसीमें पर्वत सें उत्पन्न होतेहो किसीमें अग्निसे उत्पन होतेहो ९१ हेमुने यह पृथिवी पांच पूर्व सृष्टिमें समुद्रसें कूर्म रूपी भगवान् जीने पांचवार निकासी भई मैने देखीहै ९२ हेमुने यह समुद्रमें संपूर्ण औषधी के रस पाइ करके देवता असुर पांच वार मथन करते मैने देखे हैं ९३ हेमुने हिरण्याक्षस असुर यह पृथिवी पातालकों तीन वार लेजाता मैने देखिआ है ९४ हेरामजी श्रीभगवान विस्नुजी जमदग्निसें रेणुका का पुत्र होय करके मेरे देखतेही छठी वार क्षत्रियों के क्षय करता भया ९५ हेमुने कलियुगों के सैंकडे में

वा॰ सा॰ विस्नुके बोधावतार शत प्रमाण देखेहैं ९५ हेमुने तीस त्रिपुरासुरों के क्षय देखेहैं दक्ष के
२९८ यज्ञका दो वारी नाश होते देखाहै दशवारी शिवजीसें इंद्रके विनाश होते मैने देखेहैं ९७ हेमु
ने शिवजी का ओर विस्नुका आपसमों बाणासुर के वास्ते आठ वार संग्राम होते मैने देखेहैं जि
नमों ज्वरोंका आपसमें युद्ध भयाहैं ९८ हेमुने युगोंके प्रलय करकेउलटा पलट होने करके
पुरुषोंकी बुद्धिकी न्यून अधिक होनेतें क्रिया कांडका अनेक भेदों करके वेदों केउलटा पलटी
होते देखी है ९९ हेमुने यह महा रामायण नामा इतिहास शत लक्ष प्रमाण ज्ञान शास्त्र
ओंमें स्मरण करताहूं जिसमों यह ज्ञान हाथमों फल सिरीखा अर्पण कियाहै रामचंद्रजी
की न्याई व्यवहार करणा रावण की न्याई व्यवहार नहीं करना बालमीकी मुनीने पहिलें
रचन कियाहै आगे फेरभी करेगा होर फेर भी बनेगा तिसकों तूं तत्व करके जानेगा १०॰ हेमु
ने बाल्मीकी नामा जीवने अथवा ओर किसीने बाल्मीकी रामायण अब बारवीं वार करणा

है विस्मरण भया फेर रचन करायाता है कदाचित आगें का बनाही मिल जाता है १११ हे मुने इस महा रामायण के बरो बर दूसरा महाभारत इतिहास व्यासनामाजीवने अथवा और जीवने पहिले का विस्मरण भया सातेंमी वार फेर रचन करना है ११२ हेमुने श्रीरामचंद्र नामा विस्नुका अवतार राक्षसों के क्षय वास्ते अब एकादश मा जन्म होवेगा ११३ हेब्रह्मन् विस्नुभगवान् नरसिंह रूप धारण करके त्रैलोक्यकों पीडा करने हारे हिरण्य कशिपु दैत्यको नीसरी वार मारते भये जैसें सिंह मतवाले हाथीकों मारता है ११४ हेमुने पृथिवीका भार दूरणेवास्ते वसुदेव के घर विस्नुजी का अब षोडशमा १६ जन्म होताहै ११५ हेमुने यह जगत की भ्रांति सांची कदाचित नहीं है जो कदाचित दृष्टि होती है सोभी जलमों बुद बुदाकी न्याई मिथ्याही फुरण होती है ११६ हेब्रह्मन् शतवार पुरुषों कों स्त्री भावकों प्राप्त होते कों यादकरताहूं कलियुगमों सत्ययुगके आचार कों याद करता हूं सत्य युगमों कलि युगके आचार

कों याद करता हूं ११७ हे ब्रह्मन् कितने सर्ग वेदोंसें रहित वेदोंके अर्थोंसे रहित अपनी इच्छा सें वर्त्तमान भये कों याद करता हूं ११८ हे मुने केते सर्ग मन के मनन व्यापार सें उत्पत भयेकों याद करता हूं पृथिवी के विकार सें रहित भये पवन रूप भयेको ऐसे द्रुमसर्गों को याद करता हूं ११९ श्रीवसिष्टजीका प्रश्न यक्षराजके प्रति ॥ हे यक्षराज तुम जैसे पुरुष त्रैलोक्यमों विचरण करते हैं और लोक व्यवहारभी करते हैं तोभी तुमकों मृत्यु वाधा क्यों नहीं करती है २॰ भुसुंडीजी श्रीवसिष्टजीको कहतेहैं ॥ हे मुने तुम सर्वज्ञ हो और जानतेभी हो और जिज्ञासु सिरीखे मेरेकों पूछते हो यह में जानताहूं क्या स्वामीयों होतेहैं सो अपने सेवककों जान करकेभी बोलनेमों प्रीति करके प्रगलभ करते हैं २१ तो हे महा प्रभो जो तुम पूछते हो सो में तुमको प्रकट कहता हूं सत पुरुषोंकी आज्ञा करनीही आराधन है २२ हे प्रभो वासना रूपी सूत्र की डोरी दोष रूपी मुक्तामणि युक्त है सो जिसके हृदयमों ग्रथित भई नहीं है तिसकों मृत्यु

वाधा नहीं करता है २३ हे प्रभो मानसी जो चिंता हैं सो केसियां हैं प्राण रूपी वृक्ष छेदने को शस्त्र हैं और देह बंधन की लताकी डोरियां है सो जिसकों भेद नहीं करते हैं तिसकों मृत्यु वाधा नहीं करता है २४ हे प्रभो यह आशा केसी है देह रूपी वृक्ष के ऊपर सर्प समूह जैसी चढीहै चिंता रूपी शिर फण वालीहै सो जिसके चित्तकों दाह नहीं करता है तिसकों मृत्यु वाधा नहीं करता है २५ हे प्रभो यह लोभ रूपी अजगर है केसा है राग और द्वेष जिसकी क्रूर विष है अपना मन रूपी छिद्र जिसका मंदर है सो जिसकों भक्षण नहीं करता है तिसकों मृत्यु वाधा नहीं करता है २६ हे प्रभो यह लोभ रूपी अग्नि केसी है विवेक रूपी जलकों संपूर्ण पान करती है अरु देह रूपी समुद्रका वडवानल है सो जिसकों दाह नहीं करता है तिसकों मृत्यु वाधा नहीं करताहै २७ हे प्रभो जिसका चित्त एक निर्मल परम पवित्र आत्म पदमों विश्रांत भयाहै तिसकों मृत्यु वाधा नहीं करता है २८ हे प्रभो यह जगत देवता असुर सहित गंधर्व विद्या धर किनर स

हित मनुष्य स्त्री गण सहित है इसमों शुभ करने हारा और स्थिर कछु नहीं है २९ वृंदा सहित राजा सहित पर्वत नगर सहित है ३० नाग और असुर समूह सहित असुरों की स्त्रियों सहित है संपूर्ण पाताल सहित इह प्रपंचमों सुंदर और शुभ कछु नहीं है ३१ हेमुने यह जगत कीआं कियां चिंता रोग सहितहै दुःख समूह संयुक्तहै और नित्य तुच्छहैं इन्हमों शुभ और स्थिर कछु न हीहै ३२ हेमुने पृथिवीका एक चक्र वर्ती राज्य श्रेष्ट नहीं है पराई कथा प्रसंगभी वर्णन श्रेष्ट न हीहै पराया कार्य्यकी विवेकभी वर्णन श्रेष्ट नहीं है हेमुने इन करके चिरंजीवी होना श्रेष्ट न हीं होताहै ३३ हेमुने मानसी चिंता और रोग युक्त चिरंजीविता अच्छी नहीं है मरणभी अच्छा नहीं है दृढ मूढ़ताभी अच्छी नहीं है नरककी विषम स्थितिभी अच्छी नहीं है ३४ हेमुने इस प्रकारकी जगतकिआं अनेक समस्त रचना मूढता युक्त होवे तो अच्छी नहीं है यह पदार्थ सभ ही चिरसें कल्पना करनेतें दुःख देने हारेहैं इन्हमों महात्मा पुरुष स्थितिको कैसें मानते हैं ३५

हे ब्रह्मन् आत्म चिंता संपूर्ण दुःखोंका अंतःकरणे हारी है चिरकालसें धारण किया संसाररू
पी दुष्ट स्वप्नाकों भ्रमको हरणे हारीहै ३५ हे मुने जैसी आत्म चिंता संसार दुःखकों हरणे हा
रीहै तैसेही आत्म चिंता के समान प्राण चिंताभी संसार सुख के भ्रमको दूर करणे हारी मैंने
मानी है इस प्राण चिंताकों अनेक योगी लोकोंने मोक्ष वास्ते सेवन कियाहै ३७ श्रीवसिष्टजी
का प्रश्न यक्षिराज प्रति॥ हे यक्षि राज तुम सर्व संशय कों छेद करने हारे हो तत्व ज्ञानी
हो चिरंजीवी हो यथा योग्य मेरे कों कहो प्राण चिंता क्या कहीदी है भुशुंडकाकजीका उत्तर
श्री वसिष्ट जीके प्रति॥ हे मुने तुम भुशुंडकाक को दर्शन करके जीव दान देनेहो भुशुंड-
काकको आत्म दृष्टिका लाभ देने हारेहो संपूर्ण वेदांत के वेत्ता हो सर्व संशय कों नाश करणे
हारेहो मेरेकों उपहास के वास्ते प्रश्न करते हो जिसकारणतें तुम ब्रह्म वेत्ता और ब्रह्मा के पुत्र
हो मैंकाक हूं महा मलिन जीव हूं मेरेकों तुमहारा प्रश्न करना उपहासही है ३९ अथवा

वा॰मा॰ मेरेको इतना कहने मों क्या अर्थहै मैने सर्वज्ञान तुम से ही शिक्षित किया है तुमारे कों
३॰५ प्रश्नका उत्तर करोगे तो फेरभी अभ्यास करके संशय रहित होवोगा ५॰ हेमुने प्राणाग्निका
समाधान मेरा कहिआ तुम सावधान होइ कर श्रवण करो इडा और पिंगला यह दोनों ना
डियां इस देहमों नासिका के दाहने वामें पार्श्वमों स्थित हैं ५१ हेमुने इस देहमो छे चक्र कम
ल रूपहें सो अस्थियों के और मांसके बनेहैं और कोमल हैं इन्हके ऊपर भी नालहै और नीचे
भी नालहै और इन्हके दल आपसमों मिले हैं ५२ हेमुने इन षट् चक्र कमलों के नाम और स्व
रूप और अस्थान तुम्हारे कों सुनावते हैं प्रथम कमल मूलाधार चक्रहै सो गुदा स्थानमों है
इसके चार ४ दल हैं व॰श॰ष॰स॰ यह चार अक्षर चार दलों मों हैं १ दूसरा कमल स्वाधि
ष्ठान चक्रहै सो लिंगस्थान मों है इसके छः दल हैं व॰भ॰म॰य॰र॰ल॰ यह छः अक्षर
इसके छः दलमों हैं २ तीसरा कमल मणि पूरक चक्रहै सो नाभिस्थान मों हैं इसके दश १०

दलहै॰ ड॰ ढ॰ ण॰ त॰ थ॰ द॰ ध॰ न॰ प॰ फ॰ यह अक्षर दश दलमों है ३ चौथा कमल अनाहत चक्रहै सो हृदय मांहै इसके १२ द्वादश दलहैं क॰ ख॰ ग॰ घ॰ ङ॰ च॰ छ॰ ज॰ झ॰ ञ॰ ट॰ ठ॰ यह बारां अक्षर दलोंमों हैं ४ पांचमा कमल विशुद्ध चक्र सोकंठमें कहाहै इसके १६ षोडश दलहैं॰ अ॰ आ॰ इ॰ ई॰ उ॰ ऊ॰ ऋ॰ ॠ॰ लृ॰ लॄ॰ ए॰ ऐ॰ ओ॰ औ॰ अं॰ अः॥ यह सोलां अक्षर इसके दलोंमों हैं ५ छठा कमल आज्ञा चक्रहै सो ललाटमें हैं इसके दो २ दलहैं॰ ह॰ क्ष॰ यह दो अक्षर इसके दलों मों हैं ६ यह छे चक्रों के छे कमल हैं सो संपूर्ण देहमों चलने वाले पवनके स्पर्श करके प्रकाश मान होते हैं हेमुने यह छे कमलों के पत्र मंद पवनके स्पर्शतें चलते हैं तिन पत्रोंके चलने करके पवन वृद्ध होताहै सो पवन इस देहमों आठ कम अस्सी हजार एक शत एक ७२००० नाडीमों भ्रमण करता है तिसमों हृदय और गुदा नाभि और कंठ और सभही अंग इस पवनके प्रकट होने के मुख्यस्थान हैं ४४ हेमुने यह स्थानोंको कल्पन करके केती नाडी।

नीचेकों चलती है केती नाडीआं ऊपरकों चलती हैं तिन्हमों प्रवेश करके देहमों पसरताहै
वा॰ सा॰ हेमुने सो पवन प्राण और अपान और समान और उदान और व्यान इत्यादि नाम करके
३.६ वर्तमान है हृदयमों प्राण पवनहै गुदामों अपान पवन है समान पवन नाभिमो हैं उदान प
वनहै गुदामों अपान पवन है समान पवन नाभिमो हैं उदान पवन कंठस्थान मोहै व्यान
पवन सर्व देहमों है यह अनेक चेष्टा करके अनेक नाम वालाहै पांच पवन और भी हैं ॥
नाग १ कूर्म २ कृकल ३ देवदत्त ४ धनंजय ५ नामाहैं ४६ हेमुने इन्हमो दो पवन प्रधान
हैं प्राण और अपान और प्राण ऊपरकों चलता है अपान नीचेको चलताहै ४७ हेमुने प्राण
और अपान यह दोनों पवन प्रकट हैं और प्रधान कहेहैं शरीर रूपी नगरकों पालने हारा
जो पवन है तिसका मन रूपी रथहै तिसके यह दोनों चक्र हैं ४८ हेमुने तिन्ह दोनोंकी म
र्मके अनुसार गतिहै यह प्राण और अपान पवनों की देह की स्थिति पर्यंत गति प्रति बं

वा॰ सा॰ १०७

यकों नहीं प्राप्त होतीहै ४९ हेमुने यह पवन इस देहमें सुषुप्ति अवस्थामें भी निरंतर च
लता रहताहै इसकारणतें प्राण पवनकों ब्रह्म रूपनाभी कहाहै ५० हेमुने कमल के नालका
सूत्रका हजारमां अंश से भी प्राण अपानकी गति सूक्ष्महै देहमें विद्यमानहै तोभी अलक्ष्य है
प्राणायाम के अभ्यासतें और सूक्ष्म नाडियों में चलनेतें सूक्ष्म गति कहीहै ५१ हेमुने जाग्रत भ
ये और सुप्त भयेकों भी यह प्राणायाम उत्तम है जातें जो प्राणायाम को जानताहै तिसकों जि
स प्रकार करके प्राणायाम कल्याण के वास्ते कहाहै तिस प्रकार कों तुम श्रवण करो ५२ हेमु
ने यह प्राण पवन मूलाधार चक्र गुदास्थानतें उपरकों चढताहै सो क्रम करके छे चक्रोंको
भेद करके कपालस्थान ब्रह्म रंध्र चक्र पर्यंत चढता है कपालस्थान में एक हजार १००० दल
कमलहै तिसमें योगी जन प्राणायाम चढावते हैं और लोको कों यह प्रकार का ज्ञान नहीं
है ५३ हेमुने तीन प्रकारकी पवन की गतिहै रेचक और पूरक और कुंभक प्राणोंका चलना

रेचकहै चढ़ावना पूरक है स्थित होना कुंभक है अब इन्हके भेद तुमको सुनावता हूं ५४ हे
मुने हृदय कमलके अंदरतें प्राण पवनोंका बाहिरके सन्मुख जो होनाहै स्वभाव करके और य
त्न बिना तिसकों भी और पुरुष रेचक जानतेंहैं ५५ हेमुने बाहिरकों चले जो प्राण पवन हैं तिन्हकी शि
र पर्यंत गतिकों बाह्य पूरक कहतेहैं शिरसें नासिका द्वारसें अथवा मुख द्वारसें बाहिर बारां उंग
ली १२ प्रमाण बाहिर प्रकट होनेकों अर्थ रेचक कहतेहैं ५६ और हेमुने बाहिर सें नासिकाकों अथ
वा मुखकों प्रवेश करके अंदरकों अपान पवनके स्थान गुदा पर्यंत पवनकी जो गतिहै तिस को
भी और पुरुष पूरक जानते हैं ५७ हेमुने बाहिरकों सन्मुख भया जो प्राण पवन तिसकी नासि
कातें शिर पर्यंत गतिकों बाह्य पूरक जानते है ५८ और बाहिर सें अंदरकों प्रवृत्त भया जो पवन
तिसकी नासिकातें शिर पर्यंत जो गतिहै तैसेही शिर सें हृदय पर्यंत जो पवन की गतिहै तिस
कोभी दूसरे आंतर पूरककों जानते हैं यह दो प्रकारका आंतर पूरक को कहते हैं ५९ हेमुने

वा॰सा॰ बाहिर कों सन्मुख भये प्राण पवन की हृदयसे नासिकाग्र पर्यंत यो गति तिस कों॥
५॰९ योगी जन बाह्य पूरक कहते हैं ५९ हेमुने नासिकाग्र से भी निकस करके बाहिर बा
रां अंगुल प्रमाण जो गति है तिसको भी दूसरे बाह्य पूरककों कहतेहैं ६॰ हेमुने बाहिर
गया जो प्राण पवन सो जब लग अंदर अपानस्थान मों नहीं प्राप्त भया तब प्राण
पवन की पूर्णस्थिति होतीहै तिसकों बाहिर का कुंभक कहते हैं ६१ हेमुने जो प्रा
ण पवनका अंदर के सन्मुख होताहै जब लग अपान वायुकी उदय नहीं भया तब
लग प्राण पवन की गतिकों बाहिर के रेचककों कहते हैं ६२ हेमुने द्वादशांत का
हीए मूलधार चक्र तिसतें उदय होय करके स्थूल रूपकों प्राप्त भया अपान पव
नकी जो स्थिति तिसकों दूसरे पूरककों कहते हैं ६३ हेमुने बाहिर के और अंदर
के यह कुंभक रेचक पूरक जो प्राण अपानके गतिके स्वभाव हैं तिन्हकों जान॥

करके पुरुष फेर जन्मकों नहीं पावता है ६४ हेमुने यह प्ररक रेचक आठ८ प्रा॰ कारकेहैं और दो प्रकार कुंभक केहैं यह दश प्राण पवनकी गति हे सो देह पवनके स्वभाव हे स्मरण करनेतें मुक्तिकों देने हारे हैं सो हम तुम्हारे प्रति कहते हैं ६५ हेमुने जिसका मन यह प्राणायाम के व्यापारमों लगा हे बाहिरके व्यापार कों त्याग करता है तिसका मन थोड़े दिनों करके निर्मल पदकों प्राप्त होताहे ६६ हेमुने यह प्राणाया॰ मको अभ्यास करने हारे पुरुषका चित्त बाहिर के इंद्रियों के विषयोंकी वृत्तियों विषें रतिकों नहीं बांधताहे जैसे कुंताकी चमड़ीमों ब्राह्मण प्रीति कों कदापि नहीं करता हे ६७ हेमुने अपान पवन चंद्रमाकी कला युक्तहे काहतें अपान पवनकी अंदर को शीतो गति हे इसतें अपान पवनकी कल्प प्राणायाम करके अंदर देह के स्थिति रहेतो यहां शोक नहीं करना बनताहे औसी पदवीको प्राप्त होतीहे ६८ हेमुने प्राण पवनमों सूर्यकी क

हे ७९ हेमुने मस्तक से लेकर पाद पर्यंत इस देहमों मेरा अर्थ कोई नही है इस प्रकार करके अहंकार रूपी कलंकतें रहित भयाहूं और जो मैं कर्म करता हूं जो भोजन करता हूं सो सभही मेरेको प्रीति और निंदातें रहित है तिसतें मैं चिरंजीवी भया हूं ८० हेमुने जिस २ कालमों मैं कछु जानता हूं तिस तिस समयमों मेरी बुद्धि ज्ञानके गर्व को धारण नही करती है और मैं बल करके समर्थ होता हूं तोभी किसीको दवाय नही लेताहूं और संताप भये संते खेद युक्त नही होताहूं और दरिद्र होय करके किसी को याचन नही करता हूं तिसतें मैं चिरंजीवी भयाहूं ८१ हेमुने जो जो पदार्थ पुराण है अरु भिन्न भयाहूं क्षीणभी भयाहूं क्षोभको प्राप्त भयाहूं धस गयाहै चट जाताहै सभको मैं नवीण और उत्तम जानताहूं सुखी लोकों को देख कर सुखी होताहूं अरु लोगों के दुःखमों दुःखी होताहूं सर्व लोकका मित्रहूं और सर्व जनका प्रियहूं तिसतें मैं चिरंजी

रहिताहूं अरु संपदा मों
वी भयाहूं ८३ हेमुने आपदामों पर्वतकी न्याईं अचल रहिताहूं अरु संपदा मों ... नहीं मानताहूं तिस
जगत का मित्र होताहूं भावमों और अभावमों अपने कों कछु नहीं मानताहूं तिस
तें चिरंजीवी भयाहूं ८४ हेमुने नातो में किसीकाहूं ना मेरा कोई है नातो में अपना हूं ना
में परायाहूं इस भावनामों मेरा चित्त है तिसतें चिरंजीवी भयाहूं ८५ हेमुने यहाभी चै
तन्य है वस्त्रभी चेतन्य है वन वृक्षभी चेतन्य है और नाडो गाडीभी चेतन्य है संपूर्ण चेतन्य
है ऐसी भावना मेरेको है तिसतें में चिरंजीवी भयाहूं ८६ हेमुने इसकारण ते में त्रैलोक्य
रूपी कमलमों भ्रमरकी न्याईं विचरण करताहूं भुसुंड नामा काकहूं चिरंजीवी कहियाहूं
हेमुने जेसा में हूं जिस प्रकार में वर्तमानहूं जो मेरे हूं यह सभ मैने कहा और तुमभी ज्ञा
ते हो सर्वज्ञहो यह मेरा कहना तुम्हारी आज्ञा करणे मात्र है ८८ श्रीवसिष्टजीकहते हैं
हे पक्षिराज भुसुंडजी अहो इति आनंदे तुमने मेरे प्रति अपना वृत्तांत कहिया है वो कैसा

है अद्भुतहै और तुम्हारा वचन वेदशास्त्र का भूषणहै और परम विस्मयका कारण है
वा॰ सा॰ हे भुसुंडजी तुम महात्माहो और अत्यंत चिरंजीवी हो जो तुम्हारे को साक्षात् दूसरे ब्रह्मा
३२५ को देखतेहैं सो पुरुष धन्यहै और महात्मा हैं ९॰ हेरामजी तिसतें उपरंत में भुसुंड काकसें
विदा होइ करके चलनेकी आज्ञा लेता भया तब भुसुंडकाकने सुवर्ण कमल और सुवर्ण
पुष्पों करके और मोतिओं के अर्घ करके पूजन करके विदा किया आकाशमों तीन योजन
भुसुंडकाक मेरे पीछे साथ आवता भया तब मैंने प्रार्थना करके भुसुंडकाक कों पीछे अ
पने अस्थानकों फेर दिया तदनंतर में अपने सप्त ऋषियों के मंडलमों चला आवता भ
या ९१ हेरामजी यह भुसुंडकाक का वृत्तांत तुम्हारे प्रति कहाहै इसकों तुम अंतः करण
मों विचार करके जो कार्य तुमकों रुचे सोई तुम करो ९२ बालमीकीजी भरद्वाज प्रति कह
तेहैं हे भरद्वाज जी जो निर्मलबुद्धि पुरुष यह भुसुंडकाककी कथा कों श्रवण करता

है सो पुरुष अनेक भय करके बड़ी दुस्तर ऐसी संसार नदीकों तरजाता है ९३ हे भरद्वाज
जी फेर रामचंद्रजीने वसिष्ठजी को प्रश्न किया यह शरीर रूपी घर किसने रचन किया
है ऐसा प्रश्न किया तो वसिष्ठजी कहने भये ९४ हे रामजी यह शरीर गृह कैसा है अस्थियां
इसकी स्तंभकी थूणा है और रक्तमांस करके इसकों लिप्त कियाहै नव इसके द्वारहैं यह कि
सीने रचिया नहीहै ९५ हे रामजी जौनसा रक्तमांस अस्थियों करके बनाहै इस देहमों में देह
हूं यह देह मेराहै तूं ऐसे भ्रमको त्याग कर अपने संकल्प करके रचन किया जो देह है
सो हज़ारोंही हैं तिनकी संख्याकी कल्पना कछु नहीहै ९६ हे रामजी तुम रात्रिमों शय्यामों
सुख करके शयन करके स्वप्नमों जिस देह करके अनेक देशांतरमों भ्रमण करते हो सो
तुम्हारा स्वप्न का देह अब कहांहै और रचा किसने है ९७ हे रामजी जाग्रत अवस्था मों
भी मनोरथ के फुरणेमों जिस देह करके स्वर्गादिक लोकोमों और देशांतर सों भ्रमणे

करते हो सो देह तेरा प्रत्यक्ष कहां है ९८ हेरामजी स्वप्नांतर में स्वप्न होता है तिस स्वप्नांतर के स्वप्न में जिस देह करके तूं देशांतर में विचरता है सो स्वप्नांतर के स्वप्न का तेरा देह अब कहां है तिसकों तुम कहो ९९ हेरामजी इस संसार कों तुम दीर्घ स्वप्न कों जानों अथवा दीर्घ चित्त के भ्रम कों जानों अथवा दीर्घ मन के मनोरथ कों जानों २०० हेरामजी जेसे पुरुष भय भीत स्वभाव वाला है सो अपने संकल्प की रचना में भय को नहीं प्राप्त होता है तैसेही निर्मल बुद्धि पुरुष अपने संकल्प की रचनातें भये संसार में भयकों नहीं प्राप्त होता है २०१ हेरामजी तत्व का भले प्रकार विचार करके आपने आत्माका स्वभाव निर्मल होता है जेसे शुद्ध सुवर्ण तांबा की न्यांई फेर मल कों नहीं ग्रहण करता है २ हेरामजी यह जगत् केवल आभास मात्र है ना यह सत्य है ना असत्य है इस प्रकार करके और कल्पना का जो त्याग करना तिसकों भली

तरा का विचार कों ज्ञानी लोक जानते हैं २·३ हेरामजी में देहादिक नहीं हों यह भो
ग मेरे कों नहीं है और सत्यभी नहीं हैं यह सभही संकल्प के रचन मात्र है सभ व्य
र्थ है अनर्थ के लिये भासता है ऐसी भावनातें सभही ज्ञ्या होता है ४ हेरामजी त
त्व वेत्ता पुरुषने दो प्रकार की दृष्टि करने योग्य है दो प्रकार कौंन हैं यह संपूर्ण वि
श्वमें हों अथवा संपूर्ण चेतन्य ही है और सभ यह आडंबर मात्र है और व्यर्थ है ऐ
सी दृष्टितें यह प्रपंच अनर्थ कारणे के लियें नहीं भासता है ५ हेरामजी सभको आ
त्म रूप जानना अथवा सभकों चैतन्य रूप जानना यह दो प्रकार की ज्ञान दृष्टि सत्य है
और अतिशय करके सिद्धि कों देती है इन दोनों मां जोनसी को तूं सुंदर मानता है ति
सकों तूं सेवन कर ६ हेरामजी हे निर्मल बुद्धे दो इन्ह प्रकार की ज्ञान दृष्टिओं करके
युक्त होय करके तूं विहार करता हुवा रागद्वेष के क्षय कों कर और अपने कल्याण

कों सिद्ध करे ७ हेरामजी जो कुछ पुरुषार्थ इस लोकमें सभसे उत्तम कहाहै आका
शमें और पृथिवी में और स्वर्ग में सो सभही रागद्वेष का क्षय होनेतें सिद्ध होता है ८
हेरामजी रागद्वेष ही मन को मलन करणे हारे हैं जिसके रागद्वेषरूपी सर्प नष्ट
नहीं भये हैं सो पुरुष कल्प वृक्ष के पासभी रहे तोभी उसकों कुछ प्राप्त नहीं हो
ताहै ८ हेरामजी जोनसें लोक ज्ञान वान हैं और नियम वान है और चतुर है और
शास्त्र पढने हारे हैं जो रागद्वेष के अधीन हैं सो शृगालों सिरीषे हैं तिन्हकों धिगहै
उनका सभ कुछ वृथा है ९ हेरामजी यह मेरा धन पराये लोकने खाया है यह धन
मेरे को दिया है इस प्रकार का जो व्यवहार है सोही रागद्वेष का स्वरूप है ११ हेरामजी
धन जो हैं बंधु जो हैं मित्र जो हैं यह संसार में बार बार आते हैं बार बार चलेजाते
हैं विचार वाला पुरुष इन्हमें राग क्यों नहीं करते हैं और विराग क्यों करते हैं इन्हमें

वा॰सा॰ रागद्वेष सों क्या सिद्ध होता है १२ हेरामजी तुम सावधान हो ज्ञान वान हो मैने तुम॰
३२॰ कों यह ज्ञान समझाय दिया है मैं सूर्य लोक पर्यंत निर्विकार आनंद मय देखता हूं १३
हेरामजी बोध को प्राप्त हो आज तेरे को बोध का समय है सत्य वस्तु कों विचार करके
देख यह व्यर्थ भ्रमकों त्याग कर जिस कारण करके तेरे को जन्म नही होवेगा दुःखभी
नहीं होवेगा दोषभी नही होवेंगे भ्रमभी नही होवेंगे तूं सभही संकल्प कों त्याग क॰
रके आत्म सुखमों सावधान स्थित हो १४ हेरामजी तुम महात्मा हो विकल्प जिस के
सभ गलित भये हैं संसर्ग दोष जाल तुम्हारे नष्ट भये हैं तुम्हारी ज्ञान दृष्टि सुखकों
और सार कों प्राप्त भई है और सुभूमि की न्याई अचल भई है और सौम्यभी भई है अ
ब तुम चित्तकों शुद्ध करणे वाले उपशम कों धारण करो और आत्मा के स्वरूप मों सा-
वधानस्थिर हो १५ वाल्मीकी जी भरद्वाज प्रति कहते भये ॥ हे भरद्वाज श्रीरामचंद्रजी

वा॰सा॰ ला है जिसकारणतें प्राण पवनकी गति ऊर्ध्व है इस प्राण पवनकी गति प्राणायाम क

३११ रके अंदर स्थिति करके पुरुष फेर जन्म नहीं पावता है ६९ हेमुने यह प्राणायाम की दृ

ष्टिकों धारण करके में अचल पदमों स्थित भयाहूं सुमेरु पर्वतभी चला जावे तोभी मैं

चलाय मान नहीं होताहूं ७० हेमुने चलते भये स्थित भये अरु जाग्रत भये सुप्त भये मे

रेकों आत्मा विषें स्थित भई समाधि मेरी सुप्तमोंभी नहीं चलतीहै ७१ हेब्रह्मन् मैं यह

जोग दृष्टिमों स्थित भयाहूं भूत भविष्यत् वर्तमान कों चिंतन नहीं करताहूं इस कारण

तें चिरंजीवी भयाहूं ७२ हेब्रह्मन् मैं भावकी चिंताकों अरु अभावकी चिंताकों इष्ट चिंताकों

अनिष्ट चिंताकों एक समान जानताहूं तिस कारणतें निर्विकार होय कर चिरकालतें जीव

ताहूं ७३ हेमुने मैं प्राणका ओर अपानके संयोगकी युक्तिकों चिंतन करताहूं आपही अपने

आत्मा विषे संतुष्ट भयाहूं तिस कारणतें चिरतें जीवताहूं ७४ हेमुने यह आज मेरे कों

प्राप्त भयाहै यह और प्राप्त होवेगा ऐसी चिंता मेरेकों नहीहै में अपने कों अथवा और किसीकों निंदा और स्तुति नही करताहूं तिसतें चिरंजीवी भयाहूं ७५ हेमुनि में सर्व त्याग कों धारण करताहूं जीवनेका उद्यमभी मैने त्याग दियाहै और मेरा मन चंचलतातें रहित भयाहै शोकसें रहित भयाहै और स्वस्थ भया है और सावधान भयाहै तिसतें चिरंजीवी हों ७६ हेमुने में काष्टकों और सुंदरस्त्री कों तृण कों और अग्निकों और बर्फकों आकाशकों सम देख हूं आज मेरेको सिद्ध क्या भयाहै और प्रातः काल क्या सिद्ध होवेगा ऐसी चिंता मेरेको नही है तिसतें चिरंजीवी भयाहूं ७७ हेमुने जन्म मरण दुःखोंमें और राज्यलाभादि सुखोंमें में भयतें हर्षतें रहित भयाहूं और यह मेरेकों अपनेतें बंधहै और यह परायेतें बंधहै ऐसाभी में नही जानता हूं तिसतें चिरंजीवी भयाहूं ७८ हेमुने में अचल दृष्टि करके आसक्ति रहित दृष्टिके प्रीति वाली सुंदर दृष्टि करके सर्वत्र एक सत्य रूप आत्माको देखता हूं तिसतें चिरंजीवी

इतना वचन वसिष्ठजी का कहिआ श्रवण करते संते और स्वस्थ भये संते सम चित्त भये संते और आत्म स्वरूप मों विश्रांत भये संते और परमानंद मों आपनी इच्छा पूर्वक प्राप्त भये संते और तहां सभामों सर्व देवता ऋषिराजा नगर के लोक देश देशांतरके लोक सभही आनंदकों प्राप्त भये संते वसिष्ठजी का वचनामृत रामचंद्र जी के मनकी स्थिति वास्ते जौनसा प्रकट होता भया सो वचन रूपी अमृत विश्रांत होता भया जैसे खेत्रों में खेती सिद्ध भये संते बदलों की वर्षा जल विश्रांत होता है ७६ इसतें उपरांत आधा मुहूर्त समय गये संते श्रीरामचंद्र जी को आत्म बोध भये संते कहने वाले मो श्रेष्ट वसिष्ठजी रामचंद्रको फेर तिस पूर्वले अर्थ कों कहते भये ७७ हेरामजी तूं भली तरां सें बोध को प्राप्त भया है और आत्म तत्वकों भी प्राप्त भया हैं इसी प्रकार इस अर्थकों पाइ करके स्थित हो यही सभका सार है जैसें सुमेरु पर्वत त्रैलोक्य मों सार है ७८ हेरामजी यह संसार चक्र सा

दा भ्रमता रहता है संकल्प इसके मध्य की नाभी है जैसें चक्र के मध्यकी नाभी किसी प्रकार करके रोकी जावे तो चक्र नहीं भ्रमता है तैसें संसार चक्र की नाभी संकल्प है जिस कों प्रतिबंध किये संते संसार चक्र नहीं भ्रमता है १९ हेरामजी सो मन की संकल्प रूपी क्षोभ कों प्राप्त भये संते संसार चक्रकों भामे कितना रोके तोभी संकल्प के वेग करके निरंतर भ्रमता है २० तिसतें हेरामजी निर्मल बुद्धि करके और सुजनता करके युक्तशास्त्र ज्ञान करके युक्त ऐसा अपने यत्न करके जो प्राप्त नहीं भया सो कहीभी नहीं प्राप्त होता है २१ हेरामजी जौंनसा चित्रमें लिखा जो नरहै तिसेंा देहधारी नर अत्यंत तुछ है चित्रका नर कैसा है सदा प्रसन्न है और क्लेश रहित है देह धारी नर कैसा है दुःख करके मलीन मुख हो और देहका पात और देहका छेदके भय युक्त है २२ हेरामजी तिसतें जौंनसा यह मांस रक्त मय देह है सो चित्रमें लिखे देहसें भी तुच्छ है ऐसे

रक्तमांस के तुच्छ देहमों तुम जैसे विवेकी जनों कों क्या प्रीति है और क्या विश्वास है २३ हेरामजी यह देह दीर्घ स्वप्नेका है अथवा चित्त संकल्प करके कल्पन कियाहे इसकों भूषण किये संते अथवा दूषण किये संते चैतन्य रूप आत्मा कों क्या हानीहै औ र लाभ क्या है २४ हेरामजी यह अहंकार नामा वेताल कैसा है निःसार है और संपूर्ण संतजनों करके निंदत किया है सो कहीं सें अकस्मात् आइ करके चित्त रूपी घरमों प्रवि ष्ट भयाहे २५ हेरामजी इस अहंकार नाम वेताल के अधीन होनें नें नरक फ़ल प्रा प्त होता है तिसतें तूंभी यह दुर्मति अहंकार के चाकार भावकों मत प्राप्त होवें २६ हे रामजी यह शून्य गृह जैसे देहमों चित्त रूपी यक्षनें प्रवेश करके जो ऊछ्र किया है सो कहा नही जाता है किसतें जिसतें महात्मा पुरुष भय करके समाधि करने मों रत होते भये २७ हेरामजी जौनसें अहंकार नाम धारी पिशाचने अपने वश कियेहैं सोही

पुरुष नरक रूपी अग्निको प्रज्वलित करणे कों काष्ठ भाव कों प्राप्त होते भये २८ हेरामजी जौनसें चित्त रूपी यत्नने जीते हैं तिन्हकों जो आपदा होती है सो आपदा सेकड़े वर्षों करके भी नहीं गणी जाती है २९ हेरामजी जौनसा पुरुष चित्त यत्न करके हठ दबाइ लिया है तिस कों गुरु और बांधव रक्षा करणे को समर्थ नहीं होते है ३० हेरामजी जिसका चित्त रूपी क्लेश ल शांत भया है तिस पुरुष कों गुरु और शास्त्र और बांधव सभही रक्षा करणे कों स मर्थ होते है ३१ हेरामजी भोगों के भोगों कों बाहिर करे और संत जनों के चरणे कों आ श्रय करे अपने उत्तम अर्थ कों विचार करके एक आत्मा कों सेवन करे ३२ हेरामजी य ह देह अपवित्र है और तुच्छ है और दुःखका पात्र है और पाप का मूलहै ऐसे देह करके अर्थ कुछ नहीं मानना देह चिंता रूपी चंडी महा भयानक है ३३ हेरामजी यह देह रचा और किसीने है और चोर यत्नने और किसीने आक्रांत किया है दुःख और किसी

कोंहै और दुःख भोगने हारा और कोई है यह चिंता मूर्खता के चक्र कों भ्रमण करा
 वती है ३४ हे रामजी इसमों यह परम ज्ञान दृष्टि है सो महा मोहकों विनाश करणे हारी
है तिसको तुम श्रवण कर जो ज्ञान दृष्टि पूर्व कालमों शिवजीने मेरे प्रति कही है ३५ हे
रामजी एक समय मों कैलास पर्वतमों गंगा के तट कुंज मों मैं निवास करता भया शिव
जी कों प्रसन्न करणे वास्ते तप करता भया तब पाद्य अर्घ्यादिकों करके शिवजी का पूजनक
रके फेर प्रदक्षिणा प्रणाम मैं करता भया तिसते उपरांत मेरे कों अनुग्रह वास्ते प्रसन्न
होय करके सदा शिवजी पार्वती सहित आइ करके मेरेकों बचन कहते भये ३६ ईश्व
रजी कहते भये हे ब्रह्मन् तेरे अंतः करण कियां वृत्तियां उपशम करके शोभाय मान
और कल्याण कों करते हारिआं हैं सो परमात्मा विषे विश्रांत भई हैना ३७ हे मुने हम ते
रेकों कुशल प्रश्न करते हैं तेरा तप विघ्न रहित होता है और ना तेरे कों कल्याण है

और ना तेरेको प्राप्त होने योग्य सार पदार्थ प्राप्त भया है और ना संसार की भय संपदा तेरी
शांत नही भई है ३८ हे रामजी ऐसा वचन सदा शिवजी के कहते संते मैने बहुत बिनती सु
क्त बानी करके शिवजी को बचन कहा तिसको तुम श्रवण करो ३९ हे त्रिनेत्र जो तुम्हारा स्म
रण करणे हारे हैं सो पुरुष कल्याण युक्त हैं तिन्हको दुर्लभ कुछ नही है और उन्हको संसार
के भय नही होते हैं ४० हे ईश्वर जो पुरुष तेरे स्मरण के आनंद करके परि पूर्ण चित्त है तिन्हको
जो प्रणाम नही करता है ऐसा इस जगत मंडल मो कोई नही है ४१ हे स्वामिन् सो देश उ
त्तम हैं सो नगर ग्राम उत्तम है सो देश और पर्वत उत्तम हैं जहां तेरा स्मरण करणे मों एका
ग्र बुद्धि वाले जन निवास करते हैं ४२ हे शिवजी जिस जीवका पुण्य फल देनेको प्रकट होता
है जिससें शुभ कर्म वर्तमान होते हैं और जिसका कल्याण आगे होनाहोवे तिसको तुम्हारा स्म
रण होता है ४३ हे जगत्पते तेरा स्मरण कैसा है ज्ञान रूप अमृत का कलश है श्रुति रूप चांदनी

ा·सा·
्२६

का चंद्रमा है और मोक्ष रूप नगर का द्वार है ४४ हे महाराज तुम्हारा स्मरण रूप उदार चिं
तामणि कों प्राप्त होइ करके मैंने संपूर्ण आपदा के शिर उपर चरण दिया है ४५ हे रामजी
प्रसन्न भये शिवजी कों इतना कह करके मैं फेर प्रणाम करके जो बचन कहा तिसकों तु
म श्रवण करो ४६ हे भगवन् तेरे प्रसादतें मेरिआं संपूर्ण दिशा आनंद करके पूर्ण भई हैं प
रंतु एक संदेश मैं तुमकों पूछता हूं तिस का निर्णय तुम मेरे कों कहो ४७ हे देव प्रसन्न
बुद्धि करके मेरेकों कहो जो सर्व पाप के क्षयकों करे और सभही कल्याण कों वृद्ध करणे
हारे होवे ऐसा जो तुम्हारे पूजन का विधान है सो कैसा होता है ४८ ईश्वरजी कहते भये ॥
हे ब्रह्मन् तूं ब्रह्मवेत्ता जनों मों श्रेष्ठ है देव पूजा के उत्तम विधान कों तुम सुनो जिसकों ए
क वार श्रवण करणे तें संसार सें मुक्त होती है ४९ हे ब्रह्मन् हम तेरेकों प्रश्न करते हैं तूंभी जा
नता है जो देवता कौन है हे मुने ना विष्णु देव है ना शिव देवता है ना ब्रह्मा है ना इंद्र है ना

वायु है ना सूर्य है ना पवन है ना चंद्रमा है ना ब्राह्मण है ना क्षत्रिय है ना देह रूप है ना चित्त रूप है ना तूंहै ना मेंहूं ना देव लक्ष्मी रूप है ५॰ हेमुने जो किसी करके सिद्ध नही भया औ र आद अंत सों रहित ऐसा जो प्रकाश होना सोही देव कहा है सो केसा है स्वरूप से रहित है हेमुने ऐसा प्रकाश स्वरूप वाले देवने आद अंत सहित और पांच भूतों करके बने हुये देहा॰ दिकमों कहांते होना है ५१ हेब्रह्मन् ऐसे स्वभाव करके स्वयं प्रकाशमान आत्मा को देव कहते हें और मों जो प्रकाश है सो उपाधिक है और क्रिया करके बना है ब्रह्मा विष्णु रुद्र इ त्यादिक सभही उपाधि करके बने हैं ५२ हेब्रह्मन् जोनसा सदा सर्वदा एक जैसा जो प्रका शहै सो केवल आत्मामों है सो आपही प्रकाशमान है तिसको स्वयं प्रकाश कहीदा है ऐ सा प्रकाश रूप देव है सो नाम रूप सहित और गुण क्रिया सहित और उत्पत्ति विनाश सहि त और लय वृद्धि सहित ऐसे ब्रह्मादिक मों कहां है जिसमों आद अंतसे रहित और किसी

संवना नही ऐसा अपने स्वभाव करके अखंड प्रकाश होवे तिसकों देव कहते हैं चेतन्य कहते हैं शिव कहते हैं सोही आत्मा महादेव है तिसकों ही तूं मेरे स्वरूप वाले देवकों जान ५३ हेमुने सोही आत्मा देवता नाम करके कहीदा है तिसका ही पूजन करणे योग्य है सोही आत्मा परम देवता है तिसतें ही यह सत्ता वाला और सत्ता रहित संपूर्ण जगत् भया है और उत्पनभी भया है ५४ हेब्रह्मन् जिन्होंनें सो स्वयं प्रकाश आत्मा देवता का तत्व नही जाना तिन्हकों मूर्ति वाले देवता की पूजा गंध पुष्पादि कों करके कही है कैसे जिस पुरुष तें जो जन प्रमाण मार्ग नही चला जावे तिसको एक कोश प्रमाण मार्ग चलने कों कहीदा है ५५ हेब्रह्मन् रुद्रादिको की पूजातें इतने प्रमाण वाला बहुत थोहड़े प्रमाण वाला फल प्राप्त होता है सो भोगतें उपरांत क्षय कों प्राप्त होता है और आत्मा की पूजातें अखंड और प्रमाण रहित फल प्राप्त होता है ५६ हेमुने जो पुरुष अखंड और स्वाभाविक फल

कों त्याग करके और नाश होने वाले फल कों चाहता है सो पुरुष कल्पवृक्षों के वनकों त्याग करके करीर वृक्षों के वन कों फलों की इच्छा करके जाता है ५७ हे मुने आत्मा देव की पूजा में ज्ञान और समदृष्टि और शांति यह तीन उत्तम पुष्प कहे हैं सोही एक आत्मा शिव है और चैतन्य मात्र है और निर्मल है सो ही देवता है तिसको सर्वत्र व्याप्त भये कों देषणा ऐसी देवता का ध्यान है जौंनसे देवता की पूजा कों जानते हैं सो इस प्रकार की पूजा करते हैं ५८ हे मुने शम बोधादिक पुष्पों करके आत्मा कों जो पूजना है तिसकों ही देव पूजा कों जानते हैं जौंनसी काष्ट पाषान की मूर्त्तिओं की पूजा है सो देवार्चन नही है ५९ हे मुने आत्माही देवता है ज्ञान ही तिस की पूजा विधि है इस पूजाकों त्याग करके जो पुरुष नाम धारी मूर्त्ति वाले देवता का पूजन करते हैं सो पुरुष चिरकाल पर्यंत क्लेश के पात्र होते हैं ६० हे मुने जिन्होंने परमात्मा का

तत्व जाना है ऐसे जो संतजन हैं सो आत्म ज्ञान बिना और देवता का पूजन नहीं कर
तेहैं जो करते हैं तो भी बालकों की क्रीडा समान करते हैं ५१ हेब्रह्मन् आत्मा ही देवता
है सोही भगवान शिव है और जगत का परम कारण है सो ज्ञान करके पूजने योग्य है
सो सर्वदा जानने योग्य है ५२ हेमुने तूं इस आत्मा कों चैतन्यता के आकाश कों मान
और अविनाशी जान जीव कों जान आपने स्वभाव कों जान सोही पूजनीय है पूजने यो
ग्य का आत्मा है उसकों जानना ही उसका पूजन है ५३ हेमुने यह देह देवता का मं
दिर है और जीवही शिव रूपी देवता है अज्ञान रूपी निर्मल्य कों त्याग करके सोहं भाव
करके पूजन करे सोहं भाव क्या कहिये सः शिवः अहं सो शिव मेंहों ५४ श्रीवसिष्ठजी
का प्रश्न ॥ हेमहाराज चैतन्याकाश क्या कहिये और माया का स्वरूप यह जगत
कैसें भासता है और आत्मा के पूजनमों आत्मा के पूजन मों आत्मा को जीवादि भाव

वा॰स॰ कैसे होता है इसको तुम मेरे प्रति कहो चैतन्य ओर चैतन्यता का आकाश आत्मा ओर
२३२ जीव चैतन्य की सत्ता ओर जगत यह एक है अथवा भिन्न हैं यह भी कहो ६५ ईश्वरजी
कहतेहैं॥ हेमुने सर्वत्र चैतन्य रूप आकाश भासता है कैसाहै पारावार की मर्य्यादासें
रहित हैं जिसकी चैतन्यता प्रलय कालमों शेष रहता है आकाश कैसें है जैसें घटतें
सर्व वस्तु निकासनेतें शेष अंदर मों आकाश ही रहता है तैसेही माया सहित जगत
का लय होते संते आकाशकी न्याई एक चैतन्य शेष बाकी रहता है ६६ हेमुने जो
जो सूर्य चंद्रादिक आपही प्रकाश मान होते हैं तिन्हका प्रतिबिंब का प्रकाश अपने
मों नही होताहै जलादिक उपाधिमों प्रतिबिंब होता है ६७ हेमुने आत्मा स्वयं प्रका
शहै माया संकल्प रूप है प्रतिबिंब जीव है तिस आत्मा के प्रकाशतें जगतमो स
त्ताहै ६८ हेमुने इसी रीति करके जगत स्वप्न के ओर संकल्प के नगर जैसा भासता

वा॰ सा॰ है सो चैतन्य के प्रकाशतें भासता है इस कारणतें जगत् चैतन्य रूप है चित्का
२३३ आधार दिवाल सरीखा भिन्न नहीं है ६९ हेमुने सो आत्मा का चेतना विकार रहित हो
नेंतें और प्रतिबंध रहित होनेतें और संकल्पद्वार करके ऊरणेतें आकाश की न्याईं
दृश्य होता है सो चिदाकाश अपने चेतनेतें सृष्टि आदिमें प्रकाश होता है तिसकों
जगत कहते हैं ७० हेमुनि तिस कारण ते स्वप्ने के नगर जैसा अथवा संकल्प
नगर जैसा जौंनसा यह जगत यहां भासता है तिसमें चिदाकाशतें बिना दूसरा
कुछ कहांतें है ७१ हेमुने सृष्टि आदितें सभ कुछ जानने में स्वर्ग पातालादिक
में चिदाकाशतें भिन्न क्या है जानने वाले तत्व वेत्ता कह देवे तिसतें सर्वत्र
चैतन्य मात्र ही है ७२ हेब्रह्मन् इहां भेद कोई नही है आकाश है परमाकाश
है ब्रह्माकाश है जगत है चित् है यह सभ नाम भेद है वस्तु एकही है जैसें एक

बीज के अनेक अंकुर और वृक्ष और फल बीज होते हैं वह बीज एक रूप ही सभ में एक है दो हैं इत्यादि भेद केवल नाम मात्र है ७३ हेमुने जैसे अंतः करणके ज्ञान रूपी फ़रणा आकाश स्वप्नामें जगत् रूप करके भासता है तैसें ही जाग्रत नामा स्वप्नामें सो संवित का फ़रणा रूपी आकाश जगत रूप भासता है ७४ हेमुने इस प्रकार करके यह संपूर्ण विश्व केवल परमात्मा है और ब्रह्म है और परमाकाश है और वही सनातन देव है ७५ हेमुने तिस आत्मा रूपी देव को जानना ही पूजनहै ऐही परम कल्याण है इसतेही सर्व शुभ प्राप्त होता है सो आत्मा ही सर्गादिकका मूल आधार है तिसमें यह नाना प्रकार का विश्व स्थित भया है ७६ हेमुने तिस परमात्मा रूप देव का पूजन तें अखंड सुख फल प्राप्त होता है कैसा है किसी साधन सामग्री सें बनता नहीं है और आद अंत सें रहित है बाहिर के साधन

जो हैं कर्म क्रियादिक तिन्ह करके सिद्ध नही होणे हारा है ७७ हेमुने तुम आत्म तत्व
जानने मों सावधान हो तिस कारणते तुम्हारे कों प्रकट कहिआ है तुम मूढ लोकों सि
रीखे नाम धारी देवता के पूजन को योग्य नही हो जिसमों पुष्प धूपादिकों का महा सा
मग्री का संग्रह करणे बनता है सो वृथा है ७८ हेमुने जो पुरुष मूढ बुद्धि हैं बाल
कों की न्याई जिन्हके चित हैं तिन्हकों पुष्प धूपादिकों करके नाम धारी देवता की कृ
त्रिम पूजा कही है ७९ हेमुने अपने संकल्प करके किये जो पदार्थ और विधान
क्रम है तिन्ह करके नाम धारी कृत्रिम देवता की पूजा करके बाल बुद्धि पुरुष
संतोषकों प्राप्त होते हैं ८० हेमुने सो मूढ पुरुष अपने संकल्प सें रचन किये द्र
व्यों करके देवता पूजन करके जो जिस देवतातें फलकों पावते हैं सो मिथ्या फ
लकों पावते हैं अखंड सुख तिन्हकों नहीं होता है ८१ हेमुने हस्त पादादि अंग

वाला जो देवता प्रजा को कल्पन किया है तहां अपने चैतन्यका संकल्प करणे बिना और सार क्या है सो तुम कहो ८२ हेमुने संसार केवल चैतन्य मात्र है इस का सार चैतन्य ही है सोही चैतन्यात्मा देव है सो सर्व रूप है जिसतें ही सर्वदा सुख प्राप्त होता है ८३ हेब्रह्मन् सो देव दूर नहीं है और दुर्लभभी किसीकों नहीं है सो सदा संपूर्ण देहों में चैतन्य सत्ता करके व्याप्त है जैसें आकाश सर्व ब्रह्मांड मों व्याप्त है ८४ हेमुने सो आत्माही कर्म करता है सो ही भोजन करता है सो ही धारण करता है सो ही चलता है सो ही श्वासकों लेता है सो ही अंतः करण कर के जानता है सो ही त्वचा करके अंगों कों जानता है ८५ हेमुने जैसें वसंतऋतु पुष्प अंकुरादि कों की इच्छा रहित है तो भी स्वभाव करके अंकुरों कों प्रकट करता है तैसेही चिदात्मातें इच्छा रहित ही जगत की संपदा स्वभाव करके प्रकट होती

वा·सा· हेमुने केते कहते हैं आत्मा की इच्छा करके भोगो के वास्ते सृष्टि होती है कितने कह
३३६ तेहैं चिदात्मा की क्रीडा की इच्छा करके संकल्प में सृष्टि होती है परंतु यह विचार कोई न
ही किसते आत्मा इच्छा रहित है उसको भोग की और लीला की कोई इच्छा नही है जैसें
सूर्य के उदय होते संते स्वभाव करके प्रकाश होता है तेसेही आत्मा की सत्ता करके ज
गतकी सृष्टि होती है ८७ हेमुने जैसे शारद ऋतुमों निर्मल चंद्रमा के संगम को पायक
रके जगत के पदार्थोंकी शोभा सर्वत्र लक्षित होती है तेसें चैतन्य रूपी चंद्रमा के बिंब
की सत्तामों संगम को पाइ करके जगत के पदार्थोंकी संपदा चैतन्य सत्ता विषें सर्वत्र लक्षि
त होती है जगत के संपूर्ण पदार्थों की संपदा का लक्षित होने की चैतन्य सत्ता ही आ
धार बनी है ८८ हेमुने जैसें रसायन का जल के सिंचनतें लोहके अनेक भार सुवर्ण
होतेहैं तेसें चैतन्य सत्ता रूपी रसायन की व्याप्ति करके जगत के पदार्थ समूहकी माला

स्वरूप करके भासती है और आनंद प्रेम आदि फल को प्राप्त होती है ८९ हेमुने जो तुम
 को ऐसा संदेह होवे कि चैतन्य सत्ता रसायन की न्याई व्याप्त होइ करके पदार्थ रूप करके
फुरे हैं तो जडता कैसे बनी है जैसें जलमो डुबे भये पदार्थका सूखने नही बने है इ
समें हम समाधान करे है दृष्टांत करके हेमुने चैतन्यकी छाया करके ही जडताभी उ
दय होती है जैसें मंदिरादिक जो हें सो सूर्य के तेज करके प्रकाश मान होतेहैं तिन्ह
के अंदर स्तंभादिकभी सूर्य के तेजसे ही प्रकाश होतेहें परंतु बाहिर सूर्य का प्रका
श प्रकट है और अंदरमों काष्ट मृत्तिका पाषाणादिको के प्रतिबंधतें सूर्य की छाया
करके अंधेरा होवे है तैसेंही चैतन्य सत्ता की व्याप्ति करके देह इंद्रियादिक भासताहै
परंतु देह इंद्रिया घट पटादिको मों चैतन्य सत्ता स्पष्ट नहीं अनुभव होती है तिन्हके
अभ्यास करके अंत करणमों जडता होती है ९० **श्रीवासिष्टजीकाप्रश्न॥हेमहा**

वा॰सा॰ राज तुमने कहा जो चैतन्य सर्व व्यापी है और सर्वगत है तो चैतन्य तो एक सिरी
३३९ षाहै उन यह देह चैतन्य मय है सो मूर्छा और निद्रा और मरणादिक मों जड कैसे
होवेहै और नेत्र श्रवणादिक के होने से अंधा वेहिरासा कैसे होता है ८१ फेर इस
देहको लोक प्रत्यक्ष अनुभव सें कहते हैं यह देह आगे चैतन्य था अब जड हो ग
याहै ऐसा कहना योग्य नही है सो कैसें चैतन्य सत्ता की व्याप्ति करके भासता है
सो चैतन्य अविनाशी है और निर्विकार है और सदा एक रसहै ८२ **श्रीसदाशिवा
जीवसिष्टप्रतिकहतेहैं॥** हेब्रह्मन् जो तुमने प्रश्न किया है सो तुम को हम
कहते हैं तुम सभकों श्रवण करो तुमने यह महान् प्रश्न किया है तुम ब्रह्मवेत्ता पु
रुषोंमों श्रेष्ट हो ८३ हेमुने इस देह मों चैतन्य सत्ता व्याप्त है और सर्व भूतों मों व्याप्त
है सो दो प्रकार करके कहीदा है एक चलायमान कही है और एक परा कही है

वा॰सा॰ सो अचल है जौनसी चलायमान है सो देह इंद्रियादिक पदार्थों मों आसक्त भई जै
३४॰ सीहै तिन्हकी उपाधि करके ज्ञाता ज्ञान कर्त्ता और भोक्ता इत्यादिक स्वभाव वाली कही
है और जौंनसी परावित है सो निर्विकल्प है और निर्विकार है इसी चित्तकों उपा
धिका भेद करके चल स्वभाव कहा है ९४ हेमुने सो चल स्वभाव चैतन्य सत्ता बु
द्धिमों अपने संकल्प करके आपही रूपांतर कों प्राप्त भयी जैसी स्थित है जैसें सुंदर
शील वाली इस्त्री अपने संकल्प करके पर पुरुष संयोग कों ध्यान करके स्वपनादिक
मों व्यभिचारिणी के स्वभाव कों अनुभव करती है ९५ जैसें कोई पुरुष क्रोध करके
दारुणमें और जैसा होजाता है तैसे यह चैतन्य सत्ता अपने संकल्प विकल्प करके
और स्वभाव जैसी होती है परंतु अपने स्वभाव कों नही त्यागती है ९६ हेमुने सो चै
तन्य सत्ता ही अपने संकल्प करके शब्दस्पर्श रूप रस गंध पंचभूत देश काल और

चौथा भुवन सप्तद्वीपादि और क्षणसें लेकर वर्ष युग कल्प प्रमाण होय करके आप ही जीव होय करके बुद्धि और मन और चित्त इंद्रिय देह रूप होती है ९७ हेमुने सो चल स्वभाव चैतन्य सत्ता मन होइ करके संसार कों अवलंबन करती है जैसें उत्तम ब्राह्मण अपने कों चांडाल मानने तें चांडाल रूपकों प्राप्त होताहै ९८ हेमुने सो चल स्वभाव चैतन्य सत्ता अनंत संकल्प वाली है अपने जडता के संकल्पों करके स्थूल रूप होती है सो जड संकल्पसें मोहकों प्राप्त होती है जैसें जल अत्यंत शीतलता करके पथर भावकों प्राप्त होता है ९९ हेमुने सोही अपने संकल्प सें भई हुई भय दृष्टिमों भीत होइ करके पलायन करती है जैसे पुरुष निर्जनस्थान मों वन मों अंधकार मों अपने संकल्प सें कल्पन किये वेताल सों भय करके पलायन करता है ३०० हेमुने जैसें ऊटनी कंडे वाले और कडूये पत्रों कों चाबतीहै और अत्यंत मीठे जानती है तैसें दुःख मय विषयों को

सुख करके मानती है १ हेमुने सोही अपने संकल्पके वेगसों भय भीत होतीहै जै से गर्धभी अपने वोलने के शब्द सें भय भीत होय करके भाग जाती है हेमुने इस के तुल्य मूढ कोई नही है बाल स्वभावभी नही है और चंचल स्वभाव भी नही है और निर्बलभी नही है २ हेमुने सोही अपने को दुःखी मान करके झूठे विषय सुखों का संग्रह करतीहै कैसीहै मानों स्वप्नकों प्राप्त भई है मानो मदोन्मत्त है मानो मोह करके मूर्छित भई है ३ हेमुने यह चैतन्यसत्ता अपने संकल्पकी उपाधि करके इस प्रकार चंचल स्वभाव भई है वास्तव विचारे तो इसमों दृश्य और दर्शन और द्रष्टा यह भेद कोई नही है जैसें पत्थरमोंतेल नही है कर्म और कर्त्ता और क्रि याभी नही है जैसें चंद्रमा मों श्यामता नही है प्रमाण करण द्वारा प्रमाण कर ता योग्य और प्रमाता यह भेदभी नहीहै जैसें आकाश मों अंकुर नही उगे हैं। ४

वा॰सा॰ चेतना और चेतने योग्य और चेतन करणे हारे का भेदभी नही है जैसें स्वर्गके नंद
३४३ न बागमों खदिर वृक्ष नही होताहै और हम तुम इतर पुरुषका भी भेद नही जैसेंग्रं
बरमों पर्वत भाव नही होताहै देह रहित और देह सहित यह भेदभी नही है जैसें क
जलमों शंख जैसी श्वेतता नही होतीहै ५ अनेक रूपता और एक रूपताका भेद नही है
जैसें अणुमों सुमेरु नहीहै शब्द और और शब्द का अर्थका भेदभी नही है जैसें रेती मों
लता नही होतीहै नास्ति और अस्तिका भेद नहीहै जैसें सूर्य मंडलमों रात्रि नही है
और वस्तु और अनही वस्तु यह भेदभी नही है जैसें तुषार मों उष्णता नही है और शू
न्यता और अनही शून्यताका भी भेद नही है जैसें आकाशमों महा आकाश नही है ३०९
हेमुने जौनसी निर्विकल्प चेतन्यसत्ता है सो सर्व गत है और एक स्वभाव है और नि
र्मलहै सभकों प्रकाश करतीहै सर्वतेजो को मशाल सिरीषी प्रकाश करणे हारी है ३०६

वा॰सा॰ जो निर्विकल्प चैतन्यसत्ता है सो अपने ही चेतनेतें चिद्भावको प्राप्त भई है सोही च
२५४ लस्य भाव वाली चैतन्यसत्ता चित्त भई है जैसें साधु पुरुष दुष्ट जनों के संग होनेतें असा
धु जैसा होताहै ३॰८ सो निर्विकार चित्सत्ता उपाधि करके विकार युक्त भासती है उपाधि बि
ना शुद्धही है जैसें सुवर्ण मल करके तांबा की न्याई होताहै मल जलावनेतें शुद्ध सु-
वर्ण होताहै ९ इस शुद्ध चित्सत्ताका अभाव जाननेतें संसार प्रतीत होताहै और केवल
शुद्ध चित्सत्ता जाननेतें असत्य रूप संसार शांत होताहै १॰ हेमुने इस चित्सत्ताकों संसा
र दशामें चलाओनेको रथ रूपी जीव भावहै जीवकों संसारमें प्राप्त करणेकों अहंकार
रथ रूपहै अहंकार का बुद्धि रथ रूपहै और बुद्धिका मन रथ रूपीहै और मनका इंद्रि
योंका गण रथ रूपीहै और इंद्रिय गणकों प्राण रथ रूपी है प्राणकों स्थूल देह रथ
रूप है और स्थूल देहकों अश्व वृषभादि कों करके चलने हारा काष्ट रचित रथहै ११

वा·रा· हेमुने इस रथकी गति कर्म हैं जरा और मृत्यु इसके पिंजरा रूप हैं इस प्रकार कर
३८५ के यह संसार चक्र प्रवृत्त होता है १२ हेमुने इस संसार चक्रका मुख्य प्राणही रथ कहा
है मनके संकल्प विकल्प कल्पना का मूल रथ प्राण है प्राण करके ही मन प्रवृत्त हो
वे है यहां प्राण पवन है तहां ही मन प्रवृत्त होताहै यही जीव रूपी पंछी को जरा म
रणमों भ्रमाओने वाला चक्रहै १३ हेमुने पवन संकल्प बिना आकाशमों लीन भये संते
संकल्प रहित भये संते प्राणभी नहीं प्रवृत्त होता है जैसे तेजके अभाव भये संते रू
प नहीं दृश्य होता है १४ हेमुने चित्तके फुरणे का और प्राणकी नाड़ियोंमो प्रवृत्त हो
नेते मन द्विगुण होय करके प्राण मार्गमों प्रवृत्त होताहै १५ हेमुने सो चित्त सत्ता चित्त
मों ज्ञान रूप करके फुरे हैं सो इस देहमों सर्वत्र है प्राणके प्रवृत्त होनेतें क्षोभ को
प्राप्त होती अनुभव होती है १६ हेमुने परमात्माने देह रूपीगाड़ियों के खेंचने निमित्त

मन और प्राण इन्द्र काम करतो वाले जीतने के वेलस्थान मों अधिकारी किये हैं १७ हेमुने सूक्ष्म शरीर पवन रूप होय करके उठावता है हृदय मों स्थित है भूतकी न्याई भ्रमावता है तब शरीर कों जीवता कहते हैं १८ हेमुने जब सूक्ष्म शरीर क्षीण होताहै तो चित्त शून्य होजाताहै तब इस देहकों मृत भया कहते हैं १९ हेमुने इस प्रकार करके अनेक देह धारियों के देह जन्म मरण कों प्राप्त होते हैं इनमों शोक और आश्चर्य नही मानने २० हेमुने चैतन्य सत्ता रूप समुद्रमों यह अनेक देह रूपी बुद बुदे फुरे हैं ऐसेही अथवा इन्ह देहों से विलक्षणहैं तिन्हकों विचार वान पुरुष अहंता और ममता करके शोक हर्षकों नहीं करते हैं २१ हेमुने जो पदार्थ अपने संकल्पसें रचन किया है सो संकल्प के त्यागेतें क्षय होता है जैसें मनके मनोरथ की रचना है जैसें गंधर्व नगर फुरे हैं वास्तव जाननेतें लय हो जाते हैं २२ हेमुने जैसा संकल्प करने मों खेद होता है तैसा संकल्प त्यागने मों खेद नही है संकल्प

वा॰ सा॰ का यक्ष और गंधर्व पुर यह दोनों संकल्प के उदय में सृष्ट भये हैं संकल्प क्षय में नहीं २
२४८ रहते हैं २३ हे मुने पुष्ट भये केवल मनके संकल्प करके यह संसार दुःख प्राप्त भया है
तिस संकल्प के क्षय करणेमें कौनसी दीनता है २४ हे मुने मनुष्य अल्प प्रमाण संकल्प
करने करके दुःखमें मग्न होताहै और किंचित्मात्र भी संकल्प नहीं करे तो अखंड सुखकों
पावे हैं २५ हे मुने जब लग तेरी बुद्धि संकल्प रूपी अजगर सर्पसें नहीं छुटी है तब लग तेरे
को कल्पवृक्षों के बगीचामें भी आनंद नहीं होवेगा २६ हे मुने जैसे पवनों के वेग करके व
र्षाऋतु के बदलों के उड गये संते शरदऋतु में आकाश निर्मल होताहै तैसें तूंभी विवे
क रूपी पवन वेग करके अपने संकल्प रूपी बादलोंकों उडाइ करके परम निर्मलता कों
धारण कर २७ हे मुने संकल्पों की नदी महा प्रचंड प्रवाह वाली है विवेक सहित मन
करके सुकाइ करके तिसमें बहे जाते अपने आत्मा को सावधान करके मनके संकल्पोंसें

रहित होजावो २८ हे मुने यह तेरा मन संकल्प रूपी पवन करके रुके उराणो पत्रके और तृणके समान उड़ता है तिसको त्याग करके चैतन्य स्वरूप आत्मा को आश्रय करके स्वस्थ होवो २९ हे मुने जैसे संकल्प उदय करके गंधर्व नगर फुरे है और संकल्प के आभास के क्षय होनेते क्षीण होताहै तैसें संसारका भ्रम संकल्प के उदयतें फुरहै संकल्प के लयतें लीन होता है ३० हे मुने तुम ऐसी भावना करो की मैं एक अद्वितीय आत्मा हूं ऐसी भावना करके युक्त होवे तो तुम केवल आत्माही हो ३१ हे मुने जो कछु स्थूल सूक्ष्म जड़ चैतन्य प्रत्यक्ष और परोक्ष दृष्ट होता है श्रवण होता है मन करके वाणी करके चिंतन में कहने मों आवे है सो संसर्ग एक अद्वितीय शिव रूप है कैसाहै शांतहै और वाणी के कहनेसें परे है ऊंकारकी चौथी मात्रामो है सोही परम गति है ३२ श्रीवाल्मीकीजी भरद्वाज प्रति कहते हैं॥॥ हे भरद्वाजजी शिवजी इतना बचन कहते भये तदनंतर परम पदमों विश्रांति को प्राप्त

करके मुहूर्त मात्र मौन को धारण करते भये कैसे हैं शिवजी निर्मल ज्ञान दृष्टि उन
हे परमपद कैसा है सर्व विकार के परिणाम से परे हैं और शांत शब्द है नाम जि
सका ऐसे जो सदा शिवजी वसिष्ठजी करके सहित स्थित होते भये वसिष्ठजी कह
तेहैं हेरामजी सदा शिवजी क्षणमात्र ध्यानमों मग्न होय करके नेत्र कमलों को नि
मीलन करते भये परमपद को आनंदमों स्थित होय करके मेरे सन्मुख नेत्र कमलों
करके देखते भये फिर मेरे प्रति वचन कहते भये सदा शिवजीका बचन (हेमुने हे
अपने मनके संकल्पादिको कों त्याग करके आत्म सत्ता को मनमें प्रमाण कर आत्मस
त्ताको अर्थ जान करके धारण कर अनर्थ रूपी संकल्प कों त्याग कर जैसें पवन आप
ने वेग करके पुष्पोंकी सुगंध लेताहै ४॰ हेमुने परमात्म विचार करके शांत भये संक
ल्पोंको नहीं शांत भये संकल्पोकों परित्याग करना हे याते तूं धीर बुद्धि है आत्म स्वरूप

वा॰ मा॰ को देखने हारा बन इसमें संशय नहींहै ४१ हेमुने ब्रह्मा और विस्नु और हर इनसें
२५॰ लेकर जेते देवतादिक हैं सो सभही परमात्मासें प्रकट भयेहैं जैसें समुद्र सें जलके
बिंदु प्रकट होतेहैं ४२ हेमुने सो सभही भ्रम मात्र स्वरूप है परमात्माते प्रकट भये हैं
स्थित भये है तोभी भ्रमके बीजहैं संसाररूपी कल्पनाके जाल के करनेहारे ४३ हेमुने
यह अविद्या परमाकाश में हजारों तरेसे उदय होतीहै कैसीहै वेद और वेदों के अर्थ
के भेद वाली है यथार्थ और अयथार्थ का भेद बुद्धि करके जीवोंकों बंधन करने
वाले मोह जालकी जड़ोंकी मालाहै ४४ तिसकारणतें यह अविद्या अंत रहित है
वार वार उदय होतीहै अपने देशकालकों सिद्ध करतीहै इसका क्रम केवल नाम
मात्रसें कहीदा है ४५ हेमुने ब्रह्मा विस्नु रुद्रादिकों कों परमात्मा परमेश्वर जो है
सो प्रकट करने का पिताहै तत्व वेत्ता पुरुषोंने मानिआहै सोही मूलका बीज है

जैसें पत्तोंका महा वृक्ष मूल कारण होताहै ४६ सो परमात्मा सूर्यकी न्याईं स्वयंप्र
काशहै सभकों सत्ता देने हाराहै तत्ववेत्ता पुरुषने सोही वंदना करने योग्यहै और
पूजने योग्यहै तत्ववेत्ता कों सदैव प्रत्यक्षहै बालक विषय सोहीहै सर्वकालमों सर्व
त्र उदय भयाहै ४७ हेमुने तिसका नातो आवाहन है ना उसका मंत्र है और पूजा
की विधिभी कोई योग्य नहीहै ऐसे परमात्माकों सदैव आवाहन बनिया है जिस
कारणतें सो सर्वव्यापी है सर्वांतर्यामीहै सर्वत्र प्राप्त होने वालाहै आपही चैतन्य
रूपहै ४८ हेमुने तत्ववेत्ता पुरुष जौंनसी जौंनसी दशाकों पावतेहैं तिस तिसतेंही आ
नंद रूप आत्माके स्वरूपकों पावतेहैं जो कछु रूप करके दृष्ट होताहै और श्रवण हो
ताहै मनके संकल्पमों आवैहै सो सभ परमात्मा स्वरूपहैं ४९ हेमुने तत्ववेत्ता पुरुष
इस परमात्माके स्वरूपको सर्व[illegible] देख करके सदा सुखी होतेहैं वह कैसाहै स्वरूप

वा॰सा॰ जन्म जरामरण शोक भयको दूर करने हाराहै तिस पुरुषको अग्निमें भूंजे बीजा॰
२५२ की न्याई फेर जन्मका अंकुर नहीं होताहै ५॰ हेमुने सो परमात्मा देवतत्व वेत्ता पुरुषों
ने आपना सदा आत्मा जानाहै बाहिर ब्रह्मांडमें अंदर अपने हृदयमें सर्वकाल अनेक
प्रकार क्रम करके पूजा जाताहै ५१ हेमुने हेमहा वुद्धे बाहिर स्थूल मूर्तिमें जब लग
जिस प्रकार करके सो देव जिस प्रकार पूजित करा जाताहै तिसको भी तुम हमारे से
श्रवण करोगे ५२ हेमुने जेते पूजा के क्रमहै तिन्ह सभमें देह रूपी मंदिर पवित्र चाहि
ये तिसकारणतें देहमें ममता अहंकार का तिसको त्याग करके परमात्मा देव पूजने
योग्यहै ५४ हेमुने तिस आत्माका ध्यान करणाही पूजनहै और तिसका पूजनका क्रम
कोई नहींहै तिस कारणते त्रैलोक्य का आधार रूपी आत्मा को नित्यही ध्यान करके पूज
न करे ५५ हेमुने सो देव सर्वत्र चैतन्य रूपहै सर्वत्र लक्षित करणे योग्य प्रकाश स-

रूपहै सभको प्रकाश करने हाराहै अरु सभके अंतःकरणमों अंतर्यामी रूप करके चिदात्मा प्रकाश है जिस करके सो चिदात्मा अहंकार सरीरादिकमों सभका सार बना है तिसकी सत्ता करके अहंकारादिक सरीरादिक कों वर्त्तमान हैं सोही सभका सार है ५६ हेमुने सो मर्यादा रहित परम आकाश रूपहै अति विस्तार करके पृथिवी आकाशमों परिपूर्णहै अंतमें रहितहै सभसें नीचे पाताल रूपी आकाशमों जिसके चरण कमलहैं ५७ हेमुने अंतसें रहितहै ऐसा दश दिशा मंडलमों परिपूर्ण भयाहै भुजा मंडल जिसका नाना प्रकारके देखनेमों महा प्रमाण वाले महा तेजवाले शस्त्र ग्रहण किये हैं जिसने ५८ हेमुने जिसके हृदय कमलके एक कोणमों अनेक ब्रह्मांडोंके समूह आपसमों स्थितहैं प्रकाश करणेका परम कारणहै आकाशकी न्याई मर्यादासें रहित है उदारहै स्वरूप जिसका ५९ हेमुने जिसके नीचे और ऊपर और चारों दिशा चारों विदशामों निरंतर

नि॰
वा॰ प्र॰
३५४

ब्रह्मा इंद्र विष्णु शिवादिक देवता गण शोभायमान हैं ८९ हेमुने यह जितनी ब्रह्मांड
में भूतों की मंडलीहै सो सब जिसकी रोम मालाहै और नाना प्रकार के स्वरूप करणे
हारियां और त्रैलोकको बंधन करणेहारी जिसकी अनेक इच्छा शक्ति क्रिया शक्ति
ज्ञान शक्तिसें लेकर शक्तियां जाननियां ९० हेमुने यही समका परम देवहै संतजनोंमें
यही सदा पूजनीयहै चैतन्यसत्ता मात्र करके अनुभव स्वरूपहै और सर्वगतहै सभका
आधारहै और घड़ेमें वस्त्रमें गर्तमें कंदरामें गाड़ीमें मनुष्यमें सत्ता करके स्थित
है ९२ यही शिवहै यही रुद्रहै यही ब्रह्माहै यही विष्णुहै यही इंद्रहै यही कुबेर है
यही यमहै यही अनेक प्रकारकी नाम संज्ञाका आधारहै और केवल सत्तामात्र शरी
रहै ९३ हेमुने संपूर्ण जगतके जालकों विवर्जित करणे वालाहै और काल भगवा
न इसका द्वारपाल है यह पर्वतों करके चौथाभवनों करके युक्त संपूर्ण ब्रह्मांड

नि॰ वा॰ सा॰ १८५

मंडल इसके देहके एक किनारेमें स्थितहै कोई एक अंगके अंश मात्रताको प्राप्त भया है ६४ हेमुने तिस देवको इस प्रकारसें चिंतन करें अनेक कर्ण नेत्र युक्तहै अनेक शीर युक्तहै अनेक भुजा करके शोभितहै सर्वत्र देखनेकी शक्ति युक्तहै सर्वत्र सूंघने की शक्ति युक्तहै सर्वत्रस्पर्शकी शक्ति युक्तहै सर्वत्र रस ग्रहणकी शक्ति युक्तहै सर्व शास्त्रकी शक्ति युक्तहै सर्वत्र शास्त्र श्रवणकी शक्ति युक्तिहै सर्वत्र मनन शक्ति युक्ति है ६५ सर्व प्रकारतें मनके मनन क्रियातें परेहै सर्व प्रकारतें मनका परमानंद रूपहै सदैव सबका कर्ताहै संपूर्ण संकल्पके फलोंको देने हारहै सर्व भूतोंकी अंतःकरणकी अवस्थामें स्थितहै सभहीको सर्व प्रकारतें साधन करने हाराहै ६६ हेमुने इस प्रकारके तिस देवको ध्यान करके तदनंतर विधि करके पूजन करे इसके पूजा विधानको ब्रह्मवेत्तामें श्रेष्ठ तुम हमसें श्रवणकरो सो यह देव आप

नि॰ वा॰ सा॰ ३५६

ने स्वरूपको जानने मात्र स्वरूपहै सो पुष्प धूपादिकों करके पूजित नहीं होताहै दीप करके अन्नदानादिकों करके चंदन केसर कपूर कस्तूरी आदिक लेपनतेंभी पूजित नहीं होताहै ६७ हेमुने नित्यमति क्लेश रहित होय करके अमृत रूप अपना आत्मस्वरूपके लाभतें पूजित होताहै यही इसका परम ध्यानहै यही इसकी पूजा कही है जो निरंतर अंतः करणमें शुद्ध चैतन्य मात्रकों जानना ६८ हेमुने तत्त्ववेत्ता पुरुष देखताहै और श्रवण कर्ताहै स्पर्श कर्ताहै सूंघता है भोजन कर्ताहै चलताहै शयन करताहै श्वास लेताहै बोलताहै त्याग करताहै ग्रहण करताहै संपूर्ण कर्म करता हुवा शुद्ध चैतन्यमात्र होवे ऐसे ध्यान रूपी अमृत करके पूर्ण होवे आपही अपने आत्माकों ईश्वर जाने ६९ हेमुने ऐसे ध्यान रूपी अमृतके स्वाद युक्त होने करके पुष्प धूपादिकसें रहित होने करके आत्म स्वरूपकी पूजा होतीहै हेमुने ध्यान

करण और अर्घ देना और पाद्य देना सो सब शुद्ध चैतन्यका जाननाहै ध्यान करने
जाननाही पूजाका पुष्पहै यही संपूर्ण ध्यानोंसें परे ध्यान है समस्त क्रिया तिस देव
कों अर्पण करणाही पूजनहै ७० हेमुने ऐसे पूजन विना सो देव कदाचितभी प्रसन्न
नहीं होताहै तिसके ध्यानतें पुरुष परमानंद रूपी प्रसादकों प्राप्त होताहै संपूर्णभो
ग सुखोंकी संपदाकों प्राप्त होताहै ७१ हेमुने यह जीव रूपी देवता देह रूपी गृहमें
ऐसे ध्यान करके आनंदको भोगताहै इसप्रकार क्षणमात्रभी आत्माका पूजन करेतो
मूढ पुरुषभी गोदानके फलकों पावताहै और जो दो घड़ी प्रमाण पूजन करे तो अश्व
मेध यज्ञके संपूर्ण फलकों भोगताहै ७२ हेमुने ध्यान करके पुष्पादिक मानसी
पूजा एक घड़ी मात्र करे तो राज सूययज्ञके फलकों भोगताहै और मध्यान्ह काल
पर्यंत पूजन करे तो लक्ष राजसूय यज्ञके फलकों भोगताहै जो पुरुष संपूर्ण

दिन भजन करे तो परमपदकों पावताहै यही परमयोग है अरु यही परम क्रिया है ७३ हेमुने यह सभसें उत्तम बाह्य भजन कहाहै यह परम पवित्रहै अविद्याके अंत करने का परम कारणहै इस करके जो अविद्याकों नर जावे तिस पुरुषकों संपूर्ण देवता असुर यक्ष गंधर्व मनुष्योंके समूह तिसकों हमारे स्वरूप जान करके भजन करते हैं सो पुरुष परम पदकों प्राप्त भया जानना ७४ हेमुने जौनसा भजन पवित्रकरणे हारेसें भी पवित्र है जो संपूर्ण पाप अविद्याके तमकों नाश करणे हाराहै सो अंदर का भजनहै तिस्कों अब हम तुमको सुनावते हैं ७५ यही आत्मचिंतन रूपी पूजा संतजनोंने चलते हुवे स्थित हुवे जागते हुवे शयन करते हुवे नित्य करीहै तिसमें अंतः करण में स्थित भये शिवरूप परमेश्वरको सभकी प्रतीति करणे हारेकों आपने आत्मा कों आपही ध्यावे ७६ हेमुने देह लक्षण वाले लिंगोंमें शांत रूप स्थितहै और भ्रांति

कादिक लिंगोंसें रहितहै और प्रतिमा मूर्तिसे वर्जितहै ऐसे ईश्वरकों जैसा अपने॰
कों शुद्धबोध होवे सोही जिसका लिंग रूपहै ध्यानमों लीन होनेते रहित है और ध्या
नसें चित्त वृत्तिके उच्चाटन रहितहै ऐसे आपने आत्मा देवता रूप जान करके पूजा क
रे ७७ हेमुने आपने देहमों ज्ञानरूपी जो आत्माका प्रकाश है तिसकों यही देवता है
ऐसी भावना करे मेरेकों अनेक प्रकार कियां मन करके नेत्रों करके चिंतन करियां
और देवियां जो शक्तियां हैं सो नाना प्रकार वालियां निरंतर सेवन करतियां है जैसें
सुंदर अनेक प्रकार के भूषण युक्त कामनियां सुंदर पुरुषकों सेवती हे ७८ हेमुने
मनतो मेरा द्वार पालहै वुह कैसाहै त्रैलोक्य मेरेको निवेदन करताहै परमार्थकी
शुद्ध चिंता मेरी द्वारपालनी है और बुद्धि मेरी आपनी शक्तिहै और क्रिया शक्ति मे
री दूसरी स्त्रीहै और नाना प्रकारके ज्ञान मेरे अंगोंके भूषणहै और पंचतत्वोंने दियां

नि॰ और कर्मेन्द्रियों सहित मेरे देह रूपी मंदिरके द्वारहै ७८ यह मैंहूं यह सो पुरुषहै
वा॰सा॰ इस प्रकार करके अनंतरूप है और भेदसें रहित स्वरूपहै जिसका एक आनंदसे पू
३ उ॰ र्णभयाहै स्वरूप जिसका और अपनी सत्ता करके सभको पूर्ण करतो हुवाहै ऐसा मैं
स्थित भयाहूं ७९ हेमुने सो देव इस प्रकारकी आत्म सत्तामें स्थितहै अपने स्वरूपके आ
रण रूपी देवी शक्तिकों आश्रय करके देवता भाव करके पूर्ण होय करके स्थि
तहै और दुःखदीनतासें रहित स्वरूप करके इस्थित है ८१ सो देव प्रसन्न नहीं होताहै
उदय नहीं होताहै संतुष्ट नहीं होताहै अरु क्रोधीभी नहीं होताहै तृप्त नहीं होताहै
क्षुधाकों नही जानताहै चलताभी नहीहै वांछाभी नही करताहै त्यागभी नही करता
है ८२ हेमुने और सभमें एक समानहै सभके समान आधार युक्तहै सभके समान
निवास युक्तहै सभके समान आकार युक्तहै निर्मलता करके सोम्यता युक्तहै अरु सभ

प्रकार करके सर्वत्र सदेव सुंदर आशाय युक्तहै ८२ पिपीलका से ब्रह्मांतकर सर्व जीवों मों एक सोहीहै सर्वब्रह्मांड मों जिसकी ज्ञान विचार वाली मति काहीबी किसी प्रकार करके भी कदाचितबी विछेदकों नही प्राप्त होतीहै ८३ और दीर्घसे भी दीर्घ देवता पूजनको भी निरंतर करताहै आपनी चैतन्यता युक्त देह इसका देवताहै तिस देह रूपी देवताको जैसा भोग्य वस्तु प्राप्त होवे तिस वस्तु करके सर्व प्रकार करके पूजन करताहै ८४ हेमुने तिस कारणातें तिस देवताकों सभ प्रकारकी सम बुद्धि करके चैतन्य मात्र देवताकों देवताकी न्याई जैसा प्राप्त भया क्रम करके सर्व प्रकारके अर्थ करके पूजन करे ८५ हेमुने इस पूजनमों नवीन वस्तुके निमित्त संग्रह के थोड़ाबी यत्न नही करणा जैसा भक्ष्य भोज्य अन्नपान अनेक प्रकार ऐश्वर्य करके युक्त शयन और सवारी जैसी मिले तैसी सुंदर अन्न पानके भोगकी सामग्री के विलास करके पूजन करे ८६ हेमुने स्वच्छ प्राप्ति ।

करके पीडा प्राप्ति करके चिंतारोग करके मोह भय करके संघर्ष उपद्रव दुःख करके
जैसा होवे तैसे करके आत्माकों संबोधन करके पूजन करे ३७ हेमुने जैसी जगतकी मर्यादा
जीवन स्वभादिक चेष्टा प्राप्त होवें दारिद्र अथवा राज जैसा माया प्रवाह करके प्राप्त होवे
वे तिस संघर्ष करके आत्माका पूजन करे ३८ हेमुने नाना प्रकारकी देह मन इंद्रियोंकी
चेष्टा रूपी पुष्पों करके शुद्ध चैतन्य रूप आत्माकी पूजा करे नाना प्रकारके कलह और नाना
प्रकारके विलास करके युक्त इस्त्रियों के विहारों करके शत्रु मित्रोंके रागद्वेषों करके सौम्य
रूप आत्माकों पूजा करे ३९ हेमुने संतजनों के हृदयमों प्राप्त भई चंद्र किरणां न्याई शी
तलहै और मधुर बोलना जिसका धर्महै ऐसी सर्व भूतोंकी मैत्री करके सर्वांतर्यामी आ
त्माकों पूजाकरे ४० हेमुने पापकर्म और पापीजनोंका त्याग रूपी उपेक्षा करे दीन दुःखी
जनोंमों दया रूपी करुणा करके पुण्यवान जनोंमों हर्ष रूपी मुदिता करके और शुद्ध

नि॰ भई शुद्ध आचार प्रहानि करके और आत्म स्वरूपके बोध करके आत्माकी पूजा करे ४०१
वा॰सा॰ हेमुने निषेध रहित जो भोगहैं तिनके सेवने करके और निषेध वाले भोगोंके त्याग क
९८ रके सदा बोधयुक्त आत्माकों पूजन करे २ हेमुने जो जो भोग पदार्थ नष्ट होजावे तिसके
त्याग करके जो जो भोग प्राप्त होवे तिस तिस ग्रहण करके और सदा सर्वदा एक रस कर
के आत्माका पूजन कहाहै ३ हेमुने सदैव इष्ट चेष्टामें और अनिष्ट चेष्टामें एक समान दृ
ष्टि धारण करणी ऐसी आत्म पूजाके व्रतकों धारण करे ४ हेमुने जो जो इसको शुभ प्रा
प्त होवे अरु जो जो अशुभ प्राप्त होवे तिस तिस सभकों केवल आत्माके अधीन करे ४०५
हेमुने जौनसा विषय भोग अंत पर्यंत शुभ होवे और जो अंतकाल पर्यंत दुःखदायीहै तिस
संपूर्णोकों सम जाने इस प्रकार आत्म पूजाका व्रत धारण करे ४०६ यह मैंहूं सो मैंहूं यह
मैं नहीं इस प्रकारके विभागका त्याग करे सभही ब्रह्महै ऐसे निश्चय करके आत्मा की

नि॰ पूजाका व्रत धारण करे ४७ हेमुने चाहे पदार्थका त्याग करे और अन चाहेका भी त्याग
वा॰ सा॰ करे और दोनोंको एक समान करे इस प्रकार करके आत्माकी पूजा करे ४८ हेमुने ना किसी
६४ की वांछा करे ना किसीका त्याग करे सभकों देव गती करके स्वभावतें प्राप्त भयेकों जाने जै
सें नदीओंके जल समुद्रके साथ मिलतेंहैं तैसें भोग भूमिका मिलतीहै इसमों तुच्छ बडी व
स्तु विषें उदासीन नही होना ४९ हेमुने जगतमों अनेक पदार्थ उदय होतेहैं और पतित भी
होते हैं देशकाल और क्रिया योगतें जो कछु शुभ अशुभ प्राप्त होतेहैं अरु नष्ट होतेहैं जेसें
आकाशनाश वृद्धिकों प्राप्त नही होताहै तैसें असंग रहे रागद्वेषसें असंग रहे यह आत्मपू
जाके व्रतकों धारण करे ४९ हेमुने यह आत्माके पूजनका विधान कहाहै इसमों जेसा आ
त्मा कहिआहै तिस प्रकार करके विधि करके आत्माकी पूजा करे एक आत्मस्वरूप के आ
नंद रस करके एक रस भावना करे खटा और कडुआ और तीक्ष्ण और कचला और

मीठा और सलूना और रस सहित और रस रहित यह इंद्रियों के जानने योग्य रसोंकी भावना नही करे एक ज्ञानामृत करके एक रस होवे ५११ हेमुने तिस चैतन्य स्वरूपके ज्ञानामृतकी एक रसता करके सभही क्षण अमृतमों होजाताहै इसमों मन लीन होवे तो विकार रहित होताहै क्लेश दुःखसें रहित होताहै यही आत्माका पूजन कहाहै १२ हेमुने जैसें समदृष्टि पुरुषने पूर्ण चंद्रमाकी न्यांईं आत्मज्ञान करके पूर्ण होनें योग्यहै तैसें निर्मल होने योग्यहै स्वरूपानंद करके पूर्ण होने योग्यहै सर्वज्ञहोइ करकेभी पाषाणकी न्यांईं संसार दशामों जड़ होना योग्यहै अंतः करणमों निर्मल होना योग्यहै और बाहिर मूढोंकी न्यांईं संसार कार्यमों आसक्त होने योग्यहै ५१३ हेमुने सो पूर्ण ज्ञानी लोकव्यवहारकी रंजना रूपी मलसें मुक्त होताहै ज्ञान करके पूर्ण होताहै और आत्मा की उपासना करताहै १४ हेमुने तुम देशकालकी क्रिया करण क्रम करके उदय भये

संपूर्ण वस्तु समूहके सबदुःखों के अर्थों कारके रहित छोड़ करके अपने शरीरको वे तने द्वारे सर्वात्मा ईश्वर कों नित्यप्रति भजन करो और सदा शांत भई समस्त आशा जि सतें ऐसी बुद्धि करके सावधान रहो ४१५ हेमुने आत्मा समही कार्य कारण भेदसें रहि तहै और इंद्रिय मनके व्यवहारसें परेहै अंतःकरणमें चित्कला करके व्यासहै तिस कों भज्य भजक भाव कहांहै परंतु यह भ्रम तिसमें कहांतें उदित होताहै यह कथ न मात्रहीहै ४१६ श्रीवसिष्ठजीका प्रश्न ईश्वरजी प्रति॥ हेमहाराज हेईशान जिस आत्मा को तुमने बुद्धि संयुक्त इंद्रियों की अदृश्यता कहीहै तो हेमहाराज फेर पुरुष तिस कों कैसे प्राप्त होतेहैं यह तुम कहो ४१७ श्रीईश्वरजी वसिष्ठजी प्रति कहते हैं॥ हेमुने तिस कों मुमुक्षुजन गुरु शास्त्रकी युक्ति करके होतेहैं तिस युक्तिकों तुम श्रवण करो जो मुमुक्षु पुरुष होताहै तिसमें अविद्या का सात्विक अंश रहताहै सो केवल सात्विक विद्याके भा॰

गवाले शास्त्रों करके और नामों करके श्रेष्ठ सात्विक विद्या करके अश्रेष्ठ अविद्याकों दूर करताहै जैसें धोबी मलिन जल करके वस्त्रकों पहिले मलीन करके वस्त्रकी मलिनताकों दूर करताहै ४९ जैसें नाल वृक्षका फल कठिन होताहै काकादि पंक्षियों करके भेदा नहीं जाताहै जब पक करके आपही पकेतो भिन्न होताहै तो काकादिक आवें अथवा नहीं आवें परंतु अकस्मात् पक्का नालफल वृक्षसे गिर पड़ा तहां अकस्मात् न कालका काक आइगया उसको फलके रसका भोग प्राप्त भया अब इस दृष्टांतकों पहिलेसें युक्तिकरके दार्ष्टांतके साथ मिलावते हैं ५० हे शुने महा वाक्य प्रमाण करके शुद्ध सतो गुणके भाग करके भई ब्रह्माकार वृत्ति करके अविद्याका पटल दूर होताहै जिसके साधन शमदमादिक है अंतः करणको शुद्ध करोगतें केवल शुद्ध सतोगुणके अविद्याके अंशहै सत शास्त्र और सद्गुरु और सतसंग और ईश्वरके नाम गुण यहभी अविद्याके सतोगुणी

अंशहै इन करके श्रवण मनननिदिध्यासन होने करके श्रेष्ठ अविद्याके अंशभागों क रके अंतःकरण कों पटकी न्यांई छादन करणे हारी तामसी अश्रेष्ठ अविद्याकों दूर कर णे वास्ते मुमुक्षु पुरुष अनेक जन्मोंसें निष्काम यज्ञ दान तप ईश्वराराधन करके पुण्य संचयतें पवित्र अंतःकरण होय करके गुरु शास्त्रोपदेश युक्ति श्रवणादिकों कों करणे नें काक तालकी न्यांई अकस्मात् अविद्या दूर भई संते ब्रह्मसाक्षात् कारकों करके चिरका ल स्थित रहतेहैं ४२३ हेमुने चिरकाल अभ्यास करके अंतःकरण शुद्ध होनेनें अविद्या पटल दूर होनेतें स्वभाव करके शुद्ध चैतन्यकों केवल आत्म विचारनें अपनेमांही स र्वगत एक रस अद्वितीय अखंड सत् चित् आनंद परमात्मा परब्रह्मकों देखतेहैं ४२४ हे मुने सो आत्मा केवल शास्त्रार्थो करके गुरोंके वचनों करके नही जानीदाहै किंतु आ त्मा बोधतें जानीदाहै साधनोंका चिरकाल अभ्यासतें और सत गुरोंकी सेवामें और सत्

शास्त्रोंके विचारतें और सतशिष्यों के उपदेशतें और सत्पुरुषों के सतसंगतें और आचार॥
अंतःकरण होनेतें अविद्याकी निवृत्तिः आत्म स्वरूपकी प्राप्ति और ब्रह्म साक्षात्कार होना॥
है केवल नाम मात्र कथातें नही होताहै जैसें दिनमें लोकोंका संचार स्वभावकरके आप
ही होताहै आत्म विचार वालेकों आत्मज्ञान और आत्मस्वरूप का लाभ आपही स्वभाव क
रके होताहै ४२५ हेमुने यही आत्माका पूजनहै इसकों जान करके जो करे सो पुरुष य
हां परमात्मा की आज्ञाके वश वर्त्ती इस लोक प्राप्त होवेहै तिस परमपदकों प्राप्त हो
ताहै ४२६ श्रीवसिष्ठजीकाप्रश्न ईश्वरजी प्रति॥ हेमहाराज यह जगतकों गंधर्व नगरकी
न्यांई और स्वप्नके नगरकी न्यांई जानतेहैं तदभी महादुःखसेंभी महादुःख देने वाले समा
येहै इस दुःखके निवृत्त होनेकी कोई युक्तिकों कहो ४२७ श्रीईश्वरजी वसिष्ठ प्रति कहते हैं
हेमुने यह जगतका दुःख वासनाके वशतेंहैं जो जगत वासनासें होवेसो वासना नष्ट॥

नहीं होतीहै और जगतका दुःखभी निवृत्त नही होताहै और वासनाते जगत हुआहै तो जगत और जगतका दुःख मृग तृस्नाके जलकी न्यांई तीन कालमों असत्य प्रतीत होताहै ४८ हेसुने इस कारणते वासना क्याहै किसकोहै वासनामों क्या तत्वहै हेसुने ऐसें समझके पुरुषने मृग तृस्नाके जलका पान करणा कहीं भी सत्य प्रतीत नहीं होताहै तैसें जगतकी प्रतीति वासना मात्र जाननी ४९ हेसुने जगतकी सत्यता मों और देह गेहादिकों की अहंता ममतामों और मृग तृस्नाके जलमों सत्य प्रतीति जो करे तिस पुरुष कों उपदेश करणे वालेकों धिक्कारहै ५० हेसुने तत्वज्ञानी विवेकी पुरुषकों उपदेश करतेहैं और बालककों विक्षिप्त पुरुषकों भ्रांति युक्त पुरुष को दुष्टकों दुर्जन संगति वालेकों उपदेश नहीं करतेहैं और जो कोई मूढ पुरुषकों उपदेश करताहै सो पुरुष सुवर्णके रंगकी न्यांई सुंदर अपनी कन्याकों स्वप्नमों देखे पुरुष

कों देताहै ४२१ वसिष्टजीश्रीरामचंद्रजीके प्रतिकहतेहैं॥ हेरामजी नीलकंठजी इतना कहकरके मेरे कों पुष्पांजलि देते संते अपने गणों करके संयुक्त आकाशकों चलता भये ४२२ हेरामजी तिस त्रिलोकनाथजी गये संते मैंभी क्षणमात्र तिसका स्मरण करके तिनका कहा देवता पूजनकों अंगीकार करता भया और लौकिक पूजनकों त्यागताभया जैसें शांत होनेवाला पुरुष लोक व्यवहार कों त्याग देताहै आत्म विचारकों अंगीकार करता है ४२३ इतिशिवगीता संसर्गाम् समाप्तम्॥ श्रीवसिष्टजी श्रीरामचंद्रजी को कहतेहैं॥ हेरामजी तदनंतर तिस कालते अब लग राही क्रम करके एकाग्र होय करके आत्माके अर्चन कों करताही रहाहूं ४२४ हेरामजी ग्रहण करण और ग्रहण योग्य पदार्थका संबंध संसर्ग देह धारी जीवोंकों एक समान है परंतु योगी जनकों आत्मस्वरूपमें सावधान रहनाही आत्म पूजन कहाहै २५

नि॰ हेरामजी धनका और बांधवोंके वियोगतें बहुत दुःख प्राप्त भये संतेभी इसी आत्मविचा
वा॰ग॰ र दृष्टिकों धारण करके हे शुभ व्रत करणेहारे तूंभी विचार कों इस प्रकार ४२६ हे राम तूं शुद्ध
४।२२ चिन्मात्र रूपहैं तेरेसें जगत भिन्न नहीहै यातें तेरेकों त्याग करणा और ग्रहण करणेकी क
ल्पना कहांहै ४२७ हेरामजी सभही चैतन्यहै ऐसे ज्ञानकों पाइ करके सुषुप्ति अवस्था की
न्याई आत्म स्वरूपमें मग्न होनेकी स्थितिकों तूं प्राप्त भयाहै परंतु अबसें लेकर स्वरूपाकार
की आसक्तिसें परे शुद्ध चिन्मात्र तुरीया वस्था स्वरूप होजाना श्रेष्ठ है २८ श्रीरामचंद्रजीका व
चन॥ हेगुरुजी आजसें लेकर स्वर्गकी वांछा में नही करता हूं और नरककों द्वेष नही क
रताहूं जैसें मंदिर पर्वत समुद्र मथनतें उपरांत अडोल रहे तैसें आत्मा स्वरूपमें एकाग्रस्थि
त रहूंगा ४२९ हेगुरुजी तुम्हारी कृपातें अब मेरा मन संपूर्ण कल्पनाके गलनेतें संकल्प
रहित भयाहै वांछाभी इस्तें गलित भईहै और उदार निश्चय युक्त भयाहै त्रैलोक्य मों॰

जेती ऐश्वर्य आनंद प्राप्तिकी प्रसन्नता होतीहै तिससेंभी अति प्रसन्न रूप भयाहै अंतः
करणमों ही आनंद रूप भयाहै उत्तमतेभी अति उत्तम भयाहैं ४२९ श्रीवसिष्ठजीका वच
न हेरामजी जो तूं केवल शरीर करके अथवा इंद्रियों करके उक्त वर्त्त मान जैसा आ
वे तैसे अर्थमों वर्त्तने हुये असंग मन करके जो कर्म करैं सो तैने नहीं कियाहै तिस
कर्मतें तूं असंगहैं ४३० हेरामजी जैसे प्राप्त होनेके क्षणमों वस्तु तुष्टि करता है तैसे
ही नहीं प्राप्त होनेके क्षणमों तुष्टिको नहीं करताहै इस जगतमों इस प्रकार करके
पदार्थकोंन नहीं भोगताहै सभही भोगतेहैं परंतु वस्तुकी प्राप्ति अप्राप्तिमों मनकों अ
संग करणेतें पदार्थ भोगनेका दोष नहीहै ४३१ हेरामजी लोकव्यवहार ऐसाहै प
दार्थ चाहनेमों जैसी तुष्टि होतीहै तैसी पदार्थकी हानीमों तुष्टि नहीं होतीहै ऐसे
क्षण सुख वाली वस्तुमों अज्ञान बालक प्रीतीकों धारण करतें हैं विवेकी जन तिसमों

नि॰ प्रा॰ सा॰ ३७४

ष्टीतिकों नही करतेहैं ४३२ जिसकी वांछाकालमों तुष्टि होतीहै तिसके सुख दुःखका ब हुता वांछाहीहै और तिसकी तुष्टि जोहै सो तुष्टिमों अंतको प्राप्त होतीहै तिसतें भोग प दार्थोंकी वांछाका परित्याग करो ४३३ हेरामजी तुम आत्मज्ञान रूपी पर्वतके उपर अब च ढेहो फेर अहंभाव रूपी महा गर्त्तमों पडेकों योग्य नहीहो ४३४ हेरामजी यहां कुछ पदार्थ फुरे नही और फुरेभी तोभी जैसा फुरा तैसा चला जाय चित्त फुरणे नही फुरणेकी प्रतीती तें रहितहोजावें तिसकों तुम वासना रहित जानो सोही समता और कोमलता कहीहै ४३५ हेरामजी जो पुरुष वासना रहित इंद्रियों करके कर्म करताहै तो विकारकों नही प्राप्त होता है जैसे आकाश पर्वतादिक प्राणियोंके उत्पत्त नाशमों क्षोभकों नही प्राप्त होताहै ४३६ हेरा मजी ज्ञाता और ज्ञान और ज्ञेय इन तीनोंकों आपनी शांत हुतिके अनुभवमों अभाव करे तो फेर जन्मकों नही पावेंगा ४३७ हेरामजी चित्तके फुरणे नही फुरणेमों संसारके उदय और

लय होते हैं तिससे वासनाके रोकनेतें और प्राणोंके संयमतें चित्तकों फुरणेतें रहित करे
हे रामजी प्राणके उदय और लय होनेते संसारके उदय प्रलय होते हैं तिस प्राणकों संय
मके अभ्यासतें उदय रहित करो ४२ हे रामजी मूढताके उदय प्रलयतें कर्मोंके उदय लय
होते हैं तिसतें गुरु शास्त्र और संयम करके मूढताकों भी दूर करो ४४॰ हे रामजी यहां चि
त्त उदय नही होवे सो अखंड स्वाभाविक सुख है सो स्वर्गादिकमों भी नही है जैसें माड़वा
के थलमों शीतल वृक्ष नही होता है ४४१ हे रामजी चित्तका उपदेश होनाही अखंड सु
ख है सो मन वानीमें कहा नही जाता है लय बुद्धितें रहित है सोना उदय होता है शांत भी
नही होता है ४४२ हे रामजी तत्वज्ञानीका चित्त चित्त नाम करके नही है सो चित्तके बल
चैतन्य मात्र है नाम करकेही चित्त है अज्ञान करके चित्त बना है ज्ञान करके चैतन्य मा
त्र है मल सहित सुवर्ण तांबा भासता है मल रहित होनेतें शुद्ध सुवर्ण मात्र होता है ४४

यो· वा· नि· प्र· २७६

हे रामजी शिलामें जैसें कमलोंका बन नही होताहै मारवाड़की रेतीमें जैसें जलका प्रवाह नही बनताहै तैसें शुद्ध चैतन्यमें प्रपंच नही बनताहै ४४४ हे रामजी परमात्मा चैतन्य मणीमें जगतके कोटी सैंकड़े हैं जैसें चिंतामणि पाषानमें जनोंके कोटी मनोरथोंके सैंकड़े रहतेहैं ४४५ हे रामजी परमात्मा चैतन्य रूपी आकाश में कोटी देह रूपी घड़े उत्पन्नभी होतेहैं नष्टभी होतेहैं तिनके बाहिर और अंदरभी चैतन्याकाश व्याप्तहै तोभी तिन्ह के साथ उत्पत्ति नाशको नही प्राप्त होताहै जैसें आकाशमें अनेक घड़े उत्पन नष्ट होतेहैं तिनके साथ आकाश उत्पन नष्ट नही होताहै ४४६ जो कछु है सो संपूर्ण ब्रह्महीहै सर्व धर्म कर्मोंसे रहितहै और निर्गुणहै और निर्मलहै और निर्विकार है और आदि अंत से रहितहै और नित्यहै और शांत है सर्वत्र सम रूपहै ४४७ श्रीरामचंद्रजीकाप्रश्न ॥ हे महाराज ब्रह्म सर्वत्र व्याप्त भयाहै जो तिसमें विकार उत्पत्ति नाशादिक धर्म नहीहैं तो यह

जगत उत्पत्ति नाश वाला कैसें भासताहै तिस जगतमों विकार कैसेहैं ४८ श्रीवसि-
ष्ठजी रामचंद्र प्रति कहतेहैं॥ हेरामजी जिसकी पहिलें स्थिति नहीहै जौनसा स्वरूप
करके और बन जाना सोही विकारादि नाम करके कहाहै जैसें दुग्धादिकों का द-
धिआदिक बन जाना ४९ हेरामजी जौनसा दुग्धादिकों का दधि आदिक बनजाना
है सो विकार कहाहै काहे तें कि फेर दूध नही बनता सोभी इहां नही बनता है।
क्यों यह जगतमों आद् अंत मध्यमों समही ब्रह्मही जानतेहैं और दूधकी न्याई विगा-
ड करके दधिकी न्याई ब्रह्मतें जगत नही बनाहै काहेतें ब्रह्म सदा निर्विकार है
जो कहे जो जैसें परिमाणूकी न्याईं ब्रह्म नित्य और निर्विकार परमाणूओंके संयोगतें
जगतकी उत्पत्ति माने तो यहभी नही बनताहै काहेतें आदि अंत विभागते रहित
ब्रह्ममों अंग अव यवोंका विकार नहीहै ५० हेरामजी ब्रह्म आदि अंतमों सम है।

नि॰ जौनसी जगत रूपी विकारता तिसमों देखतीहै सो केवल भ्रम करके फुरणा मात्र है
वा॰ सा॰ क्योंकि रज्जू विषे सर्प भ्रमकी न्याई निर्विकार ब्रह्ममो जगत भ्रम मात्रहै जैसे रज्जू के
३७८ विकारते सर्प नहीहै तैसे ब्रह्मके विकारते जगतभी नही बनाहै ५१ हेरामजी जौन
सी वस्तु आदि अंतमों एकजैसी दृष्ट होवे सो मध्य विषेभी तद्रूप होतीहै और जो
आदिमों और अंतमों नही दृष्टि होवे केवल मध्यमोंही और रूप करके रज्जु विषे सर्प
की न्याई प्रतीत होवे सो अज्ञानका विलासहै भ्रम मात्रहै तिस कारणतें यह जगत
ब्रह्ममों केवल भ्रम मात्रही प्रतीत होताहै वास्तव नहीहै ५२ श्रीरामजीकाप्रश्नवसिष्ठ
जीप्रति॥ हेमहाराज सदा सर्वदा एक अद्वितीय निर्मल परब्रह्म विद्यमान भये संते
तिसमों केवल फुरणा मात्र स्वरूप करके भ्रम मात्र प्रतीति भई तो अविद्याका उदय।
कहांतेहै जिसते यह जगत प्रतीत होताहै ५३ श्रीवसिष्ठजी रामजी प्रति कहते भये॥

हेरामजी यह सभही सर्वकालमों तत्व विचारते ब्रह्महीथा अबभी ब्रह्महै आगें फेर भी ब्रह्मही होवेगा अविद्यातो नहीहै यह हमारा निश्चयहै ५३ हेरामजी तत्ववेत्ताकों नाम मात्रही अविद्या प्रतीत होतीहै केवल भ्रम मात्रहै और असत्यहै जौनसी कदापि सत्य नहीहै तिसका नामभी भ्रममात्रही है ५४ हेरामजी जबलग मन प्रबोधकों नही प्राप्तभया तबलग ही भ्रमहै भ्रम गये बिना सेंकडें प्रबोधके उचे सुनाये शास्त्रों करके भी बोधकों नही प्राप्त होताहै ५५ हेरामजी यह जीव युक्ति करके बोधकराय करके आत्मस्वरूपमों युक्त करा जाताहै युक्ति बिना नही कार्य होताहै जो कार्य युक्ति करके सिद्ध होवे सो सेंकडे यत्नों करकेभी नही सिद्ध होताहै ५६ हेरामजी जिसकों आत्म तत्वका बोध नही भयाहै ऐसे दुष्टबुद्धि पुरुषकों जो कोई सभही ब्रह्म करके सुनावताहै सो पुरुष काष्टके स्तंभकों मित्र जान करके आपने दुःख

कों सुनावताहै ५८ हेरामजी यह अविद्याहै यह जीवहै यह संसारहै इत्यादि कल्पना का क्रम जोहै सो तत्त्व वेत्ता पुरुषोंने मूढबुद्धियोंको समझाने निमित्त कियाहै वास्तव कल्पना क्रम नहीहै ५९ हेरामजी इतना कालतक आत्मतत्त्वको नही जानताथा तिसतें मैने युक्ति करके बोध युक्त कियाहै अबतक आत्मतत्त्वको जान रहाहै तिसतें जैसा समझाताहै तिसको मैं कहताहूं ६० हेरामजी मैंभी ब्रह्मही हूं तूंभी ब्रह्मही है और त्रैलोक्यभी ब्रह्मही है संपूर्ण दृश्यकास्थानभी ब्रह्मही है दूसरी कल्पना कोई नहीहै अबतक जैसा चाहै तैसाकर ६१ हेरामजी अपने अनुभवको कहतेहैं हेगुरुजी तुम्हारी कृपाते जो जानने योग्यहै सो सभही मैंने जानाहै जो देखनाहै सोभी मैंने स्वम देखाहै अब परमतत्त्व करकेमें पूर्ण भयाहूं तेरे कहे ब्रह्मज्ञानके अमृत करके परिपूर्णभयाहूं ६२ हेगुरुजी तुम्हारा कहना अब पूर्णभयाहै यह मेरा अंतःकरणभी पूर्ण

भयाहै तत्वकी पूर्णताहोनेतें आनंदभी पूर्णभयाहै ब्रह्मसत्ता करके पूर्ण भये विद्या-
तें पूर्णतातें पूर्णता लेकरके फेरभी पूर्णता शेष रहतीहै ६२ हेमहाराज सर्वत्र पूर्णभ
ये परब्रह्मतें नीचे औरऊपर शिरसें नखाग्र पर्यंत पूर्णभये इस जीव रूपकों परमार्थ
तें पूर्णभया ब्रह्महीतें आकाशतें लेकर जगत प्रकट होताहै सोभी एक समष्टि रूप क
रके और भिन्न२व्यष्टि रूप करके भी प्रकट होताहै सोयं देवदत्तः इसका अर्थ कहतेहैं
जौनसा पहिले परके सालमों देखाया सो यह देवदत्त आज देखाहै तत्वमसीका अर्थ
कहतेहैं तत्क्या सो सर्व व्यापी सत चित आनंद रूप जगत उत्पत्तिस्थिति संहारको कर्ता
और आप अविनाशी परब्रह्म त्वंक्या तूं जीवात्मा असिक्या सदा वर्तमानहै तत्व मसी॰
इत्यादि महावाक्योंसे भया अहं ब्रह्म ऐसे ज्ञान करके मूल सहित उपाधि दूरकर॰
णेतें सर्वत्र पूर्ण भये ब्रह्म करके पूर्णभया जो जीव भाव तिसमों कल्पन करी पूर्णता

तिसके लय होनेतें तिस जीव भावकी प्रतीतासो पहिले जो स्थितभई ब्रह्म तिसकी प्र
तीता सोही शेष बाकी रहतीहै ९४ श्रीवसिष्ठजी श्रीरामजीप्रतिकहतेहैं ॥ हे रामजी कृ
ष्णभगवानजीनें कही असंगता वाली मतीकों धारण करके पांडुराजेका पुत्र अर्जुन ।
नामा पांडव मह्या मुनि नरका अवतार जीवनेकों जैसें चलावेगा तैसें तूंभी अपने जी
वनेकों सुख करके जीवन मुक्त होय करके वर्त्तमान कर ९५ श्रीरामजीकामश्नवसिष्ट
जीप्रति॥ हे महाराजजी सो अर्जुन पांडुराजे का पुत्र कब होवेगा श्रीकृष्णभगवान उ
सकों असंगताकों कैसें कहेगा इसको मेरे प्रतिकहो ९६ श्रीवसिष्ठजीकहतेहैं॥ हे
रामजी यह प्रपंच नाम करके कल्पित भया केवल सत्ता मात्र आत्माही आत्मा वि
षें स्थित भयाहै कैसाहै आत्मा आद अंतसे रहितहै जैसें आकाशमों महा आकाश।
नाम करके स्थितहै ९७ तिस निर्मल आत्मामों यह संसारका भ्रम स्थित भयाहै जे

में सुवर्णमें और जलमें कंकणादि भूषण और तरंग बुदबुदे नाम मात्र करके स्थितहैं ६७ तिस संसार रूपी जालमें देवता ऋषि यक्ष गंधर्व भूत प्रेत राक्षस मनुष्य पशु पंछी सर्प कीट तृण वृक्षादिक प्राणियोंकी चौधा प्रकारकी जाती वर्त्तमान है जैसें जालमें पंछी लगे होतेहैं ६८ तिसमें यम और चंद्रमा सूर्य इंद्रादिक देवता पांच भूतोंसें बने संसारकी मर्यादा वर्त्तमान करणे वास्ते परमेश्वरकी नियति नें लोकपाल बनेहैं ७० हेरामजी तिन्ह देवताने इस जगतमें यह पुण्यहै इसका ग्रहण करना यह पापहै इसका त्याग करना इस प्रकारकी लोक मर्यादा वेद मर्यादा करके धर्म रक्षा वास्ते कल्पन करीहै ७१ हेरामजी तिस धर्म मर्यादामें अब लग सभका चित्त हाथीके कर्णके अग्रकी न्याई चंचलहै तोभी जल प्रवाहमो कहने जैसें यथा योग्य वर्त्तमान है ७२ हेरामजी तिसमें भगवान धर्मराजा प्राणियोंका संहार करणेका

नि॰ अधिकारी है चारयुग समाप्त समय गये संते पिछला किया प्राणियोंको संहारका पा॰
वा॰ रा॰ प दूर करणे वास्ते कदाचित् आठ वर्ष कदाचित् दश वर्ष अथवा द्वादश वर्ष अथवा॰
२८४ पंचवर्ष अथवा सप्तवर्ष अथवा सोड़ा वर्ष नियम धार करके तप यज्ञ करताहै प्रजाके
संहारतें उदास होजाताहै तिसकालमें मृत्यु प्रजाका संहार नहीं करताहै ४७४ तिसकारणः
ते यह पृथिवी प्राणियोंके समूह करके पूर्ण होजातीहै जैसे वर्षा कालमें तृण लतादि
कों करके पूर्ण होतीहै जैसें हाथी मक्खियों करके घेराजाताहै ७५ इसतें उपरांत देवता पृ
थिवीके भार उतारने वास्ते प्रजाकों अनेक युक्तियों करके शुद्ध भई प्रजाकों क्षय कों प्राप्तक
रते हैं ४७६ हे रामजी इस प्रकार करके अनेक सहस्र युग पीछे चले गयेहैं अनेक जगः
तके सैंकड़े होगयेहै अनंत भूत होगयेहैं अनेक प्राणी व्यतीत होगयेहैं ४७७ हे रामजी अ
बभी जौनसा यम धर्मराजहैं संपूर्ण पितरोंका स्वामीहै तिस करके केते प्राणियोंकों ॥

लयको प्राप्त भये संते अबके युगोंमें बाराबर्ष प्रमाण यज्ञ लिये ब्रह्मचर्य ब्रत धारण हे लोकोंका संहार रूपी अपना कर्म त्यागनाहे ४७८ तिसतें यह पृथिवी प्राणीयोंके मरण बि ना मनुष्यों करके पृथिवी भारी होवेगी जैसें बहुत वृक्ष लयों करके पृथ्वी होतीहे सो पृ थिवी प्राणीयोंके भार करके पीडित भई विष्णुके शरणकों जावेगी जैसें दुखी चोरों करके पी डत भई अपने भर्त्ताके पास शरण जातीहे ४९ हेरामजी तिसतें उपरंत विष्णु भगवानजी दो स्वरूप करके पृथिवीमें उतरेंगे एक नर रूप करके एक नारायण रूप करके तिसके साथ सं पूर्ण देवता पृथिवीमें उतरेंगे ४८० एक रूप करके वसुदेवके घर कृष्ण रूपी भगवान हो वेंगे और दूसरे देह अर्जुननामा करके पांडुके घर होवेंगे ४८१ हेरामजी पांडुराजाका बड़ा पुत्र युधिष्ठिर राजा धर्मके अंशते होवेगा सो पांडुका पुत्र युधिष्ठिर चक्रवर्ती राजा होवे गा धर्म मर्यादाकों पालने हारा होवेगा ८२ हेरामजी पांडुका बड़ा भाई धृतराष्ट्र राजा होवे

नि॰ गा उस राजेका पुत्र दुर्योधन युधिष्टरका भाई होवेगा और युधिष्टरका दूसरा भाई पवन का
वा॰ सा॰ पुत्र भीमसेन होवेगा सो दुर्योधनका महा शत्रु होवेगा जैसें नोला सर्पका शत्रु होताहै ८३
४८६ सो युधिष्टर भीमादिक और दुर्योधन यह आपसमों पृथिवीका राज्य अपने अपने करणे चाहें
गे तिस राज्यके वास्ते युद्धकों करेंगे तिन्हके सहाय निमित्त अट्ठारह अक्षोणीसेना युद्ध क
रणे वास्ते आइ तियार होवेंगी ८४ हेरामजी विस्नुभगवान इस अवतार होय करके अर्जुन
नामा अपना स्वरूप नरका अवतार करके तिन्हसेनाका नाश करके पृथिवीका भार उतारेंगे ८५
हे रामजी विस्नु भगवान अर्जुन नामा अंश माया करके मनुष्य भावकों प्राप्तभया है सो
मायाके अधीन होय करके अपने बांधवोंके स्वरूपके निमित्त हर्षशोक युक्त होवेगा ८६
युद्ध रूपी अपने धर्मको त्याग देवेगा विस्नु भगवान अर्जुन नामा करके अपने देहकों स
देतना इस नाम देह करके पृथिवीका भार उतारण रूपी अपने अवतार होनेका जो कार्य

तिसके वास्ते अर्जुनकों तत्वज्ञान का उपदेश करेंगे ४९ श्रीभगवानजीकावचनअर्जुनप्रति॥ हेअर्जुन यह आत्मा जन्मकों नही लेताहै मृतभी नही होताहै फेरभी यह उत्पन्न होय करके नही होवेगा यह जन्म रहितहै और नित्यहै और अनादहै और सभसे प्रथम पुराणाहै शरीरके मारणेमो भी मृत नही होताहै ८० हेअर्जुन जो कोई इसकों मारणे हारे कों जानता है जो कोई इसकों मृतभये कों जानता है सो दोनोंही कुछभी नही जानतेहैं काहेतें यह किसी कों मारता नहीहै ना किसी करके मृत होताहै ८१ हेअर्जुन यह आत्मा अंत रहितहै और सदा एक रूपहै और सत्तामात्र रूपहै और आकाशतेभी सूक्ष्महै और परमेश्वरहै सो क्योंकर किसी करके नष्ट होताहै ८२ तिसतें हे अर्जुन आत्मा केसाहै अनंतहै और इंद्रियों करके प्रत्यक्ष दृष्ट नही होताहै इसतें अव्यक्तहै और आदि उत्पतितें रहितहै और मध्यतें भी रहितहै तिस आत्माकों तूं अंतःकरण वृत्ति करके देख तूंभी ज्ञान स्वरूप हैं

नि॰ सा॰ ३८८

और जन्म रहितहैं और नित्यहैं और निर्विकारहैं ९१ हेअर्जुन तूं मेरा स्वरूपहैं इथाही धारण किये अभिमानकों त्यागकर तूं जरा मरणतें रहितहैं आप अविनाशी आत्माहे ९२ हेअर्जुन जिसकों देहादिकमों अहंकार नहीहे और कर्म फलों करके जिसकी बुद्धि लिप्त नही होती है सो पुरुष संपूर्ण इन लोकों कों मार करकेभी मारन वाला नहीहै और हत्या दोष करके वहभी नही होताहे ९३ हेअर्जुन जोनसा फुरणा मनसें प्रकट होताहे सोही अनुभवमों आवेहें तिसतें यह हमारा शत्रुहे में इसकों मारण हाराहूं यह पदार्थ मेराहे ऐसे फुरणे कों मनसें त्यागदे अपने पराये भेदवाली दृष्टि करके तूं वद्ध भयाहे तिसतें तूं अपने आपकों नष्ट भयाहूं ऐसें मानताहे इस करके ही तूं पराधीनहे और सुखदुःखों करके पीडित भया है ९४ हेअर्जुन नेत्र अपने रूप विषयेकों देखताहे और कर्ण अपने शब्द विषयकों सुनेहैं त्वचा अपने स्पर्श विषयकों देखेहे जिह्वा अपने रस विषयकों लेवेहें में कोन हूं ऐसी भ्रम

नि·
गी·मा·
३८९

हृद्धिकी स्थिति कहांहै आप तूं सभसें असंगहैं ९५ हेअर्जुन मनभी आपने संकल्पकी
रचनामें लगाहै इसमें मैं करताहूं ऐसी कल्पनाही एक आत्माको क्लेश करती है ४९६
हेअर्जुन देह इंद्रियां मन यह सभ बहुते आपसमें मिलके आपने २ कार्यको करतेहैं और
एक आत्मा केवल अभिमान करके लोकमें उपहास वास्ते आत्मा पकड़ा जाताहै ९७ हेअर्जु
न योगी पुरुष अंतःकरण को शुद्ध करण वास्ते देह करके मन करके बुद्धि करके केवल
इंद्रियों करके कर्म फलके संगको त्याग करके भी कर्मोको करतेहैं ९८ हेअर्जुन पुरुष उत्त
म बुद्धिभी होवे और बहुत शास्त्रको जानने द्वाराभी होवे तदभी देह गेहादिकमें ममता अ
हंकार रूपी मल करके युक्त होवे तो कुबुद्धि पुरुषकी न्याई नहीं शोभताहै ९९ हेअर्जुनजो
पुरुष ममता रहित होवे और अहंकार रहित होवे सुख दुःखोंको समान जाने और क्षमायु
क्त होवे सो भावें शुभ कार्य करो भावें दुष्ट कार्यको करताहै तोभी दोष गुण करके युक्त

नि॰ नही होताहै हेपांडुपुत्र यह रणमंडल तेरेकों अपने कर्मको क्षत्री धर्मका उत्तम ती
वा॰ सा॰ र्थ महातीर्थकी न्याई प्राप्त भयाहै इसमों क्रूर मति करके भी तूं युद्ध रूपी अपने धर्मकों
५९॰ करेगा तोभी यह क्षत्री धर्मका युद्धभी तेरेकों परम कल्याणकों और परम सुखकों और
परम ऐश्वर्यके उदयकों देवेगा ५॰२ हेअर्जुन अपने धर्मका कर्म मूर्ख पुरुषकोंभी क
ल्याणकों देताहै और श्रेष्ठ बुद्धिकों अपना धर्म कर्म क्यों कल्याण नही देवे और जिस
की बुद्धि अहंकारतें रहित होवे सो पुरुष अपने कर्म करके पतित होवे तोभी दोष क
रके लिप्त नही होताहै ५॰२ हेअर्जुन तूं अपने धर्मके कर्म योगमों स्थित होइ करके
कर्मोंकों करताहो और अहंकारकों और कर्म फलकी वांछाके संगकों त्याग कर जो पुरु
ष कर्म फलकी असंगताकों प्राप्त भयाहै सो कर्म करताहै तोभी कर्म फल करके बद्ध
नही होताहै ५॰४ हेअर्जुन तूं शांत परब्रह्म स्वरूप होय करके अपने किये कर्मकों ब्रह्म

रूपको कर और अपने आचारको ब्रह्मको अर्पण कर इस प्रकार करके क्षणमात्रमें ब्रह्म
ही होवेंगा ५ हे अर्जुन संपूर्ण अर्थोंको ईश्वरको अर्पण कर ईश्वर रूप बन और उपाधि
रहितहो आपभी ईश्वरता करके सभ भूतोंका आत्मावन अपने स्वरूप करके पृथिवीको पा
लायमान कर ६ सर्व संकल्पोंको संन्यास कर सदा समदृष्टि वन मन करके शांतिको धा
रण कर अंतःकरणमें कर्म संन्यास करके युक्तहो कर्मको करताही रहो और फल आ
शातें मुक्त मति वनों ७ अर्जुनका प्रश्न श्रीकृष्णमहाराजप्रति॥ हे ब्रह्म संन्यासका और ब्र
ह्मार्पणका और ईश्वरार्पणका और कर्म संन्यासका आत्मज्ञानका और योगका भिन्न भिन्न वि
भाग जैसाहै तिसको मेरी मोहकी निवृत्ति वास्ते क्रम करके कहो ८ श्रीभगवानजीअर्जु
नप्रतिकहतेहैं॥ हेअर्जुन संपूर्ण संकल्पोंकी शांति भई संते विशेष करके चनिआं वास
ना सभ शांत होजावें और ब्रह्म स्वरूप भावनाका कोई आकार उदय होना तिसको ब्रह्म

नि॰ परमा कहतेहैं ८ तिसके उद्योग करणेको ज्ञान कहतेहैं तिसीकों कुशलबुद्धि जोगभी कहतेहैं
वा॰ सा॰ संपूर्ण जगत् और हमभी ब्रह्महैं इसकों ब्रह्मार्पण कहतेहैं ९ और कर्मोंके फलोंका जो त्या-
३।१२ गहै तिसकों ब्रह्मवेत्ता संन्यास कहतेहैं संपूर्ण संकल्पोंका जो त्यागहै तिसकों असंगता क
हतेहैं ११ हेअर्जुन संपूर्ण कर्मनकी कल्पना जालकों एक ईश्वरकों अर्पण करणेकी भावना
करणी और कर्म करणेके समयमें कर्त्ता कर्म करणे की सामग्रीमें ईश्वर बिना दूसरे की-
भावना गल जावे तिसमें सोईश्वरार्पण कहाहै १२ हेअर्जुन तूं मेरे विषे मनकों कर और
मेरा भक्तहो मेरे निमित्त यज्ञ करणे हाराहो मेरेकों नमस्कार कर इस युक्ति करके तूं
मेरेकोंही प्राप्त होवेंगा अपने आपकों मेरे विषे परायण कर १३ अर्जुनकाप्रश्नश्रीभगवान्प्र
ति॥ श्रीकृष्णजी तुम्हारे दोय रूपहैं एक पर रूपहै जोंनसा सनातनहै दूसरा अपरहै जोंनसा
देखणे श्रवण करणेमें नहीहै सो पर रूप तुम्हारा कैसाहै तिसकों मैं किस कालमें आश्रित होइ

रहो मोक्ष सिद्धि वास्ते कब उसकोंमें आश्रित करूं ४ श्रीभगवानजीकहतेहैं ॥ हेअर्जुन पहिलेंक
ह्याहै फेरभी जो मैं तेरे हितकी कामना करके कहताहूं तिसकों तूं श्रवण कर तूं मेरे वचनके अ
र्थमें प्रीतिकों धारण करताहै १५ मेरे दोनोंही रूपहैं एक सभके समान दृश्यहै एक परहै जौन
सा मन वाणी और इंद्रियोंके गोचर नहीहै जौनसा हस्त पादादि युक्त और शंखचक्र गदा पद्मा
दि धारणे हाराहै सो अपर रूपहै सगुणहै १६ जौनसा मेरा पर रूपहै सो आदि अंतसें रहितहै औ
र निरगुणहै सो ब्रह्म कहाहै परमात्मा कहाहै इत्यादि नाम करके कहा जाताहै १७ हेअर्जुनज
ब लग तूं बोधकों नही प्राप्त भया और देहादिकों को आत्मा जानताहै आत्मा ज्ञानतें रहितहैं तब
ब लग मेरे चतुर्भुज रूपकी पूजामें तत्पर रहो १८ हेअर्जुन तिसतें क्रमतें ज्ञान पावेगा तो तिस
रूपकों तूं जानेंगा सो रूप मेरा आदिअंततें रहितहै जिसकों जान करके नही जन्म नहीं प्राप्त
होताहै १९ तिसतें तूं सर्व भूतोंविषे स्थितभये आत्माकों जान सर्वभूतोंको आत्मा विषे जानें।

नि॰ भा॰ सा॰ अ॰ ५

योग करके बुद्धिकों युक्त कर सर्वत्र सम दृष्टिहो २० हेअर्जुन जो पुरुष सर्व भूतों में स्थि तभये आत्माकों एक रूपता धार करके भजनाहै सो सर्व प्रकार करके संसार दशामें वर्त्त मानहै तोभी फेर जन्मकों नही पावनाहै २१ हेअर्जुन जैसे घडे अनेक सहस्त्रहैं परंतु आका श तिन्हके बाहिर ओर अंदर एक जेसा व्यामहै तैसेही त्रैलोक्य अनेक सहस्त्रहै मैं आत्मा रूप करके बाहिर अरु अंदर एकही व्याप्त भयाहै २२ हेअर्जुन अनेक प्रति बिंबोंमें दर्पण की न्याई साक्षि रूप वाला आत्माकों प्रति बिंबोंके नाश भये संतेभी नही नष्ट भये मेरेकों देखताहै सोही देखताहै २३ हेअर्जुन जो पुरुष मान ओर मोहतें रहित भयेहैं जिनोंने इंद्रि य संगोके दोष जीतेहैं ओर आत्म ज्ञानकों नित्य स्थित भयेहैं सुख दुःखोंके द्वंद्व संगोंतें मु क्तभये हैं सो पुरुष मूढ नहीहै तत्ववेत्ता है ऐसे प्रसन्न तिस अविनाशी परमपदकों प्रा प्त होतेहैं २४ हेअर्जुन जौनसी इंद्रियोंकी मात्राहै शब्दस्पर्शादिक तिन्हके जो स्पर्शसंग हैं

सो शीत उष्णके सुख दुःखोंके देने हारेहैं और आगम निर्गम वालेहैं तिन्हकों तूं इच्छा
ना करके सहले तिन्हके अधीन नहोहो २४ हेअर्जुन असत्य पदार्थका सत्तारूपी भावना
ही होताहै और सत्य पदार्थका असत्यरूपी अभाव नही होताहै तिसतें सुखादिक सत्य नही
हैं और आत्मा सदा सत्यहै और सर्वव्यापीहै २५ हेअर्जुन तूंमानकों त्याग मदको त्याग शो
ककों भयकों सुख दुःखोंको त्याग यही द्वैतके रूपहैं और असत्यहैं तूं एक सत्यरूप बा
लाहो २६ यह पुरुषोंकी अन्तोहिणी के नय करके अपने अनुभवके स्वरूप ब्रह्म करके
विस्तार भयेको जान केवल शुद्ध ब्रह्मको ही ब्रह्ममों एक कर २७ हेअर्जुन तूं सुखदुःख
कों नही जानता हुवा लाभ खर्चकों जीत हारकों एक समान करता हुवा युद्धकों कर
ब्रह्मकी एकताकों प्राप्तहो तूंही ब्रह्मता का एक समुद्रहैं २८ हेअर्जुन जो तूं करता है
जो भोजन करताहै जो होम करताहै जो देता है जो आगे करेगा तिसकों सभ आत्मा

ज्ञान करके युद्धमों स्थिरहों २९ हेअर्जुन सभके अंतमों जो जैसे भाववाला हो ताहेसो तिस भावकों प्राप्त होताहे तूं ब्रह्म सत्यहे इस भावकों प्राप्तहो इसतें ब्रह्मकी सत्यता वालाहो ब्रह्म कोही प्राप्त होवेगा ३० हेअर्जुन जो कोई कर्म करणेमों अपनेकों कर्म करणेका अहंकारकों त्याग करके अकर्मवया कर्म संग रहित जानताहे और अकर्ममों यथा नही कर्म करणेमों कर्मकों यथा अपने वर्णाश्रम का कर्म अवश्य करणा ऐसे देखताहे सो मनुष्योंमों बुद्धिमान हे संपूर्ण कर्म करणेमों युक्तहे ३१ हेअर्जुन मेरेकों कर्मका फल होवे इस प्रकार कर्मफल का निमित्त कारण तूं मत होवे कर्मके त्यागमों तेरी बुद्धिका संग नही होवे कर्म अवश्य करणा इस प्रकार कर्म योगमों स्थित होय करके कर्मोंको करता रहो और कर्मफलके संगकों त्याग कर ३१ हेअर्जुन अहंकार द्वारा फल करके कर्म करणेमों आसक्तिकों त्याग करके और कर्म नही करणेकी बुद्धिकों त्याग करके समताको धारण करके अपनी रुचि करके सुख करके वर्तमान रहो ३२ हेअर्जुनजो

नि॰
वा॰ सा॰
४९७

पुरुष कर्म फलके प्रसंगकों त्याग करके नित्यही संतोष करके तृप्तहै श्रोर ममतातें रहित
है सोभावें अनेक कर्म जालमों प्रवृत्त होवे तोभी कुछ नही करताहै बंधसें रहितहै ६३ हे अ
र्जुन आसक्ति किसकों कहेहैं मैं कर्ताहों सो नही कर्म करणे वालेकोंभी होवेहै सो कब होवे
है जब मन संकल्प वासना करके मूढता युक्त होवेहै तिसतें मनकी मूढताकों त्याग देवे ६४
हे अर्जुन कर्म करणेमों आपकों कर्ता नही माननेतें कर्मका भोक्ता नही बननेतें समान एक
ता होतीहै समता एकतातें अनंतता होतीहै अंत रहित होनेतें ब्रह्मता विस्तार सहित हो
तीहै ६६ हे अर्जुन तिसतें तूं भी अनेक चिंतना रूपी मलकों त्याग करके परमात्माकी एक
ताकों प्राप्त होवेतो भावें शुभ कार्यकों करताहै भावें अशुभ कार्यकों करताहै तोभी तूं कर्ता
नहीहै ६७ हे अर्जुन जिस पुरुषके संपूर्ण कार्योंके आरंभ फलकामना के संकल्पतें रहित
भयेहैं तिसके कर्म बंधन ज्ञानरूपी अग्न करके दग्ध होजातेहैं तिसकों तत्ववेत्ता पुरुष

पंडित कहतेहैं ६८ हेअर्जुन तूं सुखदुःखादि द्वंद्वोंतें रहित हो नित्यही आत्मतत्वमें स्थित हो और पदार्थकी प्राप्तिके उद्यमतें रहितहो जैसा प्राप्ति होवे तिस करके वर्त्तमानहो इसप्रकारसे संसारके सभजीवोंका भूषणकी न्याईं शोभा करणे वालाहो ६९ हेअर्जुन जो कर्म करणे हारी इंद्रियोंकों कर्म नही करणेतें संयम कर्ताहै और मन करके तिन्हके भोगोंको चाहता है सो मूढ तपस्वीहै उसका तप करणा झूठा आचारहै सो पाखंडीहै ७० हेअर्जुन जो पुरुष मन करके इंद्रियोंकों भोग पदार्थोंते रोक करके कर्मेंद्रियों करके कर्मयोगको फलकी आसक्तिते रहित कर्ताहै सो विशेष करके उत्तम पुरुषहै ७१ हेअर्जुन जैसे समुद्र संपूर्ण नदियोंके जलों करके भरा जाताहै संपूर्ण जल तिसमें प्रवेश करतेहै तदभी अपनी मर्यादाके स्थानतें बाहिर नही चढताहै तैसेही जिस पुरुषको संपूर्ण काम भोग प्राप्त होतेहैं और नहीभी प्राप्त होतेहैं तिन्हकी प्राप्ति करके हर्ष शोकको नही प्राप्त होताहै सो पुरुष शांतिको प्राप्त होता है।

जो पुरुष काम भोगोंकी कामना करताहै तिसको शांति नही प्राप्त होतीहै ७२ हेअर्जुन तत्व वेत्ता पुरुष काम भोगोंको त्यागभी नही करे और अंतःकरणमें भोगोंकी भावनाको भी नही करे भोगोंकी प्राप्ति नही प्राप्तिमें सम दृष्टि रहे जैसा भोग मिलें तैसे करके वर्त्ते जावे ७३ हेमहाबाहु देहके नाश भये संते आत्माका कुछभी नष्ट नही होताहै आत्माका नाशही नाश कहाहै सो आत्मा नष्ट नही होताहै केवल स्वरूपको विस्मरणही आत्म नाश कहाहै ७४ हेअर्जुन असत्य पदार्थका सत्तारूपी भाव नही होताहै और सत्य पदार्थका असत्यता रूपी अभाव नही होताहै तत्ववेत्ता पुरुषोंने इन्ह दोनोंका अंतर जानाहै ७५ हेअर्जुन अविनाशी तिसको जान जिस करके यह संपूर्ण विश्व व्याप्त भयाहै तिस अविनाशीको नाश करणेको कोई भी समर्थ नहीहै ७६ हेअर्जुन यह देह सदा अविनाशी देह धारण करणे हारे आत्माकेहैं सो अंत वालेहैं जुह कैसाहै आत्मा अविनाशी है और स्थूल सूक्ष्मतादि प्रमाणतें रहित है और

नि॰ नित्यहै तिसतें तूं अपने युद्ध रूपी क्षत्री धर्मकों निशंक करले ७९ अर्जुनकाप्रश्न हेमहाराज
बा॰ सा॰ जो देह अनित्यहैं और आत्मा नित्यहै तो में नष्ट भयाहूं ऐसी स्थिति मर्यादा मनुष्योंकी कैसें क
८०॰ री और लोकोंको स्वर्ग और नरक यह कैसें स्थित भयेहैं ८० श्रीभगवानजीकहतेहैं॰ हेअर्जुन
पृथिवी और जल और तेज और पवन और आकाश मन और बुद्धि यह सूक्ष्म अंशों करके सहि॰
त सूक्ष्म शरीर करके जीव देहोंमों स्थित रहताहै ८१ सोजीव सूक्ष्म शरीर करके सहित वा॰
सना करके खेंचा जाताहै जैसें रज्जु करके गोका वछा खेंचा जाताहै सोही शरीरमों रहताहै जै
सें पिंजरेमों पंछी रहताहै ८२ हेअर्जुन कर्ण और नेत्र और त्वचा और जिह्वा और नासिका
यह जीव शरीरतें इनकों ले करके जाताहै जैसें पवन पुष्पतें सुगंधीकों लेजाताहै तिस क
रके स्थूल शरीरही प्राण चेष्टातें रहित होताहै तिसतें इसकों मर गयाहै ऐसें कहते हैं ८३
हेअर्जुन वासना सहित होताही उसका देह है दूसरा देह कोई नहीहै जो वासना रूपी॰

लि॰ देह बुद्धि विचारतें क्षीणहोताहै तिसके क्षय भये संते परमपद प्राप्त होताहै ८४ हेअर्जुन
वा॰सा॰ पिछले कालमों भयी वासनाका मूल अबके यत्न करके पुरुषार्थ करके जीता जाताहै जैसें
४०१ मूल खोदनेंतें वृक्ष गिर जाताहै ८५ हेअर्जुन भावें पर्वत क्रूर करके गिरजाये भावें प्रलय काल
के पवन चले तदभी शास्त्रमों कहा अपना पौरुष नहीं त्यागना विचार वाली बुद्धि करके युक्त भ
ये पुरुषनें अपना पौरुषही करना ८६ हेअर्जुन जो पुरुष वासना रहित नहीं भयाहै और पापक
र्मभी करताहै सो सभ प्रकार करके बद्ध भयाहै जैसें पिंजरेमों पंछी चारों तर्फसे घेरा होता है ८७
इस कर्मकों में त्याग देताहूं इस कर्मको आश्रय करताहूं मूढमनका यही निर्णयहै और ज्ञा
नी पुरुषकी सदा एक समान स्थितिहै ८८ हेअर्जुन जो पुरुष माया करके संसारके प्रवाहमों आय
पड़ेहैं तिस कर्मकों करतेहैं सिद्ध होनेमों नहीं सिद्ध होनेमों सम चित्त रहतेहैं सो जीवन्मुक्त
होतेहैं अंतःकरण करके सुषुप्ति अवस्थामोंहै और लोकोंकोंभी सुषुप्ति अवस्थाकी न्याईं भासते

नि॰ हैं हठ और इठ किसीमों नही करतेहैं आत्म तत्वमों मगन रहतेहैं ८८ हेअर्जुन सो पुरुष अप
वा॰सा॰ ने अंतःकरण करके अचल स्थितिकों प्राप्त होताहै जैसें कछु अपने अंगोंकों संगोल लेताहै तै
४॰२ सें सभ विषयोंते इंद्रियोंके स्वभाव करके खेंच लेतेहैं ८९ हेअर्जुन जैसें सुंदर चित्रहै रूप करके
सारा पूर्णहै सो चित्रमों स्थित भयाहै तो आकाशतें भी सून्य होताहै कुछ कार्य नही करताहै तै
सेंही तत्ववेत्ता पुरुषकों संपूर्ण जगत् आकाशतें भी सून्य प्रतीत होताहै कुछभी नही करता है ९१
हेअर्जुन जैसें मन असत्य पदार्थों कों भी संकल्प करके मनोरथ द्वारा रच लेताहै तैसेंही क्षण
को कल्प बराबर कर लेताहै ९२ हेअर्जुन जिसकों वासनाका बीज अत्यंत तुछभी है चैतन्य स
त्ता रूपी पृथिवीमों प्राप्त भया तो सो तुछ वासना बीजही बड़ा संसारका कारण होताहै ९३
हेअर्जुन सत्य रूप परमात्मा का तत्वज्ञान रूपी अग्नि हृदयमों आरूढ भये करके वासना
का बीज एक कालमों दग्ध भया फेर उदय नही होताहै ९४ हेअर्जुन सो वासना बीज दग्ध

भया तो पुरुष फेर पदार्थोंमों मगन नही होताहै संपूर्ण सुख दुःखोंमो लिप्त नही होताहै जै
सें कमलका पत्र जल करके लिप्त नही होताहै ९५ हे अर्जुन तूं शांत अंतःकरण हो और भ
यते रहित हो और संपूर्ण आशाका त्याग कर और वासना रहितहो निर्वाण बोध करके म
हा मनके मोहकों गलित कर जो कुछ मैंने तेरे प्रति पवित्र आत्मा तत्व कहाहै इस कों
भले प्रकार विचार करके सर्वात्मा एक शांत रूप होइ करके स्थिर बुद्धि हो ९६ अर्जुनकावचन
श्रीभगवानजीप्रति॥ हे कृष्ण तुम्हारे प्रसादतें मेरा मोह संपूर्ण नष्ट भयाहै और आत्माके
स्वरूपका स्मरण अब दृढ भयाहै अब संदेह रहित भयाहूं अब मैं तुम्हारे वचनकों कर
ताहूं ९७ श्रीभगवानजीकहतेहैं। हे अर्जुन जो आत्म स्वरूप जानने करके अंतःकरण की
वृत्ति शांत होजावे तिसका चित्त शांत होजाताहै तो जानना अंतःकरणमों तत्वज्ञान व
धाहै ९८ हे अर्जुन जिसकी प्राप्तिमो यह सभही घट पटादिकों के ज्ञान तुच्छ होजाते हैं।

नि· तो वासना महा नीचभीहै पद पद मोक्ष क्षण क्षणमें उदय होती भी है तोभी क्याकरे॥
बा·सा· मी ८९ हे अर्जुन जैसें अग्निके पर्वतको प्राप्त होइ करके बर्फका टुकड़ा क्षणमें लीन होजाता
५·४ है तैसें शुद्ध चैतन्य तत्वकों प्राप्त होइ करके अविद्या लीन होजातीहै ९० हे अर्जुन महादुष्ट
रजोगुणतें भई ऐसी वासना भोगों करके बंधन कारण हारी कहांहै और जिस करके संपूर्ण
विश्वका जाल अखंड व्याप्त होइ रहाहै ऐसा चैतन्य तत्वरूपी महा अग्नि कहांहै जिस तत्वा
के किंचिन्मात्र स्मरण करके वासना सहित अविद्या अपने कार्य कारण समूहके जाल स
हित दग्ध होजातीहै जैसें अग्निके पास तृण समूह दग्ध होजाताहै ८ हे अर्जुन इसे तू अहं
कार करके है स्थिति जिसकी ऐसी वासना करके रूढ भई विषय रूपी विषकों बधाऱ्याने हा
री भोग शास्त्रपणी विसूचिकाकों संकल्प विकल्पका त्याग रूपी मंत्र करके दूर करके के
वल परमात्मा रूप बन कैसाहै संपूर्ण भय निवृत्तिका स्थानहै ९१ अर्जुनका वचन॥ ॥

हे भगवन् मेरी बुद्धि सर्व प्रकार करके संपूर्ण मलोंसें रहित भईहै और धीर भईहै परम उद
यकों प्राप्त भईहै तुम्हारे वचन करके सावधान भईहै कैसें जैसें सूर्यनें प्रकाश करी कमलि
नी प्रकाशित होईहै ६२ श्रीवसिष्ठजी श्रीरामचंद्रजीके प्रतिकहतेहैं। अर्जुन इतना कहि क
करके गांडीव धनुषकों हाथमें लेता भया श्रीकृष्ण महाराजजी है सारथी जिसके ऐसे र
थके ऊपर बैठ करके अरु संदेह करके रहित भया युद्धकी लीलाकों करेगा ६३ इतिश्रीभ
गवद्गीतासंपूर्णम्समाप्तम्॥ वसिष्ठजी श्रीरामचंद्र प्रतिकहतेहैं॥ हेरामजी ऐसी जो भग
वद्गीताहै सो पापकों नाश करणे हारीहै जिसकों धारण करके निसंग होइ करके संन्या
स योग करके संपूर्ण कर्मकों ब्रह्मार्पण करि ब्रह्मरूप करके स्थितहो ६४ हेरामजी जेते जग
तके भावहैं विचार बिनाही सुंदर भासते हैं अरु कैसे हैं जिनका सत्ताइरूपी भाव है नहीं
विचार करके नष्ट होने वालेहैं ६५ हेरामजी जिसकों हृदयमें आत्म विचारका लेशनहीं

नि॰
वा॰ सा॰
६॰६

है सुंदर व्यवहार भी करे तो भी दर्पणमें प्रतिबिंबित पुरुषकी न्यांई जड़ है तिसकों मुक्ति का नामभी नहीहै ६०८ हेरामजी आत्म स्वरूपका केवल बोध मात्र करके भोग वासना क्षीण होतीहै भोगोंकी भावना को नही करता यही परम तत्व ज्ञान का लक्षणहै ६०९ हेराम जी तत्ववेत्ता पुरुषकों इस कारणतें भोग अभिमत नहीहै तत्ववेत्ता सर्व संसारके भोगों तें परे स्वरूपा नंद करके तृप्त भयाहै तिन्हके अंतमें महा दुःखहै तिन्ह भोगोंकी तत्ववेत्ता क्यों इच्छा करेगा ६०९ हेरामजी तत्ववेत्ता पुरुषका यही परम लक्षणहै क्या स्वभाव करके भोगोंकी वांछा नही करता ६११ हेरामजी जिस कालमें यह जगतकी सृष्टि संपदा स्वप्नकी सृष्टि संपदाकी न्यांई वास्तव करके नही भासे तब ब्रह्म लोकभी असत्यही होजाता है तिसकी इच्छा नही रहतीहै ६१२ हेरामजी जगत का निरोध भी नही भासे और उत्पत्ति भी नही भासे बंधनभी नही भासे मुक्तिभी नही भासे मुक्तिके साधनभी नही भासे

और मुक्तिको चाहने वालाभी नहीं भासे यही परमार्थताहै ९१३ जो जो भाव जैसा दृष्ट होवे सो
तैसाही विद्यमान होताहै सो व्यवहार मों सत्यभी भासताहै और स्वप्न भ्रमकी रीतों (जो हैं सो) कदाचित
भी सत्य नहीं मानलियां सो कहनेमो भी असत्यहैं ९१४ हेरामजी जगतमों सो नहीहै कि
समों भ्रम नहीहै त्रैलोकमों विचित्र रूपकी वस्तु दृष्टी होताहै ९१५ हेरामजी जलके मध्य
अग्नि प्रज्वलित दृष्ट होतीहै जैसें समुद्रमों वडवाग्निहै अंबरमो नगर दृष्ट होतेहैं जैसें
देवतोंके विमान होवें शिलामों कमल दृष्ट होतेहैं जैसें हिमाचलमों हृदहैं एकस्थान
मों संस्मर्ण प्राय फल प्राप्त होतेहैं जैसे कल्पवृक्षमों ९१६ शिला वृक्षोंकी न्याईं फलती है
जैसे रत्न समूहहै शिलाके अंदर प्राणि होतेहैं जैसे मीडक शिलामोंही होतेहैं पत्थरोंते ज
ल निकसते हैं जैसें चंद्रकांत मणीतें जल निकसे असत्यभी भोगमों आवेहै जैसें स्वप्नमों
अपना मरण भोगीताहै अकस्मात् विना आधारजलभी धारण करीताहै जैसें वादलो मों

नि॰ जलहै वस्त्रकी चांदनीकी आकाशमें जल रहताहै जैसे देवतोंकी गंगाहै ८।१७ भारी शिलाभ

शा॰स॰ आकाशमें उडतीहैं जैसें परों वाले पर्वत उडतेथे पत्थरतें संपूर्ण पदार्थ मनके चाहे प्राप्त

५॰८ होतेहैं जैसें चिंतामणि पत्थरतें केवल देखनेतें मनोरथ फलतेहैं जैसें स्वर्ग के बगीचों में

कहीं कहीं कोई चिंतन किये मनोरथभी कदीभी सिद्ध नहीं होते हैं जैसें मोक्ष उत्पत होवें

ब्रह्म नष्ट होवे प्रपंच सत्य होवे भोग नित्य होवें ईश्वरकी मर्यादा नष्ट होवे वेद प्रमाण नहीं

होवे इत्यादिक चिंतन कियेभी फलते नहीहै १८ हेरामजी इसमें तेरे प्रति एक पुराण इति

हास कहते हैं जौनसा एक भिक्षुकों वर्तमान भयाहै केसाहै भिक्षु कुछ मनन को धार

ण हाराहै १९ तिस भिक्षुका मन समाधीके अभ्यासतें सूक्ष्म संपूर्ण स्वरूप धारणेकों स

मर्थ होता भया तिसकों किसी कालमें लीला वास्ते कल्पित किये जीवट नाम करके सा

मान्य जन ब्राह्मण राजालोकमें हरिणी वली भ्रमर हंससें लेकर ब्रह्मा परमहंस नारा

नि· यथा रुद्रपर्यंत क्रम करके स्वप्न का शांत होताभया २· सो जब स्वप्नमों रुद्र भया तब अज्ञाना
वा·रा· करके जो कुछ विलास किया तिसकों संस्मरणता करके अपनी बुद्धिके विचार करके विचार
५·९ कर्ता भया ६२१ हेरामजी रुद्ररूप भया सो अखंडज्ञान स्वरूप होइ करके अपने सैंकड़े स्वप्नों
करके विस्मित भया आपही एकांत बैठके आपही वचन कहता भया ६२२ अहो आश्चर्यहै
यह माया आश्चर्य रूपहै फिर कैसी है विश्वकों मोहित करणे हारीहै है असत्य रूप परंतु
सत्यरूपही भासती है जैसें मारवाड़ देशकी रेतीमों जल भासताहै ६२३ इस मायामों सहस्र
वर्ष होगये हैं चार युगोंके सैंकड़े व्यतीत भयेहैं दिन और ऋतुओं के अनेक चरित्र भये हैं २४
यह जगत आकाशकी नीलता की न्याई भयाहै इसका केवल नही जाणणाही दूर करणेकों
उपाय समर्थ हमारेकों होवे २५ यह माया असत्यभीहै तदभी रूप वालीहै चैतन्य सत्ताकी
न्याई सर्व गतहै सो परमात्माके विलास वास्ते क्या कुछ नही करेगी २६ तिसकारणे जो

स्वप्न संसारमों मेरेकों भयेहैं तिन्ह सभकों उद करके में देखताहूं भले प्रकार अपने स्वरूप का दर्शन देखने करके अपने अंश रूपकों एक कालेता हूं २७ वसिष्ठजी कहतेहैं॥हेरामजी सो रुद्र रूप भिक्षु ऐसा चिंतन करके जिस सृष्टिमों सो भिक्षु भयाहै तिस सृष्टिकों जाताभया जहां सो भिक्षु शरीर करके मृत मनुष्य जैसा शयन करके पडाहै २८ तहां जाय करके ति-स भिक्षुके चित्त कों चेतन कारण करके संयुक्त कारणेतें जाग्रत करता भया सो भिक्षु सावधा न होए करके अपनें स्वप्न भ्रमकों स्मरण करता भया २९ सो भिक्षु अपनेकों रुद्र रूप देखा करके जीव भावसें लेकर परमहंस नारायण रुद्र भाव पर्यंत अपनी लीलाकी चेष्टाकों विचा र करके विस्मयकों प्राप्त होता भया ३० हेरामजी इस प्रकारके जेते स्वप्नके जोजो स्वरूपहैं ति न्ह सभकों अपना रुद्ररूप अंश देने करके बोधन करता भया शत प्रमाण स्वप्न शरीर सभही रुद्ररूप होते भये सो शत प्रमाण रुद्रशतनाम करके होते भये रुद्र रूपशोभित होते भये ३१

इस प्रकार करके रुद्रोंके दश शत १००० होते भये महा तेजस्वी होते भये सो पीछे होयगयेः
हे अबके संसारमों एकादशमो रुद्रोंका शत स्थितहै ३२ हेरामजी तिसतें जौनसे जीव सम्
ह बोधरहित हैं सो आपसमों आपने आत्माकों नही देखते हैं मन करके बोधकों प्राप्त भये
प्रेरण किये हुवे आपसमों मिलतेहैं जैसें समुद्रमों तरंग आपसमों मिलतेहैं ३३ श्रीरुद्रजीः
अपने अंशरूपी रुद्रोंकों कहतेहैं अब तुम अपने स्थानोंकों सत्तावीच लेजाओ तहां जाय क
रके पुत्र इस्त्री आदिकोंके अपने अपने प्रारब्ध भोगोंको भोग करके मेरे पास चले आओगे फे
र तुम सभही मेरे अंश होवोगे अरु मेरे गण होवोगे मेरे पुरके भूषण होवोगे तिसतें उपरांत
महा प्रलय होनेतें परमपद कों हम सभ प्राप्त होवेंगे ३४ श्रीवसिष्ठजीश्रीरामजीप्रतिकहतेहैं
सो रुद्र भगवान तिन्हकों ऐसे कहि करके छिप जाते भये सोभी सभ जीवट नाम जिसका ऐ
सा भिक्षु ब्राह्मणसें लेकर अपने अपने स्थानमों जाय करके अपनीस्त्री पुत्रादिकों करके

प्रारब्ध भोगोंकों भोग करके अपने अपने देहोंकों त्याग करके रुद्रलोककों प्राप्त होय करके रुद्र जीके गण होवेंगे किसी समय मों आकाशमों तारिओंके स्वरूप करके दृष्ट होतेहैं २५ हे रामजी तपस्वी दो प्रकारके श्रेष्ट मुनीश्वरोंने कहे हैं एक काष्ट तपस्वी होताहै दूसरा जीवन्मुक्त कहीदाहै २६ जौंनसी शुद्ध भावनातें रहित और शास्त्र विधिसें रहित शांति शीलादिकोंतें रहित ऐसी शुकीहै कियामो दृढ निश्चय वाला और हठ करके इंद्रियोंकों जीतने हाराहै पंचाग्नि जलशय्या उर्द्धबाहू इस प्रकारकी घोर तपस्याकों करणे हारा जो मुनिहै सो काष्ट तपस्वी कहाहै २७ और जौंनसा व्यवहारमों संसारी लोकों जैसा वर्त्तमानहै तोभी साधनों करके इंद्रियोंकों जीतने हारा और अंतः करणमों आनंद करके पूर्णहै सो मुनि जीवन मुक्त कहाहै जिसकों तत्व निश्चयमों दृढ भावना नही भईहै और आनंद प्राप्ति बिना शीतलता रहित है इसी कारणतें शुष्कहै ऐसी भावना वालाहै और तत्वज्ञानकी साधन कियामों दृढ नि

नि॰ श्रय वालाहै और तत्व जाननें वाले हठ करके इंद्रियों को जीतलेनाहै सोभी काष्ट तपस्वी क
वा॰ सा॰ हाहै ३९ यह दो प्रकारके मुनियों के नाथों का जो मौन भाव है वुह कैसाहै चित्त का जोनि
४९२ श्रयहै सो हीहै स्वरूप जिसका सो भाव मौन शब्द करके कहाहै ऐसे भाव करकेही मुनि कहेजा
तेहैं ४० तिस मौनकों मौनके स्वरूप को जानने हारे चार प्रकार करके कहते हैं एक इंद्रियोंका
मौनहै एक वाणीका मौनहै तीसरा काष्ट मौन है चौथा सोषुप्त मौनहै ४१ हेरामजी वाणी
का जो संयम करणा तिसकों वाङ मौन कहतेहैं और बल करके इंद्रियों का संयम करणा
तिसकों अक्ष मौन कहते हैं देह इंद्रियां मनकियां चेष्टा जो त्याग देनी तिसको काष्ट मौन
कहतेहैं और सुषुप्ति अवस्थाकी न्याई संसार विश्वका फुरणा जो नहीं होना सोही सोषुप्तमौ
न कहाहै तिसकोही जीवन मुक्ती कहतेहैं ४२ हेरामजी तिसके स्वरूपकों तुम मेरेसें श्रवण
करों वुह कैसाहै कर्णमें श्रवण करणेतें भूषणकी न्याई आनंदको करताहै इसमें प्रथ॰

क रेचक कुंभक भेद कारके तीन प्रकारका प्राणायामभी नही कारण बनताहै इसमें इंद्रिय भोग विषयोंकी वासना उदय नही होतीहै नष्टभी नही होती जानने परनी है इसका स्थूल सूक्ष्मादि विभाग भी नही बनता है और अभ्यासभी नही कारण बनताहै और आद अंतके भेदसें रहितहै ५४ इसमें ध्यान करणेमें नही ध्यान करणेमें भी आत्माकी एकाग्रता स्वरूपानंदमें एक जैसी स्थित होतीहै ५४ हेरामजी यह सोऽयम मौन कहाहै इसका अंत नहीहै सदा आत्म बोध सहितहै यही तुरीया पदहै अथवा इसीकों तुरीयातें परे जानो ॥श्रीरामचंद्रजीकाप्र॰ श्रवसिष्ठजीप्रति॥ हेगुरुजी एक यह मेरेकों संदेहहै तिसकों तुम कृपा करके दूर करो सदा शिवजी ईश्वरहैं अपने भक्तोंको ऐश्वर्य भोग देणे हारेहैं सो शिवजी मनुष्योंके कपालोंकी मालाको भूषण करके धारण सदैव भस्म धारण करतेहैं और नग्न रहतेहैं और स्मशानमें निवास करतेहैं ऐसा जगतमें विरुद्ध कार्यको किस कामना करके करते हैं ५५

वशिष्ठजी श्रीरामजी प्रतिकहतेहैं॥ महान् जो जगतके ईश्वरहैं सो स्वभाव करकेही सिद्ध होते
हैं तिन्हकों काम संकल्प नही होताहै सो जीवनमुक्त स्वरूप होतेहैं तिन्हकों कर्म क्रिया कारणे
का नियम नही होताहै क्रियाका नियम अज्ञानी पुरुषकोंही कल्पित कियाहै ४६ हेरामजी अज्ञा
नी पुरुषका चित्त ज्ञान बिना स्वरूपके प्रकाश बिना जड़ होताहै तिसतें क्रियाके नियम बि
ना कुमार्गमों प्रवृत्त होने करके परम दुःखकों प्राप्त होताहै ४७ हेरामजी यह संसार रूप स्व
प्नाहै इसमों एक वैतालनें एक राजा प्रति प्रश्न कहेहैं सो प्रसंग करके मेरेकों स्मरण भयेहै
सो तुभकों कहणे लगेहैं तिन्हकों तुम श्रवण करो ४८ हेरामजी विंध्याचल पर्वतकी झाड़ी
मों एक वैतालथा तिसका महा विशाल स्वरूपथा सो वैताल महागर्व करके युक्त भया प्रा
णीश्रोंकों मारणेकी इच्छा करके कोई एक देशमों चला आवता भया ४९ उसका यह एक नि
यमथा जो प्राणी अपना अपराध नही करे सो भावें अपने मुखके पास आवे तो तथापि

नि॰ प्र॰ उ॰
स॰ १९८

पीडित भयाहै सोभी तिस प्राणीकों नही भक्षण करे ५० हेरामजी तहां एक राजा रात्रियों न
गरकी रक्षा करणे वास्ते भ्रमण करना तिस वेतालको राजा प्राप्त भया तिस राजेकों वेताल
कहता भया ५१ वेतालकावचन-हेराजन् मैं वेताल हूं महा भयानक हूं तूं मेरेको प्राप्त भया
हैं अब कहां जाताहै अब तूं नष्ट भयाहैं मेरा भोजन तूं बन ५२ राजाकावचवेतालप्रति-हेवे
ताल रात्रिमों चलने वाले तूं मेरेकों विना अपराध बलसें खावेंगा तो तेरा शिरसत्रोटूक हो
य करके फुट जावेगा ५३ वेतालकावचन-मैं तोको नही भक्षण करताहूं मेरेकों न्यायही भ
क्षचदाहै मैं तेरेसें न्याइ वार्त्ताकोही पूछताहूं मैं तेरा न्यायका अर्थी हूं मेरे न्यायके प्रश्नोंतेनें
पूर्ण करणे ५४ मेरी संभावनाके प्रश्नोंकों तूं भली तरासें कहदे राजा लोक न्याय करते हैं
और अर्थीजनोंके अर्थ पूरे करतेहैं तिसतें तूं न्याउ कहो ५५ हेराजन् ऐसा सूर्यकोणहै जि
सकी किरणोंमों ब्रह्मांडोंके सहस्र सूक्ष्म किणके सिरीषे प्रकाशमानहैं ऐसा पवनकोण

नि॰ हैं जिसमें महा आकाश की रेणु उड़तेहैं ऐसा पुरुष कौनहै जो एक स्वप्नसे दूसरे

वा॰सा॰ रे स्वप्नांतर में दूसरेने तीसरेको तीसरे ते चौथेको इसप्रकार सैंकड़े स्वप्नांतरों को जाता

४९ है फेर अपने स्वरूपको त्याग करताहै तोभी नहीं त्याग करताहै ५६ और ऐसा कौनसा

अंडाहै जिसमें केलेके स्तंभकी त्वचाको बाहिरके उतारणेमें उसके अंदर और त्वचा

निकसतीहै तिसके अंदर और निकसती है उसके अंदरसेभी और इस प्रकार करके

अनेक त्वचा निकसती है तैसें एक ब्रह्मांडके अंदर दूसरा दूसरे के अंदरसे तीसरा तीसरेके

अंदर चौथा इस प्रकार करके अनेक ब्रह्मांड जिसके अंदरसे भी अंदर वर्त्तमान हैं ऐसा

ब्रह्मांड कौनहै अणुहै जिसमें ब्रह्मांड और आकाशादिक भूतोंके समूह और सूर्य मं

डल सुमेरुआदि पर्वतादिक वर्त्तमानहैं जिसके ऐसे कौनसे अणुके परमाणू रूपहै और

अपने अंड भावको त्यागतें नही है ५७ और ऐसा कौन पर्वतहै जिसके एक परि माणू

में प्रलय होय करके अनेक ब्रैलोक्य गेरीमन शिला धातू रूप करके स्थितहै ५८ हे राजन्‌ य
ह मेरे प्रश्नोंको तूं नहीं हरेगा तो इच्छुहे तेरेकों में खाय लेऊंगा तो तेरेकों आत्म ज्ञान दोषया
वेया श्रोर तेरे राज मंडलयों एक फलकी न्याई भक्षण करलेवोंगा ५९ राजा हस करके
कहता है हे वेताल किसी कालमें यह ब्रह्मांड चैतन्य पति पक्का फल जैसा होताहै उ
ह कैसाहै जिसके ऊपर दशगुण पृथिवी दशगुण जल जलतें दशगुण तेज तेज
तें दशगुण पवन पवनतें दशगुण आकाश आकाशतें दशगुण अहंकार इसप्रकार
ऊपर वस्त्रके वेष्टनकी न्याई लपेटणे युक्त है ६० तेसें फलोंके सहस्र जिसमें लगे हैं
ऐसी एक शाखाहै कैसी है विशाल पत्रहै जिसके तेसी अनेक सहस्रशाखा जिसमें
है ऐसा एक महावृक्ष है महा विस्तार वाला जिसकी छाया का मंडलहै तेसे वृक्षों
के सहस्रहैं जिसमें ऐसा एक वनहै जिसमें अनेक वृक्ष तृण सनादिकों करके

भराहै ८१ तैसे बनोंके जिसमों सहस्रहैं ऐसा एक पर्वतका महा शिखरहै अत्यंत ऊं
चाहै विशाल विस्तार युक्तहै तैसे शिखरोंके सहस्र जिसमोंहैं ऐसा एक देशमहा
विस्तार युक्तहै तैसे देश सहस्र जिसमों है ऐसा एक द्वीपहै महा नदियां महा सरोवरों
करके युक्तहै तैसें द्वीपोंके सहस्र जहांहैं ऐसा एक बौंतराहै अनेक रचना युक्तहै ऐसे
बौंतरे सहस्र जहांहै ऐसा महा अंडाहै तैसे अंडेओंके सहस्रोंके करोडियां जिसमों तरे हैं
ऐसा एक विशाल जलों करके भरा एक समुद्रहै ८२ तैसे समुद्रोंके लक्ष जिसमोंहैं ऐ
सा एक तरंगहै तैसे तरंगोंकी अनेक कोटि जिसमों हैं ऐसा एक महा समुद्रहै तैसे महा
समुद्रोंके सहस्र जिसके उदरमों जलकी न्याईं रहैहैं ऐसा महा पुरुष एकहै महा वि
शाल स्वरूप वालाहै तैसें महा पुरुषों के लक्षोंकी माला जिसके हृदयमों शोभैहै ऐसा
संपूर्ण जीवों का प्रधान पुरुषहै ऐसे प्रधान पुरुषोंके सहस्र जिसके मंडल मों

नि॰ एक रोम सिरीखे भासतेहैं ऐसा महा सूर्यहै जिसके प्रकाशमें ऐसी सैकड़ी दृष्टि होती
वा॰सा॰ है ६३ हे वेताल जेती कल्पना मैंने तेरे प्रति पीछे कहीहै सो संपूर्ण तिसकी प्रकाश शक्ति
४२॰ है जिसके प्रकाशकि यां छायाके ब्रह्माड त्रसरेणु सिरीखे महा अणु रूपहै ६४ मायाहै कि
रणा जिसकी ऐसा परमात्मा सूर्यहै सो सभकों प्रकाशमान करताहै कालकी सत्ता और
आकाशकी सत्ता और इनके प्रवाहकी सत्ता संपूर्ण चैतन्य सत्ता और शुद्ध चैतन्य सत्ता यह
संपूर्ण पवित्र है ६५ हे वेताल परमात्मा रूपी महा पवनहै तिसमें महा आकाशादिकोरे
णु चंचल होय करके चलतीहै और जगत नामा महा स्वप्नाहै तिसमें अनेक स्वप्नांतर है
तिन्हकों जाताभीहै तदभी अपने सच्चिदानंद स्वरूपकों नही त्यागता है सो परब्रह्महै स
दा शांतहै और प्रकट होना लय होना वृद्ध होना क्षय होना इन्होंतें रहितहै ६६ जैसे के
लेका स्तंभ ऊपरसें त्वचा उतारणेतें अंदर और और त्वचाकों प्रकट करताहै एककाली

अनेक बना है तैसे यह विश्व एक ब्रह्मका ही अनेक बना है बाहिरसें असार असार भ्रम रूप जगतके पदार्थ त्यागनेतें अंदर अंदरतें सारतें सार पदार्थ प्रतीत होता है ९७ हेवेताल यह चैतन्य अणुसेभी सूक्ष्म रूपहै और अनंतहै तिसके एक अंशके अणुमें ब्रह्मांड आकाश समस्त भूत समूह सूर्य मंडल और सुमेरु परमाणुकी न्याई प्रतीत होतेहैं कैसा है रूप रहित जैसेहैं स्वप्नके ब्रह्मांडकी न्याई ९८ हेवेताल नही प्राप्त होनेतें यह पुरुष परम अणु रूपहै और सभकों सत्ता देनेतें सत्ताका महा पर्वत है संपूर्ण विश्व तिसका अवयव अंग रूप है तोभी इसके नाश विषें नही नष्ट होनेतें निरवयवहै इसकी यह त्रैलोकी केवल नाम मात्र कर के सत्ता मात्रहै इसकों केवल ज्ञानमात्र कोही जान ९९ वसिष्ठजी कहतेहैं। हेरामजी सो वेताल तिस राजाके मुखतें ऐसा वचन श्रवण करके परम शांतिकों प्राप्त होता भया अचल ध्यानमों स्थित होता भया अत्यंत क्षुधा जो लगीथी तिसकों बिसार देताभया ९०॰ अब भगीरथराजा

नि॰
वा॰सा॰
४२२

के प्रसंगकों सुनावतेहैं हेरामजी सो राजा भगीरथ संतजनों की सेवा वास्ते निरंतर धनों कों देता भया आप किसीसें तृण मात्रभी नही लेताहै जैसें चिंतामणि रत्न जो चाहे तिसकों देता है आप पदार्थ ग्रहणके करणेतें रहितहै ७१ सो राजा यौवनकों प्राप्त भयाहै तोभी इस लोक की उलट पलट होती अवस्थाको देखनेंका विचार करके यौवन मांही वैराग्य उदय होताभ भया जैसें मारवाड देशमों लता प्रकट होवे ७२ सो राजा भगीरथ एक समयमों उदास म न होइ करके अपने तितल नामें गुरुकों एकांतमों संसारतें भय भीत होइ करके पूछताभया ७३ हेगुरुजी संसारकों प्राप्त करणे हारे जरा मृत्यु और मोह रूपी सर्व दुःखोंका अंत कैसें हो ताहै ७४ तितल गुरु कहताहै॥ हेराजन् यह चित्त ज्ञान करके ज्ञेय चैतन्य वस्तु मों एक निष्ठाकों प्राप्त होवे तो जीव सर्वत्र परब्रह्म रूपकों जानता है फेर संसार दुःखकों नही प्राप्त होताहै ७५ तिस ज्ञानकों हम अब कहतेहैं॥ पुत्र और स्त्री गृह और धनादिक इनसे संग और

प्रीति नही करणी सुख दुःखकी प्राप्तिमों सम चित्त रहणा आत्म ज्ञानमों नित्यही निष्ठा करणी त त्वज्ञानका अर्थ विचारणा और आत्माकी एकांत भावना करणी निर्जन पवित्र देशमों रहना संसारी लोकोंकी संगति त्यागनी यह ज्ञान कहाहै इससें विरुद्ध अज्ञानहै ७६ हेराजन् सो ज्ञान केसाहै रा गद्वेष को क्षय करणे हाराहै संसार रोग दूर करणे की औषधहै सो ज्ञान देहादिकमों अहं भाव की शांति भई संते होताहै ७७ हेराजन् अपने पौरुष के यत्न करके और भोग समूहकी भावना त्यागनेतें आत्माकी सत्ताको सदा प्रकाशमान पाइ करके अहंकार लयको प्राप्त होताहै ७८ हेराजन् जब लग लज्जा और स्नेह मोहादिकों का बंधन रूपी यंत्र नही टूटा जिसतें परें कछू नही ऐसी ब्रह्मचैतन्य की सत्तामात्र जगतके अभावकी शोध नही जानी तब लग अहंकार बनाहै ७९ हेराजन् तूं संपूर्ण संसारके सुखदुःख हर्ष शोकादि विशेषणो कों शांत कर और जरा मरणादि भयतें रहितहो लोकेषणा पुत्रेषणा वित्तेषणातें रहित हो और निर्विं-

वन पुरुषकी न्याई सभतें ममताकों त्याग कर संपूर्ण संपदाकों भी त्याग कर अहंकार कोंभी शांतिकर और देहकी रक्षातें रहित हो लोकोंमों भिक्षाटन करके सर्व त्यागकों धारण करेगा तो ऊंचेसेभी ऊंचे पदकों पावेगा ८॰ वसिष्ठजी कहते हैं। हेरामजी तितिल गुरुने राजा भगीरथकों ऐसा कहा तो सो राजा केते दिन गये संते सर्व त्यागकी सिद्धि वास्ते ऐसे प्रयत्न कों करता भया एक धोती मात्र बाकी वस्त्रकों लेकर सर्व त्याग करके अपने नगरतें और राज्यतें बाहिर निकस जाताभया जहां अपनेकों नाम करकेभी नही बुलावे और जानेभी नही तहां जाय रहताभया ८१ तहां जाइ करके ग्रामों विषें वनोंविषें नदीतीरों विषें आश्रमों विषें पर्वतोंकी कंदरोंमों निवास करता भया और आत्म विचारमों धैर्य करके सावधान होता भया और तीन प्रकारकी इषणा पुत्र और लोक और द्रव्य इनकी इछा उसकीभी शांत होजातियां भईयां ८२ हेरामजी सो राजा भगीरथ परम उपशम करके आत्म स्वरूपमों विश्रांतिकों प्राप्त होता

भया पृथिवी अनेक नगरों देशोंमें कितना काल व्यतीत करके अपने नगरकों आवता भ
या वुह केसाहै नगर अपने वशमें नहीहै और शत्रुजनों करके आक्रांत कियाहै ८२ तिस न
गरमें प्रवाह करके जो आगे आजावे तिस मंदिरमें चला जाताहै अनेक नगरके लोकोंके
घरोंमें मंत्रियोंके घरोंमें भिक्षाटन करता भया ८२ और जिस शत्रुने राज्य लियाहै सो राजा कों
कहता भया हेमहाराज अपनें राज्यकों ग्रहण करो ऐसे कहने सेभी राज्यकों ग्रहण न
ही करता भया जिसकारणतें तिसनें सर्व त्याग कियाहै सो भोजन मात्रतें अधिककों नही
लेता भया ८४ किसि कालमें प्रशांत मन भया सर्व प्रकार करके प्रशांत भई बुद्धि जिसकी
और परम सुखकों प्राप्त भया सो एक कालमें आत्मानंदमें मग्नभये तितिल गुरुके पास प्रा
प्त होताभया ८५ सोतितिल गुरु और राजा भगीरथ शिष्य दोनों मुनियों की सभामें प्राप्तभये
आपसमें ब्रह्मविचार करके कालकों व्यतीत करते भये यथा चित अन्नपान करके देह

यात्राको करतेभये ८६ सोदोनों धनोंको हाथी घोड़े रथोंको और अष्ट प्रकारके ऐश्वर्यको सि
द्धजनों करके सेवित कियाहै तिसकोंभी तृण समान जानते भये ८७ सो दोनों मुनि होत भये
जो कुछ काल जोगते सुख अथवा दुःख जो चला आवता है तिसकों आनंद करके अंगीकार॰
करते भये अरु तुह कैसेहैं चाहनातें रहितहैं सम रस अवस्थामों दोनों समान होत भये ८८
सो राजा भागीरथ किसी कालमों किसी देशमों कोई कितने राजे नष्ट होगये तब मंत्रियोंने प्रजा॰
ने बेनती करी तो लोकोंके उपकारके वास्ते अपने पराये राज्यकों करता भया सप्तद्वीप पृथिवी
का एक चक्रवर्त्ती होताभया फेर महातपस्या करके ब्रह्म लोकसें गंगाको पृथिवी लोकमों उतार
ता भया तिसतें उपरांत मन रूपी हंसकों उपशम करके परम गतिकों प्राप्तभया ८९ इतिश्री॰
भागीरथराजाकाप्रसंगः॥ श्रीवसिष्ठजीश्रीरामजीप्रतिकहते हैं। हेरामजी तुमभी मन करके॰
यह संपूर्ण संसार जालकों त्याग करके मन रूपी पंछीकों अपने वश करके राजा भीखि॰

नि॰ ध्वजकी न्याई शांत हत्ति होय करके आत्म सुखमें अचल स्थितिकों प्राप्तहो ९० हेरामजी ए
मा॰ सा॰ क राजा शीखिध्वज मालवे देशका होताभया चूडाला तिसकी रानी होती भई सो दोनों उत्त
४२७ म गुणों करके संयुक्त होते भये चिरकाल राज्य भोगोंको अपनी इच्छा करके भोगकर्के फेर विचार
कों करते भये ९१ यह संसारमें ऐसाकोंन स्थिर और सुंदर पदार्थ है जिसकों पाय करके
चित्त दुःख दशा करके संतापकों नही प्राप्त होताहै ९२ सो राजा ओर रानी ऐसा मन में
निर्णय करके संसार रोगकी औषध रूपी वेदांत शास्त्रकों चिरकाल विचार करके मन में
निश्चय करते भये संसार रूपी विसूचिका आत्म ज्ञान करके शांत होतीहै ऐसा निश्चय कर
के आत्मज्ञान में परायण होते भये ९३ हेरामजी इसतें अनंतर सो चूडाला रानी तत्वज्ञ
पुरुषोंके मुखतें सुंदर पदों करके शास्त्रोंके अर्थोंकों संसारतें तारणे हारे कों सुन करके
इस प्रकार करके आपने आपकों ऐसे विचार करती भई ९४ संसार के कार्योंकों करती

हुई अथवा नही करती हुई निरंतर आपनेमें विचार करती भई मैंदेखूंत सही मैं आप।
कौंनहूं यह मोह किसकों प्राप्त भयाहै और कहांसे उठ खडा भयाहै ९५ जो मैं देहकों आ
त्मा जानों तो देह तो जड़है और मूढ़है यह आत्मा नहीहै किसतें जिसतें बालपने तेंही मैं
ने अनुभव करके जानाहै यह कर्मेंद्रियों करके कर्म करैहै तो मैं कर्मेन्द्रियों कों आत्माजा।
नों तों कर्मेन्द्रियांभी आत्मा नहींहै जिसतें कर्मेन्द्रियां देहके अंगहैं और ज्ञानेंद्रियोंकी प्रेरणा
करी हुई कर्म करणोमें प्रवृत्त होवेहैं ९६ जो ज्ञानेंद्रियों आत्माहैं नही ज्ञानेंद्रियाभी जड़ है
जिसतें मनकी प्रेरणा करी हुई प्रवृत्त होवें यह भी शरीरके अवयव हैं जैसें लाठी करके बल
करके लोक काम करैहैं तैसें प्रवृत्त होवेहैं तो मन आत्माहै सोभी नही जिसतें मनभी जड़।
है जैसें खमानी करके पत्थर फेंकीदा है तैसें मन बुद्धिनें प्रेरणा किया हुआ संकल्प करैहै ९७
तो बुद्धि निश्चय रूपहै सो बुद्धि आत्माहै नही सो बुद्धिभी जड़है सोभी अहंकारणे प्रेरणा।

करी निश्चय करेहै जैसे पृथिवी को खोदनेके मार्ग करके नदी चलेहै ६८ जो अहंकार आत्मा
है सोभी नही जिसतें अहंकार भी जड़है मुर्देके सिरीषाहै जैसें बालकने अपने भ्रम करके
जख कल्पन कियाहै सो बालक कोही डरावे है तैसें अहंकारभी जीवने कल्पन कियाहै ६९ जो
जीव आत्माहै सोभी नही सोजीवभी चैतन्यका अंश रूप करके हृदयमों स्थितहै अनात्मपदार्थ
के हृदयमों स्थित भयाहै और अत्यंत सूक्ष्महै और किसी परमात्मा चैतन्य करके अपने जीव
भावकों करेहै ७० अहो इतिमहा आनंदहै अब मैंने जानिआहै जीव जिस करके देहादिकों
को चेतेहै और जड़ पदार्थोंमों जीव भावकों कर्त्ताहै परंतु जड़ पदार्थोंके नाशमों नाशकों न
ही प्राप्त होता है जिस चैतन्य रूप करके प्रकाशिआ है जिसके चेतने बिना जड़ पदार्थोंति मु
क्त नही होताहै सो परमात्मा चैतन्य मैने अब जानियाहै ७१ यह जीव जो है सो असत्य औ
र जड़ जो देहादिक है और चिदाभास इन्हके संबंधते अपना जो चैतन्यता स्वरूपहै तिस

नि॰
वा॰ सा॰
४३९

को आप शुद्ध चैतन्य स्वरूपभी है अपने स्वरूपकों त्याग करके जड़ रूप होजाता है जैसें जल के महा सरोवरमें प्राप्त भया अग्नि अपने प्रकाश रूपकों उष्णता गुणकों त्याग देताहै ७२ यहजो मन बुद्धि आदिकहैं सो चिदाभासन कर सभही असत्यहैं भ्रम करके सिद्ध भयेहैं जैसें भ्रम करके एक चंद्रमाके दो चंद्रमाकी प्रतीत होतीहै तैसें दूसरे चंद्रमाके स्थान हैं ३ सत्यरूप एक महा चैतन्य परमात्माहै जिसकों महा सत्ता कहतेहैं सो सदा अज्ञानादि कलंकसे रहितहै सर्वत्र सदा समानहै अहंकारसें रहित स्वरूप युक्तहै ७४ वसिष्ठजीकहतेहैं। हेरामजी सो चूडाला अपने विवेकका यने अभ्यासतें और यना आत्म स्वरूपके उदयतें कांति करके अत्यंतशोभित होती भई जैसें लतानई प्रकट होतीहै सो फल और नवदलोंके उदय होनेतें शोभित होतीहै ५ हेरामजी राजा शिखिध्वज तिस चूडालाकों देखता भया कैसाहै उत्तम है अंग जिसके तिसकों अपूर्व शोभा युक्त भई को देख करके मंदहास करके युक्त वचन

कों कहता भया हे प्रिये तूं अब फेर नये यौवनकों प्राप्त भई जैसी शोभेहै बारंबार उत्तम शृंगार रचना युक्त जैसी शोभतीहै अपनी शोभा करके संपूर्ण जगतकों शोभायमान कर तीहै ८ हे प्रिये मानो तैने अमृत पान कियाहै अथवा मानो उत्तम वस्तुकों प्राप्त होईहै मानोंआ नंद समुद्रमें मगन भईहै ९ हे प्रिये चक्रवर्त्ती राज्यसें और चिंतामणितें त्रैलोक्यके इंद्रपदा दीतें तेरेकों क्या अधिक वस्तु प्राप्त भयाहै ऐसी आनंद करके अत्यंत शोभाकों प्राप्त अपनें आनंदके कारणकों मेरे प्रति कहदे १० चूडालारानीकावचन।हेराजन् मेरे स्वामिन् में इस ज गतकों कछ स्वरूप करके युक्त भयेको अथवा कछ स्वरूप रहित भयेकों कछभी नही जान तीहूं तिस कारणतें मैं अत्यंत शोभाकों प्राप्त भईहूं ११ हेस्वामिन् भोगोंकों भोगने करके अथवा नही भोगने करके हर्ष नही करतीहूं और शोकभी नही करती हूं मेरेकों भोग पा स प्राप्त भये भी दूर गये जैसेहै तिसतें आनंद युक्तभईहूं १२ हेनाथ यह मेंहूं यह में

नहीहूं सत्य मेंहूं असत्य मेंहूं संपूर्ण मेंहूं मेंकछु नही ऐसे संकल्पनें रहित होने करके आ
नंद युक्तमें भईहूं १३ हेनाथ निश्चय करके उत्तम शास्त्रोंकी विचार दृष्टि करके उत्तम बुद्धि करके
रागद्वेषतें रहित भईहूं सखीजनों साथ क्रीडा भी करतीहूं तिसते सुखी भई हूं १४ हेनाथ जो कु
छ मे नेत्रों करके देखती हूं सो इहां जगतमों सत्य कछु दृष्ट नही होताहै तिस परमात्मा वे
तत्त्वकों मैं भली तरांसें देखती हूं तिसतें चिरकाल परम उदयकों प्राप्त भई हूं १५ वशिष्ठजी राम
चंद्रजीप्रतिकहतेहैं। हेरामजी सो चूडाला रानी आत्म स्वरूपमें विश्रांत भई राजाकों आत्मरा
मका मार्ग कहती भई सो राजा तिसके वचनोंके अर्थकों नही जान करके शिखिध्वज राजा
कहता भया १६ हेप्रिये तूं संबंध रहित वचनोंको कहतीहै तूं अजानहै बालबुद्धिहै राज भोगों
कों भोगने योग्यहै राज कंन्याहै भोगोकों भोग ऐसे वचन कहनेको तूं योग्य नहीहै १७
हेप्रिये जो कोई कछु प्रत्यक्ष पदार्थकों त्याग करके जो देखने भोगनेमों नही आवे तिसकों

विचारे और प्रत्यक्ष भोगको असत्य कहे सो कैसें शोभाकों पावैहै १८ हेप्रिये जो कोई भोगो-
कों विन भोगें त्यागे जो कछु नही तिसमों प्रीत करे सभ कछु त्याग करके अकेला रहे सो कै-
सें शोभताहै १९ हेप्रिये जो कहे नामें देहहूं में देहतें और हूं यह सभ कछु नही ऐसा जिसका
कहना है सो कैसें शोभता है १९ हेप्रिये जो में देखताहूं तिसकों में नही देखताहूं तिस कों
में देखता हूं सो इसतें और है ऐसा कहना जिसनें नही त्यागिया है सो कैसें शोभता है २०
तिसतें हेप्रिये तूं बाला है और मुग्ध हैं और चंचल हैं ऐसें मत कहो तूं विलास भोगनें योग्य
है अनेक विलास वाले वचनों कों कहो और विलास युक्त भोग क्रीडाकों कर २१ श्रीवसिष्ठजी क-
हतेहैं॥ सो रानी चूडाला राजाकों आत्मज्ञानतें रहित देख करके दया करके तिसके उद्धार वास्ते
आधि और व्याधितें मुक्त होइ करके आत्मज्ञान की योग सिद्धितें आकाशमों उड जानेकों सम-
र्थभी है तदभी राजाके उद्धार करणे वास्ते योगाभ्यास कों करती भई॥२२॥श्रीरामजीका प्रश्न

सिष्ठजीप्रतिकहतेहैं॥हेमहाराज इस देहमें विनाश क्या है और उत्पात क्या हैं और आधीक्या है और व्याधी क्याहैं इसकों तुम क्रमसें कहो २२ वसिष्ठजीकहतेहैं॥हेरामजी आधी और व्याधी यह दोनों दुःखका कारणहैं तिन्हकी निवृत्ति कों तूं सुख जान तिन्हके क्षयकों तूं मोक्ष जान २३ हेरामजी यह दोनों आधी व्याधी किसी कालमें इकट्ठे शरीरमें होतेहैं कदाचित् क्रमसे होतेहैं कदाचित् आगे पीछें होतेहैं २४ हेरामजी देहके दुःखकों व्याधी जानतेहैं वासना के दुःखकों आधीन कहते हैं तिन्ह दोनोंकी अपनी मूर्खताही मूलहै तत्वज्ञानतें दोनोंका क्षय होताहै २५ हेरामजी तत्वज्ञान नही होनेतें और इंद्रियों के जीतने बिना और हृदयतें रागद्वेषों के नही त्यागनेतें और जड़तातें दुःखने मोहकों देने हारी आधी प्रवृत्त होतीहै जैसें वर्षाऋतुमें जल धारा होतीहै २६ हेरामजी भोगोंकी हृदयमें निरंतर वाञ्छा करणेतें और मूढतातें चित्तके नही जीतनेतें दुःख करणे हारे क्रूर व्यवहार करके दुष्ट देशमें भ्रमणेतें क्रूरकाल में व्यवहार

करणेतें क्रूर क्रिया करणेतें दुर्जनोंकी संगति दोष करकें दुर्जनोंकी सेवा करणेतें नाड़ीयोंके मार्गमें पवनके रुधने भरनेतें देहकी व्याकुलता करके अत्यंत दुःख देने हारी चित्तकों व्याकुलता करणे हारी शरीरमें व्याधी होतीहै २८ हे रामजी जैसें नदीके स्वरूपकी वर्षाऋतु मेंं और ग्रीष्मऋतुमें क्षीणता और वृद्धि होतीहै तैसें आधी व्याधी यह दोनों पंचभूतों से बने हुई शरीरमें उदय होतीहै २९ हे रघुकुल के धुरंधर जैसें आधी व्याधी नाशकों प्राप्त होतीहै तिसकों तुम श्रवण करो व्याधी दो प्रकारकी है एक साधारण है एक सार है व्यवहारकी व्याधी सामान्य है जन्मकी व्याधी सारहै जो प्राप्त होय यथा भोग पदार्थ तिस करके शरीरका प्रयोजन करणेतें व्यवहारकी व्याधी नष्ट होतीहै ३० हे रामजी जौनसी व्याधि मानसी चिंतातें भईहै सो मानसी चिंताके नाश भयेते नष्ट होतीहै और जन्म रूपी सार व्याधी जोहै सो आत्मज्ञान विना नष्ट नहीं होतीहै ३१ हे रामजी मानसी दुःखसे व्याधी कहाहै सो संकल्प

रूपहै और वासना मय है सो जैसें रज्जुका ज्ञान करके रज्जुका सर्प नष्ट होताहै तैसेंही सब
का अधिष्ठान आत्माकों जाननेतें वासना सहित मानसी आधी नष्ट होतीहै ३२ हेरामजी जैसें व
र्षाऋतुमों वधी जो नदी सो अपने तटके वृक्षोंके मूलों कों उखाड़ देतीहै आत्मज्ञान संपूर्ण आ
धी व्याधीके मूल कारण अविद्याकों दूर कर देताहै ३४ और जौंनसी मानसी विनाते व्याधीहैं
सो मंत्र औषधी कर्मों करके चिकित्सा शास्त्रमों कहे उपाय करणेतें और आहार व्यवहार का
संयमतें नष्ट होतीहै ३४ श्रीरामजीका प्रश्न वसिष्ठजी प्रति॥ हेगुरुजी आधीसें व्याधीकैसें हो
तीहैं सो औषधी द्रव्यों करके और मंत्रकी युक्ती करके और पथ्य करणेतें कैसें नष्ट होती है
यह तुम मेरे प्रति कहो॥३५॥ श्रीवसिष्ठजी रामजीकहते हैं॥ हेरामजी चित्त व्याकुल भये संते
देहभी क्षोभकों प्राप्त होताहै तब यह प्राणी क्रोधकों प्राप्तभया अपने आगे मार्ग कुमार्ग कों
कुछ नहीं देखताहै वेग करके युक्तभया जैसें बाण करके पीडित भया मृग वेग करके मिला-

विना आत्मज्ञान की सिद्धिकों राजाकों नही दिखावती भई जैसें शूद्रकों वेदोक्त यज्ञोंकी क्रिया न
ही दिखावते हैं ७५३ श्रीरामजीका प्रश्न वसिष्ठजीप्रति। हेगुरुजी सो चूडाला रानी आत्मज्ञानकी महा
सिद्ध योगिनी है तिसके बोधन करणेतेभी राजा बोधकों नही प्राप्त भया तो और कोई और किसीने
कैसें बोधन करणाहै ७५४ श्रीवसिष्ठजीश्रीरामजीप्रतिकहतेहैं। हेरामजी उपदेश का यही क
म है क्या जो व्यवस्था मात्र कहनी शास्त्र द्वार करके आत्मज्ञान का मार्ग कहना और ज्ञान हो
नेका कारण शिष्यकी केवल शुद्ध बुद्धिहै जो बुद्धि निर्मल नही होवे तो ज्ञान नही होता है
हेरामजी विंध्याचल पर्वतकी छायामें कोई एक महाकृपण किराड था तिसकी एक कोडी
मार्गमें गिर पड़ी सो किराड़ तिस कोड़ीकों तीन दिन ढूंडता भया तिसकों मार्गमें चिंतामणि
हाथ लगी तिसकी संपूर्ण कृपणता जाती रही तैसेंही गुरु मुखसें शास्त्रका उपदेश श्रवण
करणेतें भावनातें एकाग्र होनेतें आत्मज्ञानभी प्राप्त होताहै ५५ हेरामजी पदार्थ कछु और

प्राप्त करतीहै जो नही होवे तो भी तत्ववेत्ता को भी मूर्खकी न्याई दुःखकों प्राप्त करतीहै यह अपनी भावना विषकों अमृत करतीहै अमृतको विष करतीहै ४८ हेरामजी यह देह सत्यभावना करके देखा होवे तो फेर देहकों करताहै और असत्य भावना करके देखा होवे तो आकाशकी न्याई शून्य होजाताहै ४९ हेरामजी सो रानी चूडाला अपने भर्त्ता राजा शिखिध्वजकों संपूर्ण यत्न करके बहुत करके आत्मज्ञान रूपी अमृत प्राप्त होनेकों बोधन करती भई तदभी राजा बोधकों नही प्राप्त होता भया ५० सो राजा चूडालाकों आत्मज्ञानकी युक्ति कहती कों ऐसें जानता भया यह मेरी रानी काम भोगकी कलामों चतुरहै जो कहती है तिस ज्ञानमों मूर्ख है और बाला है इस्त्रीयों कों ज्ञान नही होताहै ऐसे केवल जानता भया और आत्मज्ञान करके सिद्ध भईको नही जानता भया ५१ हेरामजी सो चूडाला आप सिद्ध भईहै परंतु राजाकों आत्मज्ञान की सिद्धि नही भई देख करके मनमों विश्रांतिकों नही प्राप्त होती भई और अधिकार

सें हरीड़ां भक्षण करणेतें स्वभाव करके मलको पचाय करके उदरतें निकाश देतीहे तैसें प्रा
णायाम करके मात्रा लवपल घड़ी आदिक मंत्रोंके आवर्तन करणेतें व्याधी शरीरतें निकस जा
तीहे ४३ हेरामजी भावनाके वशतें श्रोर श्रद्धा करके उत्तम क्रिया करके साधुजनों की सेवा क
रके मन निर्मल जानीदा है जैसें कसोटीमों सुवर्ण शुद्ध जानीदाहे ४४ हेरामजी मन शुद्ध भ
ये संते देहमों आनंद वधताहे जैसें पूर्ण चंद्रमा उदय भये संते मंदिरमों निर्मलता शोभती
हे ४५ हेरामजी मनकी शुद्धितें मंत्र क्रम करके प्राण पवन यथा योग्य देहमों चलते हें
श्रोर भोजन किये सभही अन्नोंको पचाइ देतेहें अन्न पचनेतें व्याधि नष्ट होतीहे ४६ हेराम
जी यह शरीरादिक आत्मा नहीहे इहमों जो आत्म भावना हे सोही हृदयमों अज्ञानका अंध
कारहे सो अज्ञान रूपी अंधकार हे सो सूर्य चंद्रमा अग्निके प्रकाशते दूर करणा दुःख करके
भी नही बनता हे ४७ हेरामजी सत्तारूप आत्माकी दृढभावना जोहे सो मूर्खोंको भी आनंद को

भी चला जाताहै तैसें बहुत वेगकी गति करके व्याकुल होताहै तब तिसके देहके प्राणा प
वन लोभकों प्राप्त भये तो अपने समान चलनेके मार्गकों त्याग उलटे चलनेहैं जैसें हाथी
के प्रवेश कारणतें नदी के किनारेमों जल चढ़ आवतेहैं ३८ प्राणके उलटे चलनेतें देह
की नाड़ी उलट जातीहै जैसें राजाकी व्याकुलता करके लोकमों जातिके धर्म उलटे होजातेहैं ३९
हे रामजी इस देहमों कोई नाड़ीयां प्राण पवन करके पूर्ण होतीहै कोई खाली होतीहै प्राण
विगड़नेमों नाड़ी विगड़ जातीहै जैसें वर्षा ऋतुमों नदियां विगड़ जातियांहैं ४० हे रामजी प्रा
णका संचार विगड़नेतें अन्न विकार करके कम पचेहै कबहूं नही पचेहै कबहूं बहुत पचे
है इस प्रकार करके अन्न खायाहुवा देहमों दोष कारण वाले होवेहै ४१ हे रामजी इस प्रका
र करके मानसी चिंता रूपी आधितें व्याधी होवेहै तिसतें आधी के नाशतें व्याधीका नाश
होवेहै और जैसें मंत्रों करके व्याधि नष्ट होवेहै तिस क्रमकों तुम सुनों ४२ हे रामजी जै

फूडीदा है और सद्गुरु सेवातें और कृपातें कछु और पदार्थ प्राप्त होताहै जैसें किराड़ प
क कौडीकों फूडताया सो चिंतामणिकों प्राप्त होता भया ५६ हे रामजी सो राजा शिखिध्व
ज तप और तीर्थ दान करणेतें सुखकों नही प्राप्त भया सो एक समयमों पास बैठी रानी
चूडाला कों वचन कहता भया ५७ राजा शिखिध्वजका वचन रानी चूडाला प्रति॥ हे
प्रिये राजमैंने चिरकाल भोगिया है और ऐश्वर्य कियां संपदांभी चिरकालतक भोगियां
हैं अब मैं वैराग्य करके युक्त भयाहूं बनकों जाताहूं ५८ हे रानी बनमों गयेतें मुनिज
नोंकों भोग सुखभी वश नही करते हैं और दुःखभी वश नही करते हैं आपदा और सं
पदाभी वश नही करतीहै देश भंग और पदार्थोंकी हानी का मोह और युद्धमों प्राणियों
का क्षय बन वास करणे वालेकों दुःख नही करतेहैं तिसतें राज्यसेंभी बन वास करणे
वालेकों अधिक सुखकों मैं जानताहूं ५९ हे सुंदरी जैसें एकांत बन रहणे वालेकों सुख

भी चला जाताहै तैसें बहुत वेगकी गति करके व्याकुल होताहै तब तिसके देहके प्राण प
वन लोभकों प्राप्त भये तो अपने समान चलनेके मार्गकों त्याग उलटे चलनेहैं जैसें हाथी
के प्रवेश करणेतें नदी के किनारेमों जल चढ़ आवतेहैं ३८ प्राणके उलटे चलनेतें देह
की नाड़ी उलट जातीहै जैसें राजाकी व्याकुलता करके लोकमों जातिके धर्म उलटे होजातेहैं ३९
हे रामजी इस देहमों कोई नाड़ीयां प्राण पवन करके भरी होतीहै कोई खाली होतीहै प्राण
बिगड़नेमों नाड़ी बिगड़ जातीहै जैसें वर्षा ऋतुमों नदियां बिगड़ जातियांहैं ४० हे रामजी प्रा
णका संचार बिगड़नेतें अन्न विकार करके कम पचेहै कबहूं नही पचेहै कबहूं बहुत पचे
है इस प्रकार करके अन्न खाया हूवा देहमों दोष करणे वास्ते होवेहै ४१ हे रामजी इस प्रका
र करके मानसी चिंता रूपी आधितें व्याधी होवेहैं तिसतें आधी के नाशतें व्याधीका नाश
होवेहै और जैसें मंत्रों करके व्याधि नष्ट होवेहै तिस क्रमकों तुम सुनों ४२ हे रामजी जे

छूडीदा है और सद्गुरु सेवासें और कृपातें कछु और पदार्थ प्राप्त होनाहै जैसें किराड ए
क कौडीकों ढूंडताथा सो चिंतामणिकों प्राप्त होना भया ५८ हे रामजी सो राजा शिखिध्व
ज तप और तीर्थ दान करणेतें सुखकों नही प्राप्त भया सो एक समयमों पास बैठी रानी
चूडाला कों वचन कहता भया ५० राजा शिखिध्वजका वचन रानी चूडाला प्रति॥ हे
प्रिये राज मैंने चिरकाल भोगिया है और ऐश्वर्य कियां संपदांभी चिरकालतक भोगियां
हैं अब मैं वैराग्य करके युक्त भयाहूं बनकों जाताहूं ७५८ हे रानी बनमों गयेतें मुनिज
नोंकों भोग सुखभी वश नही करते हैं और दुःखभी वश नही करते हैं आपदा और सं
पदाभी वश नही करतीहै देश भंग और पदार्थोंकी हानी का मोह और युद्धमों प्राणियों
का क्षय बन वास करणे वालेकों दुःख नही करतेहैं तिसतें राज्यसेंभी बन वास करणे
वालेकों अधिक सुखकों मैं जानताहूं ६० हे सुंदरी जैसें एकांत बन रहणे वालेकों सुख

होताहै तैसा सुख स्वर्गमें चंद्र मंडलमें ब्रह्माविष्णु रुद्र लोकोंमें सुख नही होताहै ६१
हे रानी जो तूं मेरा प्रिय चाहती है तो मेरे बन जानेमें विघ्नको नही करणे योग्यहैं जिसका॰
रणतें उत्तम कुलकी इस्त्रियां भर्त्ताके मनोरथ करणेमें स्वप्नेमेंभी विघ्न नही करतीहैं ६२
रानी चूडाला राजा शिखिध्वज प्रतिकहतीहै॥हेनाथ योग्यकाल में किया कार्य शोभता है
अयोग्य कालमें किया नही शोभताहै जैसें बसंत ऋतुमें वृक्षों कों पुष्प शोभा करतेहैं औ
र शर्द ऋतुमें फल शोभा करतेहैं ६३ तिसतें हे राजन् वृद्धा वस्था करके जर्जर देह वाले॰
पुरुषोंको बन बास शोभता है और तुम्हारे सिरीषे युवा पुरुषोंको बन बास करणा मेरेकों यो
ग्यता बिना नही रुचताहै ६४ हेराजन् अब तेरेको प्रजापालने का समय है बन जानेंका स
मय नहीहै अब तूं राजा होइ करके प्रजाको पालना छोड करके बनकों जावेगा तो राजा बि
ना राज्यमें पाप होनेतें सो पापतेरेकों प्राप्त होवेगा ६५ हेराजा जो राजा समयकी मर्य्यादा॰

कों उलंघन करके वर्त्तमान होवे तिसकों प्रजा और मंत्री सेवक रोक लेतेहैं अयोग्य कार्य कों नही करणे देतेहैं ६६ शिखिध्वजराजाकावचनरानीचूडालाप्रति॥हेरानी अब तेरा कहना होइ रहा अब मेरे चाहे कार्यमों विघ्न मत करे मेरेकों अब दूर एकांत बनमों गये कों समझ ६७ श्रीवसिष्ठजीश्रीरामजीप्रतिकहतेहैं॥हेरामजी एक दिनमों अर्धरात्रिमों शय्या पर सोइ गई चूडालाकों त्याग करके मैं चोरोंकों मारनेकों जाताहूं ऐसें पहरे वाले चाकरोंकों कह करके हेराज्य लक्ष्मी तेरेकों मेरी नमस्कार होवे इस प्रकार राज्यलक्ष्मीको भी त्याग करके बनकों चला जाताभया ६८ हे रामजी तिसतें उपरांत चूडाला रानी जाग्रत भई राजा कों नही देखती भई चाकरोंसें भी खबर राजाकी नही पाई तब योग सिद्धि करके आकाश मों चढकरके एकाकी बनमों जाते राजाकों ध्यान करके देखती भई आप नही गई ६९ सो राजाभी अपना द्वादश राजमंडलकों त्याग करके जहां आपकों कोई नही जाने तहां जाइ करके

नि॰ वा॰ स॰ ५५५

एक कुटियामें निवास करता भया ७० हेरामजी सो राजा तहां बैठ करके नियम करताभया दिनके प्रथम पहरमें संध्याजपकों करता भया दूसरेमें पुष्पोंका संग्रह करके देवता पूजन करताभया तीसरे पहरमें फलमूलका भोजन करता भया चौथे पहरमें सत्संग शास्त्र श्रव णकों करताभया सायंकालमें संध्या जप करता भया इस प्रकारका सात्विक तप करते राजा कों अष्टादश वर्ष काल होताभया तिसके पीछे चूडाला राज्यको पालन करतीभई ७१ हेरामजी ति सतें उपरांत चूडाला रानी अपने पतिकों निष्काम सात्विक तप करतेतें निर्विकार शुद्ध अंतःकरण भयेकों ध्यान करके जानती भई ७२ तिसकों आत्मज्ञान का उपदेश करनेकों तिसके पास जाती भई मुनि पुत्रका स्वरूप धार करके राजाके आश्रम में प्राप्तभई राजा तिसकों देख करके आदर सत्कारकों करता भया ७३ फेर राजा नाम गोत्रकों पूछता भया हे मुनिपुत्र तेरा नाम और जन्म गोत्र क्या है ऐसा सुन करके मुनिपुत्र रूपका अपना जन्म नाम गोत्रकों कहती भई ७४ हे

राजन् एक समयमें सुमेरु पर्वतमें नारदजी जाते भये तहां देवनोंकी गंगामें रंभातिले
त्तमादि अपसरा स्नान करतीथी तिन्हके वस्त्र रहित देहोंकों देखते नारदजी का वीर्य पातहो
ता भया सो वीर्य नारदजीने फटिकके कमंडलू में गुप्त किया तिससें मेरा जन्म भया है
पिता नारद हो और पितामह मेरा ब्रह्माहै तिन्ह दोनोंने प्रीति करके वेद शास्त्र सहित
संपूर्ण ज्ञान दिया और कुंभ मेरा नाम किया ७५ जो तुम पूछो जो नारदजी सदा ब्रह्मचारी हैं
तिनका वीर्य पात कैसे भया तो श्रवण करो परमात्मा का स्वरूप सदानिर्मल है और सदासत्य
है एक लव मात्रा करकेभी विस्मरण होजावे तोभी तिसमें विकार सहित विश्व उदयभया भासताहै
जैसें वर्षाऋतुमें बादल उदय होतेहैं ७६ शिखिध्वजकावचन। हेमुनिपुत्र आजसें महात्मा सतजनोंकी
गिनतीमें आयाहूं अमृतके प्रवाह सरीखे वचन कहने वाले तेरे साथ जो मेरा समागम भयाहै ७७ हेमुनिपुत्र
ज्ञाते जगतमें राज्य लाभादिक उत्तम भावहैं सो तैसें आनंदको नही कर्तेहैं जैसें सतजनोंका समागम आनंद

करता है ७८ तिसतें उपरांत चूडालानें मुनिपुत्रके स्वरूप करके प्रश्न किया॰ तूं कोन है किस वास्ते तुम्हारा तपहै ऐसा प्रश्न किये संते राजा शिखिध्वज कहता है ७९ हे मुनिपुत्र तूं सर्ववेत्ते संदर्शी तेरेकों विदितहै तदभी तेरी आज्ञातें मै अपने वृत्तांतकों कहता हूं में राजा शिखिध्वज हूं राज्यकों त्याग करके इहां बनमों चला आयाहूं हे तत्ववेत्ताजी तेरे दर्शनतें में अति प्रसन्न भयाहूं जन्मसें अब कृतार्थ भयाहूं ८० हेतत्वज्ञ इह संसारमें बार बार सुख होतेहैं और बार बार जन्म मरण होतेहैं तिसकारणतें मैं बहुत संतापकों प्राप्त भयाहूं बन में आयाहूं ८१ हे ब्राह्मनु मैं चारो दिशामों फिर करके भ्रमा हूं मेरेकों चित्तकी विश्रांति नही प्राप्त होती है जैसें निर्धन पुरुष निधि प्राप्त भई बिना चारो दिशा भ्रम करके विश्रांत नही होताहै ८२ हे मुनिपुत्र चित्तकी विश्रांति वास्ते बनमों आइ करके यह अखंड नियम कियाकों मैं करता भी हूं तब भी दुःख समूह कों प्राप्त होताहूं मेरेकों अमृतभी विष रूप भया है ८३ चूडालारानीकावचन

नि॰
वा॰ रा॰
४६६।१

हेराजन् में पहिलें अपने पितामह ब्रह्माजी कों पूछता भया हे पितामह किया और ज्ञा नमें जौंनसा मुख्य कल्याणकों करे तिस एककों निश्चय करके कहो ८४ ब्रह्माजीकाव चन। हेपुत्र ज्ञानही परम कल्याणका साधन है तिस करके मोक्ष होजावे तो कर्म वृथाहै कर्म जो कहाहै सो ज्ञान रहित पुरुषोंकों काल क्षेप वास्ते कहाहै ८५ हेपुत्र जिन्हकों ज्ञान दृष्टि नही भईहे तिनकों कर्महीं आश्रयहे जेसें जिस पुरुषके पास शाल दुशाला नहीहै सो अपने कंबल वस्त्रकों नही त्यागताहै उसकों कंबलही दुशालाहै तेसें जिसकों ज्ञान न ही भयाहै तिसकों कर्म सेही कल्याणहै ८६ जिसकी सर्वत्र ब्रह्मभावनातें मूढता दूर भईहै तिसकों वासना उदय नही होतीहै जेसें चतुर पुरुषकों मारवाड देशमों जल समुद्रकी भावः ना नही होतीहै ८७ चूडालारानीकावचन। हेराजन् ज्ञानही परम कल्याणकों देताहै ऐसें म हात्मा ब्रह्मादिक कहतेहैं॥ तूं क्यों अज्ञान वान बनाहे कहताहैं इहां हमारा कमंडलहै

यहां देउहै यहां हमारा आसनहै इस प्रकार करके अनर्थके विलासमों क्यों आसक्त भया
है ८८ हे राजन् तूं ऐसा विचार क्यों नही करताहै ऐसा कैसा मैं कौन हूं यह संसार दुःख कै
से भयाहै और शांत कैसें होवेगा ऐसे विचार बिना मूढ जैसा कैसें रहाहै ८९ यह बंध कैसेंहै
और मोक्ष कैसे होताहै ऐसें प्रश्नोंको करता तूं तत्ववेत्ता पुरुषोंके चरणोंकी सेवा करता क्यों
नही शोभाकों लेताहै ९० हे राजन् जिस युक्ति करके मुक्ति होतीहै सो युक्ति सम दृष्टि वालेस
तजनोंकी सेवा करके और प्रश्न कारणे करके प्राप्ति होतीहै ९१ राजा शिखिध्वज आनंदके अ
श्रुआ छोडके कहताहै हे मुनि पुत्र आज महा आनंद भयाहै तैंने मेरेकों चिरकालसे बोध
न कियाहै ऐसीही मेरेकों अपने घरमों रानी चूडालाने कहाहै परंतु मैंने इस्त्री जान करके
तिसका कहा नही माना मैं मूर्खताते तिसकोंभी त्याग करके चला आयाहूं ९२ हे मुनि पु
त्र तूं मेरा गुरुहै तूं मेरा पिताहै तूं मेरा मित्रहै हे सुंदर मुख वाले मैं तेरा शिष्य हूं तेरे॰

नि॰ चरणोंकों नमस्कार करताहूं कृपा करो जो कछु उत्तम जानतेहो जिसके जाननेमों फेर सोचना
वा॰ स॰ नही बने जिस करके में आनंदकों प्राप्त होवें तिस ब्रह्मका उपदेश मेरेकों कर ९२ हेप्रभु नियुत्र
४५८ श्रादिकों के ज्ञान अनेकहैं आपसमों भिन्नहें जौंनसा ज्ञानोमों परम ज्ञानहै और संसारनें नाशगृहा
सहै सो कौंनसा ज्ञानहै तिसकों कहो ९३ चूडालाका वचन। हेराजन् जो तेंने मेरा वचन मा
नना होवे तो मैं कहूं जैसा ज्ञानमेरेकों है तैसा मैं कहता हूं और जैसें वृक्षके ऊपर काकबो
लेहै वृक्षकों काक भाषाका कोई ज्ञान नहीहै तैसें मेरा कहना वृथा नही होवे तो मैं कहूं ९४
हेराजन् आपही प्रश्न किया और कहने वालेने वचन कहा श्रवण करणे वाला वचनकों न
ही ग्रहण करे तो सो कहने वालेकियां उत्तम बानियां निष्फल होतीहै जैसें अंधेरेमों नेत्रों
कियां दृष्टि निष्फ होतीहैं ९५ शिखिध्वजकावचन। हेब्रह्मन् जो तूं कहेंगा सो मेंने वेदकी
विधि वाक्यकी न्याई विचार बिनाही तुरत ग्रहण करणा है यह मेरा वचन सत्यहै ९६

नि·
ा· स·
४५·

चूडालाकावचन। हेराजन् जैसें बालक पिताके वचनकों निमित्त कारणकों विचारणे विना
ही ग्रहण करताहै तैसें तूं भी मेरे वचनकों ग्रहण कर ९७ श्रवण करणे उपरांत बुद्धि क
रके शुभ जान करके भावनामें कर जैसें संगीतके श्रवणकों त्याग करके हितकारी मित्रके
वचनकों श्रवण करतेहैं तैसें और प्रसंग वार्ता श्रवणकों त्याग करके सुन ९८ हेराजन् में
तेरे प्रति कथाके क्रम करके वचनकों कहताहूं कैसाहै मेरे चरित्र जैसाहै जैसें मैने इस
करके बोध भयाहै और उदय होती जो बुद्धिहै तिसकों विचारणे करके चिरकाल करके दृ
ढ बोध करणे हाराहै और संसारके भय समुद्रकों तुरत तारणे हाराहै महा बोध वाली
बुद्धिकों आनंद करणे हाराहै ९९ हेराजन् कोई एक पुरुष द्रव्य उपार्जन में महा चतुर
था और आत्मज्ञानसें रहितथा तिस पुरुषकों चिंतामणि सिद्ध करणें वाले प्रसन्न भये सं
ते किसी सिद्धने चिंतामणि दई कहा भाई यह चिंतामणि प्राणांत कष्ट करके महा यत्न

करके सिद्ध होने वालाहै इसकों सो पुरुष लेकरके विश्वास नही करता भया क्या जानियें तिसकी मणि सिद्ध होवेगी नही ऐसा विचारते संते सो मणि तिसके हाथते उडगई फे र तिस वास्ते महा यत्न करणे लगा तद् लोकोंने हस करके कांचकी मणि दई कहा यह चिंतामणिहै सो तिसकों लेकरके अपने घरसें संपूर्ण द्रव्यादिक लुटाइ देताभया और झूठी मणीयाइ करके और अपने द्रव्यके नाशको प्राप्तभया तब तिसकों महा आपदा प्राप्तभई ८० हेराजन् जोंनसी आपदा अपनी मूर्खतातें होतीहै तिन्हके तुल्य जरामरणादिक दुःख नही होतेहैं तिस्से संपूर्ण आपदाकी शिरोमणि आपनी मूर्खता सभके शिर पर चढीहै जैसे संपूर्ण मनुष्योंकें शिर उपर काले केशोंका भार सदाही चढा रहताहै ८१ हेराजन् यह एक और दृत्तांत मेरा कहा सुन कैसाहै महा रमणी कहै बुद्धिकों उत्तम बोध करणे हाराहै और मैने आपने दृत्तांतके समान अनुभव कियाहै ८२ एक विंध्याचल

की झाड़ीमें महागजराज था तिसकों पकड़ने वास्ते एक महावत यत्न करताभया नालहू
दके ऊपर चढ़ करके संगलीयों के जालकों पसारता भया हाथीने संगलियां तोड़ दीनी वज्र
की न्याई दांतों करके नालहुदा भी तोड़दिया फेर महावतको भी मारने लगा फेर सो गजराज
दया करके महावतकों अपने शिरपर चढ़ाइ करके जहां महावतकी इच्छालेजाने कीथी त
हां गया तिस महावतने बड़े खोदमें गेर करके महा दुःख देने लगा सो हाथी अपनी मूढ़ता
करके आपही महा दुःखकों भोगता भया ८३ तिसतें हे राजन् जो संपूर्ण शास्त्रार्थमें कुशल
पुरुषथा धनकी उपार्जनको करताथा सो तूं है और चिंतामणि क्याहै जो तैने सर्वत्याग किया
है सो कैसा है संपूर्ण दुःखोंके अंत करणे हाराहै अबतूं शुद्ध बुद्धी वाला भयाहै ८४ हे रा
जन् सो पुरुष शुद्ध सर्व त्याग करके सर्व सार मोक्षकों सिद्ध नही करताहै तिसकों सर्व
त्याग करके और चिंतामणी करके क्या प्राप्त होवेगा ८५ हे राजन् तैने उक्त स्त्री धन बाधव

उक्त राज्यकों त्यागियाहै तेरेकों सर्व त्याग भयाहै तिसमों केवल अहंकार शेष बाकी र
हाहै अब तूं तिस अहंमति कोभी त्यागदे ६ जो कोई सुख करके सिद्ध होने हारे और प्र
माणतें रहित ऐसे अखंड आत्मानंदकों त्याग करके दुःख करके साधने योग्य तुच्छ सु
खकों साधने चाहताहै सो आत्मघातीहै और महा दुष्ट कहाहै ७ हेराजन् तूं महा दुःखों
करके भरे हुए ऐसे राज्य बंधनसें मुक्त भयाहै अब अपनी अहंमति करके बनवास रू
पी दृढ बंधन करके बद्ध भयाहै ८ हेराजन् अब तेरेकों शीत वातादि सहनेकी हनी चिं
ता भईहै तिसतें जो ज्ञान रहित पुरुषहैं तिन्हकों संसार दुःखोंके बंधनसें भी बनवास म
हा दुःख कों देणे हाराहै ९ हेराजन् तूं बनवास करके अपनेमों ऐसा जानताहै कि मेरेकों
चिंतामणि प्राप्त भयाहै मेरे जाननेमों तेरेकों एकस्फटिक का खंडभी नही प्राप्त भया है १०
हेराजन् जौंनसा विंध्याचलकी झाडीमों हाथीहै सो संसारमों तूं है जो तिसके दो दांनहैं सो

सो ज्ञान वैराग्यहैं जोंनसा हाथीकों पकडने चाहता महावतहै सो तो अज्ञानहै जो महावत ने
जिस हाथीके ऊपर आरोहण कियाहै सो अज्ञानने तेरेकों आक्रांत करलिया है सो बडे दोये
भें भेद करके हाथीकों पीडा दईहै सोही अज्ञान करके संसार दुःख तेरेकों भयेहैं सो हाथीम
हा बल वानहै और निर्बल महावतनें खेंच करके हाथी कों दुःखसे भी दुःखकी दशाकों
प्राप्त कियाहै सो तेरेकों मूर्खत्वनें महा दुःखमें प्राप्त कियाहै जो महावतनें हाथीकों व
ज्र बरोबर दृढ संगलीयों करके बांधाहै सो तेरेकोंही अज्ञाननें आशा पाश करके बांधा
है ११ हेराजन् आशा जो है सो लोहेकी संगली ते भी बडी दृढहै जिसते लोहेकी संगली॰
किसी काल करके टूट जावे आशा रूपी संगली तृष्णा करके दृढ बांधती है १२ हेराजन्
जो हाथी संगली तोड देता भया सो तेनें भोगोंकी खान रूपी निस्कंटक राज्य बंधनकों
त्यागियाहै जो सुख करके हाथीनें संगलीयां तोडियांहैं सो तेनें भोगोंकी आशा कों॰

त्यागन कियाहै जो हाथीनें महावतकों वरतासें पकड़ करके हथिनीमें गिरायाहै सो तैनें रा
ज्य त्यागने करके अज्ञान दूर कियाहै जैसी हाथीने तालवृक्ष कों जोर करके कंपाय मान कि
याहै तैसें तैनें भोगाशाको त्यागन करके अज्ञानको शिथिल कियाहै ८४ हेराजन् जब विवे
की पुरुष भोगोंको त्याग करके स्थित होताहै तब अज्ञान कंपाय मान होताहै जैसें वृक्षके
छेदनेमें तिस वृक्षका पिशाच कंपायमान होताहै ८५ जब तूं वनकों आया तब तैंने अ
ज्ञानकों जीत लियाहै फेर वन वास के अभिमान करके उदय होने लगाहै तिसको मनते
अहंकार को त्याग रूपी खड्ग करके छेदन कर ८६ जबसें तूं वनवास की साधनामें आस
क्त भयाहैं तबसें दोये रूपी मोहमें गिराहैं ८७ हेराजन् सो रानी तेरी चूडालया कैसी है
राजनीत कों जानने हारी और परमतत्व कों जानने हारी जो ज्ञानतेरे कों कहाया सो तैनें
कों अंगीकार नही किया ८८ सोचूडाला तत्वज्ञानियों में श्रेष्ठ है सो जो कछु करती है।

श्ररु जो कुछ कहती है सो सत्यहै आदरतें करणे योग्यहै १९ जो तेने तिसका वचन नही
किया तो तेरा सर्व त्याग करणा अङ्गीकार नही भयाहै सभ कुछ तेरा कियाझूठ है ८२· रा
जाकावचन। मैनें राज्य त्यागा है घर त्यागाहै सो देश त्यागाहै इस्त्रीयां त्यागी हैं भोग त्यागे
हैं मेरा सर्व त्याग कैसें नही बना है २१ चूडालाकावचन। हेराजन् धन और घर और राज्य
और पृथिवी राजछत्र और बांधव यह तेरे साथ नही हैं तिसतें सो तेरे नहीहैं जो कुछ तेरा
है सो तेने त्यागाहै सर्व त्याग तेरे कों कहांते भयाहै २२ हेराजन् जो त्यागना है सो तेने ना
ही त्यागिया नही है तिसकों त्यागे तो बाकी शेष तूं आप रहेगा तो शोक रहित होवेगा ८२३ रा
जाकावचन। राज्य तो मेरा नही क्यों सो मेरेकों बनमों नहीहै अब बनमों पर्वत वृक्षादिक
मेरे पासहैं तिन्हकों भी में त्यागताहूं ८२४ चूडालाकावचन। पर्वत की छाया और बन औ
र कंदरा और वृक्ष और स्थान यह तेरे नहीहैं क्यों यह तेरेसें आगें बनेहैं तिसतें तेरे साथ

यह नही हैं तेने सर्वत्याग कहातें कियाहै २५ राजाकावचन। जो वन पर्वतादिक मेरे न हीहै यह आश्रमही मेरा सभ कुछ है अरु कैसा है बाम्रोडीस्थान कुटिया संयुक्त है इ सकों भी मैं त्याग करता हूं २६ रानीकावचन। हे राजन् इहा बाम्रोडी स्थान कुटियादिक भी तेरे साथ नही हैं तिसतें यह तेरे नहीहैं सर्वत्यागनेनें कैसें किया है २७ राजाकावचन· जो कुटिया भी मेरी नही तो कमंडुलु और मृजाके वर्तन और कंथा भूर्ज वस्त्र यह मेरे हैं इन्हकों भी मैं त्याग देता हूं २८ वसिष्ठजीकावच। हे रामजी शिखिध्वज ऐसा कहि करके जो कुछ कमंडुलु कंथादिक बनवास की सामग्रीथी तिसकों अग्निमों जलाय देताभया २९ राजाकाव चन। अब मैं बन वास की वासनाकों त्याग करके सर्व त्यागी भयाहूं हे देवपुत्र अब मेरेकों आ नंद भयाहै तेनें यह चिरकाल में बोध करायाहै ३० जैसें जैसें यह बंधनके पदार्थ घटने जाते हैं तैसें तैसें मेरा मन परम आनंदकों प्राप्त होताहै अब शांत मन भयाहूं निर्वाणकों प्राप्त भया हूं॥

सम बैध मेरे लयकों प्राप्तभये हैं अब मैनें सर्वत्याग कियाहै ३१ कुंभ नामामुनि पुत्र के रूपा
करके चूडाला कहती है हे राजन् शिखिध्वज तूं कहता है मैंने सर्व त्याग किया है ऐसें मत
कहो तेनें कुछ नही त्यागाहै जो त्यागना है सो नही त्यागा है सर्व त्यागके आनंद के स्वरूपकों
मत दिखावें ३२ राजा कहताहै। हे मुनिपुत्र यह देह इंद्रियारूपी सर्व समूहका निवासहै औ
र रक्त मांस अस्थीओंका स्वरूप बनाहै सर्वत्याग मों यह शेष रहाहै जिसतें उसकोभी निपात
होय करके बडे गंभीर ठौरमें गेर करके सर्वत्यागी होताहै ३३ वसिष्ठजी कहतेहैं। हे रामजी
राजा ऐसा कह करके उठ करके बडे गर्तमें पड़ने वास्ते खडा भया वेगतें जब पर्वत सें गिरने
लगा ३४ तब कुंभकवचन कहताभया। हे राजन् देहने तेरा अपराध नही किया है इसकों
अपराध बिना क्यों गेरता है तूं अज्ञानी है जैसें बडा बलद निरपराध बछेकों मारताहै देहत्या
गतें सर्वत्याग नही बनताहै ३५ जिसने यह देह लोभकों प्राप्त करीदा है जैसे मतवारे हाथीने

हुआ कंपित करीदाहै तिस पापीकों जो तूं त्यागेगा तो महा त्यागी बनेगा तिसके त्यागनेमें देहा
दिकों का त्याग आपही होजावेगा तिसकों नही त्यागनेते देह फेर फेर नष्ट और नयेआउतपत
होवेगा ३६ राजाकाप्रश्न हे ॐभक यह किस करके चलायमान है ओर जन्म कर्मोका कौन बी
जहै तिसकों तुम कहो।३७ जो सभ दुःखोंका मूलहै जो सर्व प्रकार करके सर्व बंध रूप बना
है जिसकों सर्व संसार के कारण रूप भये संते सर्वत्याग नही बनताहै सोही सर्व स्वहै ति
सके त्यागमें सर्वत्याग करा जाताहै तिसकों मेरे प्रति कहो ३८ सर्व क्या है सर्वगत क्या
है सर्वसर्वदा प्रकार करके त्यागने योग्य क्या है सो सर्व करके क्या कहीदा है हे तत्वज्ञा
नीमें श्रेष्ठ तूं मेरे प्रति तिसकों कहो ३९ ॐभक कहताहै। हे राजन् सो सर्वगत रूपहै जी
व प्राणादि नाम करके प्रसिद्धहै सोना जड़है ना नही जड़है सो चित्त स्वरूप करके कहा
है ४॰ हे राजन् सभका बीज मन है जैसे वृक्षका वृक्षही बीज होताहै सभका बीज मनके

त्यागनेमों सर्व त्याग होताहै ४१ हेराजन् चित्तके त्यागनमों एक बार संपूर्ण द्वैतका त्या
ग होता है बाकी शेष शांतरूप एक निर्मल चैतन्य रहताहै ४२ हेराजन् सर्व त्याग कारण
परमानंद है तिस बिना संपूर्ण दारुण दुःखहै ऐसा वचन अंगीकार करके जो चाहै सो कर
हेमहाराज सर्वत्याग संपूर्ण संपदाका आश्रयहै यही लोकमों प्रकट है सो पुरुष कछु नही
मांगे है लोक तिसकों सर्वस्व देतेहैं ४४ हेमहाराज चित्तका स्वरूप वासनाकोही जानों तिन
शब्द वासना का नाम भेद कहाहै तिसका त्यागना अत्यंत सुखालाहै नेत्रके मीचनेतें भी सु
खाला है राज्यतेभी अधिक आनंद करताहै पुष्पतें भी सुंदर है ८४५ हेराज्यन् मूर्खकों तो म
नका त्याग महा असाध्य है जैसें निर्धन पुरुषकों चक्रवर्ती राज्य असाध्य है और तृण
कों सुमेरु बनना असाध्यहै ८४६ हेराज्यन् जो पुरुष मनकों कहीभी आशक्त नही करता
है अनेक प्रकारके कुतर्कके वादकों शांत करके स्थित रहाहै सो पुरुष देह करके युक्त

नि॰ है तोभी तिसकी चित्त रूपी लता छिन्न होजाती है ४७ हे राजन् मैं कौन हूं मेरा क्या स्व
वा॰रा॰ रूप है इस प्रकार करके अपने स्वरूप का जो विचार करणो मों चित्त रूपी वृक्ष वृक्षके द
४८१ ग्ध करणेकों अग्नि रूपहै ४८ राजाकावचन॥ हे कुंभ चित्त रूपी वृक्षका अहंभाव मूल मै
ने जाना है तिसकों मै त्याग करणे नही जानता हूं जैसें जैसें त्याग करता हूं तैसें तै
सें फेर आइ प्राप्त होताहै ४९ कुंभकावचन हे राजन् कारणतें कार्य होता है और अ
हंभावतें संसार का अंकुर होताहै इसकारण कों ढूंड करके मेरे प्रति कहो ५० राजा
कावचन॥ हे मुनि अहंभाव महा दोषहै तिसके कारणकों मै जानता हूं क्या इसका सं
वेद नही कारण है परंतु जैसें सो अहंभाव शांत होवे तिस उपायकों मेरे प्रतिकहो ५१
कुंभकावचन॥ हे राजन् तूं कारणकों जानता है तो अहंभाव का स्थान कहो तदसें
कारण और नही कारण कों सभ कहताहूं ५२ राजाकावचन॥ चेतने योग्य और चेतन

कारणोका स्वरूप जानने योग्य और जाननेका स्वरूप तिन्हका कारण पदार्थ सत्ताहै नि
सकी देहादिकका कारण है देहादिकों करके अहंभाव का संवेदन है ५५२ कुंभकावच
न॥ हे राजन् अहंभाव के संवेदन का कारण देहादिक पदार्थोंकी सत्ताहै तो देहादिक
पदार्थोंकी वस्तु सत्ताको असत्य करके फेर तेरा अहंभावका संवेदन किसमें स्थित है ५६
राजाकावचन॥ हे मुने जिसका स्वरूप और क्रियादिकल्पना प्रत्यक्ष दृष्टि होतीहै सो देहा
दिक असत्य रूप कैसेहै जैसें सूर्यादिकों का प्रकाश प्रत्यक्षहै तिसकों अंधकार कहना
नही बनताहै ५७ जिसके हस्त पादादिक अंग प्रत्यक्ष हैं क्रियाके फलके विलास वालाहै
सदा जिसका अनुभव होताहै सो देह सत्यरूपके सें नही है ५८ कुंभकावचन॥ हे राजन्
जिस कार्यका कारण नहीहै सो कार्य यहां कोई नहीहै तिसमें अहंभाव का संवेदन
भ्रम मात्रहै ५९ राजाकावचन॥ हे मुनीश्वर यह शरीर हस्त पादादि संयुक्तहै नित्य ही

प्रत्यक्ष लक्षित होताहै पिता कारणहै तिस देहको तुम कारण रहित कैसें कहतेहो ८०
कुंभकावचन॥ हेराजन् कारणके अभावतें कार्य नही रहताहै तो तुम्हारे देह कारण तु
म्हारा पिता नही रहाहै शरीर तुम्हारा असत्य क्यों नही भया यह तुम कहो ८१ राजाकावच
न॥ हेमुनीश्वर पिता और पितामह और प्रपितादिक तिन्हका कारण सृष्टि करणे हारा ब्रह्मा
सर्व शरीरोंका कारण क्यों नहीहै ८२ कुंभकावचन॥ हेराजन् जो तुमने सर्व शरीरों का का
रण ब्रह्मा कहाहै सोभी अब प्रत्यक्ष नहीहै तिसके प्रत्यक्ष नही होनेतें शरीरका अभा
व क्यों नही भया सो तुम कहो ८३ हेराजन् कारण जो होताहै सो कार्यका बीज होताहै
सो कार्यके साथ होताहै जैसें घटादिकोंके मृत्तिकादिक कारण होते हैं
सो तिनके साथही है जो शरीरका कारणहै सो अनित्यहै तिसके कार्य शरीरादिक अनि
त्यहैं तिसतें ब्रह्माभी कथन मात्रहै शरीरकी न्याई अनित्य शरीरका कारण और है सो

कौनहै अविद्या है सो अविद्या ज्ञान करके निवृत्त होतीहै तिसके निवृत्त होनेतें देहादि बंध
सभ निवृत्त होतेहैं ८४ राजाकावचन॥ हेभगवन् मैं अब बोधकों प्राप्त भयाहूं तैंने युक्ति करके
युक्त उत्तम वचन कहाहै कारण के अभावतें कर्त्ता भी नहींहै यह सभ ब्रह्महीहै ८५
कर्त्ताके अभावतें जगत नहीहै सो जगत किस करके भासताहै और पदार्थोंकों देखने हारा
कौन है इस कारणतें चित्तादिकभी इसके बीज नहींहैं और अहंतादिकभी कोई नहीहैं ८६ ऐ
से होनेतें मैं शुद्ध भयाहूं और बोध प्राप्त भयाहूं और शिव रूप भयाहूं तिसतें मेरेकों मेरी न
मस्कार है मेरेतें परें और उच्चभी नहींहै ८७ इस प्रकार करके वस्तु पदार्थ जाननेतें यह स
भ असत्यही भासता है आदभी अंतभी मैंहूं आकाशकी न्याई शांत भयाहूं ८८ जगतके प
दार्थोंके विभाग दृष्टि और देशकाल और दिशा और संहरण कलाके समूह यह सभही चि
रकाल करके शांत होजाते हैं एक शांतरूप ब्रह्मही अविनाशी है ८९ वसिष्ठजीकहतेहैं॥

हेरामजी सो राजा शिखिध्वज इस प्रकार करके विश्रांतिकों प्राप्त होता भया त्याग
ने शांत मन होता भया जैसें पवनतें रहित दीपक अचल प्रकाश मान होताहै ७०
कुंभकावचन॥ हेराजन् अब तूं अज्ञान रूपी निद्रातें जाग्रत भया हैं शांत शिवरूप स्थि
त भयाहै तेरेकों जगतके अस्त होनें सें श्रोर नहीं अस्त होनेसें कार्य कोई नहीहै ७१
अब तेरेकों आत्म स्वरूपका प्रकाश भयाहै श्रोर अनिष्ट पदार्थ समही नष्ट भये हैं।
चित्तकी संकल्प रचनातें मुक्त भयाहै अब तूं जीवन मुक्त भयाहै ७२ राजाकावचन॥ हे
मुनीश्वर मेरा मोह नष्ट भयाहै श्रोर आत्म स्वरूपकी स्मृति भईहै मै तेरे प्रसादतें सं
देह रहित भयाहूं ७३ कुंभकावचन॥ हेराजन् यहां जगतही नहीहै तहां अहं श्रोर त्वं
ऐसी भावना वाला संसार कहांहै काहेतें उदय भयाहै श्रोर कैसाहै श्रोर किस प्रकार
होताहै ७४ यह संसार नाम करके समही स्थिति रहितहै केवल चित घना मात्ररूप

है जैसे आकाश नील वर्ण वाला भ्रम करके भासताहै ७५ मैराजा हूं ऐसा जो संकल्प
है सो अखंड बंधन वालेहै मै कोई नही ऐसा संकल्प निर्मल मोक्ष वास्तेहै ७६ यह वि
श्व केवल नाम मात्र करके कहीदाहै और केवल असत्य रूपहै सो सत्यरूप कैसें होवे
तिसतें यह भ्रम मात्रहै ७७ जो पुरुष दोनों हाथ उठाइ करके आपही कहे मैं शूद्र हूं
सो ब्राह्मण कैसें होवे है तिसतें अपनी संकल्पकी कल्पना करके अपनेकों बंध माना है
सो संकल्प त्यागनेतें निवृत्त होताहै ७८ हेराजन् इछा और नही इछा यह दोनों बंध
मोक्षकी शक्तीहैं इन्ह करके बंध मोक्ष होते हैं जैसें चंद्रमा अपनी किरणोंके प्रकाश
बिना दृष्ट नही होताहै ७९ तिसतें हे मित्र तेरा कुछ नष्ट नही होताहै ना कुछ बढता
है तूं आकाश न्यांई निर्मल रूपहैं और केवल अनंत रूपहैं ८० श्रीवसिष्ठजीकहतेहैं
हेरामजी सो शिखिध्वज राजा ऐसा कुंभके वचनकों सत्य जान करके अपनेमें आत्म

तत्वकी भावना करता भया आपही तिसमें क्षणमात्र मगन होताभया ८१ क्षणमात्र निश्चल मन होय करके नेत्रोंकों मूंद लेताभया बानीकों शांत करके मौन धारण करताभया जैसें शिलामें प्रत्यक्ष लिखीभई अंग प्रत्यंग वाली पुतली निश्चल होती है तैसें निश्चल होताभया ८२ हेरामजी तिसतें उपरांत क्षणमात्रतें ध्यानतें जाग्रत भये राजा कों कुंभ कहता भया हेराजन् मै तेरेकों प्रश्न करताहूं तूं इस शुद्ध और विशाल और प्रकाशमान ऐसे आत्मपदमें विश्रांत भयाहै कि नही ८३ राजाकहताहै ॥ हेभगवान् तेरे प्रसादतें मैनें महती महाऐश्वर्य भूमिका रूपी महा पदवी देखीहै कैसीहै सभके उपर विराजमान है ८४ हेभगवन् जिन्होंनें जानने योग्य तत्ववस्तु जानी है ऐसें महात्मा संत जन तिन्हका सतसंग महा आनंदकों करनें हाराहै अमृत रूपहै और प्रमाण रहितहै और मोक्ष फलकों देनें हाराहै सो कहांतें मिलताहै महा दुर्लभ है सो अब मेरेकों भया

है ८५ जोमैने जन्मते निश्चय करके नाम करकेभी पायाहै सो अमृत आज तेरे समागम तें आपही पायाहै ८६ अबमें सखी हूं यह ज्ञान रूपी अमृत मैनें जैसा अब पायाहै वैसा पहिलें केसें क्यों नही पायाहै जैसा आत्म स्वरूपका आनंद अब स्वादमें आया वैसा पहिले क्यों नही आस्वादन कियाहै ८७ अंभकहताहै॥ हेराजन् जब मन उपशमको प्राप्त होवे होर भोगोंकी इच्छाको त्यागे संपूर्ण इंद्रियों की वासना रूपी मल परिपक्व होजावें तब सतगुरों के उपदेशाकियां उक्तियां चित्तमें स्थित होतीहैं जेसें मल रहित निर्मल श्वेत वस्त्रमें केसरके जलके रंग वाली बूंदा शोभैहैं ८८ हेराजन् आज तूं परिपक्व दोष मल भयाहै आजही ज्ञानकी कथा का श्रोता भयाहैं आजही उपदेशके योग्य भयाहैं आजही मैनें बोधको प्राप्त कियाहै ८९ हेराजन् आज तेरे शुभ और अशुभ कर्मोंका संपूर्ण क्षय भयाहै तिसतेंही सतसंगके प्रसंग करके ज्ञानके उपदेशकी सिद्धि तेरेकों भईहै ९०

हेराजन् मैनें आज पर्वमों जाइ करके इंद्रकी सभामों आया हुआ पिता नारद देखना मैं न
हीं जाताहूं इतना कहि करके कुंभ चलागया फेर तीन दिन उपरांत आया और सिंहनाद क
रके समाधीते उठे हुए राजाके पास अंदर प्रवेश करके राजाकों उठाय करके राजाकों साथ
लेकरके और वनकों दोनों चलेगये ९१ सो राजा और कुंभ दोनों मित्र वनमों विचरण करते भ
ये किसी कालमों विभूतिलगाइ करके दिगंबर रहते भये कबहू चंदनकालेपन कर्तेहैं कबही नग्नहो
इ रहतेहैं कबही दिव्यवस्त्रोंकोंधारे हैं कबही अनेक रंगके वस्त्र धारेहैं कबही भूर्ज पत्र धा
रतेहैं कबही पुष्पमाला कों धारतेहैं ९२ इसतें उपरांत कुंभ राजाकों कहता भया हे
राजन् मेरेकों दुर्वासा मुनिके आपतें इस्त्री भाव होनाहै ऐसा कहि करके इस्त्री रूपधा
र करके राजाके साथ विवाह करके फेर किसी समयमों राजाकों इंद्र रूप धारण कर
के कहा हेराजा स्वर्गकों चल ९३ तब राजा कहता हेदेव राज मैं स्वर्गके संपूर्ण सभा॰

नि॰
वा॰सा॰
४७॰

चारकों मानताहूं मेरेकों सर्वत्र स्वर्गहै यह स्वर्गादिक भोग अनित्य हैं मैंआत्म विचारके आ नंद करके सर्वत्र स्वर्गसेंभी अधिक आनंदकों भोगता हूं मेरा मन भोगवांछाते रहित भया है तिसतें मैं सर्वत्र आनंद युक्त रहताहूं ९४ श्रीवसिष्ठजी कहतेहैं॥ हेरामजी इसतें उपरांत चूडालारानी सर्व शृंगार युक्त आपना स्वरूप प्रत्यक्ष दिखावती भई वुह कैसा रूप दिखा वतीभई अपनी मायाके संकल्प सें सुंदर पुरुषकों रचन करती भई उस पुरुषने व्यभिचा र करके भोगी जब राजाने देखी तो भय भीत होइ करके राजाकें कहती भई ९५ हेराजन् तै ने वनमें आवनेतें मेरा त्याग कियाहै तिसतें मैं यौवनमें कामरूपी अग्निकों सहि नही स की तिसतें मैंनें यह व्यभिचार कियाहै ९६ हेराजन् मैं अबला हूं धैर्य विचारतें रहित हूं स्त्रीहूं इस्त्रियां भर्त्ताका वियोग चिरकाल सहि नही सकती हैं और बालकी न्यांई मूढबु द्धिहूं तिसतें मैने व्यभिचार रूपी अपराध कियाहै इसकों तूं क्षमा करणे योग्यहैं तूं मेरा

नि॰
वा॰ स॰
४७१

नाथ हैं मै तेरी इस्त्री हूं महात्मा लोकोंमों महत्व का सार क्षमा होतीहै ८९ राजाका वचन ॥ हे बाले मेरेमें क्रोध नहीहै जैसें आकाशमें वृक्ष नही होता है परंतु व्यभिचार करती हुई इस्त्री का अंगीकार करणेकों साधूलोक निंदा करतेहै तिसतें तेरेकों मैं नही चाहता हूं ९८ अ का मित्रता करके वनोंमों पहिले की न्यांई रागद्वेष रहित होइ करके इकट्ठे मिलके आनंद मे रमण करेंगें ९९ विचारण करते हुवे तब चूडाला मनमों विचार करती भई अहो आज बहु त आनंद भयाहै अब यह राजा समदृष्टि कों प्राप्त भयाहै और ज्ञानवान भयाहै और रागद्वेष तें रहितभया है अरु क्रोध सेंभी रहित भयाहै और जीवन मुक्तभया है १०० अब इस राजा कों राज्यभोगभी अपने वश नही करेंगे महा सिद्धीभी वश नही करेंगी सुख और दुःख आपदा और संपदाभी अपने वश नही करेंगी १ इसतें उपरांत चूडाला अपने स्वरूप रूपको दिखाइ करके कहती भई हे राजन् अपने पहिले वृत्तांतको ध्यान करके देख तब राजा ध्यानकरके

नि॰ अपने पहिले वृत्तांतको ध्यान करके देखताभया ९०२ राजा चूडालाके प्रसंग करके तत्वज्ञ
वा॰सा॰ भया तिसको तत्वज्ञान संयुक्त शुद्ध स्वरूप जान करके आनंद करके आलिंगन करता भया ३
५७२ श्रीवसिष्ठजीकहतेहैं॥ हेरामजी सो राजा आनंदके अश्रुजल छोडनेकरके अंगोंके स्नेहको प्रक
ट करता हुआ और समागमकी इच्छाकोंभी प्रकट करताहुवा चूडालाके साथ चिरकाल त
क आलिंगन करता भया जैसें नकुल नकुलीके साथ आलिंगन करताहै ९०४ हेरामजी ति
न्ह राजा रानीके आलिंगनमें हर्ष करकेजो आनंदका भाव होताभया सो वासुकीकी दो सो २००
जिह्वा करके भी कहा नही जाताहै ९०५ राजाकहताहै॥ हेकल्याणी अरुंधती अरु इंद्राणी
पार्वती और लक्ष्मी अरु सरस्वती यह सभही तेरे शीलके गुण संपदाके सुंदरता के तुल्य यत्न
करके भी नही होतीहैं ६ जैसें भर्ताको उत्तम कुलकियां इस्त्रियां प्रेम करके तारण समर्थ हो
तीहैं तेसें शास्त्रोंके अर्थ और गुरुसेवा और मंत्र देवतादिक तारणेंको नही समर्थ होते हैं ९०७

हे कल्याणी तैनें जो मेरे ऊपर उपकार कियाहै तिसका तेरे प्रति उपकारके उत्तर रूपी उपकार करणेकों मैं कैसें समर्थ होवां अरु कैसी है तूं इच्छातें रहित है और संसार समुद्रकों पार तर गई हैं ९०८ चूडालाकहतीहै॥ हे महाराज तूं फल रहित अपाके कर्मजालमें व्याकुलथा ऐसे तोकों देख करके तेरे वास्ते मैं वारंवार दुःखी होती भई ९ हे महाराज मैं तेरेकों बोध कराणेके स्वरूप करके आपनेकों आत्मज्ञान दृढ करणे करके अपना अर्थ सिद्ध कियाहै तिसतें तूं क्यों इतनी मेरी स्तुती और गौरवकों करताहै ९१० हे प्राणनाथ हे महाराज इसप्रकार मैंने तेरेकों आत्मज्ञान दृढ कियाहै अब कहो तेरेकों क्या रुचि वांछा है सो मैं हूं ११ राजा कहताहै॥ हे प्रिये अब मैं विधिकों नही जानताहूं और निषेध कों भी नही जानताहूं जो कहेगी तिसकों मैं जान लेवोंगा १२ चूडालाकहतीहै॥ हे राजन् हम पृथिवीके आद अंतमें मध्यमें राजेहैं एक मोहकों त्याग करके फेर राजा होवेंगे १३

हे राजन् तिस नगरमें अपनें आसनके ऊपर स्थित होइ करके राज्य कर और संपूर्ण इन्द्रियों
में शिरोमणी मेंही तेरी रानी होतीहूं १४ श्रीवसिष्ठजीकहतेहैं॥ सो राजा ऐसा चूडालाका वच
न सुनके हस करके मधुर वचनको कहता भया १५ राजाकहताहै॥ हे विशालनेत्रे जो तेरे
को भोगोंकी इच्छा है तो योग सिद्धि करके स्वर्गके भोगोंकी संपदा हमारे अधीन नहीहै क्या
हम फेर राज्यको भोगें स्वर्गमों क्यों निवास नही करेंगे १६ चूडालाकहतीहै॥ हे राजन् अब रा
ज्य भोगोंमों इच्छा नहीहै और संपदामो भी वांछा नहीहै जैसा कालके स्वभाव करके आजा
वे तिस करकेही मनकी स्थिति करणे चाहती हूं १७ राजाकहताहै॥ हे विशालनयने॥ तेने
समान बुद्धि करके योग्य वचन कहाहै हमको अब राज्य करके क्या अर्थहै और त्या
गनेमों भी क्या अर्थहै १८ वसिष्ठजीकहतेहैं॥ हे रामजी तिसने उपरांत राजा और रानी
अपने संकल्प करकेही कल्पना करके सात समुद्रोंके जल करके पूर्ण रत्न कलशों के

करके आपसमें अभिषेक करके राज्य तिलककों धारण करके मन्नवारे महाराजके अव
र बंध करके बड़ी सेना साथ लेकरके अपनी नगरीकों प्राप्त होइ करके सात दिन नग
रमें महा उत्सव करते भये ९ तिसतें उपरांत दश हजार वर्ष राज्य करके राजा शिखिध्वज
चूडाला रानी के साथ देहधारणासें विरक्त होताभया १०॰ सो राजा शिखिध्वज चूडाला रानी
संयुक्त भयतें और चिंतातें रहित होताभया अभिमान और रागद्वेषतें रहित होताभया अपने
वर्णाश्रमधर्मको करता भया भोग भोगता भया परंतु आशक्तितें रहित होताभया इस
प्रकार करके सम दृष्टि होय करके मृत्युकोंभी अपने वश करता भया दशहजार वर्ष रा
ज्यकों करताभया १११ हेरामजी सोराजा शिखिध्वज इस प्रकार करके संपूर्ण राज्योंका च
क्रवर्ती राजा होइ करके चिरकाल पर्यंत राज्यकों पालन करके आत्मस्वरूप में मगन भ
या परमपदकों प्राप्त होताभया तैसें हेरामजी तुंभी जो समय करके प्राप्तहोवे तिसकार्य

कों करता हुवा शोकादिकसें रहित भया आपही सावधान होइ करके भोगमोक्षकी संप-
दाकों भोग॥इतिशिखिध्वजोपाख्यानं॥श्रीवसिष्ठजीकहतेहैं॥हेरामजी जैसें राजाशिखि
ध्वज बोधकों प्राप्त होताभया तैसें बृहस्पतिका पुत्र कचभी तत्वज्ञान करके आत्मरूपके बो
धकों प्राप्त होताभया तिस क्रम करके तूंभी बोधकों प्राप्तहो २३ हे रामजी सो कच बाल्य
वस्था जब गई तबही विद्या पढ़के परोंके पदार्थकों जाननेहारा और संसार तरणेमों स
मर्थ भया बृहस्पति कों वचन कहताभया २४ कचकाप्रश्न॥हेभगवन् हेपिताजी तुम स
र्व्व धर्मोंकों जानने हारेहो मेरे प्रति कहो यह संसार नाम पिंजरातें जीवरूपी पंक्षीनें
कैसें निकलना बनताहै २५ बृहस्पतिजीकावचन॥हेपुत्र यह संसार समुद्रहै इसमें म
हा मोह बडा मकरहै सो जीवोंकों संसार समुद्रमें डुबाइ देताहै तिसतें जीवरूपी पंक्षी
ने सर्वत्याग करणेतें उड करके सुख करके रहीदा है २६ श्रीवसिष्ठजीकहतेहैं हेरामजी

नि॰ सो कच अपने पिताके वचनकों सुन करके सर्वस्वकों त्याग करके एकांत बनमों चला
वा॰भा॰ जाता भया १२७ हेरामजी तिस कचका बन जाना बृहस्पति जीकों उत्तशोक करतेकों न
४७७ ही होता भया जिस कारणतें महात्मापुरुष संयोगमों तथा वियोगमों समान चित्त होते हैं १२८
एक वर्षके अनंतर बृहस्पति कचकों देखने वास्ते बनमों जातेभये तब कचने पिताकों प्रश्न
किया हेमहाराज सर्वत्याग कियेतें भी मन मेरा विश्रांत नही भया तब बृहस्पति कहते भ
ये इसकों भी तूं सर्वस्वकों त्याग कर तिसतें उपरांत कंथा कमंडलु दंडादिकभी कचने त्याग
दिये तब तीन वर्षमें उपरांत बृहस्पति फेर कचके पास प्राप्तभया तो फेर कचने हेब्रह्मा म
हाराज चित्त विश्रांत नही भया तो बृहस्पतिजी कहते भये १२९ बृहस्पतिका वचन॥ हेपुत्र
चित्तही सर्वस्वहै तिसके त्यागनेतें विश्रांतिको प्राप्त होवेगा चित्तके त्यागनेकोंही त्यागी पु
रुष सर्वत्याग कहतेहैं १॰ श्रीवसिष्ठजीकहतेहैं॥हेरामजी ऐसा कहि करके बृहस्पति चले

गये तब कचने चित्तका स्वरूप नही जाना तिसके जानने वास्ते स्वर्गमें जाय करके पिता अपना
पूछा ९३१ बृहस्पति कहते भये। हे पुत्र यह चित्त अपने चरकी न्यांई स्वरूप वाला है चित्तको जान
ने हारे लोक कहते हैं अंतःकरण की अनेक वासनाजालका सूक्ष्म जो स्वभाव है तिसको चि
त्त कहते हैं ३२ इसका त्यागना कठिन है ऐसा प्रश्न कियेते पिता कहते भये हे पुत्र पुष्पके तोड़
नेतें और नेत्रके निमीलनेतें अहंकार का त्यागना सुखाला है इसमें खेद कुछ नही है ९३३
यह चित्तका भाव अहंकारके बल करके अज्ञानतें भया है तत्व वस्तु जाननेतें नष्ट होता है
वस्तु चैतन्य मात्र जाननेतें अहंकार नही रहता है जैसे रज्जु जानतें सर्पका भ्रम नही रहता है ९३४
हे पुत्र चैतन्य वस्तु एकही है आद अंतते रहित है निर्मलता करके सर्वगहै आकाशतेभी असंग
है केवल सत्ता मात्र है ३५ हे पुत्र यह पुरुष है यह मैं हूं यह तूं है ऐसे झूठी प्रतीतिको त्याग क
र यह मेरा है यह तेरा है यह ऐसा है यह हम हैं यह तुमही ऐसा जो भेद वाला ज्ञान है

सो तुच्छहै अरु तुच्छ स्वरूप वालाहै देश काल करके नष्ट होने हाराहै २६ जो देश काल व
स्तुके भेदसें रहितहै और निर्मल है और सदा प्रकाशमान है सर्व पदार्थोंमें एक रूपहै सो चि
न्मात्र रूप तूंहै ९२७ श्री वसिष्ठजी श्रीरामजी प्रतिकहतेहैं ॥ हेरामजी सो कच इस प्रकारका पि
तातें उत्तम उपदेशकों पाइ करके सो बृहस्पतिका पुत्र तिस उपदेश कों धारण करके जीवन
मुक्त होताभया २० हेरामजी जैसें कच ममतातें रहित होता भया और अहंकारतें रहितभया
और संदेह ग्रंथितें रहित भया और शांत बुद्धि होता भया तैसें तूंभी निर्विकार होइ करके स्थि
तहो ९३९ हेरामजी अहंकार कों असत्य जान और आत्म विचारतें भया सर्वभूतोंमें भिन्न भावकों
धारण कर अहंकार सहेके शृंगकी न्यांई असत्यहै तिसके त्याग और ग्रहण कहां बनतें हैं ४॰
हे रामजी द्वैतकी भावना और अद्वैतकी भावना तिन्ह दोनोंको त्याग करके जो इन्हतें शेष
शुद्ध चैतन्य सत्ता मात्र रहै तिसमें स्थित होइ करके अखंड सुखमें मग्न रहो माया पुरुष

की न्यांई वृथा दुःखी मत होवों ५१ हे रामजी जो तुम कहो सो मायापुरुष कौनहै तो तुम सु
नो एक पुरुष मायाके यंत्रका बनाहै सो बालककी न्यांई तुच्छ बुद्धी भया और मूढभया केवल
मूर्खता युक्त भया ५२ सो एकांतमों कहूं गया तहां शून्य स्थानमों रहा तिसतें दूसरा तहां और
कोई नहीथा जो तुच्छ है सो आपहीहै ५३ तिसकों तहां आप वृद्धिकों प्राप्त होनेका संकल्प हो
ताभया सो ऐसा चिंतन करताभया मैं आकाशका हूं और आकाश रूपहूं आकाश मेराहै औ
र एकाग्र होइ करके आकाशकी रक्षाकों करताहूं ऐसा चिंतन करता हुवा आकाशकी रक्षा
कों एक मंदिरकों करता भया तिसमों ऐसी दृढ बुद्धिकों करताभया मैनें आकाशकी रक्षा क
रीहै ५४ इसतें उपरांत कितने काल करके सो तिसका आकाशरूपी घर नष्ट होताभया तब सो
मायापुरुष विलाप करताभया हे मेरे घरके आकाश तूं कैसें नष्ट भयाहै मैनें तेरी रक्षा
करी तूं मेरेकों त्याग करके क्षणमात्रमों कहांगया हैं ऐसे सबों प्रकारके विलाप करता॥

नि॰
वा॰सा॰
४८१

भया ९४४ फेर सो दुःखेहि तिसकी रक्षा के वास्ते कुहा करता भया कुहे नाश भयेतें फेर वि
लाप करता भया एक कुंड बनावता भया तिसके विनाशमों विलाप करता भया फेर माटीका
कोठूल बनावता भया तिसके विनाशमों भी विलाप करता भया फेर चारद्वाल का कोट बना
वता भया तिसके विनाशमों भी विलाप करता भया इस प्रकार करके आकाशकी रक्षाके वा
स्ते अनेक उपाय करता भया उपाय के विनाशमों बहुत विलाप करता भया ९४५ हे रामज
जी सो मायाका पुरुष कौनहै वुह अहंकार है सो आधार बिना आकाशकी न्यांई शून्य मों
ही रहता है अनात्मा पदार्थोंको आत्मा जान करके तिन्हकी रक्षाके वास्ते नाना प्रकार के देहों
को सृष्ट करताहै तिन्हके नाशमों व्याकुल होइ करके शोक कर्ताहै ४६ हे रामजी जैसे माया
का पुरुष अहंकार अज्ञान रूपी अनात्मपदार्थ की रक्षा करता हुवा तिसकी रक्षाके उपाय
रूपी मंदिरादिक स्थानीय देहादिकों के नाशमों क्लेशकों प्राप्तभयाहै तैसें तूंभी क्लेश कों

धारण मन करे ४७ हे रामजी जो आकाशतेभी विशाल रूपहै और शुद्ध है और सूक्ष्मतेभी सू
क्ष्महै और अखंड है और आनंद रूपहै ऐसा आत्मा नष्टकैसें होताहै और ग्रहणकैसें होता है
सत्ता धारणेमां कैसें शक्य होताहै ४८ हे रामजी देहके क्षय होने करके केवल हृदयाकाश
मात्र नष्ट होताहै और प्राणी वृथा शोक करतेहैं क्या कहते हैं मैं मरगया हूं मेरा आत्मा न
ष्टभयाहै ४९ हे रामजी जैसें घटादिकों के नाश भये संते आकाश अखंड रहताहै तैसें दे
हादिकों के नाश भये संते आत्मा निर्लेप रहताहै ५० आत्मा मृत नही होताहै जन्म नही
लेताहै और कदाचित् किसी प्रकार करकेभी आत्माहानि वृद्धिकों नही प्राप्त होताहै यह
केवल ब्रह्मही जगतके रूप करके भासताहै ५१ सो ब्रह्मसत्यहै केवल सत्ता मात्रहै और शां
तरूप है आद्य अंत मध्यतें रहित है भाव रूप अभाव रूपतें रहितहै और अद्वैतमात्र रूपहै
ऐसें जान करके सुखी रहो ५२ हे रामजी यह अहंकार संसारी आपदाकी खानहै और असत्य

है और पराधीन है तिसभी नाश होने हाराहे अविवेक की निधी है अरु महाडष्टहै और अ
ज्ञानरूप है इसकों आत्मस्वरूप के बोध करके त्याग करके शेष रही जो आत्मसत्ता तिस मों
सावधान होइ करके उत्तम पदको प्राप्तहो ५३ श्रीवसिष्ठजीश्रीरामजीप्रति कहतेहै ॥ हेराम
जी तूं महा कर्त्ता हो और महा भोक्ता हो और महा त्यागीहो संसर्ण मनकी शंकाका परित्याग
कर अखंड धीर्य कों धारण कर ५४ हेरामजी यह तीन व्रत पहिले समयमों शिवजीने अ
पने भृगी गणकों कहेहैं इन्ह व्रतों करके भृंगीगणभी चिंता ज्वरसें रहित होताभया ५५ शु
भ और अशुभ कार्यमों पापपुण्यकी शंका करके जिसकी बुद्धी लिप्त नही होतीहै सो महा
कर्त्ताहै ५६ जो पुरुष सर्वत्र स्नेह बंधननें रहितहै कार्य कारणोमों इच्छा रहित वर्त्त मानहै
सोभी महा कर्त्ता कहाहै वुह कैसाहै साक्षीकी न्यांई असंगहै ५७ जो पुरुष कटुए रस को
सलूनेको तीक्ष्ण रसकों शुद्धकों और नही शुद्धकों चाहेको अथवा नही चाहेकों ऐसें।

अन्न पानकों समान हृत्ती करके भोजन करताहै सो महाभोक्ता कहाहै ५८ जो पुरुष आपदा कों और संपदाकों मोहकों और आनंदकों श्रेष्टकों अथवा नहीं श्रेष्टकों सम बुद्धि करके भोगताहै सो महा भोक्ताहै ५९ जो पुरुष ऐसे निश्चय वालाहै कैसें न मेरा देह ना मेरा जन्महै योग्य और अयोग्य कर्मभी मेरेको नहीहैं ऐसे विचार वालेको महा त्यागी कहतेहैं ६० जिसनें धर्म और अधर्म और मनका चाहिया संकल्प अंतःकरणमें त्यागियाहैसो महा त्यागी कहाहै ६१ हे रामजीजो पुरुषउत्तम विश्रांतिकों चाहताहै और दुःखरूपी रत्नोंकी खान ऐसें जन्म मरण रूपी समुद्रकों तरणे चाहता है तिसकों ऐसी मति तरणेका उपाय है कैसी मतीहै मैं कौन हूं और यह जगत क्या है कैसें उदय भयाहै और भोगों करके मेरा क्या प्रयोजन ६२ श्रीवसिष्टजीकहतेहैं॥ हे रामजी इक्ष्वाकु राजाने पिता मनुवैवस्वत कों प्रश्न किया हेपिता यह जगत क्याहै तो मनु कहता भया इहजो कुछ जगत दृष्ट होताहै हेराजन् सो सत्य कुछ भी नहीहै जैसें

नि॰ गंधर्व नगर असत्य है और जैसें मारवाड़की रेतीमें जलकी प्रतीति असत्य है ६३ हे रा॰
वा॰सा॰ जन् यहां कुछ सत्य दृष्ट नही होताहै तहां जो कुछ शेष सत्तामात्र जैसा प्रतीत होता
४८५ है सो अविनाशी है सो सत्यरूप आत्मा है ६४ हे राजन् जैसें राहू दृष्ट नही होताहै परं
तु चंद्र मंडलमें ग्रहण करके दृष्ट होताहै तैसें असत्यरूप दृश्य करके सत्यरूप अ
दृष्ट आत्मा प्रतीत होताहै ६५ हे राजन् आत्मा केवल गुरु करकेभी प्रतीत नही होवैहै के
वल शास्त्रों करकेभी प्रतीत नही होताहै सो आत्मा केवल अपनी निर्मल बुद्धि करके प्रती
त होताहै ६६ हे राजन् जैसें मार्गमें मुसाफिर रागद्वेषसें मुक्त भई बुद्धि करके देखीदे
हैं तैसेंही यह इंद्रिय देहादिक रागद्वेष सें रहित बुद्धि करके देखनें योग्य है ६७ हे पुत्र॰
इन्हमें आदर नही करणा और सत्ताका निश्चय नही करणा यह केवल पदार्थ भावना मा
त्रते देखेहुवे केवल नाम मात्र रहतेहैं अरु सुखरूप होजाते हैं ६८ हे पुत्र यह देहादिक

केवल नाम मात्रतें पदार्थहैं सत्यनही है इनकी भावनाकों हरतें त्याग करके शीतल अंतः करण होइ करके केवल आत्म विचारमों स्थित रहो ६९ हेपुत्र जैसें निर्मलभये जलाशयोंमों सर्वत्र शीतलता और निर्मलताहै तैसेंही आत्मा सर्वत्र पदार्थोंमों सत्तामात्रता करके व्याप्त है हेपुत्र जैसें माता अपनें कुचोंके नीचे अपने कुछड़मों सुप्तभये बालककों विस्मरण करके मे रा पुत्र कहां गयाहै पुत्रके वास्ते रोदन करतीहै तैसें यह लोक सत्तामात्र सर्वत्र व्याप्त भये आ त्माके वास्ते लोक अज्ञानसे भये मोहसें भ्रांत भयादुःखकों प्राप्त होताहै ७० हेपुत्र यहमाया महा आश्चर्य रूपहै सर्व जगतकों मोहित करणे हारीहै जिस माया करके अपने अंगोंमों सर्वत्र व्याप्तभये आत्माकों नही जानताहै ७१ हेपुत्र यह जगत् चैतन्यताका दर्पण है ऐसी जो भावना करता है सो पुरुष ब्रह्म कवच करके आच्छादित भयाहै ७२ हेपुत्र जगतके सर्वभावोंकी भावना त्यागने करके कर्म जालके बनकों छेद करके परम सूक्ष्म रूप आत्म भावना कों

धार करके शोक रहित स्थित रहो ७३ हे पुत्र शास्त्रों करके सत्संगों करके पहिले बुद्धिको नि
र्माल्य करे जौनसा पुरुष नया योग करणे लगाहै तिसकी यह पहिली भूमिका है ७४ दूस
री तत्त्व विचारणा है तिसरी असंभावना है चौथी पदार्थोंकी बिलापनी भावना है पंचमी ५
शुद्ध ज्ञान स्वरूपा है जिसमें आधे सुप्तभये और आधे जाग्रत भये जैसा पुरुष जीवन्मुक्त स्थि
त होताहै इसमें किंचित प्रपंचका भानभी होताहै और शुद्ध चैतन्य का बोध प्रत्यक्ष प्रतीत
होताहै ७५ और छठी स्वसंवेदन रूपा भूमिका होतीहै यह केवल घने आनंदके स्वरूप वा
ली होतीहै इसमें जीवन्मुक्तकों सुषुप्ति जैसी गाढ आनंदमें स्थिति होतीहै ९७६ जिसमें तुरी
यावस्था करके उपशम होताहै सो केवल मुक्तिरूप है ऐसी सप्तमी भूमिका होती है इसमें
समता और सौम्यता केवल होतीहै ९७७ पहिली तीन भूमिका जाग्रत अवस्था जैसीहैं जिन्हमें
प्रपंच भावना प्रतीत होतीहै और चौथी भूमिका स्वप्नावस्था जैसीहै जिसमें वासना लय हो

तीहै परंतु प्रपंच स्वप्न जैसा प्रतीत होताहै ७८ जिसमें केवल गाढी आनंदकी भावना होती है सुषुप्तिकी न्यांई पंचमी भूमिका है जिसमें आनंदकी संवेदनाभी नही होतीहै अपनी प राई प्रतीत नही होतीहै सोछठी भूमिका तुरीयावस्था जैसी होतीहै ७९ और सप्तमी भूमिका तुरीया तीत केवल चैतन्यमय होतीहै जौंनसी मन वाणी करके चिंतनमें कहनेमें नही आवेहै ८० हेपुत्र इस सप्तमी भूमिकामें तत्वज्ञ पुरुष निर्लेप होताहै रजोगुण के भाव मंदहो ताहै और रागादिकों सें रहितहै वासना मूल सहित शांत होतीहैं अपनेकों निर्मल चिदाका शमान करके शोक रहित होताहै ८१ हेराजन् जीवकों संहरण कला अभ्यास विनाशांत होती है और यह ज्ञानकी कला पक बलवान होवे तो दिन दिन उदय होती जातीहै हेराजन् जौंन सी करी जाती जो कर्म संपदाहै जौंनसी पीछे करीहै सो देह रूपी सिंबल रूलतें रूई की ढेरी सिरीखी ज्ञान रूपी पवन करके उडगई वुह कहां गई है ऐसें लखित नही होती है ८२

हे राजन् यह संसार रूपी अरहट है इसमें चिंता रूपी रज्जू बनी है तिसमें जीव रूपी घड़िआ हैं सो कबही नीचे जावैं हैं कबही ऊपर को आवे हैं तिसतें तूंभी संसार रूपी अरहट में चिंता रूपी रज्जू करके घड़ी सिरीखा मत बांधा जावैं ८२ ऐसी भावना करके क्या है ब्रह्मा इंद्र विस्नु वरुण य ह जो कुछ करणे चाहते हैं सो सभ कुछ मैं करता हूं और चैतन्य रूप हूं ऐसी भावना को धा रण कर ८८४ हे पुत्र जो पुरुष चैतन्यमात्रता को प्राप्त भया है और मृत्यु संसार को लंघ गया है तिसको जो परमानंद होता है सो किसके बरोबर कहा जाता है ८५ हे राजन् जो शुद्ध चैतन्य का स्वरूप है सो सर्वत्र व्याप्त है और अखंड है इसको जब जाने तबही संसार समुद्र तरा जाता है और परमेश्वर रूप होता है ८६ जो पुरुष जैसे तैसे वस्त्र करके अपने को आच्छादन करे जो जो मिल जावे तिस तिसको भोजन करे जहां होवे तहां तहां निद्रा को करे सो पुरुष चक्र वर्ती से भी अधिक आनंद को भोगता है ८७ हे पुत्र जो पुरुष संपूर्ण शास्त्रों के अर्थ के विचार करके

शांत भयाहै चंचलतातें रहित भयाहै और अनेक प्रकारके काव्य शास्त्रोंके रसतें निवृत्त भयाहै और जिसके संपूर्ण संकल्प विकल्प उपद्रव शांत भयेहै सो समदृष्टि और समचित्त होइ कर के अखंड सुखमों मगन होताहै ९८ श्रीवसिष्ठजीकहतेहैं॥ हेरामजी सो इक्ष्वाकुराजा अपने पिता वैवस्वतमनू का वचन सुन करके आत्म विचार करके परमआनंदको प्राप्त होता भया॥ ८९ हेरामजी जो पुरुष आत्म विचार करके वर्णाश्रम आचार के बंधनसे मुक्त भयाहै सो पुरुष जैसें पिंजरातें सिंह निकल जाताहै तैसें संसार रूपी जालतें मुक्त होता है ९९॰ हेरामजीसो पुरुष लोकोंके समान जो मैं विहार कर्त्ताहुवा देहका छेदन करणा और सृजन करणा क रके कुछ नही जानताहै जैसें चंद्रमा आकाशमों है अरु जलके साथ प्रतिबिंब प्रकट होने और गुप्त होने करके उदय अस्त नही होताहै ९१ हेरामजी जिसतें लोक दुःखी नही होताहै लोकतें सो दुःखी नही होताहै अरु रागद्वेष और भय और आनंदो करके संयुक्त

नही होताहै और रहित नही होताहै ९२ हेरामजी ऐसा महात्मा पुरुष किसीके प्रमाण में नही आवताहै जो तुच्छ बुद्धि पुरुष हैं सो बालकोंकेभी प्रमाणमें आइ जाताहै ९३ हेरामजी सो पुरुष भावें मुक्ति पुरी काशीमों शरीरकों त्यागे भावें दुष्टस्थान चंडालके घरमों शरीर त्यागे। जिस समयमों तिसकों ज्ञान प्राप्त भया तिस समयमों मुक्त भयाहै जिसनें सो निर्मल चित्त होगया है ९४ हेरामजी जो पुरुष ऐश्वर्य विभूतिकों चाहै तिसने ऐसा पुरुष पूजनीय है और वंदनीयहै और यत्न करके देखने योग्यहै ९५ हेरामजी ऐसा फलयज्ञों करके तीर्थों करके तपों करके दानों करके परम पवित्र नही प्राप्त होताहै जैसा फल तत्वज्ञोंकी भक्ती करके होताहै कैसें हैं तत्वज्ञ क्षीण भयाहै संसार रोग जिन्हका और आत्मवेत्ता है ९६ हेरामजी तूं ग्रहण करणे योग्य पदार्थों की भावनाकों नही कर और मैं ग्रहण करताहूं ऐसी भावनाको भी मत कर संपूर्ण भावना कों त्याग करके जो शेषरहै तिसमों एकाग्र चित्त रहो ९७ हेरामजी जो तूं कर्म कर्ताहै जोभोजन

नि॰
वा॰ सा॰
४९२

कर्त्ताहै जो होम करताहै जो दान करताहै तिसको नामै कर्त्ताहूं नामैं भोक्ता हूं इसप्रकार करके मुक्तमतिहो ९९८ हेरामजी संतजन पीछे भयेको शोच नही करतेहैं आगेहोने हारे को चिंतन नही करते हैं वर्त्तमान जैसा होवे तैसे ग्रहणकी इच्छा नही करताहै सभको अखंड संसारके प्रवाहमों अनित्य मानतेहैं ९९ हेरामजी हम लोक जो मुनीहैं सो समशील भये हैं और बनमों निवास करतेहैं हमको अहंकार कछु नही करताहै जौंनसा देहाभिमान करणे वाले को दुःख देणे हाराहै १०० हेरामजी जितनें इंद्रियोंके कर्महै तिन्हको अहंकार करके युक्त मनही करताहै सो अहंकार और मन मेरे गलित होगयेहैं १०१ हेरामजी जाग्रत और स्वप्न और सुषुप्ति यह तीनो अवस्थाको मै नही जानता हूं तुरीया माही मैं स्थितहूं तिसमों यह दृश्यमान जगत नहीहै १०२ हेरामजी मनुराजाने बाण करके वेधा मृग मुनिके साम्हने बनको गया तिसके पीछे बधकी गया तिसनें मुनिको पूछा हेमहाराज तुमने मृग देखाहै

तब सो मुनि बधकीकों कहता भया १ हे व्याध जो नेत्र इंद्रि देखतीहै सो कहती नहीं जो कर्ण इंद्री कहतीहै सो देखती नहीं ऐसा मुनीका वचन बधकीने नही समझा सो बधकी फिर गया २ हे रामजी जाग्रत अवस्थामें चित्त घोर रूप होताहै और स्वप्नेमें शांतरूप होताहै और सुषुप्तिमें मूढरूप होताहै तीनोंसें रहित होवे तो मृतरूप होताहै ३ हेरामजी वेदांत शास्त्रोंका यह सिद्धांतहै सो और संपूर्ण शास्त्रोंमें गुप्तहै सो क्याहै नातो कोई अविद्याहै अरु ना कोई मायाहै संपूर्ण क्रमसें रहित शांत परब्रह्महीहै ३ श्रीवसिष्ठजीकहतेभये। ऐसा वचन मनुवैवस्वतनें अपने पुत्र इक्ष्वाकुकों कहाहै सो हमने तुमकों कहाहै अबजो तुम्हारी इच्छा होवे सो कहो ४ वाल्मीकीमुनिजीभरद्वाजप्रति कहतेहैं॥ हेभरद्वाजजी ऐसा सुनके श्रीरामचंद्रजी आत्म स्वरूपके आनंदकी समाधीमें स्थित होतेभये ५ श्रीभरद्वाजजी काप्रश्न॥ हेगुरूजी श्रीरामचंद्रजी जब समाधिमें स्थितभये फेर वसिष्ठजीने व्यवहार में

कैसें तत्पर करे यह तुम मेरेकों कहो ६ श्रीवाल्मीकीजी कहतेहैं॥ हेभरद्वाज यह जेते सं सारके भावहैं सो संसर्ग अविद्यासें भयेहैं क्षणमात्रमों उदय होतेहैं और ज्ञानरूपी समुद्रमें लय होजाते हैं ७ हेभरद्वाज तूंभी केवल ज्ञानरूपी अमृत समुद्रमें मग्न होना तुह केसा है ज्ञानामृत समुद्र प्रशांत भईहै अमृतकी लहर जिसमें ऐसा निश्चलहै और द्वैतके खारे समुद्रमें क्यों मग्न होताहै ८ हेभरद्वाज यह जगत बालबुद्धि वालेकों ब्रह्महीरूपांतर कों प्राप्त भया प्रतीत होताहै और तत्व विचारकी बुद्धि वाले एक रूप ब्रह्मकों देखते हुवे सुखकों पाइ कर स्थित भयेहैं ९ जिन्ह पुरुषोंका चित्त देवताकी ब्राह्मणोंकी भक्ति करके सं युक्त भयाहै और गुरुकी सेवाकी श्रद्धा करके युक्त भयाहै और उत्तमशास्त्रों कों प्रमाण कर के मानतेहैं तिन्हके ऊपर ईश्वरकी कृपातें आत्मज्ञान दृढ होताहै १० हेभारद्वाज जबल ग तेरा चित्त शुद्ध नही भया तब लग सगुण ईश्वरकों भज जब चित्तशुद्ध होवेगा तब नि

शकारमें स्वभाव करकेही तेरी स्थिति होवेगी ११ भारद्वाजकावचन॥ हेगुरुजी तुम्हारे प्रसाद
तें यह संहर्ता जानाहै वैराग्यसें परे मित्र नही अरु संसारसें परे शत्रु नहीहै १२ विश्वामि
त्रजीकावचन॰ वसिष्ठजीप्रतिकहतेहैं॥ हे वसिष्ठजी हे महाभाग तुम ब्रह्माजीके पुत्रहो स
मर्थे तुम महात्माहो तुमने अपनी शक्ति देने करके अपना गुरु भाव दिखाया है १३ जो कोई
दर्शनतें अरु स्पर्श करणेतें शब्द सुनावनेतें कृपा करके शिष्यके शरीरमों ज्ञानका चमत्कार
दिखावे सो उत्तम गुरु कहाहै १४ हेवसिष्ठजी यह रामचंद्रजी आप स्वभाव करके विरक्त है
केवल चित्तकी विश्रांतिकों चाहताथा सो तुम्हारे साथ संवाद करणेतें चित्तकी विश्रांतिको प्रा
प्तभया है १५ हेवसिष्ठजी गुरुके वाक्यतें बोध जो होनाहै तिसका कारण शिष्यकी निर्मलबु
द्धिहै जिसके मन वानी देहके मल परिपक्व नहीभये हैं सो निर्मलबुद्धिकी न्याई बोध कों
कैसे प्राप्त होवे १६ हेरामजी अब कथाकों समाप्त करके व्यवहार कार्य करणे वास्ते उठने

नि·
वा·सा·
५९६

योग्यहै वसिष्ठजी विश्वामित्रकों प्रश्न करतेभये हे विश्वामित्रजी इह श्रीरामचंद्र पहिलें देव
ताथे अथवा मनुष्यथे १७ विश्वामित्रजीकावचन॥ हे वसिष्ठजी इह्रा यहो विश्वास करो यह
ह रामचंद्रजी परम पुरुषहै सर्व स्वरूपहै परमानंद रूपहै सभमें समान सत्तायुक्तहै सा
त्तात् विस्तुरूप है १८ श्रीवसिष्ठजीकावचन॥ हेरामजी हेरामचंद्रजी यह विश्रामका समय
नहीहै लोकों को आनंद करणे वाले संसार व्यवहारमें तत्पररहो १९ ऐसा वचन सुन के
भी श्रीरामचंद्रजी नही उठे तब वसिष्ठजीने हृदयमें प्रवेश करके उठाया तब श्रीरामचंद्र
जी कहने भये २० हेगुरुजी अब मेरे कों विधिसें कार्य नहीहै और निषेधसेभी कार्य नही
है तुम्हारे प्रसादतें में सर्वभया हूं तदभी गुरोंका वचन अवश्य करणा योग्यहै २१ वेदशा
स्त्रमें आगम शास्त्रमें अरु पुराणशास्त्र में धर्म शास्त्रमेंभी कहाहै जो गुरुजीका वचन है
सो विधिहै जो गुरुनीषेधक है सो निषेधहै २२ ऐसा कहि करके श्रीरामचंद्रजी गुरों को

चरणों कों शिरपर रख करके सभकों कहतेभये हे सभामों बैठे संपूर्ण लोक मेरा वचन सु
नों मैं निश्चय करके कहताहूं आत्मज्ञानसें परे ज्ञान नहीहै आत्मवेत्ता गुरुसें परे दूसरा गुरु न
हीहै २२ सिद्ध मुनी देवता ऋषि सभ कहतेहैं ॥ हे रामजी हमारे सभके मनमों ऐसाही विचार
था परंतु तेरे प्रसादतें तुम्हारे संवादतें अब दृढ निश्चय भयाहै । हे रामचंद्र हे महाराज तुम
सुखी रहो तुम्हारे कों नमस्कार है २३ ऐसा कह करके सभही वशिष्ठजीकी आज्ञाले करके अप
ने घरकों जाने लगे तब रामचंद्रजीके शिरपर पुष्पोंकी वर्षा होतीभई २४ वाल्मीकीजी कहतेहैं हे भरद्वाज यह श्री
रामचंद्रजीकी आत्मज्ञानकी सिद्धी तुम्हारे प्रति मैंने कहीहै जैसें राजारघूकों सिद्धी भईथी यह कैसीहै वचन रचनाकीर
त्ने मालाहै संपूर्ण कविकुलो करके सेवने योग्यहै और योगीजनोंकोंभी सेवने योग्यहै यह
सद्गुरोंकी कृपा कटाक्षतें प्राप्त होतीहै और मुक्तिके मार्गकों देतीहै २५ जो पुरुष यह वशि
ष्ठ रामजीके संवादकों श्रवण करताहै सो भावें कैसा होवे श्रवणतेंही मुक्त होताहै और पर

ब्रह्मकों प्राप्त होताहै २६ भावें मोह करके मलिन बुद्धि होवे रागद्वेष युक्त होवे महापाता-
कयुक्त होवे संपूर्ण दोषों करके युक्त होवे सो पुरुष इसके श्रवणतें सर्व दोषोंसें मुक्त होता
है शांतिकों प्राप्त होइ करके ब्रह्मज्ञानकों प्राप्त होताहै जो इसका उत्तम अधिकारी होवे सो
कैसें मुक्त नही होवे २७ इतिश्रीवासिष्ठसारे निर्वाणप्रकरणस्यपूर्वार्द्धे समाप्तसारः॥१०२७ श्री
वसिष्ठजी फेर श्रीरामचंद्रजी कों सर्वसार उपदेश करतेहैं हे रामजी संसार कल्पनाकों जानने
हारे ज्ञानी पुरुष पदार्थोंके रसकी भावनाकों ही संसार कल्पनाकों कहतेहैं तिस पदार्थ रस
की नही भावनाका संकल्पका त्याग करण कारण कहाहै १ मैंभुजा उठाइ करके कहताहूं सं
कल्पका त्यागही परम कल्याणका मूलहै तिसकों अंतःकारण करके क्यों नही सेवतेहैं २
हे रामजी मोहका महात्म महा आश्चर्य रूपहै जिस करके संपूर्ण दुःखोंकों हरणे वाला तत्व
विचार नामा चिंतामणि अपने हृदयमोंभी है तदभी तिसकों लोक त्याग देतेहैं ३ हे रामजी-

जौनसे झूठे ज्ञानीहैं सो संकल्प त्यागकों नही जानतेहैं और हृथाही कर्मका त्याग करतेहैं सो पशुहैं और अज्ञानीहै तिन्हकों कर्म त्याग रूपी पिशाचनी भक्षण करतीहै ४ हेरामजी जौनसे पुरुष मोक्ष लक्ष्मी रूपी इस्त्रीके वशभये हैं सो जैसे कामी पुरुष सुंदर इस्त्रीके वश होतेहैं तैसें आधे सुप्तभये आधे जाग्रतभये आनंदरूपी निद्राके वशभये अपनेकों नही जानतेहैं हम कहां हैं और कौनहैं ऐसे स्वरूपानंदमों मग्न होतेहैं ५ हेरामजी जिसकोंउपशमकी प्राप्तीभईहै तिसकोंअपना घर कुटंब धन सहित बन सरीखा होताहै सो पुरुष ममता रहित होताहै और जिसकों उपशमकी प्राप्ति नही भईहै तिसकों ममता संकल्प करके निर्जन बनभी कुटंब सहित घरजैसा होताहै ६ हेरामजी जिसनें काम क्रोध लोभ मोह मदमात्सर्य यह छे शत्रु जीतेहैं स्वभाव करके ही दूर कियेहैं ऐसा उत्तमज्ञानी पुरुषजोहै सो ज्ञान वैराग्यादि उत्तम गुणोंका पात्र होताहै और षट् शत्रुओंकों नही जीतदाहै सो मनुष्योंमों गधाहै तिसकों तत्वज्ञान वैराग्यादि महा गुणन

ही होतेहैं ७ हेरामजी शुद्ध चित्तवालेकों अल्प उपदेशभी विस्तार करके लग जाताहै जैसें तैल
मों जलकी बूंद विस्तारकों प्राप्त होतीहै और मलिन चित्तवालेकों उपदेश नही लगताहै जैसें तपे
हुवे लोहेकों जलकी बूंद नही लगतीहै ८ हेरामजी मैनें भुसुंडकाककों प्रश्न कियाथा हे महा
राज्य तुम तत्वज्ञानके विचारतें चिरंजीवि भयेहो परंतु जौनसा तत्वज्ञानतें रहित है और मूढ
बुद्धिहै ऐसाभी तुमनें कोई चिरंजीवी जाना होवे तो कहो इतना सुनके भुसुंडकाक कहते भये
हेमुने एक कोई विद्याधर होताभया वह कैसाहै तत्वज्ञान सें रहित और संसार सुखोंकों भोग
करके वृद्ध भयाहुवा लोकालोकाचल पर्वतके शिखरमों निवास करताभया शुष्क विचार वा
ला सो विद्याधर बहुत प्रकारके तप करके और यम नियम करके चार कल्प पर्यंत स्थिरआयु
षा वाला होताभया ९ सो चौथे कल्पके अंतमो विवेक युक्त होताभया संसारकों असार जानताभ
या मेरेकों प्रश्न करणेकों आवताभया ११ आय करके पूछताभया हेमहाराज जो सभका आधार

है और दुःख क्लेशसें रहितहै क्षय वृद्धीते रहितहै और आद अंत रहित . जो पदहै तिसकों मे
रे प्रति कहो १२ एताकाल मैं जड़ता करके सोया जैसा रहाहूं अब मेरेको आत्माकी प्रसन्नतातें
बोध युक्त भयाहूं १३ संसारमों अनेक प्राणी केवल जन्म मरणको भोगते हुवे जीर्ण होगये हैं
नधर्म वास्ते कुछ करतेहैं ना मोक्ष वास्ते कुछ करतेहैं जैसें मच्छर कमलमों रहतेहैं १४ हे म
हाराज मैनें कुवेरके चैत्र रथ बगीचो कियां भूमिका देखियांहैं वुह कैसीहै प्रफुल्लितहैं अंत
लता जिन्हमों कल्पवृक्षोंकों वल्लीना चढ़ीहै मनकी चाही ऐश्वर्य संपदाकों देणे हारीहै १५
मैने सुमेरु पर्वतके कुंजोंमों और विद्याधरोंके नगरोंमों और विमानोंकी सुंदरमालामों औ
र मंद सुगंध शीतल पवन चलताहै जहां तिन्हमों चिरकाल विहार कियेहैं और देवतोंकी
सेना साथ चलतीहै दिव्य इस्त्रियोंकिआं भुजा रूपी लतामों विहार कियेहैं मुक्ता मणिके हा
रों करके युक्त मनकों हरणेहारा रूप और शील जिन्हका ऐसी अंगना सहित लोकपालोंकी

धरियोंमों विहार कीयेहैं १६ हेमहाराज तिन्हमों मेरेको सुंदर सुख करणेहारा कछु अनुभा
वमों नही आयाहै संपूर्ण मनका विनाश होने करके दग्ध भया भस्मकी न्यांई तृष्णा मेनें अब
जानाहै १७ जो कछु मेने सुनाहै और स्पर्श कियाहै स्तंगिआ हे स्वर्गादिकमों सो सब रस रहि
त भयाहै अबमें क्या कछु सेवन करूं तिसकों शिताबी कहो १८ जिसके प्राप्त भये फेर प्राप्तहो
नेकी शेष वांछा नरहे तिसकी प्राप्तिमों में कष्ट करकेभी यत्नकों करनाहूं १९ जिसने सुंदर इ
स्त्रियां भोग सहित भोगीहैं तिसकों तिन्ह भोगोंने भोगलियाहै भोग वालाभी मेनें ऊपरकी पद
वीकों चढ़ता नही देखाहै और आकाशमों उड़नाभी नही देखाहे सभही नरककों जाते देखे
हैं २० यह डुष्ट इंद्रियों की सेनाहै शरीरके अंत पर्यंत जीवोंको भ्रमावनीहै जो इसकों जीत
नेकों उद्यम करते हैं सोही महाजोधा शूरवीर हैं २१ जोनसें जितेंद्री पुरुषहैं सोही महापु
रुष हैं बाकीके देह रूपी मांसके पिंजराके काकोंके बरोबर हैं मे इन्ह इंद्रियोंनें उजाड़ करके

भ्रमायाहूं जैसें महा बनमें चोरों करके इकेला मुसाफिर डराइ हुवाई भ्रमायाजाताहै २२ हे॰ महाराज जैसें कोई महा आपदामें मग्न होताहै ऐसें मैभी आपदामें मग्न भयाहूं और साधनें से रहित हूं मेरेको शील दयाके उदय करके उद्धारण करो तुम उद्धारण करणे हारेहो जैसें जगतमें उत्तम संतजन होतेहैं सो त्रैलोक्यकों जीतने हारे होतेहैं तिन्हके समागमकों अरु परम शोककों हरणेहारे कों कहतेहैं २३ काकभुसुंडीजीकहतेहैं॥ हेविद्याधरोमें श्रेष्ठ तूं उत्तमशीलवा वालाहै दैवयोगतें तेरेकों संसार दुःखका बोध भयाहै अब तेरा कल्याणका समय आयाहै संसार रूपी कूहेतें चिरकालसे निकलने कों योग्य भयाहै २४ यह विश्व मारवाड़की रेतीमें जल की प्रतीतीकी न्याईं वास्तव नही होनेतें दृश्यमान है तदभी असत्यहै जो कुछ यह भासता है सो संपूर्ण ब्रह्मही है और कछु नहीहै २५ जो पुरुष गुरोंका वचन सुनकरके मूल सहित संकल्प त्यागकों यत्न करके उद्यम करतेहैं सोही संसारकों जीततेहैं २६ हेविद्याधर संकल्पके उ॰

दृश्य मात्रतें जगत रूपी चित्र दृष्टि होताहै संकल्पके लय होनेते लयकों प्राप्त होताहै जैसे चि
त्र रचनेवालेके संकल्पतें चित्र होताहै २७ जो पुरुष अन्नपानादिकमों अनादरकों प्राप्त भयाहै ति
सका यह पिछला जन्महै दूसरा जन्म तिसकों नही होताहै सो पुरुष कर्मकों त्यागन नही करता है
कर्म तिसकों आप त्यागन करजातेहैं जैसें पुराने पत्र वृक्षतें आपही गिरजाते हैं २८ यह जगत चि
त्तके संकल्पका चमत्कारहै नही संकल्प करणेतें लयकों प्राप्त होताहै और अतिशय करके अपने
हाथके वस्तु जैसा अपनें अधीनहै जब चाहें तबही त्याग कर २९ संहरणे शास्त्र आत्माकों जानने
में अंगहै वासना रहित पुरुषके अंगमों लगतेहैं जो इन्द्रकों बारंबार जानताहै फेर समबुद्धि हो
ताहै सो परमपदमों स्थित होताहै ३० हेविद्याधर जब लग पदार्थोंके उदयके प्रति सुषुप्ति जैसी वि
स्मृति नही भई तब लग अपने पुरुषके यत्न करके अभ्यास करताहै ३१ हेविद्याधर अविद्याका
आधा भाग आपसमों शास्त्र विचारणा करके निवृत्त होताहै और आधा भाग आत्म ज्ञान के

नि॰ वा॰ सा॰ ५५

ढ निश्चय करके निवृत्त होताहै ३२ तिसतें शास्त्र विचारणे वास्ते जहां तहांते वैराग्य सहित
और वीतराग और आत्मवेत्ता ऐसे तत्वज्ञ पुरुषकों ढूंढ करके यत्न करके तिसकों आराधन करे ३३
हे विद्याधर तिसतें उपरांत आधा अविद्याका भाग सतसंग करके निवृत्त होताहै आधेमों आधा शा
स्त्र विचार करके निवृत्त होताहै चौथाभाग अपने निश्चय यत्न करके निवृत्त होताहै ३४ हे विद्याध
र संतजनोंकी संगति करके शास्त्रार्थ विचार करके अपने यत्न पूर्वक निश्चय करके अविद्यारूपी
मल क्षयकों प्राप्त होतीहै तिसतें क्रम करके एक एककों सेवे अथवा एक बार इकट्ठेही सेवनक
रे ३५ हे विद्याधर जगतके पसरणेका कोई और देश नहीहै कालभी और नहीहै धारणेका आधा
रभी नहीहै जैसें अंधेरा और प्रकाश आकाशमोंही होतेहैं तैसें जगतका उदय और क्षय एक अंतः
करणोंमोंही हैं ३६ इसमों तेरे प्रति पुरातन इतिहासकों कहतेहैं जोनसा त्रसरेणूके अंदर पहिले
इंद्रका वृत्तांत भयाहै तिसकों तूं सुन ३७ एक कल्पांतरमों इंद्र त्रैलोक्यका राजा होताभया सोइंद्र

गुरोंके उपदेश करके अपने अभ्यासतें अज्ञानरूपी आवरणतें रहित होताभया ३८ नारायणसे लेकर महा पराक्रमी देवता तिसके सहाय करणे हारे होतेभये सो कही छिपजातेभये तद इंद्र इकेला रहा महाशस्त्र अस्त्रों करके दैत्योंके साथ युद्ध करताभया सो महा पराक्रमी दैत्योंने जीत लिया तिन्हतें शिताबी भागजाताभया ३९ तिन्ह दैत्योंकी दृष्टि जब भ्रमगई तब छिद्र पाइ करके इंद्र सूर्यकी किरणोंमें दृष्ट होता एक त्रसरेणूके किणकेमों सूक्ष्म रूप होइ करके प्रवेश करके छिपजाताभया ४० इसते उपरांत युद्धकों विसार करके निर्वृत्तिकों प्राप्तभया इंद्र तिस त्रसरेणूके अंदर मंदिर कल्पन करके निवास करता भया तिस मंदिरमों वैठा इंद्र वाहिर नगरकों कल्पन करताभया तिसके वाहिर अनेक देशानकों कल्पन करताभया ४१ हे विद्याधर तहां रहते भये इंद्र संपूर्ण त्रैलोक्यकों कल्पन करके अपना इंद्रत्वके अधिकारकों करता भया इस प्रकार करके तहां इंद्रके हजारों पुत्र पौत्र होतेभये तहां आजतकरभी तिस इंद्रका अंश राज्यमों स्थितहै ४२

तिस इंद्रके कुलके सभही तहां इंद्रके अधिकारको करते भये तिसते उपरांत सो इंद्र तिसके
पुत्र पौत्र कुटंबादिक परमपद कों प्राप्तहोने भये ४४ हे विद्याधर जौनसा इंद्र इस सृष्टिका त्रस
रेणूमों माया करके छिपाथा तिसके कुलका कोई इहांभी इंद्रके राज्यकों करता भया तिसकोंभी
बृहस्पती के वचन करके ज्ञानकी प्राप्ति होतीभई ४५ सोभी दैत्योंके साथ युद्ध करताभया संपू
र्ण शत्रुओंको जीत लेताभया सो १०० अश्वमेध यज्ञ करताभया मन करके अज्ञानकों तर जाता
भया सो किसी कार्य के वशतें कमलके नालके तंतूमो चिरकाल निवास करताभया औरभी सैंक
डे इंद्रभाव के वृत्तांतोंको अनुभव करता भया ४६ सो इंद्रभी मायाकों जानने द्वारा यह इच्छा क
रताभया ब्रह्मतत्वकों मै देखों सो ब्रह्मकों देखताभया वुह कैसाहै परब्रह्म सर्वशक्ति युक्तहै सर्व
वस्तुमों व्याप्तहै सर्वकालमों सर्व प्रकार करके सर्वत्र सर्वजनोंने देखिआहै ४७ फेर वुह कैसा
है सर्व दिशामों है हाथ पाओं जिसके सर्वत्रहैं नेत्र और मुख शिर जिसके सर्वत्र श्रवण वालाहै

सभकों व्याप्त होइ करके स्थित भयाहै ४८ ध्यान करके सर्वत्र एक रूपकों देखता भया कैसाहै उ
हार वुद्धी युक्त है संपूर्ण सृष्टिकों तिसमों हमारी इस सृष्टिकोंभी देखताभया तिसतें उपरांत इंद्रों के
इंद्रका राज्यके अंतमों फेर इंद्र होताभया जगतके राज्यकों करताभया संपूर्ण वृत्तांतोंका अनुभव क
रताभया ४९ इस प्रकारकी माया करके अनेक इंद्रोके वृत्तांत भयेहैं यह माया अनेक प्रकारकी प्रती
तिकों करणे हारीहै सत्य परब्रह्मके विचार करके लीन होजाती है ५॰ हे विद्याधर जो पदार्थ सत्य न
हीहै सो कदाचित भी सत्य नहीजानना तूं केवल शांतरूप है सभके लय होने मों शेष रहणे वाला
है अब तूं बोधकों प्राप्त भयाहै अब फेर मूल रहित भ्रांतिके मत धारण करे ५१ हे विद्याधर तूं संपूर्ण
कल्पना कलंतें रहितहै और शुद्धरूपहै और आनंदरूपहै और शांतरूप है और ईश्वरहै और शुद्धचै
तन्यहै मायाके विलासतें आकाश शून्य स्वरूप है सो स्वरूप करके पर्वत प्रमाण दृश्य रूपहोता
है संपूर्ण जगत परमाणु रूप होताहै आत्म विचार विना जीती नही जातीहै ५२ वसिष्ठजी श्रीराम

चंद्रजीप्रतिकहतेहैं॥ हेरामजी फेर भुशुंडकाक मेरेकों कहता भया हे वसिष्ठजी ऐसे मैंनें क
हते संते सो विद्याधर राजा शांत ज्ञान स्वरूप होता भया समाधीमें स्थित होताभया आत्म स्वरूप
के ध्यानमें एकाग्रहोता भया ५३ सो आत्म स्वरूपको ध्यान मैनें वारंवार कराहे तिस तिसतें जो
जो मैनें कहा है तिस तिसतें बोधकी दृढताकों पाइ करके फेर दृश्य पदार्थमें मग्न नही होता
भया और परम निर्वाणकों प्राप्त होताभया ५४ वसिष्ठजीकहतेहैं॥ इसतें मैनें कहाहै निर्मल
चित्तवाले पुरुषकों किया उपदेश जलमें तैल बूंदकी न्याईं विस्तारकों प्राप्त होताहै ५५ पहल्या
गानेको योग्यहै यह ग्रहण करने के योग्यहै ऐसी जिसके चित्तमें कल्पनाहै सो पुरुष संसार
से मुक्त नही होताहै सो सर्वज्ञ है तोभी मूर्खहै ५६ हेरामजी मूर्खज्ञानी सदा होने योग्य है
और ज्ञानबंधु नही बने योग्य है मै अज्ञानीकों भला मानता हूं ज्ञानबंधुकों भला नही मा
नताहूं ५७ हेरामजी ज्ञानबंधु कौन होताहै ज्ञानबंधु तिसकों कहतेहैं जो पुरुष शास्त्रों को

नि॰ लोकोंकों सुनावता है आपभी पढताहै कारीगर सिरीखा उपजीविका वास्ते शास्त्रके प्रसंगकों क
पा॰स॰ रताहै शास्त्रकी विधिमें आप वर्त्तमान नही होताहै सो ज्ञान बंधु कहाहै ५८जो पुरुष अन्न व
२११ स्त्रमात्र प्राप्त होनेते प्रसन्न भयेहैं शास्त्रोंके फलकों जाननें हैं हमकों शास्त्र आई गयेहै और
मजूरी करणे हारीकी न्याई अन्न वस्त्र लाभ वास्तेही शास्त्रार्थकों जानने हारे सो ज्ञान बंधु कहे
हैं ५९जोंनसें पुरुष शास्त्रमें कहे प्रवृत्ति मार्गकों सिद्ध करणे हारे धर्ममें प्रवृत्त होतेहै और नि
वृत्ति करके ज्ञानकों देने हारे शास्त्रार्थमें नहीं प्रवृत्त होतेहै सो ज्ञानबंधु कहेहै ६० हे रामजी
आहार वास्ते उत्तम कर्मको करणा प्राण धारणे वास्ते आहारभी करणा तत्वजानने वास्ते प्राण
धारणा भी करणी जन्म मरण दुःख निवृत्त करणे वास्ते तत्वजाननेका अभ्यास करने योग्य है ६१
हे रामजी मायाके प्रवाहमो जेसा बने तैसे कार्यकों जो करताहै और कामना कैसे कल्पते रहि
तहै और रागद्वेषमें शून्यहै अंतः करण जिसका सो पंडित कहाहै ६२ हेरामजी जीवको केवल

अहंता ममताके कारण मात्र कहते हैं तिसका पसरणा जगतका रूपहै और आत्मामें निश्चा कृ
शोकों जगत के लयको कहतेहैं यह उपदेशकी मुख्य भूमिकाहै ६३ हेरामजी वैराग्यकी वा
सना करके संपूर्ण जगतकों त्याग करके इस जगतकी मायाकी प्रकृतितें उठ करके मंकी ब्राह्मण की
न्याई कलंक रहित होइ करके परमपदका कों चलेजाओ ६४ हेरामजी एक मंकि नामा ब्राह्मण
होताभया सो मारवाड़ देशके मार्गमें चलता हुवा महा गरमी करके तपा हुवा भी लोकोंके ग्राम
कों प्रवेश करता हुवा मैंने देखिया ६५ हेरामजी तुम्हारे दादा राजा अजके यज्ञ करणे वास्ते में अ
पने आश्रमते आकाश मार्ग करके जाताथा तब में मंकी ब्राह्मणकों धूप करके व्याकुल भ
येकों देख करके दया करके वचन कहता भया ६६ हे मारवाड़ की झाड़ीके मुसाफिर तेरे कों
कुशल होवे यह ग्राम नीच लोकों के वसने वालाहै इसमें तेरा विश्राम नहीं बनेगा और ला
री भूमी पड़ने करके और महाउग्र धूप करके तृषा तो अत्यंत बढ़ती जातीहै ६७ परंतु इस

ग्राममें प्रवेश करणा भला नही जिस कारणतें महा अंधकार वाली कंदरामें सर्प बनना अच्छा
है पत्थरों में कीड़ा बनना अच्छाहै मारवाड़ देशकी झाड़ीमें लंगड़ा मृग बनना अच्छाहै परन्तु
ग्रामके मूढ जनोंकी संगती भली नही ५८ मंकी ब्राह्मण कहताहै हे भगवन् तूं कौन है प्र
न्न कैसाहै पूर्ण बुद्धिहैं और महात्माहै और महा धैर्य वानहैं जिस कारण ते व्याकुल नही है
संपूर्ण लोकके वृत्तांतकों देखताहै जैसे मुसाफिर ग्रामके वृत्तांतकों असंगता करके देखता
है ५९ हे महामुने क्या तुमने अमृतपान कियाहै अथवा तूं महा सिद्ध हैं जिस कारण तें
यह संसार संपूर्ण उत्तम गुणोंतें रहितहै इसमें तूं सर्वोर्य पूर्ण जैसा विराजमान होता है
हे मुने तूं दोषों से शून्यहैं और आनंद करके पूर्णहै और पूर्ण होइ करके भी स्थिर मति है
तूं सभतें असंगहैं तोभी सर्वरूपहै तेरेकों जगत कछु भी प्रतीत नही होताहै और जल त
त्व अंतः करणमें प्रतीत होताहै ८ हे मुने तेरी बानी और रूप उपशमकों प्राप्त भया है और

सुंदर है और प्रगट प्रकाशमान है परंतु विरोधी किसीकाभी नहीहै और निवृत्ति को प्रा
प्त भयाहै तोभी सर्वत्र प्रवृत्त है यह किस कारणते है ७१ हे मुने मैं शांडिल्यके कुलमें प्रक
ट भयाहूं मंकी मेरा नामहै तीर्थ यात्राके प्रसंगते बहुते देशोंमें फिराहूं बहुत तीर्थोंको दे
ख करके अब घरकों जाने वास्ते उद्यत भयाहूं ७२ परंतु मैं विरक्त मन भयाहूं घर के जानेकों
उद्यम नहीभी करताहूं यह संसारमों भूतों के समागमोंकों मैनें देखिया है वुह समागम
कैसे हें विजुलीके चमत्कारकी न्याई चंचलहै ७३ हे भगवन् तुम मेरेकों कृपा करके अ पने
आपको सत्य करके कहो आप कोनहो सतजनों के मनरूपी सरोवर गंभीर होतेहैं और नि
र्मलभी होतेहैं ७४ महात्मा लोक दर्शनतेंही मित्रता करतेहैं तिन्हके दर्शनतें कमलोंकी
न्याई संसारी प्राणीओंके मन तत्काल प्रकाशमान होतेहैं और प्रसन्न होतेहैं ७५ मेरा यह
मन संसारके मोहते मुक्त होनेकों समर्थ नही होताहै तिसकों बोध कारोंकी कृपा ते

मोहतें छुटावनेकों योग्यहो ७६ श्रीवसिष्टजी कहतेहैं ॥ हे महाबुद्धे मैं वसिष्टमुनी हूं आकाशमें
ही मेरा घरहै किसी राजऋषिके कार्य निमित्त इस मार्गकों आयाहूं तूं अब चिंताको मत करें तत्त्वव
त्ता जनोंके मार्गकों आयगयाहैं निश्चय करके संसार समुद्रके तटमें प्राप्त भया हैं ७७ हे मंकि वैरा
ग्यादिक युक्त भई ऐसी मति और शांतरूपा आकृति यह तुच्छ बुद्धिओंको नही होतीहै ७८ मं
किवाच॥ हे भगवन मैनें बहुत प्रकारकी दश दिशा भ्रमीहै परंतु संशयको नाश करा
ने हारा उत्तम जन मेरे कों कोई नही मिला अब मेरेकों संसारमें अनेक जन्मोंके पुण्य क
रणोंका फल प्राप्तभयाहै ७९ हे भगवन् बहुत दोषोंकों देनेहारी संसारकी बहुत दशा दे
खतामें बहुत दुःखी भयाहूं यह संसारके सुख फेर२ उत्पन्न होतेहैं फेर२ नष्टहोतेहैं अवश्य इसतें दुःख
होताहै तिसतें यह दुःखरूपी भासतेहैं ८० यह संसारमें सुखहि दुःखरूपहैं तिसतें मैं
दुःखोंकों भले मानताहूं जिसतें दुःखोंनें फेर दुःख नही होतेहैं और सुखोंके अंत में

मैनें दुःखही देखेहैं तिसतें सुख मेरेकों दुःखकों करतेहैं मेरा चित्त सुखदुःखों के तरं
गों करके व्याकुल भयाहै खुशक चिंता करके व्याप्त भयाहै ८१ मैं इंद्रिय सुखोंमों तत्पर भ
याहूं मेरेको विवेकी जनस्पर्श भी नहीं करते हैं जो विवेक रूपी सूर्य उदय नहीं होवे तो
वासना रूपी रात्रिका क्षय नहीं होताहै यह चित्तरूपी हाथी मदोन्मत्त भयाहै जिसने जो
सत्य वस्तु नहींहैं तिसकों सत्य वस्तु जान करके गलेमों बांधाहै जैसें बालक कांचकी मा
लाकों गले बांधताहै ८२ हे साधो जैसें शरद ऋतुमों घन घटाका अंधकार दूर होताहै औ
र दश दिशा निर्मल होतीहैं तैसें विवेकके उदयमों मोहका अंधकार नष्टहोताहै और
चित्तकी वृत्ति निर्मल होतीहै यहमें सत्य जानताहूं साधुजनोंकी कही वानी बोधकों प्रा
प्त करतीहै तिसतें तुमने भी मेरेको संसारकी शांतिकों देने हारे बोध कराणेतें मेरेकों
संसार दुःखकी शांति कराणे योग्यहै ८३ श्रीवसिष्ठजीकहतेहैं॥ हे मंकि पहिले इंद्रियों

करके विषयोंका भोगजो लक्षन कारण लखना सो संवेदन कहाहै विषय नष्टभयेते फेर
तिसका संबंध विचारणा सो भावन कहाहै विषयकार चित्तकी वृत्ति करणी वासना कही है
फेर मरणादिक मों भी दृढवासना करके दूसरे देहके आरंभमों भोग चाहना सो कल्पना कहीहै
यह चारों अपने नामके अर्थ करके महा अनर्थको करते हैं विचार कारणेतें अर्थ रहित होते हैं
अपने अर्थको नही करतेहैं ८५ तिसतें हे मंकि विषयोंका संवेद नही भावन जान सो कैसाहै
संपूर्ण दोषोंका आश्रयहै तिसमोंही संपूर्ण आपदा रहतीहै जैसे वसंतऋतु मों लता होतीहैं ८६
विवेकी पुरुषको संसारका भ्रम वासना सहित क्षीण होताहै जैसे वैशाखमासके अंतमों ग्रीष्म
ऋतुमों पृथिवीका रस सूक जाताहै ८७ हे मंकि जिस बोध करके तत्व वस्तुका बोध होवे तिस
को बोध कहतेहै तत्ववस्तुका बोध नही होवेतो बोधने क्या कारणहै जिस कारणतें तत्वके बोध विना जो बो
है सो बोधका विरोधीहै ८८ हेमंकि देखने हारा और देखणेकी क्रिया और देखने योग्य जो पदार्थ

है यह तीनोंमो एक एक प्रति केवल बोध मात्रही प्रतीत होवे तो सारका बोध होता है
तो बोधका अंत होताहै और जैसें आकाश पुष्पका नाम जाननेतें आकाश पुष्पकी प्रती
ति कदाचित भी नही होती है तिसतें तत्व जाननेकों ही बोध कहतेहैं ८८ हेमंकि जोजि
सके समान जाती वाला होताहै सो तिसके साथ एक रूप होताहै जैसें जल जलके सा
थ दूध दूधके साथ आकाश आकाशके साथ मिल जाताहै तैसें बोध सर्वत्र एक जैसाहै
सो आपसमों एक जैसा होनेतें एक रूप होताहै ८९ जो कहो काष्ट पाषाणादिक मों बो
ध नहीहै और बोध रूप आत्मा एक अद्वितीय है काष्ट पाषाणादिक जड़हैं तिन्हमों बोध
रूप सत्तारूप परमब्रह्म नहीहै इस करके एक अद्वितीयता की हानि होतीहै ऐसा नही क
हो जैसें और पदार्थ ज्ञान करके असत्य भासतेहैं तैसेंकाष्ट पाषाणादिक बोध बिना स्वभाव
से जड़हैं और असत्यहैं ९१ हेमंकि अहं ब्राह्मणः मैं ब्राह्मण हूं ऐसा फुरणा बंधकों करताहै मैं

देहादिक नही ऐसा कारण मुक्तिकों देनाहै पनाही बंधहै और पनाही मोक्ष है और स्वाधीन है इसमों क्या असामर्थ है ९३ हेमंकि यह मनुष्य रूपी तृणहै सो वासनारूपी पवनों करके उडाए हैं तिन्हके ऊपर जौनसे दुःख आइ पड़तेहैं सो कहने कों समर्थ नही होतेहैं ९३ हेमंकि यह मनुष्य लोक भ्रांति करके उत्कभये विषय भोगोंके रसमों आसक्तभयेहैं जैसें हाथ कर के ताडन किये गर्दके गोले उपरकों चढके नीचें पड़तेहैं तैसें इहां भोगोकों भोग करके नरकमों पड़तेहैं फेर काल्पांतर करके और देहांतर पाइ करके और जैसे होजाते हैं ९४ हेमंकि यह संपूर्ण जगतके भाव आपसमों असंगहैं जैसें बनमों पत्थर होतेहैं इन्हकों एकत्र करके बंधन करणेकी भावना ही संगलीहै ९५ हेमंकि विचार करणे मात्रतें बंधकी तुच्छ वासना भी नहीहै जैसे कठिन मार्गमों चलने हारेकों अपने हाथमों दीपक का उजाला करणे वालेकों मार्ग सुगम होताहै ९६ हेमंकि जितने यह देह स्त्री धन पुत्रादिक जगत के भाव हैं सो

नि॰
यो॰ वा॰
५४९

विचार करके सुकी रेतीकी न्याईं क्षणमें शिथिल होजानेहैं ८७ हेमंकि संपूर्ण भावोंको मि-
थ्याही चैतन्य स्वरूपता मानीहै जैसें स्वप्नेके पर्वतोंको मिथ्याही पदार्थता मानीहै ८८ हेमंकि
पदार्थोंकी जो अपेक्षा इच्छाहै सोही बंधहै और उपेक्षा जो है नहीं इच्छा सोही मुक्तहै तिस
उपेक्षामें जो विश्रांत भयाहै तिसने क्या पदार्थ चाहीदाहै सो पूर्णकाम भयाहै ८९ श्रीवसिष्ट
जीकहतेहैं॥ हे रामजी मंकिनें इस प्रकार श्रवण करते हुवे तिसतें उपरांत अत्यंत बलवानभी
मोहकों निशेष करके त्याग कर दिया जैसें सर्प अपनी त्वचाकों त्यागदेता है ९० हे रामजीजैसा
संसार प्रवाहमें कार्य आजावे तिसकों करता हुवे तिसने संपूर्ण वासनाकों त्याग करके शत
वर्ष पर्यंत आत्म विचारकी समाधीमें स्थिति करीहै ९१ सो मंकि श्रवनकर पाषाण के बरो
बर स्थिरता धारण करके अंतः करणकों शांत करके महा योगीश्वर भयाहै हम लोक तिस
के ध्यानमें अंतः करणमें प्रवेश करके बोधन करते हैं तो सावधान होताहै नहीं तो ध्यान

यो॰ वा॰ नि॰ प्र॰ ७२

में मग्न रहता है ९२ इतिमंकिप्रसंगः समाप्तम्॥ हे रामजी जैसें आकाश में वृक्षोंका वन नहीं है जैसें रेतीमें तेल नही है जैसें चंद्र मंडलमें बिजली नहीं है तैसें चित्तमें देहादिक नहीं है ९३ हे रामजी जिस युक्ति करके बने तिस युक्ति करके अपने पुरुषार्थके यत्न करके वासना को निर्मूल कर यही कल्याणका उपाय है ९४ हे रामजी अपने पुरुषार्थ के यत्न करके जैसें जानता है तैसें अहं करके भावके अंशकों निरवाण कर यही वासना क्षयका मूल है ९५ हे रामजी अहंभावके त्यागने रूपी पौरुष यत्नतें परे संसार तरणेकी और गती नहीं है अहंभाव त्याग रूपही वासना क्षयका नाम कहा है ९६ हे रामजी घोर शोक प्राप्त भये संते कठिन संकटकी प्राप्तिमें दुर्गमस्थानमें क्रम करके जैसा स्थान समागम होवे तैसें लोकोंको परचाने वाले अंतःकरणमें दुःख रहित भया तूंभी लोकोंकी न्याईं दुःखको मान ९७ हे रामजी उत्सवोंके समागमें विषें और संसार दशामें और उत्सवोंके उदयमें वासना सहित मूढ पुरुषकी न्याईं आनंदको सेवन कर ९८

हे रामजी मृत्यूके कार्य युद्धादिकों में बाड़ रूपी प्राणी गणोंकों बनकी अग्नि तृणोंकी न्याई इच्छासें रहित जैसा होइ करके क्रोध रूपी अग्नि करके वासना सहित मूढ पुरुषकी न्याई दग्ध करता रहो ९८ हे रामजी द्रव्य प्राप्तिके कार्योंमों क्रम करके भये और खेद करके रहित भया तूं वासना सहित मूढ पुरुषकी न्याई जैसें बगुला मछरी वास्तें ध्यान स्थित होताहै तैसें द्रव्य की प्राप्तिकों विचारण कर ९९ हे रामजी दया करणे योग्य दीन जनोंमों दया कर महात्मा पुरुषोमें धैर्य और आदरकों कर अंतःकरण में आत्म विचारके आनंद सहित हुवा तूं बाहिर के कार्यो कों वासना सहित मूढ पुरुषकी न्याई वर्त्तमान हो १०० हे रामजी अंतःकरणमें नित्य आत्माकी भावना सहित होने करके स्थित होवें तो तेरे उपर वज्रकी धारा पडे सो भी कुंठित होजाती हे १०१ हे रामजी तेरे चित्तकी वृत्ति संकल्प त्याग करके लीन भई जैसी और बाहिर के कार्यमें आसक्त भई हे तूं अब और अंतः करणमें अत्यंत सुप्तभये जैसें चित्त करके

चिंताज्वरसें रहित स्थितहो २ हे रामजी जो तूं सुषुप्तिमोंहै तो जाग्रतकी न्याई हो जो जाग्रत
है तो सुषुप्तिकी न्याई हो और जाग्रत सुषुप्ति दोनोंमों एक वृत्ति होवे तो तूं निर्विकार होवेंगा ३
हे रामजी तूं इस जगतकों द्वैत भी नही जान और एक अद्वैत भी नही जान ऐसे निश्चय
करके परम विश्रांतिकों प्राप्तहो आकाशकी न्याई निर्मल चित्त हो ४ श्रीरामचंद्रजीका वचन
श्रीमुनिप्रति॥ हे मुनि श्रेष्ट जो जगत द्वैतभी नहीहै और अद्वैतभी नहीहै तो मैं राम हूं तूं व
सिष्टहैं ऐसी प्रतीत कैसें है सो मेरे प्रति कहो ५ श्रीवाल्मीकीजीश्रीभरद्वाजप्रतिकहतेहैं
हे भरद्वाज श्रीरामचंद्रजी ऐसा वचन कहैं संतें प्रश्नका उत्तर कहने वालेमों श्रेष्ट वसिष्टजी
सभके प्रत्यक्ष प्रकट क्षणमात्र मौन करके तूष्णीहोते भये ६ तिस वसिष्टजी के तूष्णी स्थितहो
तसंते अब कैसें उत्तर होवेगा ऐसे संशय समुद्रमों सभाके लोककों मग्न भये संते ७ श्रीरा
मचंद्रजीश्रीवसिष्टजीप्रतिकहतेहैं॥ हे मुनि श्रेष्ट तुम मेरे न्याई क्यों तूष्णी स्थित भयेहो ऐ

सा जगतमों कोई प्रश्न नहीहै जिसका उत्तर तुम्हारे मनमों नही फुरणा होताहै ८ श्रीवसिष्ठ जीकहतेहैं। हेरामजी मैं कछु कहनेकी अशक्यता करके युक्तिके क्षय करके तूष्णी स्थित नही भयाहूं किंतु इस प्रश्नकी कोटीका तूष्णी होना उत्तरहै तदभी तुम्हारे संशयकी निवृत्ति वाले कछु उत्तर कहता हूं ९ हेरामजी दो प्रकारका प्रश्न करणे हारा होताहै उसमें एक तत्वज्ञ होताहै एक अज्ञानी होताहै अज्ञानीकों अज्ञानीके समझने योग्य उत्तर देना और ज्ञानीकों ज्ञानीके समझ ने योग्य उत्तर देना १० हेरामजी इतना कालतूं तत्वज्ञानकों नही जानताथा तिसतें विकल्प सहित उत्तरोंका अधिकारीथा ११ अबतो तत्वज्ञानी भयाहैं परम पदमों विश्रांत भयाहैं तिसतें सविकल्प उत्तरोंका पात्र नहीहै १२ हेरामजी पुरुष जैसी वृत्तिवाला होताहै सो तैसे वचनकों कहता है तिसतें मैं तो वानीसें परे परमपदमों विश्रांत भयाहूं तो अब तैसाही उत्तर कहने योग्यहै १३ हेरामजी जो पुरुष जीवताही शांत वृत्तिभयाहै व्यवहार करताभी मृत पुरुषकी न्याई जड़

हृत्ति ऐसाहै तिसकों परमपदमों प्राप्तभये कोजानतेहैं १४ हे रामजी अहंताही परम अविद्याहै निरवाण पदका विरोध करणे हारीहै तिस करकेही मूढ पुरुष जानीदाहै सोही विद्वान पुरुषकी चेष्टाहै १५ हे रामजी ऐसा शरदऋतु का आकाश नही शोभताहै और गंभीरनिश्चल भया क्षीर समुद्रभी नही शोभताहै और पूर्णमासी का चंद्रमाभी ऐसा नही शोभताहै जैसा तत्त्वज्ञ पुरुष शोभताहै १६ हे रामजी जैसे चित्रमों लिखी युद्ध करती सेनाका युद्ध क्षोभकों नही करताहै तैसें तत्त्वज्ञानी पुरुष व्यवहारकों करताभी क्षोभकों नही प्राप्तहोता १७ जो पुरुष इष्ट प्राप्तिमों और अनिष्ट प्राप्तिमों शांत होइ करके व्यवहार करताहै तोभी मृतपुरुषकी न्याई जिसके अंतःकरण मों व्यवहार का फुरणा नही होताहै सो निरवाण सुखको अनुभव करताहै १८ हे रामजी तिसतें संपूर्ण कल्पनाके आश्रयकों त्याग करके आकाशकी न्याई अंतःकरणमों व्यवहारकी शून्यताकों सेवन कर व्यवहारका नही फुरणाही परम कल्याण कहाहै इस कार

विस्मरण होना परम उत्तम पदहै १९ हेरामजी जो पुरुष परम तत्वमें विश्रांत भया है
जिसकों समदृष्टी भई है ओर रागद्वेष सें रहित भयाहै तिसकों शांतता होती ओर व्यव
हार दोनें एक सिरीषेहैं २० अथवा इसकों निर्वाणकी प्राप्तितें शांतताही शेष रहती है ऐस
सा मुनि निश्चय करके वासना रहित होवेगा सो व्यवहारकों कैसे करेगा २१ हेरामजी जबल
ग तत्वज्ञानी पुरुषकों निरवाण पुष्ट नही भया तबलग सो व्यवहारकों करताहै ओर राग
द्वेष भयादिकों का तिसकों उदय होताहै २२ हेरामजी सोही ध्यान जानना अथवा समाधि जा
ननी जो अहंभाव का नही फ़ुरणाहै जोंनसे जड़ नहीहैं तिन्हको जड़ताकी न्याई निरवाण सिद्ध
होताहै वुह कैसा हैं सम चित्तता शांत चितन्ता सहित निर्विकार हैं २३ हेरामादिक तत्ववेत्ता
जी वाक्य संमूहके विस्तार करके प्रकट भये जो द्वैत मार्ग ओर अद्वैत मार्गहैं तिनके भेदों
करके भ्रमकों प्रकट करणे हारे मत भेदों करके दुःखकी प्राप्ति वास्ते मूढ पुरुषोंकी न्याई

खेदकों मत प्राप्त होवो तुम तत्ववेत्ता होइ करके भेद दृष्टिकों त्याग न करो २४ तत्ववेत्ता पंडितों की संगति करके बुद्धि रूपी तलवार कों तीक्ष्ण करके अज्ञान रूपी लताकों तिल तिल प्रमाण करके खंडित करो २५ हे रामजी देहधारी जीवोंको दो रोग महा घोर हैं इस लोक की वांछा और परलोक की वांछा जिन्ह रोगों करके यह जीव संपूर्ण पीडित भये महा घोर दुःखों कों भोगते हैं २६ हे रामजी अज्ञानी जीव इस लोकके दुःख दूर करणे वास्ते भोगरूपी दुष्ट औषधीओं करके यत्न करते हैं जब लग जीवते हैं तब लग इह लोक वास्ते यत्न करते हैं और परलोकके सुख वास्ते यत्न नही करते हैं २७ हे रामजी जौनसे उत्तम पुरुष हैं सो परलोककी महा व्याधीकी चिकित्सा वास्ते शम और सत्संग और आत्मबोध कि अमृत रूपी औषधीओं करके यत्न करते हैं २८ हे रामजी जो कोई अवश्य पर लोकमों होने हारी नरक रूपी व्याधि की चिकित्साकों इहां ही नही करता है सो पुरुष यहां औषध नही मिले तहां परलोकमों जाइ करके क्या करेगा जैसे रोगी औषध

मिलनेके स्थानमों चिकित्सा नही करे और जहां औषध नही मिले तहांजाई करके क्या चिकि-
त्सा करेगा २९ हे मूढजनों यह लोक की चिकित्सा करके आयुषाकों वृथा मत क्षीण करो आत्मज्ञान
रूपी औषधों करके परलोककी चिकित्साकों शताबी करो ३० यह आयुषा पवन करके हलाय पिप
लके पत्रके अग्रमों लगे जल बिंदु की न्याई चंचलहै इस कारणातें परलोक की नरकरूपी व्याधी
हरणे वास्ते यत्न करके शताबी चिकित्सा करो ३१ परलोककी महा व्याधीकी यत्न करके चिकि-
त्सा किये संते इह लोक की व्याधि आपही शताबी नाशकों प्राप्त होतीहै ३२ हेरामजी यह आत्मा
भोगरूपी की चड़के समुद्रमों मग्न भयाहै सो अपने पौरुषके चमत्कार करके नही तारा जावेतो
तिसके तरणेका और उपाइ कोई नहीहै ३३ हेरामजी जो पुरुष अपने मनकों नही जीतेहैं और आ
त्म ज्ञानतें रहित है और भोग रूपी कीचड़मों मग्न भयाहै ऐसा मूड है सो आपदों का पात्र हो
ताहै जैसें जलोंका पात्र समुद्र है ३४ हेरामजी जैसें जीवनेका पहिला भाग भोग पदार्थों का-

त्यागहै कैसा है वुह त्याग रागद्वेषकी शांतिकों देणे हाराहै ३५ हे रामजी अनेक सुख दुःखोंकी प्राप्तिमों कोंनसा पुरुष आत्म स्वरूप के विचारतें नष्ट नही होताहै सो कदाचितभी नष्ट नही होता है जो सुख दुःखोंकी प्राप्तिमों नष्ट होताहै सो स्वरूप करके नष्ट होताहै और शास्त्रोंके उपदेश करके क्या प्रयोजन है ३६ हे रामजी जिसकों भोगोंमों इच्छाका उदय भयाहै तिसकों सुखदुःखादिक वन है इच्छा करके फेर चिकित्सा नही बनतीहै पहिले इच्छा दूर करणे वास्ते चित्तकी चिकित्सा करणी ३७ हे रामजी जो पुरुष भोग रस रूपी विषयको खाई करके तिसके स्वादमों दिनो दिन प्रीति करताहै सो चिन्ता रूपी अग्नि प्रज्वलित भई मों अपने स्वरूपकों अल्प तृण बनाई करके तिसके वधायोने वास्ते जे रताहै ३८ हे रामजी चित्तके समाधान करणेकों इच्छाका त्याग करणा कहाहै जैसे इच्छा त्यागनेतें चित्त शांत होताहै तैसें सेंकडे उपदेशों करके नही होताहै ३९ हे रामजी इच्छाका उदय होना जैसा दुःख है तैसा नरकमों भी नहीहै इच्छाकी शांतिमों जैसा सुखहै तैसा ब्रह्मलोकमोंभी नही है ४०

हे रामजी इच्छाके उदय होनेकों विन्न नाम करके कहतेहैं इच्छाकी शांतिकों मोक्ष कहते हैं इतने सोही शास्त्रहैं और तप और नियम और इसमों ही संपूर्ण होतेहैं ४१ हे रामजी जो पुरुष इच्छाके शांत करणेमों यत्न नही करता है सो नरोंमों नीचहै अपने आत्माको आपही हिनो वि न अंध रूपमों गेरताहै ४२ हे रामजी यह लोक अपने तरणे वास्ते शास्त्रोंको और गुरोंके उपदेशकों क्यों चाहतेहैं वृथाही चाहतेहैं क्यों तिन्हकों इच्छाके त्यागनेसें विना आत्म चिंतनकी समाधी नही प्राप्त होतीहै ४३ हे रामजी जिसकी बुद्धि केवल इच्छा मात्र त्यागने मों असाध्य भईहै तिसकों गुरोंका शास्त्रोंका उपदेश व्यर्थहै ४४ हे रामजी इच्छा त्याग विना एक क्षण भी जावे तिसके वास्ते चोरों करके लूटे पुरुषकी न्याई मेरी चोरी भईहै ऐसे करलाओने योग्यहै ४५ हे रामजी विवेक रहित आत्माकी जो इच्छाका स्फुर्ण करणा सोही संसाररूपी हक्षके पोषण वा स्ते अखंड जलों करके सिंचन बनाहै ४६ हे रामजी तत्व विवेकी पुरुष शास्त्रके विधि निषेधों

का पात्र नहीहै जिसकों सर्व पदार्थोंकी इच्छा शांत भई है तिसकों विधि निषेधसों क्या प्रयोजन।
है ४७ हेरामजी तत्वज्ञका यही लक्षण है जो इच्छाकी शांति होवे सो इच्छा त्याग कैसाहै सर्व
लोकोंको आनंद करताहै और अपने कों आत्माके स्वरूपके अनुभवकों करताहै ४८ हेरामजी
जब दृश्य पदार्थकों रस रहित जाना तद चित्त नही फुरताहै तबही इच्छा त्याग प्रकट होता है
सोही मुक्तिका रूपहै ४९ हेरामजी जो दुःखकों सुखकी भावना होवे तो विषभी अमृत रूप हो
ताहै धीर बुद्धि पुरुष ऐसा निश्चय करके बोधकों प्राप्तभया प्रसिद्ध कहीदाहै ५० हेरामजी त
त्ववेत्ता पुरुषकों इच्छा और अनीच्छा दोनों समान भईहैं और शांत भई हैं तदभी अनीच्छाके
उदयकों मैं परम कल्यानके उदय वास्ते मानता हूं ५१ हेरामजी चित्तका विषय भोगोंका चे
तनेके सन्मुख होनाही रूपहै तिसकों चित्त कहते हैं सोही संसारहै अरु सोही इच्छाहै ति
सतें रहित होनाही मुक्तीहै ऐसें जान करके इच्छाकी शांतिकों धारण करो ५२ हेरामजी।

इच्छा रूपी छुरी करके बेधे हुए हृदयमों शूल जैसी पीडा होतीहै जिसमों मणि और मंत्र औ
र औषध यह कुछ नही कर सकतेहैं ५३ हेरामजी योगीश्वर जो जनहै सो आत्मज्ञानके फुर
णोते जगतकों आकाशकी न्याई शून्य करतेहैं फेर आकाशको ही सत्ताके फुरणे करके त्रैलो
क्यकों करतेहैं ५४ हेरामजी जैसें आकाशमों सिद्धोंके संकल्प रचना के अनेक नगर हैं तैसें
चेतन्य रूपी आकाशमों हजारों सृष्टि हैं ५५ हेरामजी तत्वज्ञ पुरुष अहंतासें रहित भया
चेतन्य सत्ताकी एकतामों वर्त्तमान भया तिसकों अणिमादी अष्ट सिद्धिआं सूके हुवे पत्र के
बरो बर तुच्छही भासतीहैं ५६ हेरामजी देवता असुर मनुष्यों करके सहित त्रैलोक्यमों सो
वस्तु मेरेकों दृष्ट नही होताहै जो वस्तु विवेकी पुरुषकों लोभका एक रोम मात्रभी अंश
कों करे ५७ हेरामजी अविचार करके अहमास्मि अहंभाव है विचार करके अहमस्मी ऐसा
अहंभाव नहीहै हेरामजी अहंभावको अभाव भये संते जगत कहाहै और संसार क

होंहे ५५७ हेरामजी बुद्धिसें आद लेकरके जगत जिसके करणोमें नहीहे सो आकाशकी न्याई करणोतें शांत भयाहे उत्तम पुरुष तिसकों मुक्त भयेकों कहतेहैं ५८ हेरामजी संसर्ग अर्थों तें जिसका मन रहित भयाहे सर्वात्मा रूप होइ करके जो स्थित भयाहे तिसकों सर्व प्रकार करके सर्वदा कालमें सर्व विश्व शिवरूप चारों तरफ बनाहे ६० हेरामजी जो पुरुष वासना रहित भयाहे भोग पदार्थों के रसतें रहित भयाहे और सर्वप्रकार की यह लोक परलोक की इच्छातें रहित भयाहे तिसकों वेदांत शास्त्र विना और विनोदके कारण निमित्त कोंनहे तिसतें शास्त्रार्थका विचार सज्जनोंका सतसंग युक्त भयाहे और निर्मल अंतर करण वाले पुरुषकों पदार्थोंके करणोंका संबंध नहीहे यही तत्वज्ञोंका स्वरूप हम लोकोनें मानाहे ६१ हेरामजी तत्वज्ञ पुरुषका स्वभाव रूपी सूर्य जैसें जैसें स्थिर होताहे तैसें तैसें भोगवासना का अंधकार गलित होताहे सत्यहे असत्यहे ऐसी प्रतीतमें नही होताहे ६२ हेरामजी यह जगत विवेक और

नि॰
वा॰सा॰
५५३

विवेक करके प्रकाशमान और असत्य रूपहै अविवेक करके भासमानहै और विवेक क
रके असत्यहै ९३ हेरामजी विवेक करके पूजित किया यह आत्मा तत्काल महा बरको दे
ताहै जिसके वर प्रदान में विष्णु रुद्र इंद्रादिकों की पूजाके फल सबके तृणके तुल्यभी नही
होतेहैं ९४ हेरामजी यह आत्माही परम देवता है सो विचार और सत संग और शमादिक गु
णों करके पूजन किया हुवा तत्काल मोक्षरूपी बरकों देताहै तिसतें आपना आत्मा ही परमे
श्वरहै ९५ हेरामजी महात्मा पुरुषोंको भी देवता पूजन और तप और तीर्थ और दान किये
हुवे अविवेकतें भस्ममों होमके न्याईं वृथा होतेहैं ९६ हेरामजी और जो विवेक करके देव पू
जादिक श्रेष्ठ फलकों करते हैं तो विवेककों ही अंतःकरणमों सिद्ध क्यों नही करिये ९७ हे
रामजी जिस तिस प्रकार करके विवेक अंतः करणमों स्थिता कों प्राप्त करणा जैसें जैसें
फेर अनेक भ्रमों करके नाशको प्राप्त नही होवे ९८ हेरामजी विचारवान पुरुष जैसें मिले

तैसें स्थित होतेहैं जैसें बने तैसें जातेहैं जैसा बने तैसा कर्म करते मोक्ष सिद्धिकों प्राप्त होतेहैं ६९ हेरामजी अथवा संतजन जो हैं सो सर्व त्याग करके शांत और उज्वल भयेहैं अंतः करण जिन्हका एक एकांतमों ही स्थित होवे चित्रमों लिखे जैसे आत्म चिंतनकी समाधि मों स्थित होवें ७० हेरामजी जैसें जन्मसें अंधा पुरुष लोकोसें सुन करके नेत्र सहित पुरुष की रूपके अनुभव को वर्णन करताहे आप नही जानताहै और अंतः करणमों संतापकों प्राप्तहो ताहै तैसें अज्ञानी पुरुष निर्वाण कों वर्णन करता हुवा आप नही जानता है संताप को प्राप्त होता है ७१ हेरामजी जो पुरुष अज्ञानरूपी ज्वरतें मुक्त भयाहै बोध करके जिसका अंतःकरण शीतल भयाहै यही तिसका प्रगट लक्षण होताहै जो भोग रूपी जलउसकों रुचि नही करताहै ७२ हेरामजी तुम चैतन्य सत्ताके आकाश बनजावो परमानंद रसका पान करो संपूर्ण शंका त्याग करके स्थित होजावो और निर्वाण नाम आनंदन बनमों स्थित होजावो ७३ हेरामजी चित्त

रूपी भूमिकामों समाधी का बीज जो है सो संसारके निरवाण सुख करके पड़ताहै सो चित्त भू
मिका कैसी है विवेक सहितहै अरु जहां विवेकी जनोंका बनहै तहां सो चित्तरूपी निरवाण
बीजके उगाड़ने वास्ते शुद्ध और पुष्ट तरोलकर करणे द्वारे और मधुर और अपनेकों हित करणे
द्वारा ऐसा बोधका अभ्यास रूपी अमृत जलों करके सिंचन करणे योग्यहै ७४ सो कौन है अमृत
जल सत्संग रूपी नवां क्षीरहै चंद्रमाके किरणोंकी न्याई शीतलहै अंतःकरणतें संसार की शू
न्यताकों कर देतेहैं और आनंद करके पूर्ण हैं और निर्मल हैं और अमृतकी न्याई शीतलहैं अमृ
तरूपी लहिरते प्रकट भयेहैं ऐसे शास्त्रार्थ रूपी उत्तम जलहैं और संसारकी निरवाण शांतिकों
करतेहैं ऐसे ध्यान रूपी रसहै सो यत्न करके सेवने योग्यहैं ७५ हेरामजी उसको तपरूपी कम
र कोट देना है और पदार्थ चिंतारूपी कांटे तोड़ने योग्यहैं और तीर्थोंमो विश्राम करणे रूपी॰
वायु देने योग्यहै ऐसें करणेतें निरवाणका अंकुर उठ खड़ा होताहै ७६ हेरामजी इस की॰

रक्षा करणे हारा माली गुरु शास्त्रके उपदेश वाला शीतल अंतःकरण वाला मुमुक्षु पुरुषा
है सो संतोष नाम वालाहै आत्म तुष्टिको देणे हारी मुदिता नामी इस्त्री करके युक्तहै ७७ हेरा
मजी और संपदारूप जो इस्त्री है सो तरंगोकी फरणे के न्याई चंचलहै सोही पाप कर्मरूपी घ
न मंडलतें प्रगट भई भोग तृस्नारूपी बिजुली पड़तीहै तिन्हू . करके निरवाण वृक्ष दग्ध हो
जाताहै ७८ हेरामजी निरवाण वृक्षकों सुकाउने वाले संसारकी आपदा और संपदा विघ्नहै ति
न्हूकों दूर करणे वास्ते धीरता और उदासता और जप स्नान दान ऊंकारादि मंत्र और शिवजी के
ध्यान करणे करके विघ्न हटाओने और निरवाण वृक्षकी रक्षा करणी ७९ हेरामजी इसप्रका
र करके रक्षण किये ध्यान बीजतें विवेक रूपी अंकुर होताहै सो अपनी शोभा करके प्रसिद्ध
होताहै समृद्धि युक्त होताहै जिस अंकुरते दो पत्र निकसते हैं एक शास्त्र विचार दूसरा सत
संग होताहै अंतःकरण की स्थिरता रूपी इसका पेड़ निकसता है संतोष करके विस्तार॥

कों प्राप्त होताहै वैराग्य रस करके पूर्ण होताहै शास्त्रार्थ और सत संग और वैराग्य रस करके स्थूल होताहै रागद्वेष रूपी वानरोंके क्षोभ करकेभी किंचिन्मात्रभी कंपाइ मान नही होताहै ८० हेरामजी मधुर वचन कहना और सत्य बोलना सत्यरूप भासना और धीरता और निर्विकल्पता और समता और शांतता और मैत्री और करुणा और कीर्ति और विशालता और आधीनता ऐसेंउ त्तम गुण वाले पत्र जिन्हकी ऐसीआं लताहैं जिन्हका यश पुष्पहै तिन्ह करके युक्त होताहै जैसें कल्पवृक्ष कल्पलता युक्त होताहै ८१ हेरामजी ऐसे निर्वाण वृक्षकों मुमुक्षरूपी मुसाफर छाया मों आन बैठतेहैं जिन्हकों दैव योगतें पिछले प्रारब्ध कर्म रूपी यात्राकी मजल पूरी होतीहै औ र पुण्य कर्मों करके भोगों विषें विरक्तता होतीहै जैसें मुसाफर मारवाडके स्थलोंमों विरक्त होता है ८२ अंतःकरण मों तत्व विचार करके पूर्ण भयाहै व्यवहार मों क्षीण भयाजैसाहै संसार की वृत्तिओंमों सोपआ जैसाहै अंतःकरण मों आनंद करके पूर्ण मन भया और इंद्रियोंकी विषय

वासनामें मोनकों प्राप्तभया ऐसा पुरुष विवेक वृक्षकी छायामें स्थिती करणेकों जाताहै ८३ हेरामजी विषयोंमें परम विरसताकों समाधान कहतेहैं सो जिसनें धारण किया है सो मनुष्य रूप करके परब्रह्महै तिसकों नमस्कार करतेहैं ८४ हेरामजी विषयोंसे अत्यंत रूसाजो त्यागनीहै सो वज्रकी न्याईं अभेद्य और संपूर्ण वासनाजालकों चूर्ण करणे हारा वज्र नाम करके ध्यान कह्याहै तिस ध्यान करके और तत्वज्ञान करके भेद गलित भयेसंते तृण समान और ध्यान करके क्या कार्यहै ८५ हेरामजी तत्वविवेकी पुरुष शास्त्र श्रवण पाठ करणा जप करणेका अंतमें समाधी में तत्पर होवे समाधीके अंतमें शास्त्र श्रवण पाठ जपोंकों करे वृथा और कार्यमें आसक्त नहीहो ८६ हेरामजी बाग बगीचामें पुष्प समूह करके शोभायमान वृक्ष लताके कुंजन में धूप गरमी रहित आनंद युक्त ऐसा विश्राम नही प्राप्तहोता है जेसा संतजनों के समागममें होताहै ८७ हेरामजी वसंतऋतु और नंदनवन और शरदऋतु का पूर्ण चंद्रमा और स्वर्गकियां

अप्सरा इन्द्र सभका आनंद एक तर्फ होय और संतोषरूपी अमृतका आनंद एक तर्फ होवे तदभी संतोषामृतके आनंद समान नही होताहै ८८ हेरामजी द्रव्यकी उपार्जन और रक्षा कर णेमें महा कृपणता और दीनताको जानताभी है तोभी जो मूढपुरुष द्रव्यमें इच्छाकों धारण करताहै सो मनुष्योंमें पशुहैं तिसकों स्पर्श नही करणा ८९ हेरामजी हे महाबुद्धे रामजी जो कोई परमेश्वरकों चिरकालकी भक्ति करके दिनरात्र प्रसन्न करे तिसकों परमेश्वर निर्वाणकों देताहै ९० हेरामजी जो पुरुष मनके बाहिरके आरंभकों और अंदरके आरंभको तैसा त्यागरूपी शस्त्र करके छेदन करताहै तिसकों खेती छेदनेतें जैसे खेतीका क्षेत्र प्रकट देखा जाताहै तैसें इच्छा द्वेष सुखदुःख बुद्धि श्रुति महाभूत और अहंकार चित्त महत्तत्व इस प्रकारका क्षेत्र तत्वज्ञा न करके प्रकट प्रतीतिद्वारा प्रकाशमान होताहै तिसतें सो पुरुष क्षेत्रज्ञ होताहै ९१ हेमहा बुद्धे श्रीरामचंद्रजी ईश्वर दूर नहीहै और दुर्लभ नहीहै महा तत्वबोधरूपी तिसकास्वरूपहै ऐसा

नि॰ अपना आत्माही परमेश्वरहै ९ हे रामजी सो महात्मा प्रसन्न होताहै सोही महादेव है सोही पर ९२
वा॰सा॰ मेश्वरहै प्रसन्न होइ करके विवेकरूपी दूतको प्रेरण करताहै शुभ चरित्रों करके पवित्र जानताहै
५४॰ सो विवेकरूपी दूत इसको शुद्ध जान करके इसके हृदयरूपी मंदिरमों आत्मारूपी परमेश्वरकों प्राप्त
करताहै तद आत्माहृदयमों आनंद करके निवासकरताहै जैसें निर्मल आकाशमों चंद्रमा शोभता ९४
हे रामजी इस तत्ववेत्ता विवेकी पुरुषनें विवेक केवलतें आत्माकों हृदयमों स्थित करणा और मो
ह निद्राको त्यागना और वासना समूहका मिल दूर करणा और संसारकी वासनाका घन पिंजरा
बोध मुद्गर करके तोड़ करके अपनें स्वरूपानंद के उदयमों सावधान रहणा अज्ञानी पुरुषकी न्या
ई जड नही होना ९५ हे रामजी यह जो दशादिशोंमों दृष्ट होतेहैं मनुष्य और नाग और देवता असु
र पर्वत गंधर्वादि नाम करके प्रसिद्धहैं सोकेते स्वप्न जागरण वालेहैं केते संकल्प जागरण मो
हैं केते केवल जागरणमो हैं केते चिरकालतें जागरणमों हैं केते घने जागरणमों हैं केते

जाग्रत स्वप्नमो हैं केते क्षीण जागरणमो हैं इस प्रकारसे सात प्रकारके जीवहैं ९४ हेरामजी
कोई किसी कल्पमों किसी सृष्टिमों भये कोई किसी जगतमों भये केते पिछले कल्पमों सोये हैं
अबलग जागे नही हैं ९५ जो इस जगतकों स्वप्न जानतेहैं तिन्हकों यह जगत स्वप्नहै तिन्ह
जीवोंकों तूं स्वप्नजागरमों जान जीवनकी कथा प्रसंगकी न्याईं जीवते हैं जीवनेका अभिमान
जिन्हकों नहीहै सो जीवनेकों स्वप्न जानतेहैं ९६ जो पुरुष कहीं कल्पमों सोइ गयेहैं और तिस सृ
ष्टिमों तिन्हकों जो स्वप्न भयाहै सो यह हमारी सृष्टिका व्यवहार है उन्हके स्वप्नके मनुष्य ह
महैं ९७ हेरामजी किसी पिछले कल्पमों किसी लोकमों किसी देशमों कोई प्राणी निद्रा रहितहैं
केवल मनके संकल्पमों तत्परहैं फेर तिस संकल्पके अंतमों और संकल्पकों करतेहैं तिन्हके सं
कल्पके पुरुष यह हम लोक स्थितभये हैं ९८ हेरामजी केते ज्ञानके अथवा योगके आदि सृ
ष्टिमों सृष्टि कर्ता ब्रह्माके साथ अवतार को प्राप्तभये हैं और ब्रह्माके दिन रूपी कल्पके आद अंत

में उत्पति विनाश रहितहैं और सृष्टिके प्रवाह करके जगतमें अरठकी चड़ी सिरीषे आई प्राप्त होतेहैं पहिली सृष्टिके जन्मवालेहैं सो केवल जाग्रत अवस्था वालेहैं ९९ हेरामजी जोजीव जन्म जन्मांतरकों प्राप्तभयेहैं अपने स्वभावके संस्कार करके पिछले जन्म जन्मांतरोंके ज्ञान करके सहि त भयेहैं किसी कार्यके कारण करके संसारमें प्राप्त भयेहैं आत्मज्ञानके प्रकाशकों प्राप्तहैं सो चिरका लके जाग्रतमें हैं २०० हेरामजी कोई प्राणी ज्ञानकों प्राप्तभये हैं परंतु कोई दुष्ट कर्मके वेगतें वृक्षा दिक जड़ भावकों प्राप्तभये हैं तदभी अंतःकरणमें ज्ञान करके घनी जाग्रत जैसी जिन्हकी अवस्थाहै सो घन जाग्रतमें हैं १ हेरामजी जो जीव शास्त्रार्थका विचार करके सत्संग करके बोधकों प्राप्त भयेहैं ऐसे तत्ववेत्ता हैं सो जाग्रतकों स्वप्नकी न्याई देखतेहैं सो जाग्रत स्वप्नमें हैं और ज्ञानकी छठीभूमि कामें हैं २ हेरामजी जोनसें बोधकों भली तरासे पाइ रहेहैं और परमपदमें विश्रामकों प्राप्तभयेहैं जाग्रत्स्वप्न सुषुप्तिसें रहितहैं सो तुरीया वस्थामेंहैं सो जीवनमुक्तहैं ३ हेरामजी इह सात प्रकारका

जीवोंका भेद मैने तुम्हारे प्रति कहाहै कैसाहै समुद्रोंके समान कहने जाननेमें अगाधहै इस कों जान करके अपने कल्याणमें सावधान रहो ४ हेरामजी जितना स्थावर जंगम जड़ चैतन्य जगतके पदार्थोंका समूहहै जैसे घोर जाग्रत अवस्थामें प्रतीत होताहै जैसे स्वप्नमें नगरादिक असत्य प्रतीत होतेहैं संपूर्ण केवल स्वप्नमात्रहै तैसे यह केवल चैतन्यही परम आकाश रूपहै ५ हेरामजी यह प्रसंगमें एक मेरेसे पाषाणाख्यान कथा प्रसंगको श्रवण करो वुह कैसाहै कथाके सवालाहै पहिले मैने देखाहै आश्चर्य रूपहै और प्रसंगके योग्यहै ६ हेरामजी मैं किसी कालमें अत्यंत विरक्त भया त्रिलोकी में अनेक प्रकारके विक्षेपों करके व्याकुल भया मनमें चिंतन करताहुआ दूर देशमें विक्षेप रहित स्थानमें आकाशके कोणमें सुंदर कुटिया बनाइ करके दृढ समाधिमें स्थितभया शतवर्षसे उपरांत समाधीसे जाग्रत भया ७ तिस कालमें प्राणायाम उतार करके जाग्रत अवस्थाके ज्ञानके अंशकोंमे प्राप्तभया तब अहंकार नामा प्रसिद्ध पिशाच इच्छा रूपी अंगना

करके सहित देह रूपी घरमें आइ प्राप्तभया ज्ञानके अंशके लयकों प्राप्त करता भया जैसें उग्र प
वन वृक्षकों उखाड देताहै ८ श्रीरामजीकाप्रश्न॥हेब्रह्मन् तुम सदा निर्वाणके उदय सहितहो ऐ
से तुमकोभी अहंकार नाम पिशाच बाधा करताहै यह मेरेको संदेह भयाहै तिसको शांत करो ९
श्रीवसिष्टजीकावचन॥हेरामजी अहंभाव बिना ज्ञानीकी क्या अज्ञानी की देह स्थिति आधार
बिना नही बनतीहै १० हेरामजी अज्ञानीने विश्रांत चित्त वाले ज्ञानीके इस विशेषको तूं श्रवणकर
जिसके श्रवण करके तेरा अहंभाव पिशाच शांत होवेगा ११ हेरामजी यह अहंकार पिशाच अस
त्यहै तोभी अज्ञानरूपी बालकने कल्पित कियाहै तिस करके स्थित रहाहै १२ हेरामजी अज्ञान भी
सत्य नहीहै विचार वाले पुरुषकों देखने मात्रसें क्षीण होताहै जैसे दीपवाले सें अंधेरा दूर होता
है १३ हेरामजी अज्ञानरूपी पिशाचनी जैसें जैसें विचार पूर्वक देखीदीहै तैसें तैसें लीन होतीहै १४
हेरामजी यह अज्ञान छठे मन सहित पांच इंद्रियोंके स्वरूप वालाहै और इंद्रियों करके प्रत्यक्ष

स्वरूप करके साकार प्रतीत होताहै तिस साकार का निराकार किस प्रकार करके कारण हो
ताहै कैसाहै निराकार छठे मन सहित पांच इंद्रियोंकी गोचर तांते परेहै १६ हेरामजी सं
कल्प रूपी आकाशमें जो कछु वृत्तादिक अथवा संपूर्ण आकाशादिक दृष्ट होताहै सो संकल्प
ही तिस रूप करके प्रतीत भयाहै तिस संकल्पके पदार्थमें पदार्थ सत्तानहीं है १७ हेरामजी
इसी प्रकार करके चेतन्य रूपी आकाशमें जौंनसी सृष्टिसे आद जगतका अनुभव होताहै सो शून्य
रूपी आकाशमें सृष्टिकी अखंडस्थिति संकल्पते ही भासतीहै वास्तव नहीहै १८ हेरामजी ऐसीभा
वना स्थितभये संते सृष्टि कहांहै और अविद्या कहांहै और अज्ञानकी मूढता कहांहै १९ हेरामजी
मैने आत्म विचार करके संपूर्ण प्रशांत और चित्तसत्ता करके परिहरण और आनंद घन ब्रह्मजाना
है तहां अहंकारादिक कहांहै इसप्रकार करके संपूर्ण निष्फल जानाहै जिसने अहंकार वर्त
मानहै तोभी शरदऋतुके घन घटाकी न्याईं निष्फल जानियाहै २० हेरामजी जबमें सर्वो वर्त

समाधी करताभया तिस कालमें प्राणायामके वेग करके एक शब्द होताभया तिस शब्दके वा
रणे हारेकों जानने वाले चिदाकाश की धारणामें स्थित होइ करके तिस चिदाकाशकी धारणामें
अनेक सृष्टी आपसमें भिन्न भिन्न लक्षण वालिओंको देषताभया तिन्हमें एक सुंदरीकों आ
धीछंद पढ़तीकों देखताभया १२१ हेमुने यह संसारकी प्रतीति असत्यही प्रतीतहे और चै
तन्यताते रहितही मोह वालेकों प्राप्त होतीहै मैं इसकों अवलंवन करकेजैसें कोई आकाश
में नृत्य करे तैसे भ्रमती भई तुम्हारेकों बुलावती हूं १२ हेरामजी ऐसे कहती तिस इस्त्रीकों अना
दर करके मैं फेर चिदाकाशकी धारणा करताभया तहां चिदाकाशकी सत्तामें मैं प्रलयादिककों
देखताभया १३ तिस चिदाकाशमें रुद्रोंके अनेक सहस्र और ब्रह्माकी अनेक शतकोटी और वि
ष्णुके अनेक लक्षोंकों और कल्पोंकी कोटि पद्मोंकों प्रलयकों प्राप्त भयेकों देखता भया १२४
तिसकों कहीं सूर्ये विनाही दिन रात्रि ज्ञानतें रहित भूलोकमें कल्पयुग वर्ष मर्यादा रहित॥

जगतके उदय अस्तको देखनाभया २५ तिसमों मेरे न्याईं वसिष्ठ नाम वाले ब्रह्माके पुत्र अनेका
मुनीश्वर मेरे सेभी उत्तम मैने देखेहैं २६ तहां अनेक ब्रह्मांडोंमों जगत के लक्षोंमों अनेक नाम रू-
पकों धारण करते अनेक प्राणी देखेहैं २७ तहां मैने चंद्रमाके बिंब गरमी सहित देखेहैं और सू-
र्य बिंब शीतल देखेहैं और विष खाने करके जीवते देखेहैं और अमृत पान करके मृत होते देखे
हैं और पत्र पुष्पों करके शोभित वृक्षोंके बन आकाशमों देखेहैं और रेतीओं के पीडनेमें तेल घृत नि-
कसते देखेहैं अरु पाषाण शिलामों कमल उदय होते देखेहैं २८ हेरामजी चिदाकाश केसाहै अं-
तरसें रहितहै आकाशका भी परमआकाश है अंतसें रहितहै उदयसें रहितहै जिसमों अनेक
चितोंकी संख्याते रहितहै और अनेक जगत सृष्टिओंते रहितहै २९ हेरामजी तहां एक एक आका
श प्रति अनेक संसारोंके मंडलहैं तिन्ह संसार मंडलोंमों अनेक लोकहैं अरु तिन्हमों अनेक द्वी
पहैं तिन्ह द्वीपोंमें अनेक पर्वतहैं अरु तिन्ह पर्वतोंमों अनेक देशहैं तिन्ह देशोंमों अनेक ग्राम॥

और नगर है २० हेरामजी तिन्हमों एक एक प्रति अनेक और अनेकोंमों और अनेक कल्प औ
र अनेक युगोंके सहस्र देखेहैं २१ हेरामजी जेते जीवतत्त्व ज्ञानसें रहितहैं और मोक्षकों प्राप्त न
ही भयेहैं सो सभही जोजो मृतभये हैं सो तिन्ह सृष्टिओंमों सभही अनेक प्रकारके वर्त्तमान हैं २२
हेरामजी इस कारणतें सो संपूर्ण संसार आपसमों भिन्न भिन्नहै और अपने अपने प्रवाह रूप
करके अखंड वर्त्तमानहैं २३ हेरामजी तिन्हके अंदर जो जीवहैं तिन्हमों एक एक प्रति एक एक
मनहै अरु एक एक मन प्रति एक एक जगतहै और एक एक जगत जगत प्रति अनेक अनेक
मनहै २४ हेरामजी इस प्रकार करके यह जगतका भ्रम आद अंतसें रहितहै सो ब्रह्मवेत्ताजनों
के पक्षमों संपूर्ण ब्रह्मही है इसकी संख्या की मर्य्यादा नही है २५ हेरामजी इस प्रकार करके मैं
चिदाकाशमों अनेक प्रकार करके संसारके भ्रमकों देखता रहाहूं सो विद्याधरी स्त्री मेरे पास
स्थित रहीहै तिसकों देख करके मैने कहा तूं कोनहैं इहां क्यों आईहैं अरु कहां तेरा अस्थानहै

नि॰ सो कहते २३५ हे रामजी तद सो विद्याधरी कहती भई हेमुने लोकालोक पर्वतकी उत्तरा
प्रा॰ सा॰ दिशाके किनारे पहिले शृंगकी शिलामें संसार है तिसमें एक ब्राह्मणहै तिसकी मनसें
५४९ कल्पन करीमें इस्त्री हूं सर्व सिद्धियुक्त हूं ओर सर्व सिद्धिमती मेरा नामहै तिस ब्राह्मण नें
मेरे विषे विरक्ति करीहै तिसकों विरक्तभये कों देख करके में भी विरक्त भई हूं तेरे पास
प्राप्तभई हूं ३६ हेमुने सो मेरा भर्त्ता वेदोंके अर्थकों एकांतमें चिंतन करताहै संपूर्ण विषय
भावनांते रहित भयाहै काल करके जगतके आवने जानेकों नही जानताहै ३७ हेमुने ति
सतें मेरा भर्त्ता तत्ववेत्ताभी है परंतु केवल वेदोंके अर्थ मात्रही विचारताहै आत्म चिंतनतें र
हितहै इसतें परमपदकों प्राप्त नही भयाहै तिसतें मेंभी मेरा भर्त्ताभी हम दोनोंही यत्न करके
परमपदकों चाहतेहैं ३८ हेमुने हेब्रह्मन् तिसतें में तुम्हारी प्रार्थना करतीहूं तिसकों तुम स
फल करणेकों योग्यहो महात्मा पुरुषों विषें प्रार्थना निष्फल नही होतीहै ३९ हेमानको देणे

हारे मैं अनेक सिद्धोंकी मंडलीओंमों भ्रमती भई तुम्हारे पास आई हूं तेरे बिना संसार दुःखा-
कों निवारण करणेहारा मेरेकों प्रतीत कोई नही भया २४· हेमुने संतजन अपने कार्यके निमित्त
विनाही अर्थीजनोंकी वांछाकों पूर्ण करतेहैं तिसतें मैंभी शरणागत भईहूं मेरा अनादर करणेकों
तुम योग्य नहीहो ४१ श्रीवसिष्ठजीकहतेहैं॥हेरामजी शिलामों संसार कैसे होवे इस आश्चर्य
करके व्याकुल भया मैं तिस विद्याधरीके साथही इस संसारकों लंघ करके लोकालोकाचल
के शिखरकी शिलाकों प्राप्त होइ करके विद्याधरी मेनें पूछी इहां संसार कहांहै ४२ विद्याधरी
कहतीहै॥हेमुने यह हमारेकों जगत पहिले बनाहै सो मेरेको प्रकट प्रतीत होताहै जैसें
दर्पणमों प्रतिबिंब होताहै तैसें अंतःकरणमों प्रतीत होताहै २४३ हेमुने यह अंतःकरण
मों संकल्पकी कथा रूपी चिरकालसें पीछा हुयाही उदय भईहै इस करके आत्म सुख नि-
र्मलभीहै और विशालभी है तोभी विस्मृतभयाहै ४४ हेमुने तिसतें यह संसार भ्रमजड़

रूपी अंतःकरणमें संकल्पके अभ्यासतें प्रतीत भयाहै और जौनसा शुद्ध चैतन्यमात्र आकाश
रूपीहै तिसकें चिंतनका जो अभ्यासहै तिसके आनंदका जो रस है तिस करकें पुरुष नरूपहो
ताहै तो संकल्प फुरणेकी अवधी हो जातीहै ४५ हेमुने जो शुद्ध चैतन्य सत्ता करके जो आनंदर
स नही होवे तो शास्त्रों करके संन्यास करके कछु नही होताहै आत्मचिंतन बिना जो आनंद रस
होताहै सो नही भये जैसाहै तिसने शुद्ध चित्कला चिंतनके अभ्यासकों करे ४६ हेमुने तूं सभ
का गुरुहै मै तेरी शिष्यहूं और अवलाहूं और बालाहूं मै तेरेको देखती हूं अरु तूं मेरेकों नही
देखताहै तूं सर्वज्ञहै तोभी तूं मेरेको नही देखता है यह अंतःकरण शिला जैसा जड़है इसमें
संकल्पके अभ्यासतें प्रपंच विस्तारकों प्राप्तभयाहै ४७ हेमुने अभ्यासतें अज्ञानी भी तत्ववेत्ताहो
ताहै और जड़भी कार्यकों करताहै जैसें बानभी अभ्यासतें निशानेकों जाइ लगताहै यह संपू
र्ण अभ्यासका विलासहै ४८ हेमुने गुणभी अभ्यास बिना निष्फल होतेहैं और संपूर्णकला

भी अभ्यास बिना निष्फल होतीहैं भाग्यभी निष्फल होतेहैं तिसते अभ्यास कदाचित् निषफलन हीहैं ४९ हेमुने जिसने अभ्यास त्याग दियाहै सो इष्ट वस्तुको कदाचितभी नही प्राप्त होताहै जैसें बंध्या इस्त्री अपने पुत्रको नही प्राप्त होतीहै ५० हेमुने अभ्यासतें असाध्यभी सिद्ध होतेहैं शत्रू भी मित्र होतेहैं विष अमृत होतेहैं यह अभ्यास नामा सूर्य लोकमों प्रकाशभये संते बनमों समुद्रमो क्या दूर देशांतरमों स्वर्गादिकमों नहीहैं जो अभ्यास करणेहारे महावीर पुरुषको सिद्ध नही होवे ऐसा कोई नहीहै अभ्यासतें लोकमों भयभी अभय रूप होताहै अभ्यासतेंही संपूर्ण पर्वतोंकी निर्जन कंदरामों निर्भय निवास होताहै ५१ हेमुने तिसतें प्राचीन संस्कारतें बोधकी धारणाका अभ्यास करोतें जगत तेरेको शिलामों कमलकी न्याई असंभव वाला प्रतीत होवेगा ५२ हेमुने प्राचीन वासनाका अभ्यासतें यह जगत शिलामों कमल जेसा प्रतीत होताहै और बोधके अभ्यास बिना असत्य प्रतीत नही होताहै तिसतें बोधका अभ्यास अवश्य करणे योग्यहै ५३ श्रीवसिष्ट

जीकहतेहैं॥हेरामजी तिस विद्याधरीने ऐसी युक्ति युक्त वचन कहे संते तिसतें उपरांत मैं पद्मा
सन बांध करके समाधीके अभ्यासमों उद्यत होताभया ५४ हेरामजी केवल चैतन्य मात्रकी एकांत
भावना करके संपूर्ण पदार्थोंकी भावनाको त्यागनेतें जितनाजो नाम मात्र अहंभावथा तिस अहंभा
वके अभ्यासकों मैं त्यागन करताभया ५४ हेरामजी तिसतें सत्यरूप एक आत्माकी एकांत दृढ
भावनाके अभ्यासतें समाधी स्थिर होतीभई अहंभावकी भ्रांति अस्त होती भई ५५ इसतें उ
परांतजब मैने अपने आत्माका निर्मल प्रकाश देखा तब मेरेकों आकाश और अहंभाव शिला
मों कमलकी भ्रांति जैसा लयको प्राप्त होताभया केवल परम ब्रह्म स्वरूप प्रतीत होताभया ५६
जैसें स्वप्नेमों अपने घरमों महाशिला दृष्ट होतीहै सो केवल अपने अंतःकरणका चैतन्य ही
तद्रूप भयाहै शिला तहां कोई नहीहै तैसें यह संपूर्ण विश्व शुद्ध चैतन्यही है सो तद्रूप प्रतीत
भयाहै ५७ हेरामजी अपने संकल्पका फुरणाही भ्रांति बाहिक शरीर करके प्रत्यक्ष पहिले

कहाहै सोई माया करके सत्यरूप सर्वत्र व्याप्त होताहै तिसकों ही तूं आधि भौतिक शरीररू
प भये कों जान ५८ हे रामजी यह आधि भौतिक देह आत्मविचार करके कुछ नही प्रतीत हो
ताहै जैसें मारवाडके थलमों सूर्यकी किरणों करके समुद्र जो प्रतीत होताहै सो अपने चित्त
की भ्रांतिही तद्रूप प्रतीत होतीहै वास्तव विचारतें मिथ्या प्रतीत भईहै ५९ हे रामजी सभका आ
द ओर सत्य ओर प्रत्यक्ष प्रतीत ऐसे आत्म विचारके सुखकों त्याग करके जो कोई असत्य रूप
ओर भ्रम करके मध्यमों ही प्रतीत भये कल्पनामात्र सुखमों इच्छना मान करके मग्न भयाहै सो
प्रत्यक्ष प्राप्तभये शीतल जलकों त्याग करके रेतीकी चमकमों भ्रांति करके प्रतीत भये जल
करके तृप्तिकों चाहताहै ६० हे रामजी जौंनसा सुख क्षणमों नष्ट होवे ओर क्षण मात्रही अ
नुभव होवेहे सो दुःख रूपही हे जौंनसा सुख स्वभाव करकेहै ओर आद अंतमों एक जेसा हे
सोही सुख कहाहै ६१ हे रामजी जिसमों प्रत्यक्षही असत्यता प्रतीत होवे तिसमों सत्यता ओर

अखंड आनंदता कहांते होवेगी जो वस्तु असत्य सामग्री करके सिद्ध होवे सो सत्य कहांते हो वे ६२ हेरामजी यहां सत्यताही अभाव प्रतीत होवेहै तहां अखंड सुखकी क्या वार्ताहै जहां हा थी वहिजाते हैं तहां मेढेके वहिनेकी क्या गिनतीहै ६३ हेरामजी यह परमात्मा सर्वत्र ए क जैसा निरंतर व्याप्तभयाहै और बोधरूपहै और चैतन्य रूपहै तिसकों जानने विना जो कोई अ सत्यरूप और तुच्छ सुखवाले पदार्थमों इच्छमान रहेहैं सो मूढ पुरुषहैं और तृण समानरूपहैं और कपटी हैं तिन्हकी संगती नही करणी ६४ हेरामजी ऐसा विचार करणेतें उपरांत चैतन्यमों प्रति बिंबितभये जगतमों विद्याधरीके साथही मैं प्रवेश करताभया तब विद्याधरी ब्रह्मलोकमों प्राप्त होइ करके मेरेकों कहती भई ६५ विद्याधरीकावचन॥ हेमुने यह ब्रह्मा मेरेको विवाह करणे वास्ते प्रकट करताभया मैं वृद्धभी होइ गई तदभी नही व्याही इसकारणतें मैं विरक्तभई हूं तिसतें तूं मेरे व्याहके कारण ब्रह्माकों बोधनकर ६६ श्रीवसिष्ठजीकावचन॥ हेरामजी सो विद्या

धरी ऐसा कहि करके ब्रह्माको कहतीभई हेस्वामिन् वसिष्ठ मुनि तुम्हारे घर आयाहै इसका आद
र सत्कार करो ऐसा कहि करके ब्रह्माकों समाधीते उठाइ करके सावधान करती भई ६७ तब श्रीब्र
ह्माजीकावचन॥हेवसिष्ठजी तैंने इसविश्वकों हाथमें आमलके फल जैसा सार रहित देखाहै और तु
म बोधरूपी अमृतके समुद्र हो तुम्हारे को इहां आउने करके सुखहोवे तुमकों कुशलहै ६८
हेवसिष्ठजी तुम बहुत दूर मार्गसे चल करके आयेहो अरु तुम मार्गके खेदकों विश्राम करके दू
रकरो और इहां आसनमें बैठो ७० श्रीवसिष्ठजीकहतेहैं॥हेरामजी तिसते अनंतर मैं आसन ऊपर बै
ठा ब्रह्माजीनें देवगणों करके मेरी पाद्यादिक पूजा कराई तबमें ब्रह्माजीको प्रश्न किया हेभगवन् तुम
भूत भविष्यत् वर्तमान काल ज्ञानके स्वामीहो यह विद्याधरी तुम्हारेको बोध करणे वास्ते मेरेकों क्यों
प्रेरणा करतीहै अरु कहती है हे वसिष्ठजी तुम अपनी वाणी करके अरु ज्ञान करके ब्रह्माजीको बोध
नकरो ७० हेमहाराज तुम सभ भूतोंके ईश्वरहो संपूर्ण ज्ञानके पारको देषणे हारेहो तुमने यह विद्या

धरी विवाह वास्ते प्रकट करी ऐसा यह कहतीहै तो तुमने ब्याही कैसे नहीहै यह विरुाम
ई कैसें भ्रमती है इसका कारण कहो ७३ श्रीब्रह्माजीकहतेहैं॥ हेमुने जैसा वृत्तांत भयाहै तिस
कों तूं सुन मै सभही कहता हूं जिसतें संतजनोंके आगे सभही सत्य कहने योग्य होता है ७४
हेमुने आद सभका एक परब्रह्महै सो जन्मसे रहितहै और शांतहै जीर्ण होनेतें रहित है चिदि
तूमात्रहै कहनेमों चिंतन करणेमों श्रवण करणे मों देषणेमों नही आवेहै और सत्तामात्र रूपहै
और चैतन्यमात्रहै तिस चिन्मात्रस्वरूप का एक चैतन्यताका अंश मात्र रूपमें जगतमों कथ
न मात्रही हूं ७५ सो मैं भी पहिले आकाशरूपी हूं अपनी स्वरूप सत्तामों सदा रहताहूं मेरे आगें
सृष्टि होतीहै तो मेरेकों स्वयंभू कहतेहैं ७६ वास्तव विचारतें मैं उत्पत्त नही भया ना कुछ देष
ताहूं चिदाकाश रूपी मैं चिदाकाशमों ही रहता हूं ७७ जो कुछ हमहै तुमहो ऐसा जो आपस
मों कहना है सो जैसें तरंगके आगे और तरंग कहा जाताहै तैसे वृथा कहना मात्रहै वास्तव

महीहै ऐसी मेरी मतिका विचारणाहै ७८ हेमुने ऐसे रूप वाले शुद्ध चैतन्यरूपकों कालके वेग तें मैंहूं यह मेरीहै ऐसी वासना उदय भईहै परंतु आत्मस्वरूप विचारणेतें नही उदय भई जैसी है ७९ हेमुने सो अहंभावकी वासनाहै तिसकी भ्रांति जगतकी स्थिति करके सिद्ध भईहै तिसका स्वरूप यह विद्याधरी है ८० यह विद्याधरी अपनी वासनाके वेगते मे ब्रह्माकी घर वालीहूं ऐसे भावकों प्राप्त भईहै यह आपही अपने भाव करके वृथा दुःखकों प्राप्तभई है जिस कारणतें यही मेरे अंतःकरणकी वासनाहै ८१ हेमुने अब मैं चिदाकाशरूप भयाहूं तिसतें अब चिदाकाशरूप की स्थितिकों ग्रहण करणे चाहताहूं तिसते अब विश्वके क्षयका काल प्राप्तभयाहै ८२ हेमुनींद्र अब महाप्रलयका समय प्राप्तभयाहै अब मैनें वासना रूपी इस विद्याधरीकों त्यागने का प्रारंभ कियाहै तिसतें यह मेरे विश्वासते रसकरके वर्जितभईहै अब इसको मैं नही चाहताहूं ८३ हेमुने अबही कल्पका अंत प्राप्तभयाहै और महा कल्प ब्रह्माका प्रलयकाल सोभी प्राप्तभयाहै अब मेरी वासनाका अंत प्राप्तभयाहै और मेरा देह

आकाशमें लय होवेगा ८३ हे वसिष्ठ तिसतें अब तूंभी अपने आसनमें अपने ब्रह्मांडकों च
लाजा और शांतिकों प्राप्तहो और जेते अहंकार उहितें आदि मन सहित इंद्रियांहैं सो सभही अ
पने अपने अस्थानको जावें हम अब ब्रह्म पदकों जातेहैं ८४ हे रामजी सो ब्रह्मा भगवान् ऐ
सा कहिके ब्रह्मलोक वासी जनों करके सहित पद्मासनकों बांध करके समाधिमें स्थित होता
भया २८५ हेरामजी ओंकारकी तीन मात्रा हैं उदात्त अनुदात्त स्वरित नाम वालीहैं चोथी अर्द्ध मा
त्राहै जाग्रत स्वप्न सुषुप्ती वालीहै और अर्द्धमात्रा तुरिया अवस्थाहै सृष्टिस्थिति लय रूपहैं आ
नंदरूपहैं ब्रह्मा विष्णु रुद्र जिन्हके देवताहैं चोथीका देवता ईश्वरहै ८६ सो ब्रह्मा तीन मात्रा
से परे चोथी अर्द्धमात्राके अंतमें ध्यानावस्था करके स्थित होताभया संपूर्ण मनकी वासना म
न सहित लीन होतिभईयां जैसें चित्र लिखा होताहै तेसें निश्चल होताभया और अहंभावा
की वेदना शांत होतीभई ८७ हेरामजी सो वासनारूपी विद्याधरी तिसके ध्यानमें शांत होती

भई संहर्ता अंशो करके सहित आकाशकी न्याई शून्य होइ करके शांत होतीभई ८८ हेरामजी ज ब संकल्प करके ब्रह्मा रहित होताभया तब मैंभी सर्व व्यापी अनंत चैतन्याकाश रूप होता भया रूप होइ करके पृथिवीकों देखताभया २८९ तब पृथिवीमों मनुष्यलोक अपने वर्णाश्रम धर्म सें रहितभये केवल अन्नकी उपजीवका वास्ते खेती व्यापारसेवाकों करने लगे और देश नगर ग्राम सभही संपदासें रहित भये शृगाल और चौर भय करके उजाड़ होय गये २८॰ और इस्त्रीयां अपने कुलकी मर्य्यादाकों और पतिव्रताधर्मकों त्याग करके केशोंका शृंगार करके वेश्याके धर्म मों वर्त्तमान होतीभई और राजे लोक प्रजापालन रूपी राजधर्मकों त्याग करके केवल द्रव्यके संग्रह मों प्रवृत्त होतेभये २८१ हेरामजी सभका आचार शूलकी न्याई दुःखकों बधाउने हारा होताभया और प्रजाके राजोंकी विगाड करके पीडितभई जैसी दुःखरूपी शूल करके व्याकुल होतीभई और इस्त्री यां शूलकी न्याई महा कठिन अधर्म मर्यादामों वर्त्तमान होती भई और राजेशूलकी न्याई महाउग्र

दंड करण और अभिमान करके संतजनोंके अनादरमें प्रवृत्त होतेभये ८२ हेरामजी इस प्रकारः के औरभी जगतके नाश होनेके निमित्त महा उत्पात होतेभये मैंने देखेहैं ८३ हेरामजी तिस ते उपरांत संहार भैरव संपूर्ण ब्रह्मांडको निगल करके महा विशाल आकाशमें कालरात्रि के साथ नृत्य करताभया और डिम डिम करके डमरू बजावता भया ८४ हेरामजी तिसते उपरां त कालरात्री महा भैरवमें लीन होतीभई सो महा भैरव परमात्मामें लीन होताभया ८५ हेराम जी तिसतें उपरांत मैंने सूक्ष्म दृष्टि करके तिस अहंकार रूपी शिलामें अनेक वृक्षोंमें एक एक प्रति अनेक पत्र देखे तिन्ह वासनारूपी पत्रोंमें अनेक संकल्परूपी तृण देखे तिन्ह तृणोंमें अने क जगत देखेहैं ८६ हेरामजी जो कुछ निर्मल शुद्ध सात्विक बुद्धि करके दृष्टि होताहै तिसको तीन नेत्रों करके शिवदेखनेकोभी समर्थ नहीं होताहै और इंद्रसहस्र नेत्रों करके देखनेको समर्थनहींहै ८७ हेरामजी इसते उपरांत तिस संसारका प्रलय देख करके अपने चित्तके फुरणों के यत्नतें मैं पिछले संसारमें हट करके चला आया तहां आइ

करके तिस संसारमें आकाश कोणकी कुटियाकों प्राप्त भया ९८ हे रामजी तहां अपने देहकों ध्या
नावस्था करके जड भयेको जब देखने लगा तबही तहां एक शुद्धस्वरूप एकांत बैठे और सिद्ध
कों समाधिमें स्थितभयेकों देखताभया सो सिद्ध मेरे हट करके आवनेकों चिंतन करताभया और
मृत भये अपने शरीरको त्याग करके स्थिति करताहै ९९ तिसने उपरांत जब में तहां रहनेके संक
ल्पकों त्याग करके अपने स्थान प्राप्त होने को प्रसन्नभया तब मेरी कल्पन करी कुटिया नष्ट भ
ई सो सिद्धभी आश्रय विना सात समुद्रसे परे दिव्य पृथिवी में पतितभया तब मैने तिसकी स
माधी उतारणे वास्ते अहिन की वर्षा कारणे हारे बदलकी न्याई गर्जना करी तब तिसकी समाधी
उतरी फिर मैने तिसकों प्रश्न किया १०० हे सिद्ध तूं कौंन है और कहांसे आयाहै ऐसा वचन सु
नके तिस सिद्धने ध्यान करके संपूर्ण हृत्तांत जान करके मेरे प्रति वचन कहा १०१ सिद्धजीकाव
चन॥ हे मुने मैने अब तुमको पहिचाना है मे तुमको वंदना करताहूं तुम्हारे को पहिले नही

जानने का अपराध मेरेसें भयाहै तिस अपराधकों आप क्षमा करो संतोकी क्षमाही स्वभावहै ३०
हेमुने मै देवताजन के नगरके बाग बगीचेमों बहुत भ्रमाहूं तिन्हूमों भोगवासना मोहित क
रतीहै जैसे भ्रमर कमल बनमों भ्रमण करताहै तैसें मैभी भोगवासना करके तिन्हूमों बहुत
काल भ्रमण करताभया परंतु शांति नहीभई ४ हेमुने संसार समुद्रमों दृश्य पदार्थोंकी वासनारू
पी तरंगों करके मैं बहुत व्याकुलभया कालके वेग करके दुःखीभया जैसे चात्रक वर्षाके विना
व्याकुल होइ करके दुःखी होताहै ५ इह संसारमों शब्दमात्रा रूपमात्रा रसमात्रा स्पर्शमात्रा गंधमा
त्रातें परे और कछु पदार्थ नहीहै एतन्मात्रमों मैं क्यों प्रीति युक्त विलास करूं ६ इह सभही चित्त
लामात्र आकाशमों है अथवा चित्कला रूपहैं चिन्मात्रा बिना संपूर्ण असत्य रूपहै इसमों मैं
नष्ट बुद्धि पुरुषकी न्याई किस अर्थके वास्ते प्रीतिको करताहूं ७ इसमों जोनसे विषय हैं सोवि
षके बरोबर विपरीत रस वालेहैं और स्त्रियां कामके मोहको देने हारीहैं इसके संपूर्णो

रस अंत कालमें उलटे दुःख रूपी रसको देतेहैं इनमें आसक्त भया कौन पुरुष नही मराहै ३८ हेब्रह्मन् यह देह कैसाहै समुद्रमें बुद बुदेकी न्याईं क्षणबी नष्ट होने वालाहै इसके आगे पीछे मृत्यु रहताहै जैसे दीपकी शिखाके साथ पवन रहताहै ९ इसमें बडे चतुर विषय वासनारूपी महा शत्रु चोर रहतेहैं सो सभही इसकी आयुषा रूपी सर्वस्वकों हरतेहैं इसवास्ते मै सदा जागरण कों करताहूं मोह रूपी निद्रा करके सोइ नही रहताहूं १० हेमुने दिन दिन करके इसकी आयुषा के भागकाल करके चलेजातेहैं तिन्हकों वारं वार चलेजातेको कोई पुरुष नही जानताहै ११ यह मेरेको आज प्राप्तभयाहै यह फेर मेरेको आज मिलेगा ऐसी कल्पनामें लगाभया लोक गत भये कों प्राप्तभये कालके वेगकों नही जानताहै १२ भोगोंके समूह भोगेहै सो चले जातेहैं तिन्हकी अनित्य ताको नही जानताहै इसमें शांति प्राप्त कहींबी नही होतीहै १३ हेब्रह्मन् मैं विदितपुरुष की न्याईं सुमेरु पर्वतके बगीचेकी पृथिवी पर्यंत भ्रमाहूं और इंद्रादिक दशलोक पालोंकी पुरियोंमें

अच्छी तरांसे फिरा हूं मेरेकों अखंड सुख कही नही मिलाहे १४ हेमुने जहां देखे तहां सर्वत्र काष्टके वृक्षहैं और प्राणी सर्वत्र मांस रक्तके देखेहैं पृथिवी सर्वत्र मृत्तिकाकी देखीहै और सर्वत्र दुःख और अनित्यता देखीहै यह कहो किसमों स्थिरताका विश्वास बनेहै १५ हेमुने कालः करके व्याकुल भये लोकेकों धन और मित्र और सुख और बांधव रक्षा करणेकों समर्थ नही हैं १६ हेमुने मेरेकों सुंदर स्त्रियांभी प्रिय नहीहैं और उत्तम संपदाभी प्रीति नही करतीहै और स्त्रीके चतुर कटाक्षकी न्याई चंचल जीवनाभी रुचिकों नही करताहै १७ हेमुने यह शरीर पुराने पत्तोंके बरोबर गिरने हाराहे और तिसका जीवना सूके हुवे पत्तोंके बरोबर गिरने हाराहै और बुद्धि अधीरता करके ग्रहण करीहै और विषय रस सभही रस करके रहित हैं १८ हेमुने तिसतें आज मेरा मोह मंद भयाहै और देह पुराणे मंदिर जैसा उदासीनताकों प्राप्तभयाहै अब इसकी अवस्था जौंनसी करणी सोही उत्तम अवस्थाहै और इस देहादिकों

की अवस्था करणीही नीचली अवस्थाहै १९ हेमुने इस संसारमों ऐसा मानना आपदा यह आ
इ भईहै उह आपदा कैसीहै महा मोहकों वधाउने हारीहै और नित्य प्रति ऐसाही मानने योग्य
है और संसारमों आसक्त नही होना २० हेमुने यह विषय रूपी विषके पवनहैं उह कैसेहैं चित्त
रूपी कमल पुष्पतें विवेकरूपी सुगंधीकों हर करके मूर्छाकों कर देतेहै २१ हेमुने चित्तरूपी बान
हृदयतें छुट करके विषयरूपी निशानेकों धाइ करके प्राप्त होतेहै और उत्तम गुणोंकों स्पर्श न
ही करतेहै जैसें कृतघ्न पुरुष उत्तम गुणोंको स्पर्श नही करतेहैं अरु दोषोंकोंभी ग्रहण करते
हैं २२ हेमुने आयुषा उत्पात पवनकी न्याई चली जातीहै जो मित्रहैं सो शत्रुरूप हैं और भाई बं
धुलोक बंधनरूप हैं और धनही मृत्युका रूपहै २३ हेमुने सुख संसारके दुःखरूपहै संसारकी
संपदा परम आपदाहै और संसारके भोग महा रोगोंके रूपहै और प्रीति जोहै सो अप्रीति कर
णे हारीहै २४ हेमुने कालके अनेक प्रकारके उलट पलट होतेहै और इष्ट जोहे सो अनिष्ट॰

होइ करके प्राप्त होतेहैं और प्रेम वाले जनोंके वियोगोंको देख करके मेरा मन जर्जर जैसा होताहै २२५ हेमुने यह जो भोगहैं सो विषयोंके भोगनेतेंहैं जैसे सर्पोंकी फणी होतीहैं किंचि न्मात्रस्पर्श करणेतेंभी डंश करके मारतेहैं अरु मलीनता विचार युक्त देखनेंते नष्ट होतेहैं २२६ हेमुने भोगोंकी आशा करके जो पुरुष बांधे गयेहैं तिन्हका पद पदमों अनुमान होताहै जैसें बनके काम करके मत्त हाथी हथनी कों देखनेही बांधे जातेहैं तिन्हको काम भोगकी तृस्ना करके बंधन होताहै २२७ हेमुने संपदा और इस्त्रियां तरंगोंके संग बरोबर त्तण भंगुरहैं ऐसाको न चतुर पंडितपुरुषहै जो सर्पकी फणाकी छायामों प्रीति करताहै २२८ हेमुने यह विषय कैसेहै देखनेमों अच्छेहैं परंतु देह विनाश समयमों दुःख देतेहैं जैसें अपक्व अन्न भोजन करके रोगी पीडाकों लोक प्राप्त होतेहैं जैसें भोगोंते नरकको प्राप्त होतेहैं २२९ हेमुने धन कैसेहै सुखदुःखके मूलहैं और नाशकों प्राप्त होने हारेहैं ज्ञान रहित मूढ पुरुषों करके सेव्यमानहैं यह

मेरेकों प्रीति नही करतेहैं ३३० हेमुने श्रोर यौवनकी संपदा कैसीहै शरदऋतुके बादलकी स॰
मान सतावीजाने हारीहै श्रंतमों दुःख देने हारीहैं चिरकाल संताप करणे हारीहै ३१ हेमुने य
ह मनुष्यके जीवनेकी श्रायुषा हाथ लिये जलकी न्याई क्षणमों श्रंश श्रंश मात्र चलने करके गल
तीजातीहै फेर नदीमों वहे जल सिरीखी फिर फिरती नहीहै ३२ हेमुने मन शांत भये संते श्रात्मस्वरू
पमों विश्रांत होनेतें जो सुख होताहै सो पाताल स्वर्ग पृथिवी लोकके भोगोंमों नही होताहै ३३
हेमुने बहुत दीर्घ काल करके श्रहंकार रहित होनेतें श्रपनी शुद्ध भई बुद्धि करके स्वर्ग श्रोर
मोक्षकी तृस्नाका त्याग मेंने धारण कियाहै ३४ हेमुने यह वृत्तांत मेने तुमकों वर्णन करके
सुनायाहै जो मेहूं श्रोर जेसी मेरीस्थितिहै सो मेने कहाहै श्रब जेसा तुम जानतेहो तेसा करो ३५
हेमुने सिद्ध पुरुष श्रात्म विचारमों तत्पर होइ करके श्रोर उत्तम बुद्धि करके निर्णय करके वा
स्तव वस्तुका विचार जब लग प्रमाण नही करा तब लग त्रिकाल ज्ञानीभी हैं तद भी॰

दृढ निश्चयको नही करतेहैं यह ब्रह्मादि देवता जनों के मन का स्वभावहै ३७ हेरामजी तब मैंने। कहाहै सिद्ध मुने निश्चय दृढ हृदय मों नही होना यह अविचारका अपराधहै केवल तुमकोही न। हीहै यह अविचारका अपराध स्वभाव मेरेमों भी तुल्यहै जिस कारणतें यह ऊदिश्चा मेरीहै तो। रे चिरकाल रहणे वास्ते नही स्थिर करीहै ऐसा अविचार मेरेमोंभी है ३८ हेरामजी इसते उपरां त मैंभी ओर सो सिद्धभी अपने अपने चाहे देशको चलेजाते भये ३९ हेरामजी यह महारामा यण मात्र शास्त्रके केवल देखने अंतःकरणमों सभ पदार्थोंमों शीतलता उदय होतीहै जैसें बर्फमों शीतलता होवे है ४० हेरामजी चित्तकी शीतलता मोक्ष है चित्तकी संतप्तता बंधन है जिन्हकों इतनाभी अर्थका ज्ञान नहीहै यह लोकोंकी मूढता महा आश्चर्य रूपहै ४१ हेरा मजी यह लोक अपनी प्रकृती करके विषयोंके वशहैं परस्त्री परधनमों लोभ सहितहै इस कों संसारके पदार्थोंका उपदेश नही करणा यह यथा योग्य अर्थ विचारते सुखी होता है।

और मुक्त होने चाहे तो सन संग शास्त्र विचारतें सदा सुखी होवे ३४२ इति पाषाणोपा ख्यानं॥ वसिष्ठजीकहतेहैं॥ हे रामजी जो पुरुष इस प्रकार दृढ निश्चय करताहै क्यामें चिदाकाश मात्रहूं ऐसी भावनास्थिर होत संते भावें वज्रपात होवे भावें प्रलयकी अग्निलगे तिस्का दाह पुष्प वृष्टिके कमल वनकीन्याईं शीतल होताहै ४३ हे रामजी मैं चिन्मात्र नही अरु मैं अमर नही मैं नष्ट होताहूं ऐसा जो रोवेहै तिसकों पहिला किया उपदेश सभ भस्मके विखेर ने तुल्यहै ४४ हे रामजी मैं चिन्मात्रहूं और अमरहूं मैं नष्ट नही होताहूं ऐसें भाव वाले पुरुषकों उपदेश किया अमृतकी वर्षाके तुल्य होताहै ४५ हे रामजी सो वस्तु नहीहै जो सत्य नहीहै सो वस्तु नहीहै जो संसारमें वृथा नहीहै जिसा जिसकों निर्णय भयाहै तिसकों तैसाही दृढ भाव होताहै ४६ हे रामजी नष्ट बुद्धि पुरुष जो हैं सो भोग रूपी अग्निमें भले प्रकार दग्ध होतेहैं जैसें देव योगतें पर्वतमें अग्नि लगनेतें पर्वतके वृक्ष दग्ध होतेहैं ४७ हे रामजी भोगी पुरुष

जोहैं सो खान पानादिक भोगपदार्थोंके कीचड़में पड़ेहैं जैसें विदित पुरुष दुर्गंधि मलमूत्र वाले कुंडमें पड़जातेहैं ४८ हे रामजी यह पुरुष केवल अन्नके किणके खानर दिन रात्र पड़ेभ्र मतेहैं सो पुरुष पिपीलिका समान तुच्छ वृत्ति वालेहैं ४९ हे रामजी सभही दिशामें अनेक प्रकार के प्राणीहैं परंतु तत्वबोध करके युक्त कोई विरले प्राणीहैं जैसें वृक्ष सभही फल पुष्पों करके अनेक पृथिवीमें देखेहैं और कल्पवृक्ष कहीं विरलेहैं ३५० हे रामजी पराया चित्तरूपी महासमु द्रहै सो अनेक तर्क वितर्क रूपी तरंगों करके चंचलहै तिसके बड़िवाग्निकों किनारेमें स्थितप वेतकी न्याई संतजन समर्थ होतेहैं ३५१ हे रामजी बुद्धिको नाश करणे हारी महा आपदामें और चित्तके अनेक तर्क कुतर्कोंकी व्याकुलतामें और महा दुस्तर संकटोंमें संतजनोंको तार णेकी गति संतजन हीहैं ५२ हे रामजी ऐसा मनमें हठ नहीं करणा कैसाहै मेरेको विचारक रके क्या अर्थहै जो होना है सो मेरेकों होवे ऐसी कल्पना धार करके गढेमें कीड़ेकी न्याई उत्पन्न

पुरुषार्थसें रहित नही होना ५३ हे रामजी गुणोंके और दोषोंके समझनेके अर्थ बालपनेसें लेके
२ यत्न करके जैसें बने तैसेही शास्त्रके प्रसंग करके बुद्धिकों बधावे ५४ हे रामजी दोष क्लेशा
कों त्याग करके सज्जनोंकी संगतिकों करे जिन्ह करके निरवाण पदकी प्राप्ति नही होवे ऐसे दोषों
को अरु गुणोंकोभी यत्न करके क्रमसें त्यागदेवे ५५ हे रामजी नीच संगति करके उत्तम वस्तु प
दार्थ अधम रूपकों प्राप्तहोताहे और स्थिर पदार्थ चंचलताकों प्राप्त होताहे जैसा प्रसंग मिले ते
साही स्वभाव होताहे और साधुजन असाधुजनके स्वभावकों प्राप्त होताहे ५६ हे रामजी यहम
हा आश्चर्यहे जो साधुजन दुष्टजन जैसा होवे देशकालके वशतें पाप पुरुषोंके संगतें पुण्या
त्माभी पापपुरुष होताहे जैसें देशकालके प्रभावतें लोकोंमें आश्चर्यरूपी उत्पातभी होते हें ५७
हे रामजी सबही काम त्याग करके सज्जनोंकी संगतिकरे यही दुःखदाई कर्मोंको दूर करणे
का उपायहे इस सत्संग करके इह लोक अरु परलोककों सिद्ध करणेका साधन करणे योग्य

है ५८ हेरामजी सज्जन पुरुषसें कदाचित दूर नही रहै बहुत प्रेम बेनती करके सज्जन पुरुष
की सेवा करे सज्जनपुरुष और उत्तम वृक्ष एक स्वभाव वाले होतेहैं जैसें उत्तम वृक्षके पुष्पों
की रेणू जिसको लगे तिसको सुगंधि युक्त करतीहै तैसें सज्जन पुरुषकी संगति करके नीच
पुरुषकों भी सज्जनता होतीहै ३५९ हेरामजी सत्संग वाला पुरुष समाधी करणे बिनाभी
समाधानकों प्राप्त होताहै महा दुःखी होवे तोभी महा सुखकों प्राप्त होताहै और व्यवहार
करे तोभी मोन धारणेके फलकों प्राप्तहोताहै कर्म करे तोभी कर्म बंधनतें रहित होता
है ३६॰ हेरामजी जो पुरुष ज्ञेय वस्तु परमात्माकों जानतेहैं सो निर्मल चित्त होतेहैं सो
ही संतजनोंके भावकों जानतेहैं जैसें सर्पके चरणोंको सर्पही जानतेहैं ६१ हेरामजी जो उ
त्तम पुरुषहैं सो अपने अंतः करणके भावकों गुप्त करतेहैं तिन्हकों उत्तमतेंभी उत्तम जा
नना जिसकारणतें चिंतामणि पाषाणकी कीमत बजारके लोकोंसें नही होतीहै तैसे ही

उत्तमजनोंके भावकों जानने हारे कोई विरले उत्तम जनहैं ५५२ हे रामजी एकांतमों रहना और अभिमान रहित होना और पदार्थ संग्रहतें रहित होना और लोकोंकी स्तुति वेनती तें रहित होना यह उत्तमजनोंके गुण उत्तमजनोंकों जेसा आनंद करेहैं तेसें जगतकी आप संपदा आनंद नही करतीहे ५३ हे रामजी अहंकार वाले पुरुषोंको यह इछा रहेहे कयालोक मेरे उत्तम गुणोंकों जाने और लोक मेरी पूजाकों करे ऐसी वासना निरंतर रहतीहे जौनसे अहंकार रहितहैं तिन्हकों यह वासना नही होतीहे इसतें आपने भावकों छिपाई रखतेहैं ५४ हे रामजी जिसकों संपूर्ण जगत तृण समान होताहे किंचित गर्दके किणके समानभी प्रीति नही करतीहे तिसकों और जगतके पदार्थ ग्रहण करणेकी इछासों कहां होवेगी ५५ हे रामजी तत्ववेत्ता पुरुष अपने देहमों प्राप्तभये शीत वातादिक दुःखोकों पराये देहकी न्याईं अनादरसें देखताहे ५६ हे रामजी जो पुरुष तत्ववेत्ताहे सो निर्मल सात्विक बुद्धि रूपी ऊंचे शिखर पर चडाहे आ

पसो कैसें रहिताहै और शोच करणे योग्य अज्ञानी पुरुषोंको संसार समुद्रमों मग्नभयेकों देख करके दया करके शोच करताहै जेसे पर्वतमों स्थित भया पुरुष पृथिवीमों स्थितजनों कों नीचे स्थानमों देखताहै सो उनकों तुच्छ जानताहै तैसें तत्ववेत्ता पुरुष संसारी लोकोंकों देखताहै तृणके समान तुच्छ जानताहै ४६ हेरामजी तत्ववेत्ता पुरुष शांतिकों प्राप्त होनेते आत्मयोगतें प्राप्त भई अष्टसिद्धीको मानता नहीहे ५० हेरामजी आठ प्रकार की योग सिद्धीहैं सो कोन है ॥ अणिमा १ महिमा २ गरिमा ३ लघिमा ४ प्राप्ति ५ प्राकाम्य ६ ईशित्व ७ वशित्व ८ यह आठ प्रकारका ऐश्वर्य हैं अणुरूप होना १ पर्वत समान विशाल होना २ पर्वत समान भारी होना ३ रुई समान हलके होना ४ सर्व देशमों प्राप्त होना ५ अपनी कामना का स्वरूप और पदार्थकों प्राप्तहोना ६ त्रैलोक्य काईश्वर होना ७ सभको अपने वश करणा ८ सो तत्ववेत्ताकों तृण समान होतीहे दूसरे पुरुषमों देख करकेभी मनमों आश्चर्य नही॥

मानताहै २६८ हेरामजी इस प्रकारकीयां औरभी सिद्धियांहैं कोई पर्वतकी कंदरामें सिद्धहै। कोई पवित्र आश्रमोंमें सिद्धहैं और कोई गृहस्थाश्रममें सिद्धहैं कोई बहुत भ्रमणोंतें सिद्धहैं कोई भिक्षाटन करके सिद्धहैं कोई केवल तपतें सिद्धहैं कोई मौनतें सिद्धहैं कोई ध्यानतें सिद्धहैं कोई पंडिताईसें सिद्धहैं कोई शास्त्र श्रवणतें सिद्धहैं कोई राज करके सिद्धहैं कोई मूर्छनिकीन्याई सिद्धहैं कोई गुटका करके सिद्धहैं कोई आकाशमें उड़नेतें सिद्धहैं कोई कला शास्त्रतें सिद्ध हैं कोई दीनरूप करके सिद्धहैं कोई आचार त्यागनेतें सिद्धहैं कोई बेद पाठ करके सिद्धहैं कोई विलिप्त होय करके सिद्धहैं कोई संन्यासधार करके सिद्धहैं परंतु अविद्याकी शांति किसीको नहीहोतीहै २६९ हेरामजी तुमकों महा रामायण श्रवण करके अविद्याकी शांति भईहै तदभी निरंतर अभ्यास करणे बिना भली तरासें नही होतीहै ७० हेरामजी तिसतें असत्य शास्त्रोंके विचारतें निवृत्त होना उत्तम शास्त्रके विचारतें शांति प्राप्त होवेगी जैसें रणलीला करणेतें जीत प्राप्तहोतीहै ७१

हे रामजी इस शास्त्रतें विना कल्याणकों देने हारा और उपाय, न भयाहै और ना होवेगा तिसतें परम उत्तम बोध वास्ते इसी शास्त्रकों विचारण करो ७२ हे रामजी वासनाके त्यागने विना आत्माकों उद्धार करणेकों कोई और उपाय समर्थ नही है तिसतें यत्न करके वासनाका त्याग करण ७३ हे रामजी जो जगत के भाव सत्य विद्यमान होवे तो नाशतें रहित होवे तिसते यह सभ जगतके भाव सहेकी शृंगकी न्याई असत्यही हैं ७४ हे रामजी संस्रणि भावोंकी तृस्ना त्यागनेतें संस्रणि साधन करणेकी समाप्ति होतीहै तिसते समाधान करके चित्त सिद्धहोताहै सोही निर्वाणकी प्राप्तिहै ७५ हे रामजी जो पुरुष शांत इछा वालेहैं और बोध करके वासना रहित भयेहें तिन्हकों चाहे बिनाभी निर्वाण प्राप्तहोताहै ७६ हे रामजी बोधकी यही अवधि है जो तृस्ना रहित होना और तृस्ना निवृत्त नही होवे तो पंडिताई भी मूर्खताई सीहै ७७ हे रामजी हजारोंमें भी हजारोंते कोई एक पुरुषार्थके उद्यमकों करताहै तिसते वासनाके जाल

बंधनकों छेद करके संसारतें मुक्त होनाहै जैसें पिंजरे को तोड करके सेर निकसताहै ३७८ हे रामजी सोही शास्त्रका श्रवणहै जो ज्ञानकों देवे सोही ज्ञानहै जिसतें सम दृष्टि होवे सोही समदृष्टिहै जिसतें सुषुप्ति अवस्थाकी न्याई जाग्रतमोभी एका यता होवे ३७९ हे रामजी सम दृष्टि जो पुरुषहैं तिन्हकों महा घोर सुख दुःख विस्तार करके होवे तोभी एक रस आनंदते उदासीनता नही होतीहै ३८० हे रामजी राजासिव्य सम दृष्टि करके कबूतरकी रक्षा वास्ते अपने मांस प्रसन्न मन करके बाज नामा पंछीकों छेदन करदेता भया ३८१ हे रामजी तैसें राजाजनक संपदा करके संयुक्त अपनी नगरी दग्धभये संते समदृष्टि करके शोककों नही करता भया ३८२ हे रामजी तैसें मातंगनामा समदृष्टि करके परोपकार वास्ते अपना देह त्यागनेतें उत्तम विमान पर चढ करके परमपदकों जाताभया ८३ हे रामजी तैसें बालचंद्रनामा मुनि समदृष्टि करके गुड़के लड्डूकी न्याई प्राप्तभई अग्निकों खाइ लेताभया ८४ हे रामजी जिसतें

सम दृष्टि वाला तत्ववेत्ता पुरुष मरणकों और जीवनकों नही चाहताहै जैसा मिले तैसा प्राप्त करता हुवा रागद्वेषसें रहित विहार करे ८५ हेरामजी जब लग प्रारब्धहै तब लग देह सावधान विचरताहै तिसतें ऐसें विचार करके जैसें बने तैसे एकाग्र हुत्ती करके विचरते रहणा और किसीसें प्रयोजन क्यों करणाहै ८६ हेरामजी जो कोई अपने वर्णाश्रमके कर्म क्रियाके क्रममों त्याग करके तूष्णी भावकों धारणकरे तो यह देह कर्मसें खाली नही रहताहै तिसते स्वतंत्रता करके विपरीत कर्ममों प्रवृत्त होवेगा तद लोक मर्यादा क्षीण होवेगी तिसकारणतें सत्कर्म करणेमों दोष नही मानना ८७ हेरामजी कर्म त्यागने हारे लोकोंके समाज मों नही रहतेहैं जहां स्वप्नमों भी लोक देखनेमों नआवे ऐसी महामूढ मृग जहां रहतेहैं ऐसे बनमों ध्यानमों लगे रहतेहैं ८८ हेरामजी केते पुरुष आधाज्ञान पाइ करके और आधे मार्गकों पाइ करके जैसे आधी सोई आधी जागती बुद्धिवाले ज्ञानके और ध्यानके गर्व करा

के कर्मकों त्याग देतेहैं सो पुरुष इह लोक परलोकतें भ्रष्ट होतेहैं ८९ हेरामजी चित्तकों वि
तवनेतें रहित करणा केवल आत्म सत्ताके चिंतनमों प्राप्त करके समान वृत्ति करके सुख सें
स्थित होइ करके परब्रह्मरूपी परमआकाश रूपकों धारणकर ९० हेरामजी तुम परमार्थकों प्रा
प्तभयेहो और रागद्वेषादि दोषोंसें रहित भयेहो और सम बुद्धि भयेहो और आनंद करके उदि
त मन भयेहो ऐसे तुम महात्माजनोंके भी महात्माहो अब शोकसें रहितहो और निशंकहो
और एक आत्मस्वरूप भयेहो औरजन्म मरणसें रहित ऐसे परमपवित्रपरम निर्वाणपदमों
स्थित होजावो ९१ हेरामजी अब तुमकों ज्ञानके बोध वास्ते और अधिक वचन विस्तार करके
क्या प्रयोजनहै यह हमने तुमकों सभ ज्ञान शास्त्रका आद शिरोमणि सार ज्ञान उपदेश कि
याहै इस करके तूं सर्व वेत्ता भयाहैं और पूर्णज्ञान भयाहै ९२ श्रीवाल्मीकीजीकावचन॥ हे
मुनि श्रेष्ठ वसिष्ठजीने ऐसा वचन कहि करके तूष्णी भये संते श्रीरामजी सर्वप्रकारकी इच्छा

नि॰ वा॰ सा॰ ५८१

रहित होते संते संपूर्ण सभाके जनभी ध्यानमों एकाग्र होते भये सभही विशाल बुद्धि के रके ब्रह्मपदमों विश्रांत होते भये जैसें भ्रमर गुंजार शब्द करके कमलपुष्पके बनमों रस पान करणेमों प्रवृत्त होताहै ३९२ हे भरद्वाज मुनि श्रेष्ठ वसिष्टजी निर्वाण प्रकरण की कथा समाप्तिमों समाप्तीका मंगला चरण करते भये तद संपूर्ण सभाके लोक शांत हु तिभये ओर निर्मल अंतःकरण होतेभये ओर निर्विकल्प समाधीकी अवस्थाकों प्राप्त होतेभये ३९३ हे भरद्वाज तिस कालमों संपूर्ण आकाशचारी ओर स्वर्गवासी सिद्धजनों के मुखतें जय शब्द ओर स्तुति शब्द होतेभये ओर सभामों स्थितभये विश्वामित्रादि मुनियों के मुखते भी पूर्णभावनातें स्तुति शब्दवालीयां वानियां प्रकट होतियां भईयां ९४ हे भरद्वाज तिस कालमों महा उत्सवके कोलाहल शब्द करके संपूर्ण दिशा पूर्ण होती भई परदेका प्रति शब्द अत्यंत मधुर होताभया जैसें पवन करके छिद्रद्वार करके पूर्णभये कीचक जातीके

वांसोंते मधुर शब्द होतेहैं ९५ और आकाशमें स्थितभये सिद्धजनोंके जयशब्द होने भये और देवतोंके नगारेके शब्द होनेभये और पुष्पोंकी वर्षाको देवता करते भये ९६ सिद्धस्तुति करतेहैं॥हमनें ब्रह्माके कल्पके प्रारंभतें लेकरके सिद्धोंके समाजोंमें हजारों मोक्षके उपाय सुनेहैं और कहेभीहैं परंतु महारामायण रूपी मोक्षके उपाय बरोबर कोई नहीहै ९७ यह वासिष्टमुनिजीके वचनके विलास करके प्रकट भया महा रामायण रूपी मोक्ष के उपाय करके पशु पंछी इस्त्रियां और बालक और सर्पकीटादिक सभही परमानंदको प्राप्तभयेहैं ९८ श्रीवसिष्ठजीने युक्ति करके और दृष्टांतों करके और न्याय करके जैसा श्रीरामचंद्रजीको बोध करवाया है तैसा साक्षात निकटवर्ती अपनी इस्त्री अरुंधतीको भी बोध नही करायाहै ९९ इस मोक्षो पाय कथा करके पशुयोनीभी निर्विकार स्थितिको पाइ करके मुक्त होवेंगे और अधिकारी जो मनुष्यहैं सो कैसे मुक्त नही होवेंगे ४०० इस

ज्ञानरूपी अमृतकों कर्णरूपी अंजलियों करके पान करनेतें संपूर्ण लोक नई सिद्धीकी संपदाकों प्राप्तभयेहैं ४॰१ विश्वामित्रजीकावचन॥ अहो इनि महा आनंदभयाहै वसिष्ठमुनीजीके मुखतें परमपवित्र ज्ञान हमने सुनाहै इसके श्रवणते हमने हजार गंगास्नान के फलकों प्राप्तभयेहैं ४॰२ नारदजीकावचन। जो हमनें ब्रह्मलोकमें नही सुनाहै और स्वर्ग में और मनुष्यलोकमें नही सुनाहै सो ज्ञान आज हमने सुनाहै आज हमारे कर्ण पवित्रताकों प्राप्तभयेहैं ४॰३ राजादशरथजीकावचन। हे वसिष्ठ मैं अपने शरीर करके इन्द्रियों करके संयुक्त और यह लोक अरु पर लोकमें सुखदेने हारे पुण्य करके अरु राज्य करके अपने भृत्यलोक सहित संपदाके देणे करके तुम्हारी पूजा करताहूं ४॰५ श्रीवसिष्ठजीकावचन। हे राजन् हम ब्राह्मणलोक केवल प्रणाम मात्रतें प्रसन्न होतेहैं सो तुमने हमकों प्रणाम करीहै और पूजाकी वांछा नहीहै ४॰६ श्रीरामजीकावचन। हे मुने पूजा करणेमें तुमने हमकों निरा

नर कियाहै तिससें मेरेकोंभी प्रणाममात्र सारहै इससें तुम्हारे चरण कमलोंकों मैं प्रणाम क
रताहूं ५।७ श्रीरामचंद्रजी ऐसा कहि करके पुष्पोंकी अंजली ले करके वसिष्ठजी के चरण कमलों
पर चढ़ावते भये जैसे हिमाचलके बनमें बर्फ शोभतीहै तैसें वसिष्ठजी के चरण कमलमें
चढ़े हुवे पुष्प शोभते भये ८ सो नीतिको जानने हारे श्रीरामचंद्रजी आनंदके अश्रुजल कर
के पूर्ण नेत्रभये गुरुजीके चरण कमलों को बारंबार प्रणाम करतेभये ९ श्रीवसिष्ठजीका
वचन। हेराजन् हेरामजी तुम रघु कुलके चंद्रमाहो जो मैं कहताहूं तिसकों करो इतिहा
स कथाकी समाप्तीमें ब्राह्मण अवश्यमेव दक्षिणा भोजन वस्त्र भूषण गोदान और पृथि
वीदानादिकों करके पूजने योग्यहैं १० तिससें आज सर्व प्रकार करके श्रद्धा भक्ति विधिस
हित ब्राह्मणोंको प्रसन्न करो तब तुमकों मोक्षोपाय वेदांत शास्त्र श्रवण करणेका सांगा
फल प्राप्त होवेगा ११ यह मोक्षोपाय कथाकी समाप्तीमें निर्धन पुरुषनेभी अपनी यथा

प्तानि ब्राह्मणों की पूजा करनी योग्यहै और राजाने क्यों नहि पूजा करनी ४९२ श्रीवाल्मीकिजी
कावचन। हेभरद्वाज राजा दशरथ मोक्षोपाय कथा श्रवणतें संसारकी मोह निद्राके अंत हो॰
नेके हर्षतें सातदिन रात्र महाउत्सवकों करताभया जिसमें स्वर्गकी संपदाभी तुच्छ होतीभ
ई ४९३ हेभरद्वाज तूं महाबुद्धीहै मेरे शिष्योंमें श्रेष्ठहैं श्रीरामचंद्र सें आदि लेके तत्त्व वस्तुको
जान करके शोक मोहादि सें रहित भये परमानंदमों मग्न होते भये ९४ हेभरद्वाज इसी ज्ञा
न दृष्टीको धारण करके तूंभी रागद्वेष रहित भया और संशय रहितभया और शांतमति
भया अब जीवनमुक्त दशाको प्राप्तहोजा ४९५ हेभरद्वाज जो महात्मापुरुष मोक्षोपाय कथा
के भावको जानेंगे सो तत्त्ववेत्ताजनोंमों श्रेष्ट होतेहैं फेर संसार बंधनको नही प्राप्तहोतेहैं
और बहुत वचन विस्तार कहने करके क्या अर्थ बनेहै ४९६ जो कोईपुरुष बहुत शास्त्र
श्रवण करण हारेहैं तिन्हके आगे भली प्रकार करके आगे फेर व्याख्यान करेंगे सो फेरा

नि॰ वाल भावकों नही पावेंगे और वचन कहनेतें क्या अर्थहै ४१७ जो पुरुष इसका अर्थ
वा॰ सा॰ जानने बिनाभी इच्छासें और श्रद्धासें रहित भये भी इस कथाकों वाचेंगे और लिखेंगे अरु
५८६ लिखावेंगे अरु श्रवण करेंगे और लोकोकों पढावेंगे उत्तम देश पुण्य तीर्थमों संतजनोंके आ
गे देवता के आगे कथा लगावेंगे सो भी पापसें रहित होवेंगे ४१८ जो पुरुष इस कथाके संब
धकों करेंगे सो राज सूय अश्वमेधादि यज्ञके फल करके युक्त होवेंगे और बहुत स्वर्गमों नि
वास करेंगे सो फेर दूसरे तीसरे जन्ममों तत्वज्ञान के अभ्यासतें मोक्षकों प्राप्त होवेंगे ४१९
हे भरद्वाज इस मोक्षोपाय कथा कों ब्रह्माजी पहिले आपही अनुभव सहित विचारणा
करके लोकों के उपकार वास्ते रचन करते भये और ब्रह्माजीते वसिष्टजी प्राप्त होते भ
ये श्रीवसिष्टजी श्रीरामचंद्रजी की सभामों प्रकट करके कहते और तहांसें सुन कर
के मैने तुमकों प्रेम भक्तीतें कहीहै ४२० हे भरद्वाज जिसका इस कथामों मन लगे

तिसके माता पिता संपूर्ण कुल देश पवित्र होता है इस कारणतें इसमों श्रद्धा भक्ति सा-
हित मनकों स्थिर करणे योग्य है ४२१ इतिश्रीमहारामायणेमोक्षोपायकथायांवासिष्टसा
रे निर्वाणप्रकरणस्य उत्तरार्द्ध सारोद्धारः समाप्तः॥ ६॥ शुभम्भूयात्सर्वजगताम्॰ श्रीराम॥
सवैया॰ ग्रंथवसिष्टरचोमुनिग्यानमतत्त्वनिरूपणख्यानसुभावै॰ जोहिपड़ेनरविश्वसमस्त॥
प्रतीतभजैपदनाकविहावै॰ जंबुसतीसरआदिहुंकोनृपश्रीरणवीरनरेशसुभावै॰ सोअनुवा
दनलोकहुंकेउपकारकअर्थन,सूझदिखावै १॥ दोहा॰ शिवशंकरपंडितकियोजिहिअनु
वादनसार। लेखकतुलसीदासलिपिछपवायोसुविचार॥२॥ नयनवेदनवइंदुमितसंवत-
विक्रमजान॰ मुद्रितइहपूरणभयोवासिष्ठीव्याख्यान॥३॥ संवत् १९४२ ज्येष्टसुदी १० बुधवास
रे शुभमस्तु राज्ञाप्रजायां॥